स्मृतियात्राक एकान्तमे

कीर्त्तिनारायण मिश्र





स्मृतियात्राक एकान्तमे

कीर्त्तिनारायण मिश्र

किसुन संकल्प लोक
सुपौल

स्मृतियात्राक एकान्तमे

कीर्त्तिनारायण मिश्र

प्रकाशक : **किसुन संकल्प लोक**
सुपौल–852131

प्रथम संस्करण : दीआबाती, 1995
द्वितीय संस्करण : 10 मार्च 2018
मूल्य : 400/- (चारि सय टाका)
मुद्रक : यूनिटेक ग्राफिक प्वॉइंट, नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

- **श्री शरदिन्दु चौधरी**
  शेखर प्रकाशन, पॉपुलर फार्माक पाछाँ
  न्यू मार्केट, पटना–800001
  मो.–9334102305
- **डॉ. वागीश कुमार मिश्र**
  रमेश्वरलता संस्कृत कॉलेज
  दरभंगा–846004
  मो.–9835867187
- **श्री कीर्त्तिनारायण मिश्र**
  सौभद्र निवास, शोकहरा, बरौनी
  बेगूसराय–851112
- **श्री केदार कानन**
  किसुन कुटीर, गुदरी बाजार
  सुपौल–852131
  मो.–9471062706

SMRITIYAATRAK EKANT ME : A collection of critical memoir by KEERTINARAYAN MISHRA. Second Edition : 2018.
Price : 400/-

श्रद्धेय पितृव्य
डॉ. श्री दिवाकर मिश्र शास्त्री
एवं
आदरणीय अग्रज
प्रो. डॉ. हरिनारायण मिश्र
केँ
सविनय

प्रकाशकीय

नेनपनेसँ जाहि शिशुकें प्रकाण्ड पंडित वर्गक सान्निध्य, शास्त्रज्ञ मनीषीक विद्वत् वातावरण, महाकवि लोकनिक स्नेहिल स्पर्श आ भाव-सम्पदा सहजहिं प्राप्त भेल हो, ओहि शिशुक युवावस्था केहन गौरवपूर्ण भ' सकैत अछि, तकर कल्पना कयल जा सकैत अछि। मिथिलाक उत्तरांचलमे ओना एहि प्रकारक वातावरण कोनो असामान्य बात नहि थिक, मुदा जँ ई वातावरण दक्षिणांचल क्षेत्रक हो, तँ से कतेक अद्भुत आ विलक्षण घटना-सन लगैत छैक।

से ओ शिशु बादमे युवा कीर्त्तिनारायण मिश्रक नामे हिन्दी आ मैथिली साहित्यमे परिचित भेलाह। से परिचिते टा नहि भेलाह, अपितु विद्यार्थिये कालमे अपन हिन्दी कविता प्रकाशनक कारणे अत्यन्त चर्चित आ लोकप्रिय भ' गेलाह। अपन आरंभिक लेखन भनहि ओ हिन्दीमे करैत रहलाह, मुदा मातृभाषाक प्रति अनुराग जगिते सम्पूर्ण रूपें मैथिली साहित्य लेल समर्पित भ' गेलाह आ अपन व्यापक लेखनक कारणे सदैव चर्चित रहलाह।

चर्चित रहलाह अपन लेखनक कारणे। कवितामे महानगरीय बोध आ त्रास, एकाकीपनक भयावहता, यंत्रणा आ तकरासँ मुक्तिक छटपटाहटिक कारणे। कवितामे नव आस्वाद, नव भाव-भंगिमा आ नव स्थापनाक कारणे। से हिनक संग्रहक सभटा कवितामे ताकल जा सकैत अछि।

पढ़लनि अर्थशास्त्र आ कानून, चाकरी कयलनि शुष्क आ व्यावसायिक औद्योगिक प्रतिष्ठानमे, मुदा ओ मिथिला—बिहारसँ दूर रहितो डूबल रहलाह साहित्य-सृजनमे आ एकसँ एक, नवसँ नव, विलक्षण कविता, कथा, आलोचना आ संस्मरण सभसँ मैथिलीक पाठक वर्गकें आह्लादित करैत चौंकबैत रहलाह।

चौंकबैत रहलाह अपन गद्य लेखनक टटकापन आ अपूर्व छवि-छटासँ। एक पर एक तलस्पर्शी संस्मरणसँ। लेखकक दुर्भेद्य संसारमे पैसि नव आ अनमोल सूचनादि-संकलनसँ। लेखकक भीतर चलैत सभटा चिंतन-मननसँ। संस्मरणीय लेखकक भीतरक सभटा द्वन्द्व आ द्वैधकें बहुत मनोयोग आ कौशलसँ अपन संस्मरण सभमे ओ व्यक्त कयलनि अछि।

कलकत्तामे (आब कोलकाता) बिताओल समय हुनक जीवनक स्वर्णकाल मानल जा सकैत अछि। कलकत्तामे हुनक पिताक अपन व्यापक प्रभामंडल छलनि। कलकत्ता ओहि समय जीवन्त आ जाग्रत छल। नव-नव संस्थाक गठन भ' रहल छल, नव-नव मैथिली-अभियानी अपना-अपना ढंगसँ संस्था सभसँ जुड़ि रहल छलाह, पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन भ' रहल छल, एकटा नव आ अद्‌भुत वातावरणक सृजन भ' रहल छल–कीर्त्तिनारायण जी एहि सभसँ जुड़ैत अत्यन्त सक्रियताक संग साहित्य लेखनक सहभागी बनि रहल छलाह।

राजकमल कलकत्ते छलाह ओहि समयमे। अपन जीवन, अपन चर्या, अपन झूठ, अपन सांच, अपन विवाद, अपन सक्रियता आ चमत्कृत करय बला व्यक्तित्वक कारणे चर्चित आ कुख्यात। कीर्त्तिनारायण जी हुनकासँ आत्मीय रूपें जुड़ल रहथि। कतेक रास घटना आ प्रसंगक ई एकान्त साक्षी रहल छथि। आ ओहि सभ प्रसंगक अत्यन्त मार्मिक अभिव्यक्ति ई अपन संस्मरण सभमे कयलनि अछि। राजकमलक कृत्यकें सभ पचा नहि सकैत छल, कलकत्ताक तत्कालीन पंडित-पुरोहित लोकनि लेल ओ त्याज्य विषय जकाँ रहथि। चर्चा नहि करबा योग्य। मुदा अपन रचनात्मकता आ आक्रामकतासँ ओ सभक लेल कौतुक आ आश्चर्यक विषय बनल रहलाह। कीर्त्तिनारायण जी एहि सभक साक्षी रहथि।

कीर्त्तिनारायण जी साक्षी छलाह इतिहासक राष्ट्रीय स्तरक प्रकाण्ड विद्वान, विरल सिद्धांतवादी, प्रख्यात चिंतक-मनीषी, मार्क्सवादक गम्भीर व्याख्याकार प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक अन्तरंग क्षण सभक। राधाबाबू पर केन्द्रित संस्मरणमे हुनक जीवनक आ व्यक्तित्वक ओहन पक्ष सभ उद्‌घाटित भेल अछि, जे मैथिली साहित्यमे आनठाम कतहु नहि भेटि सकैत अछि। जीवनक जाहि पथ पर ओ ठाढ़ छलाह, ताहि पथकें कीर्त्तिनारायण जी एहि तरहें आलोकित कयलनि अछि, जकरा पढ़ैत काल ठीके अविश्वसनीय लगैत अछि, जे राधाबाबूक व्यक्तित्व केहन महनीय आ प्रेरणास्पद रहनि।

ठीक तहिना जीवकान्त आ सोमदेव पर ओ जाहि विलक्षणतासँ अपन बात कहि सकलाह अछि, से चिरकाल धरि पाठकक मनमस्तिष्क पर अपन प्रभाव बनौने रहत। जतेक व्यक्तित्व पर ओ कलम चलौलनि अछि, हुनका सभक विषयमे अधिकाधिक जानकारी पाठककें भेटि जाइत अछि। ई निश्चितरूपेण रेखांकित करबा योग्य प्रसंग थिक।

1967क फरवरीमे सुपौलमे द्विदिवसीय नवकविता सेमिनारक आयोजन किसुनजी कयने रहथि। नवकविता पर ई सेमिनार अनेक अर्थमे ऐतिहासिक छल। एहि सेमिनारमे राजकमल चौधरी सम्मिलित भेल रहथि। ई हुनक अंतिम साहित्यिक मंच साबित भेलनि। एहि सेमिनारमे जीवकान्त, कीर्त्तिनारायण मिश्र, रमानन्द रेणु समेत

तत्कालीन अनेक कवि सम्मिलित भेल छलाह। एहि सेमिनारक प्रतिफल छल जे कलकत्तासँ 'आखर' सन विशिष्ट पत्रिकाक प्रकाशन भ' सकल। अनेक कारणे 'आखर' चर्चित भेल आ मैथिलीक पत्रकारिताक इतिहासमे ओ अपन महत्वपूर्ण स्थान सुरक्षित कयलक। कीर्त्तिनारायण जी आ वीरेन्द्र मल्लिक एकर संपादक छलाह।

आरंभहिसँ कीर्त्तिनारायण जी अपन कविता सभक तिक्ख भाव-बोध, यंत्रणासँ मुक्तिक बाट तकैत अपन शब्द-सामर्थ्य, अकवितावादक स्थापना आ तकर व्याख्याक कारणे चर्चित रहलाह। ओ अपन कविता आ तकर अभिव्यक्तिक मादे कहैत छथि–'अभिव्यक्ति हमरा लेल जतबे सहज अछि, अनुभव ततबे कष्टसाध्य आ यंत्रणापूर्ण। प्रत्येक गंभीर कविताक पाछाँ असहनीय आत्मवेदनाक भावेतिहास अछि। आत्म निवेदनक सरल रस्ताकें छोड़िकें आत्मसंघर्षक बीहड़मे बौअयबाक निर्णय स्वैच्छिक अछि, तें मार्ग (अथवा शिल्प) संधानसँ ल' कए, आत्माभिव्यक्ति धरिक प्रक्रिया यातनासँ भरल रहैत अछि। कविता हमरा लेल 'मुक्ति प्रसंग' नहि, यातना प्रसंग अछि। कोनो विशेष भावक मनोवेगमे सप्ताहक सप्ताह, मासक मास बौखैत-खौलैत रहब हमर नियति भ' गेल अछि।'

एहन कवि, कविताक अतिरिक्त जखन गद्य-लेखनमे उतरैत छथि तँ हुनका लग दू टा भाव समानान्तर चलैत रहैत छनि। पहिल भाव हुनक कवि-हृदयक मृदुलता आ तरलता आ दोसर अपन गद्यक प्रति सतर्क आ चौचंक दृष्टि। ई अद्‌भुत बात थिक जे कीर्त्तिनारायण जी अपन दुनू भावमे संतुलन बनौने रहलाह।

हिनक गद्य-लेखन मोहि लैत अछि। जखन ओ कोनो व्यक्तित्वक विश्लेषण करैत छथि तँ हुनक कोनो पक्ष छूटैत नहि अछि। व्यक्तित्वक बारीकी आ हुनका द्वारा कयल, खाहे ओ महत्वक हो अथवा नहि, सभ कथूक चर्चा एक विशेष बोधक संग करब ओ अपन कर्त्तव्य जकाँ मानैत छथि। छोटसँ छोट प्रसंगहुकें अपन लेखनीक पारस-स्पर्शसँ कीर्त्तिनारायण जी ओहिमे एक नव जीवन, एक नव चमक, एक नव तेज आ त्वरा उत्पन्न क' दैत छथि।

मैथिलीमे संस्मरण-लेखन, वास्तविक अर्थमे संस्मरण जकरा कहबैक, बहुत कम लिखल गेल अछि। हिन्दी अथवा अन्य साहित्यमे ई एक नव विधाक रूपमे सर्वस्वीकृति प्राप्त क' चुकल अछि। मैथिलीमे सेहो ई एक स्वीकृत आ पाठकीय रुचिक विधा भ' गेल अछि। संस्मरणक महत्व तँ तखन जे संस्मरणीय व्यक्तित्व आ चरित्र आँखिक सोझाँ मूर्त्तिमान भ' उठथि, से एहि संग्रहमे सर्वत्र सुलभ अछि। ई हिनक लेखनक निजी विशिष्टता थिकनि।

सत्य ई थिक जे मैथिलीमे संस्मरण-विधामे मात्र आंगुर पर गनबायोग्य पोथी उपलब्ध अछि। निश्चये 'स्मृतियात्राक एकान्तमे' एहि विधाक एकटा सशक्त कृति

थिक जे एक संग मैथिलीक अनेक दिग्गज लेखकक व्यक्तित्व आ कृतित्वक विस्तृत, मनोहर आ अनुपम चित्र प्रस्तुत करैत अछि। मिथिला-मैथिली लेल समर्पित उन्नायक, श्रेष्ठ साहित्य-साधक आ अक्षर पुरुषक सहज स्मृतिक सम्पूर्ण वितान एहि पोथीक विशिष्टता थिक।

संस्मरणक संग-संग संस्मरणीय रचनाकारक रचना पर लेखक द्वारा कयल गेल सहज टिप्पणी एहि पोथीकें आओरो महत्वपूर्ण बना दैत अछि। पाठककें कीर्त्तिनारायण जी अपन अतीतक विरल-विलक्षण स्मृतिमे पहुँचा, ओकर मोहक स्पर्शसँ पुलकित करैत, ओहि क्षण-विशेषकें जीवन्त बना दैत छथि आ अपन सार्थक टिप्पणीसँ सम्बद्ध रचनाकारक वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन सेहो करैत छथि।

समय आ ओकर अन्तर्धाराकें, लेखक आ हुनक व्यक्तित्वकें जतेक व्यापक आ गहन-गंभीर रूपें ई कृति उद्घाटित करैत अछि–ई ने मात्र अपने समयमे, अपितु एहि समयसँ आगाँ, बहुत समय धरि–एकटा जीवित आ जीवन्त दस्तावेज जकाँ मूल्यवान रहत, से विश्वास अछि।

सशक्त एवं श्रेष्ठ कवि होयबाक कारणे कीर्त्तिनारायण जीक एहि संस्मरण सभमे काव्य-तत्वक प्रवेश अनिवार्य भ' गेल अछि आ ओहि काव्यात्मकताक रस एहि संग्रहकें संस्मरण-विधामे एकटा नव आ आस्वादपूर्ण कृति बनबैत अछि।

संस्मरणमे लेखकक अपने व्यक्तित्व महत्वपूर्ण भ' जयबाक खतरा बनल रहैत अछि। नहियो चाहैत कतहु-कतहु ओ परिस्थितिक संवेदनामे डूबि लेखक आ पात्रक भेद बिसरि जाइत अछि आ स्वयंकें विज्ञापित कर' लगैत अछि। परिस्थितिजन्य विवशता रहितो, ई रचनात्मक दोष होइत अछि मुदा, कीर्त्तिनारायणजी एहि दोषसँ, एहि खतरासँ बचबाक प्रत्येक संभव उपाय करबाक प्रयास कयलनि अछि आ ताहिमे हुनका सफलता भेटलनि अछि।

सीमान्त, महानगर, हम स्तवन नहि लिखब, ध्वस्त होइत शांतिस्तूप, आदमीकें जोहैत (कविता संग्रह), अर्थान्तर (आलोचना) आदि महत्वपूर्ण रचना-यात्राक बाद कवि कीर्त्तिनारायण मिश्रक संस्मरण-संग्रह 'स्मृतियात्राक एकान्तमे' अपन विलक्षणता आ विषय-वस्तुक उत्कृष्टता आ उपस्थापन लेल एक संग्रहणीय कृतिक रूपमे परिगणित होयत।

'अपन एकान्तमे' (1995) संग्रहमे मात्र बारह गोट साहित्य-मनीषीक विषयमे संस्मरण संकलित छल, मुदा आब 'स्मृतियात्राक एकान्तमे' नामक एहि संकलनमे पचीस गोट साहित्य-मनीषी एकठाम भ' गेल छथि आ संगमे एक विदेश यात्राक संस्मरण सेहो अछि। संस्मरणीय व्यक्तित्वकें हुनक वयसक अनुसारें क्रममे राखबाक प्रयास कयल गेल अछि।

- केदार कानन

आत्मकथन

विश्व साहित्यमे संस्मरण लिखबाक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि। उद्भट पाण्डित्य आ रचनात्मक प्रतिभाक धनी तथा साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान, राजनीति, दर्शन आदि क्षेत्र विशेषमे विख्यात व्यक्ति पर लिखल संस्मरण हुनक जीवन-शैली, चिन्तन आ लोक-व्यवहार कें बूझक लेल अनौपचारिक विचार-भूमि तैयार करैत छैक। संस्मरणीय व्यक्ति मृत आ जीवित दुनू भ' सकैत छथि। दुनू स्थितिमे संस्मरण-लेखककें तरुआरिक धार पर चल' पड़ैत छैक। दिवंगत विभूतिक संस्मरणमे लेखकक समक्ष ई आशंका रहैत छैक जे संस्मरणीय व्यक्तिसँ अपन सम्बन्ध जोड़ि कतहु अपनाकें महान त' सिद्ध नहि क' रहल अछि आ जीवित व्यक्तिक संस्मरण ओकरा चाटुकार वा चारणक कोटिमे परिगणित करा सकैत छैक। एहि सभ खतराक अछैत संस्मरण लिखल जाइत रहल अछि, लेखक संस्मरणीय व्यक्तिक व्यक्तित्व आ कृतित्वसँ तादात्म्य स्थापित कए महत्वपूर्ण रचना दैत रहलाह अछि।

यद्यपि संस्मरण आ आत्मकथा स्वतंत्र विधा छैक किन्तु, ओकर पूर्ण विकास नहि भेल छैक। मैथिलीमे एहि दिशामे आओर कम प्रयास भेल अछि किन्तु, जतबे लिखल गेल अछि, ओकर ऐतिहासिक महत्व छैक। एहि विधामे हमर ई प्रथम प्रयास थिक।

प्रस्तुत संकलनमे जाहि रचनाकार पर हम लिखने छियनि, हुनक रचना, सदाशयता आ जीवन-दर्शन हमरा अभिभूत करैत रहल अछि आ लेखनक क्रममे हुनका सभक संग, तादात्म्यताक स्थितिमे, आओर अभिभूत भेल छी–अनायास, सहज एवं स्वाभाविक रूपसँ। ओहिमे किछु हमर आदरणीय/अभिनन्दनीय छथि आ किछु घनिष्ठ साहित्यिक मित्र। हमरा ई बूझल अछि जे संस्मरण–लेखकसँ संस्मरणीय व्यक्ति महान होइत छथि।

एहि पोथीमे किछु एहन अभाव रहि गेल अछि, जे हमरा लेल बड़ कष्टदायक अछि। महामहोपाध्याय डॉ. उमेश मिश्रसँ 1967 मे कविवर श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जी हमरा साक्षात्कार करौने रहथि, जाहिमे आधुनिक कविता पर हुनक

विचार/अभिमत सुनबाक हमरा अवसर भेटल छल। आश्चर्य भेल छल हुनक पौत्रसँ ई जानि जे किछु सप्ताह पूर्व ओ 'सीमान्त' पर अपन प्रतिक्रिया हुनकासँ लिखौने रहथिन आ हमरा पठा देबाक आदेश देने छलथिन। हम गाम घुरि हुनका पर संस्मरण लिखने रही। ओहि पाण्डुलिपिकें अथक प्रयासक बादो नहि जोहि सकलहुँ। कविवर श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन' तथा पण्डित श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' पर पछिला साल चितावालसामे लिखब शुरू कैने रही, जे व्यस्तता आ स्थानान्तरणक कारण आइ धरि पूरा नहि क' सकलहुँ। हमर पितृव्य डॉ. श्री दिवाकर मिश्र शास्त्री स्वर्गीय भुवन जी, आरसी बाबू, यात्री जी, सुमन जी, अमर जी आदिक घनिष्ठ मित्र रहल छथि। ओ भुवन जी तथा सुमन जीक प्रेरणासँ हिन्दीक संग-संग मैथिलीयोमे लिखब शुरू कैने रहथि। चालीसक दशकमे हुनक बहुतरास कविता छपल रहनि। 'मिथिला मिहिर' आदिक ओतेक पुरान अंकसँ हुनक रचना सभकें जोहि कए, मैथिलीमे हुनक अवदानकें सुनिश्चित करब संभव नहि भेल। भविष्यमे अपन दायित्व पूर्ण क' सकी—ताहि लेल अपेक्षित प्रयास करब।

संकलित संस्मरणमे किछु 8-10 वर्ष पहिने लिखल गेल छल। ओहिमे विस्तारक बड़ अवकाश छलैक किन्तु, से करब उचित नहि लागल। परिवर्तन-परिवर्द्धनसँ मूल भाव आ अनौपचारिकताक नष्ट होयबाक आशंका छल। किछु अप्रकाशित संस्मरण सेहो देल जा रहल अछि, जे पछाति लिखल गेल छल किन्तु, पत्र-पत्रिकाक अभाव/अनिच्छाक कारण छपि नहि सकल।

हमर ई प्रयास कवि केदार काननक अनवरत अनुरोध, आग्रह आ सहयोगक प्रतिफल थिक। तें एकर सम्पूर्ण श्रेयक अधिकारी वैह छथि। पोथी-पत्रिकाक विक्रयक चिन्तनीय स्थितिसँ हमरा चिन्तित देखि ओ लिखलनि जे आब साहित्यकार, साहित्यप्रेमी एवं पाठक वर्ग पोथी कीन' लागल छथि आ एक पोथीक लागत ओसूलि, दोसर पोथी छपयबाक खर्च बहार कैल जा सकैछ। हुनक ई विश्वास सार्थक सिद्ध होनि तदर्थ हमर शुभकामना।

विजयादशमी, 1995 **कीर्त्तिनारायण मिश्र**

दोसर संस्करणक प्रसंग

हमर प्रथम संस्मरण संकलन 'अपन एकान्तमे'क प्रकाशन किसुन संकल्प लोक, सुपौलसँ श्री केदार कानन जीक सौजन्यसँ 1995मे भेल छल। ओकर प्रति सभ एहि दीर्घ अवधिमे समाप्त भ' गेलैक आ ओकर दोसर संस्करण आवश्यक बुझना गेल।

कालान्तरमे किछु आओर संस्मरण लिखायल। ओकरा दोसर संकलनक रूपमे 'स्मृति-यात्रा'क नामसँ छपयबाक लेल केदार काननकें पठा देलियनि। ओ संस्मरण सभ पढ़ि प्रसन्नता व्यक्त करैत सुझाव देलनि जे 'अपन एकान्तमे' एवं 'स्मृति-यात्रा'कें मिला कए संस्मरण सभक संख्या 35-36 भ' जाइत अछि, मुदा वयसक्रमकें ध्यानमे राखि संस्मृत विभूति सभकें पुनः संयोजित कैल जायब आवश्यक। दुनू पोथीकें मिला कए 'स्मृतियात्राक एकान्त' अथवा 'स्मृतियात्राक एकान्तमे' नाम दए छपाओल जाए। हम प्रदीप बिहारी जीसँ सम्पर्क कैलियनि त ओ केदार काननक विचारसँ सहमति जतौलनि।

प्रदीप बिहारी जी एवं एहि पोथीक संपादक केदार कानन जी हमर मित्र आ स्नेहभाजन छथि। दुनूक प्रति हम कृतज्ञ छी।

कीर्त्तिनारायण मिश्र

01 फरवरी 2018

रचनाक्रम

मिथिलाक ज्योति-स्तम्भ
म.म. डॉ. श्री उमेश मिश्र

महामहोपाध्याय डॉ. श्री उमेश मिश्रक पहिला एवं अंतिम दर्शन हमरा 22 जून 1967 कें दरभंगामे हुनक निवास स्थान पर भेल छल। संगमे छलाह कविवर श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमर एवं हमर कवि-मित्र श्री रमानन्दन 'रेणु'।

महामहोपाध्याय जी चौकी पर बैसल छलाह आ हुनका घेरने छलथिन्ह अनेकानेक दर्शनार्थी। हुनक सुपुत्र श्री विजयकान्त मिश्र आगत व्यक्ति सभक स्वागतमे लागल छलाह।

श्रद्धेय श्री अमरजी महामहोपाध्यायजीकें हमर परिचय देलथिन्ह। हमरा कुर्सी पर बैस' केर संकेत करैत कुशल-क्षेम पूछ' लगलाह तँ हुनक शब्द अपरिचितक प्रति औपचारिकता जकाँ नहि, स्वजन-आत्मीय प्रति ममतामय सहज अनुराग जकाँ बुझना गेला। एक क्षणक लेल बुझाएल जे प्रवाससँ फिरलाक बाद अपन दलान पर अपन पितामह ल'गमे बैसल छी आ ओ स्नेह-विगलित भ' हालचाल पूछि रहल छथि।

हम श्रद्धावनत भए ससंकोच अपन पहिल काव्य-पुस्तक 'सीमान्त' हुनका समर्पित कैलियनि तँ ओ ओकरा हाथमे लैत प्रसन्न भ' उठलाह। ओकरा उनटा-पुनटाकें देखैत ओ बजलाह–'बड़ प्रसन्नता भेल जे अहाँ मैथिलीक श्रीवृद्धिमे लागल छी आ एहन नीक पोथी बहार कैलहुँ। अहाँ सभ उच्चकोटिक साहित्यक निर्माण करू जाहिसँ आन-आन भाषावलाक ध्यान मैथिली दिस आकृष्ट हो एवं बेशीसँ बेशी भारत तथा बाहरक विद्वान ओकरा पढ़थु। ई दुःखक विषय जे गंभीर साहित्य मैथिलीमे नहिञे जकाँ लिखल गेल अछि। एहन कवि-लेखक मैथिलीमे बड़ कम भेल छथि जिनक साहित्य बेर-बेर पढ़बाक इच्छा हो एवं सभ बेर किछु-न-किछु नवीन तत्व प्राप्त होअए।'

हम कहलियनि–'विद्यापति तँ बहुत पढ़ल गेल छथि। एखनहुँ हुनक लोकप्रियता कम नहि भेल छनि।'

ओ हमरा दिस तकैत बाजलाह–'ओना विद्यापतिक कवित्व आ लोकप्रियतामे सन्देह नहि कैल जा सकैछ मुदा, हुनक कविता जाहि अनुपातमे पाठकक मनोरंजन करैत छैक, ओकरा श्रृंगार रसमे डुबबैत छैक एवं भक्तिक सुरसरिमे अवगाहन कराबैत छैक, ताहि अनुपातमे ओ ओकर चिन्तनकें नहि उभारैत छैक, बौद्धिक विवेचनक हेतु पृष्ठभूमि नहि दैत छैक, आ ने तत्वक उपलब्धि कराबैत छैक। ई अभाव हमरा जनैत हुनक अक्षमता नहि, विवशता छलनि। दरबारी कवि होयबाक कारण जेना हुनक व्यक्तित्व कोष्ठ-बद्ध भ' गेल छलनि, ताहिना अभिव्यक्तियो सीमाबद्ध। स्वतंत्र-स्वच्छन्द चिन्तनक पर्याप्त अवकाश हुनका नहि भेटलनि आ ने हुनक परिस्थितिमे ककरो भेटि सकैत छलैक। आश्रयदाताक रुचि-अरुचि हर्ष-विवादसँ नियंत्रित होअएवला लेखन सामान्य जनक सुख-दुख एवं अनुभूतिक अभिव्यक्ति नहि क' पबैत छैक।' हम पुछलियनि–'विद्यापतिक समकालीन एवं परवर्ती लेखकक संख्यामे ज्ञात रूपमे अत्यल्प अछि तथा कतेक सय वर्ष धरि कोनो महान प्रतिभा मैथिलीमे उत्पन्न नहि भेल-तकर की कारण?'

ओ बाजलाह–'भारतवर्षमे सर्वाधिक संस्कृतक उपासक मिथिलेमे भेलाह। मिथिलाक प्रतिभा सम्पन्न लेखक एवं विद्वान लोकनि गंभीर चिंतनमे रुचि लैत छलाह। वेद, पुराण, उपनिषद, नैषध एवं दर्शनक गूढ़ तत्व केर व्याख्या अत्यधिक भेल, भाष्य एवं टीका-पर-टीका लिखल गेल। सभ संस्कृतमे। मैथिली मातृभाषा होइतो, अभिव्यक्तिक माध्यमक रूपमे नहि प्रयुक्त भेल। कविता अथवा कथा-पिहानीमे विद्वान लेखक वर्गकें अनुराग छलनि। दोसर बात मैथिली जनभाषा छल, साहित्यक भाषा नहि। साहित्यक भाषा त' संस्कृते रहल। जनभाषा मैथिलीमे लोक-जीवनक सुख-दुख, सिनेह-प्रेम, लोक-गीतक माध्यमसँ अभिव्यक्त भेल जे कागतसँ बेशी कंठमे स्थान पौलक। स्वयं विद्यापति एतेक लोकप्रिय एहि कारणसँ छथि। हुनक समकालीन एवं परवर्त्ती कवि सभक रचना सभ एखनहुँ पूर्णतया संकलित नहि भेल अछि। कठिन अनुसंधान एवं कठोर परिश्रमक बादे मैथिली इतिहासक प्रामाणिक रूपरेखा प्रस्तुत भ' सकत। यद्यपि एखन धरि ज्ञात सभ लेखक विद्यापति जकाँ महत्वपूर्ण नहि भ' सकलाह तथापि ई कहब अनुचित हैत जे परवर्त्ती साहित्यकार लोकनिक अवदान कम महत्वपूर्ण छनि।'

हम अंतिम प्रश्न कैलियनि–'मैथिली भाषा एवं साहित्यक वर्तमान गतिविधिसँ की अपनेकें संतोष अछि?'

हुनक उत्तर छलनि–'अपन समाज एखनहुँ बड़ पछुआयल अछि। कल्पनाशक्ति एवं कार्यशक्तिमे सामंजस्य नहि छैक। लोक एखनहुँ निद्रामे छथि। कर्मठता आ तत्परताक अभाव छैक। भाषा-साहित्यक विकास एहि तरहें संभव नहि। आन-आन भाषा-भाषी, ओकर संस्था, विद्यार्थीवर्ग तथा साहित्यकारमे उत्साह छनि से मैथिली भाषीमे नहि। अपन समाज एखनहुँ छिद्रान्वेषण तथा रागद्वेषमे लिप्त अछि। विद्यार्थीवर्गमे अध्ययनशीलता आओर जिज्ञासाक मात्रा कम छनि, साहित्यकार लोकनि, गंभीर मौलिक लेखन दिस कम ध्यान दैत छथि, संस्था सभक कार्यकर्त्ता लोकनि भोजन-भाषणमे लिप्त छथि। अंग्रेजी अथवा आन भाषाक कोनो पोथी देखैत छी तँ होइत अछि-अपन मैथिलीयोमे एहन पोथी बहार भ' सकितय। मुदा आब हमरा चाहलासँ की हैत? अहाँ लोकनि नवयुवक छी। कार्य करबाक वयस अछि। जा धरि अहाँ लोकनि एहि दिशामे आगाँ नहि बढ़ब, नीक साहित्यक रचना नहि करब, गूढ़ भावकें कवितामे नहि आनब, युगानुकूल शिल्पक अनुसंधान नहि करब ता धरि साहित्य एहिना उपेक्षित रहत। अपन देशक संस्कृति, दर्शन तथा साहित्य बड़ समृद्ध अछि। नवयुवकक लेल एहि समृद्ध परम्पराक ज्ञान राखब आवश्यक। तखनहि तत्वपूर्ण गंभीर लेखन दिस प्रवृत्त भ' सकब।'

हमरा अपना दिस ध्यानमग्न देखि ओ उत्साहित करैत बाजलाह–'भिनसरमे सात बजेसँ नओ बजे धरि हम बाहरसँ आयल पोथी, पत्र-पत्रिका एवं चिट्ठी-पत्रीकें देखैत छी आ संबद्ध व्यक्तिकें पठयबाक हेतु हम अपन अभिमत लिखबा दैत छी। काल्हि भिनसर अहाँक पोथी पढ़ि अपन विचार लिखबा कए पठबा देब।'

हुनक विशाल व्यक्तित्व, प्रकाण्ड पाण्डित्य एवं ख्याति तथा अगाध स्नेहयुक्त हृदय हमरा पहिनहिसँ विमुग्ध कैने छल, साहित्यक सम्बन्धमे हुनक सुचिंतित मत तथा निर्भीक विचार विस्मित क' देलक, हम विस्फारित नेत्रसँ हुनका देखि रहल छलियनि आ ओ स्थितप्रज्ञ जकाँ हमरा बुझा रहल छलाह।

वार्त्तालापक क्रममे, ओ कहलनि–'भारतीय दर्शनक इतिहासक तेसर खण्ड प्रकाशितव्य अछि। सभ मिलाकए आठ अथवा दश खण्ड हेतैक। आओर कतेक रास काज हाथमे अछि।'

वृद्धावस्थोमे महामहोपाध्यायजी तरुणावस्थाक उत्साहसँ अपन बहुविध कार्यक सम्पादन पूर्ण तन्मयताक संग क' रहल छलाह। अनेक संस्थाक कार्यभार हुनका पर छलनि, अनेक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यक निर्वहन कर' पड़ैत छलनि तथापि नित्यकृत्य आ स्वाध्यायक लेल निर्धारित समयमे व्यतिक्रम नहि आब' दैत छलाह। साठिक बाद गंगाजल-पान आ 'त्रिवेणी-स्नान' सेहो अव्याहत रहलनि।

लेखन, सम्पादन, शोध-निर्देशनसँ ल' कए सामाजिक-पारिवारिक समस्या आ धार्मिक अनुष्ठान सभमे ओ समान रूपसँ रुचि लैत रहलाह। खाहे देश-विदेशक विद्वान आ दर्शनिक होथि अथवा अपन देस-कोसक छात्र आ अध्यापक-सभकें ओ अकुंठ स्नेह दैत रहलाह। ज्योति-स्तम्भ बनि सम्पूर्ण मिथिले नहि, सम्पूर्ण भारतकें आलोकित करैत रहलाह।

ई हमर सौभाग्य छल जे म. म. डॉ. मिश्र जी केर दर्शनसँ पूर्वहिसँ हुनक योग्य ज्येष्ठ पुत्र एवं 'मिथिला-मैथिलीक यायावर भविष्य-द्रष्टा' डॉ. श्री जयकान्त मिश्रजीसँ परिचय छल, डॉ. श्री सुधाकान्त मिश्रसँ 'बटुक' तथा प्रो. डॉ. कृष्णकान्त मिश्रसँ 'वैदेही'क माध्यमसँ सम्पर्क छल, श्री रमाकान्त मिश्र जीसँ इलाहाबादमे आ श्री विजयकान्त मिश्र जीसँ दरभंगामे परिचित भेल छलहुँ। एहि तरहें, श्री प्रभाकान्त मिश्र जीकें छोड़ि, हुनक शेष पाँचो सुपुत्र हमरा पहिनहिसँ चिन्हैत छलाह तथापि महामहोपाध्याय जीक दर्शनक सुयोग पहिने नहि भेटल आ जहिया भेटल तकर ठीक अढ़ाइ मासक अभ्यंतर ओ दिवंगत् भ' गेलाह। हम ओहि मनीषीसँ प्रत्यक्ष रूपें किछु सीख'सँ वंचित रहि गेलहुँ।

म.म. डॉ. श्री मिश्र ब्राह्मणोचित आचारक कतेक निष्ठापूर्वक पालन करैत छलाह से अपन बाबासँ सुनने छलहुँ, व्याकरण-वेदान्त आ नव्यन्यायक प्रख्यात विद्वान पिता षड्दर्शनक आधिकारिक विद्वान एवं व्याख्याता तथा 'भारतीय दर्शन'क लेखकक रूपमे हुनक परिचय दैत 'भारतीय दर्शन'क एक प्रति देने छलाह आ कहने छलाह—कविताक अंतिम परिणति दर्शन थिकैक। अहाँ जँ भारतीय दर्शनसँ परिचित होमय चाहैत छी, एहि पोथीकें मनोयोगपूर्वक पढ़ू आ जतय कोनो शंका होअए हमरासँ पूछू। पितृव्य कहने छलाह जे 1943मे म.म. श्री मिश्र संस्कृत शिक्षा सुधारक लेल बनाओल गेल कमिटीक अध्यक्ष मनोनीत भेल छलाह, प्राच्य विद्याकें जीवित राखबाक जे स्वप्न डॉ. सर गंगानाथ झा देखने छलाह तकरा मूर्त रूप म.म. मिश्रे देलनि, 1949मे जखन मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टीच्यूटक स्थापना भेल, तखन महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह जी हिनके प्रथम निदेशक बनौलथिन्ह आ जखन कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना भेल त' यैह एकर प्रथम कुलपति बनाओल गेलाह।

म.म. डॉ. मिश्रजीक अनेकानेक मौलिक, अनुदित तथा संकलित-सम्पादित ग्रन्थ आ निबन्ध संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी एवं मैथिलीमे छनि जकर सूची मित्रवर डॉ. सुधाकान्तजीक सौजन्यसँ प्राप्त भेल अछि मुदा, नहि जानि कलकत्ताक अपन अति व्यस्त जीवनमे ओहि सभ ग्रन्थ-निबन्धक अवलोकन-अध्ययनक लेल कहिया धरि समय बहार क' सकब?

कतहु पढ़ने रही जे महान् व्यक्तिक दर्शन-सम्पर्को लोककें आत्मिक-बौद्धिक सम्पन्नता प्रदान क' महान कार्य कर'क प्रेरणा दैत छैक। एकर पहिल अनुभव हमरा कलकत्तामे डॉ. सुनीति कुमार चाटुर्ज्याक दर्शनक बाद भेल छल। दोसर बेर म.म. डॉ. श्री मिश्र एकर अनुभव करौलनि। ई दुनू महानुभाव आजीवन 'चरैवेति-चरैवेति'क सिद्धान्तक पालन करैत मृत्यु वरण कर' सँ पूर्वधरि गतिशील, सक्रिय आ सृजनरत रहलाह। किन्तु, हम त' औदरिक परिक्रमेमे सम्पूर्ण शक्तिक अपव्यय क' रहल छी। की कहियो ई संभव हैत जे एहि दुनू विभूतिसँ प्राप्त ज्योति-स्फुलिंगसँ अविद्याक मारान्तक अन्धकारमे डूबल अपन आत्माकें मुक्ति दिआ सकब अथवा अपन जीवनकें सृजन-सुखक आनन्दोत्सवमे परिणत क' सकब?

रचनाकाल—20.10.1967

टिप्पणी :- ई संस्मरण मैथिली मासिक 'आखर'क लेल लिखल गेल छल किन्तु पाण्डुलिपि पोथी-पत्रिकाक अम्बारमे अलोपि गेल। प्रायः 32-33 वर्षक बाद ओहि अम्बारकें सरिआब'क क्रममे एकाएक प्रकट भेल।

साहित्यक उद्यानपाल आचार्य श्री रमानाथ झा

1965 मे राजकमल जीक एकटा लेख—'हमरालोकनिक युग आ मैथिली कविता' मिथिला मिहिरक उनतीस अगस्तक अंकमे छपल रहनि। हम अपन प्रतिक्रिया हुनका पठौलियनि। उत्तरमे ओ लिखलनि—अहाँ हिन्दीमे मैथिली पर (ओहिसँ किछु मास पूर्व 'ज्ञानोदय'मे मैथिली लोकगीत एवं कविता पर हमर एकटा परिचयात्मक लेख छपल छल) लिखैत छी, मैथिलीमे आधुनिक कविता पर लिखू। हम हुनका लिखलियनि—मैथिलीक आधुनिक काव्य प्रवृत्ति पर लिख'सँ पहिने समस्त पुरान आ नव कविताक अध्ययन आवश्यक—से सामग्रीक अभावमे संभव नहि। ओ पुनः आदेश देलनि जे गाम गेलापर हम दरभंगा जाइ आ प्रो. रमानाथ झाजी सँ सम्पर्क करी तथा ग्रंथालयक माध्यमसँ सामग्री जुटयबाक प्रयास करी।

किछु मासक बाद किसुन जीक पत्र भेटल। हुनको आग्रह छल जे नव कविता पर लेख लिखि संभावित सेमिनारक लेल पठा दिअनि।

अपन एहि वरेण्यक आदेशक पालनक लेल आवश्यक पोथी जुटाएब, पढ़ब आ लेख लिखब अनिवार्य भ' गेल।

दरभंगा गेला पर ज्ञात भेल जे श्रद्धेय रमानाथ बाबू बाहर गेल छथि। श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' सँ परिचय करौलनि। ग्रंथालयक बहुतरास कविता केर एवं कविता पर पोथी प्राप्त भेल। रमानाथ झाजी द्वारा सम्पादित मैथिली काव्य-संग्रहक तीनू खण्ड एवं आन-आन सम्पादित-संकलित ग्रंथ सभ उपलब्ध करा देल गेल।

प्रायः दू मासक अविश्रान्त अध्ययनक बाद जखन लिख' बैसलहुँ त' मैथिली कविताक सम्पूर्ण पृष्ठभूमि, परम्परा, रूढ़ि, प्रकृति एवं वर्तमान स्थितिपर अपन विश्लेषणात्मक भूमिकाक संग रमानाथ बाबू द्वारा सम्पादित पोथी सभसँ बड़ मदति भेटल छल।

हमर लेख तैयार भेल आ सुपौलक सेमिनारमे पढ़ल गेल (पछाति ओ थोड़ेक विस्तारक संग 'सीमान्त'क भूमिकाक रूपमे छपल)। हम 'नवीन गीत'क भूमिका तथा रमानाथ बाबू द्वारा नवीन कविताक चयनमे अपनाओल दृष्टिकोणसँ ततेक प्रभावित भेल छलहुँ, जे अपन पहिल पोथी छपयबासँ पूर्व हुनकासँ परामर्श लेब आवश्यक बुझना गेल छल। किन्तु से सम्भव नहि भ' सकल। हुनक पाण्डित्य, शोध-कार्य, मैथिली-सेवा, भाषामे एकरूपता आन'क लेल कैल गेल प्रयास, दुर्लभ पाण्डुलिपि सभक संकलन, पुनरुद्धारक लेल उठाओल कष्ट सभक अन्दाज ओही अवधिमे लागल छल। हुनका पढ़ैत भेल छल जे साहित्यमे मूर्धन्यता मात्र मौलिक लेखनेक बलपर नहि प्राप्त कैल जा सकैछ, बहुतरास काज एकर अतिरिक्तो एहन छैक जकरा प्रति समर्पित भए व्यक्ति अपन सार्थकता, महानीयता सिद्ध क' सकैत अछि।

'सीमान्त' छपला पर जखन हुनका प्रति पठौलियनि त' हुनक प्रतिक्रिया छल—अहाँक पत्र नेपालसँ फिरला उत्तर भेटल। ताहिसँ दू दिन पूर्व श्रीरेणुजी अहाँक पोथी दए गेल छलाह। मुदा हम त' गत मासहि श्री महेन्द्र नारायणजीसँ समाचार बूझि जे अहाँक कविता-संग्रह प्रकाशित भेल अछि, ग्रंथालयसँ एकप्रति आनि पढ़ि गेल छलहुँ। श्री रेणु जीक देल पोथी तकरहु पढ़ि गेल छलहुँ। आइ पुनः एकबेर पढ़ल अछि। अशेष अभिनन्दन जे एहन सुन्दर पोथी छपाओल अछि, अनेक संवर्धना जे एहन सुन्दर कविता रचल अछि, हार्दिक शुभकामना जे अहाँक प्रतिभाक विकास हो, उत्साह स्थिर रहए, यशस्वी होइ।

भवदीय

श्री रमानाथ झा

हुनका सन निविष्ट विद्वान एवं काव्य-मीमांसकसँ एहन उत्साहवर्द्धक पत्र पाबि प्रसन्नताक अनुभव करब स्वाभाविक छल, किन्तु हमरा लेल सभसँ महत्वपूर्ण छल अकविताक अपन अवधारणाक प्रति हुनक प्रतिक्रिया जानब एवं हुनकासँ ओहि समयमे प्रचलित 'एन्टी-पोयट्री' पर विस्तारसँ चर्चा करब, यूरोप एवं अमेरिकामे 'क्लासिक्स'क विरुद्ध चलैत आन्दोलनक पृष्ठभूमिकें बूझब, सम्पन्न एवं गरीब देशक (आजुक शब्दावलीमे विकसित एवं विकासशील देशक) आधुनिकता तथा आधुनिक बोध केर भावनात्मक, बौद्धिक एवं संरचनात्मक भिन्नताकें सम्बद्ध देशक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक अवस्थितिक परिप्रेक्ष्यमे ओकर चिन्ताधारासँ विशद रूपमे परिचित होयब।

ओ प्रायः यात्रा पर रहैत छलाह। पत्राचार कए साक्षात्कारक लेल पूर्वानुमति लेब संभव नहि छल। श्री रमेन्द्र नारायण चौधरी, सोमदेव जी एवं रेणु जी—तीनूकें भार देने रहियनि जे ओ जखन दरभंगा फिरथि, हमरा लगले बजा लेल जाय।

हम दरभंगा पहुँचैत छी आ ग्रंथालयसँ होइत भिनसुरके पहर हुनक बासा राजकुमारगंज पहुँचि जाइत छी। ओ पूजापर बैसल रहथि आ जाप क' रहल छलथि। एक व्यक्ति बाहर आबि हमर परिचय पूछैत छथि आ आदरपूर्वक भीतर ल' जाइत छथि। ओ व्यक्ति छलाह आचार्य जीक सुपुत्र डॉ. नरनाथ झा जे डी.एस. कॉलेज, कटिहारमे प्राध्यापक छलाह। हुनका हम अपन अयबाक उद्देश्य कहैत छियनि। ओ आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य करैत आश्वासन दैत छथि जे साक्षात्कार अवश्य हैत।

ओ पूजा परसँ उठितहि 'बैसक'मे अयलाह एवं हमर श्रद्धा-ज्ञापनकें आशीर्वादार्द्र कैलनि।

बड़ीकाल धरि अत्यन्त धैर्यपूर्वक परम्परा, पारम्परिक एवं आधुनिक कविता, आधुनिकता एवं नव कविताक सम्बन्धमे हमर विचार, मान्यता, जिज्ञासा एवं प्रश्नकें सुनैत बीच-बीचमे अपन अभिमतसँ अवगत कराबैत रहलाह।

अपन अधिकांश मान्यताक प्रति हुनक सहमति हमरा लेल आश्चर्यक विषय छल। मात्र पुरनके पीढ़ीक नहि, नवको पीढ़ीक कवि-लेखक नव कविता, अकविता तथा सीमान्तक भूमिका पर अपन तीव्र विरोध प्रकट क' रहल छलाह, ओतय रमानाथ बाबूक अनुकूल प्रतिक्रिया बड़का संतोष देलक।

'आखर' बहार करबाक योजना बनल। ओकरा नव लेखन एवं नव लेखकक मंचक रूपमे प्रस्तुत करैत नव हस्ताक्षरकें प्रमुखतासँ स्थान देबाक निर्णय भेल, किन्तु मैथिलीक मान्यताक लेल कतेक वर्षसँ चलि रहल आन्दोलनमे बिना सहयोग देने, कोनो साहित्यिक दायित्वक निर्वाहक बात सोचब निरर्थक छल। ओकर लक्ष्य उद्घोषित कैल गेल–'आखर नव जागरणक प्रतीक बनि सकय तें एकर एक हाथमे भाषा-आन्दोलनक ध्वजदण्ड तथा दोसर हाथमे साहित्य-लेखनक कलम देल गेल अछि। स्वस्थ आन्दोलन, उत्कृष्ट लेखन तथा जीवन्त परम्पराक स्थापन एकर अभीष्ट।' ('आखर'क प्रवेशांकक सम्पादकीय केर अंश)

मैथिली आन्दोलनकें नेतृत्व प्रदान कर' बला आ ओहि संघर्षमे महत्वपूर्ण योगदान दिअ' बला किछु शीर्षस्थ व्यक्तिक नामक सूची तैयार कैल गेल। किछु ओहनो व्यक्ति तथा संस्थाक नाम लिखल गेल, जिनक प्रत्यक्ष भूमिका न्यून छलनि, किन्तु अपन कृतित्व आ सामाजिक प्रभावसँ मैथिलीक प्रचारमे सहयोग क' रहल छलथि। ओहि सूचीमे आचार्य रमानाथ झाक नाम प्रथम छलनि। हम हुनकासँ मैथिली आन्दोलनक रूपरेखासँ परिचित कराब' बला लेख लिखि प्रवेशांकक लेल पठयबाक अनुरोध कयलियनि एवं सूचीबद्ध सभ वरिष्ठ मैथिली सेवी एवं मैथिलीक

हितसाधनमे लागल विद्वानकें व्यक्तिगत पत्र पठा रचनाक लेल आग्रह कैलियनि।

प्रो. श्री रमानाथ झा तत्काल अपन विचार लिपिबद्ध कए पठा देलनि। संलग्न पत्रमे लिखल छल–

सी.एम. कॉलेज, दरभंगा

प्रियवर श्री कीर्त्तिनारायण जी, 18.09.1967

हम दिल्ली गेल छलहुँ–ओतयसँ आपस भेला पर अहाँक पत्र भेटल। आदेशानुसार मैथिलीक आन्दोलन पर अपन विचार पाँच पातमे लिखि पठाए रहल छी।

जहिया जाहि विषय पर जतेक टा जेहन लेख मांगब हम तुरन्त पठा देब। कलकत्ताक मित्रवर्गक हम तेहन गुणविमुग्ध छी जे सबसँ पूर्व हमरा हेतु हुनके आदेश पालनीय होइत अछि।

एहि लेखमे प्रतिक्रियाक बड़ अवकाश छैक से देखबे करबैक। हम बड़ संयत भाषामे लिखल अछि ओ व्यक्तिगत आक्षेप कतहु नहि कएल अछि। पसिन्द अएबे करत।

संभव एक दिनक हेतु कलकत्ता आबी। अहाँकें त' प्रायः सूचना नहि दए सकब मुदा श्री पाठक जीक दर्शनार्थ शम्भु चटर्जी स्ट्रीट तथा महेन्द्र जीक दर्शनार्थ रामकुमार रक्षित लेन अवश्य जाएब।

बहुतरास काज हाथकें लए लेल अछि तें समय नहि बचैत अछि। अतएव पत्रोत्तरमे जँ विलम्ब हो तँ अन्यथा नहि मानब। एकटा आओर लेख प्रायः पठाए सकब–प्रो. श्री शंकर कुमार झाक। ओ वचन देलैन्हि अछि। हँ, लेख केवल उत्तम रहए से देखब। मिहिर वा दर्शन जकाँ नहि।

भवदीय

कुशलाकांक्षी

श्री रमानाथ झा

हुनक ओ महत्वपूर्ण लेख आखरक प्रवेशांकमे 'परिचर्चा' स्तम्भक अन्तर्गत छापल गेल छल। ओहि पर प्राप्त प्रतिक्रियामे ओकरा 'मैथिली आन्दोलनक दस्तावेज' कहल गेल छलैक। ओ ओहिमे मैथिलीकें अनेक उपभाषासँ युक्त समृद्ध साहित्यिक परम्परा बला एक स्वतंत्र भाषा सिद्ध करैत, ओकरा विरुद्ध चलैत सरकारी एवं राजनीतिक दुष्प्रचारमे अन्तर्निहित स्वार्थ पर प्रहार करैत दू कोटिसँ बेशी मैथिली भाषीकें एकताबद्ध भए आन्दोलनक लेल आह्वान कैने छलाह। ओहिसँ पूर्व हुनक एकटा पुस्तिका छपल रहनि जाहिमे साहित्य अकादेमी द्वारा

मान्यताप्राप्त मैथिलीक तत्कालीन समस्या पर अपन विचार आओर समाधान प्रस्तुत कैने छलाह।

'साहित्य पत्र'क माध्यमसँ मैथिलीक लेखनशैलीमे एकरूपता आन'क लेल किछु विद्वानसँ विचार-विमर्श कए ओ एकटा अभियान चलौने रहथि किन्तु, समस्त विद्वत्वर्ग द्वारा ओकरा समर्थन नहि भेटलैक आ ओ किछु विद्वानक व्यक्तिगत लेखन-शैली बनि कए रहि गेल। रमानाथ बाबू स्वयं ओकर कठोरतासँ पालन करैत रहथि। हुनका ई स्वीकार नहि रहनि जे हुनक लेखमे वर्त्तनी-सम्बन्धी कोनो परिवर्तन कैल जाय। ओ अपन रचनाक संग पठाओल पत्रमे सभकें लिखि दैत रहथि जे एकरा यथावत छापल जाय। एहन पत्र अपन लेखक संग ओ हमरो पठौने रहथि।

भाषा अथवा वर्त्तनी सम्बन्धी कोनो सुविचारित मानदण्ड वा सर्वसम्मत रूप हमरा सभक समक्ष नहि रहए किन्तु, आखरक लेल ई निर्णय लेल गेल छल जे अधिकांश लोक जेना बाजैत छथि, ओकर साहित्यिक रूप आ अधिकांश लेखक-विद्वान द्वारा अपनाओल शैलीक आधार पर वर्तनी सम्बन्धी एकरूपता आनबाक प्रयास कैल जाय। एहि निर्णयक आधार पर जेना आन-आन रचनाकें संशोधित कए प्रेस-कॉपी तैयार कैल जाइत रहैक, तहिना रमानाथ बाबूक लेखमे सेहो परिवर्त्तन क' देल गेलैक। मिथिला मिहिर हुनक आपत्तिकें ध्यानमे राखि सम्पादकीय नोट द' दैत छल जे लेखकक आदेशानुसार लेखकें यथावत छापल जा रहल अछि किन्तु, आखर एहि शालीनताक निर्वाह नहि क' सकल। पहिल अंक बहरायल। ओहि अवधिमे आचार्य जीक आगमन भेल। संयोगवश हम कलकत्तासँ बाहर गेल रही। आखर-परिवार तत्काल हुनक सम्मानमे गोष्ठी आयोजित कैलक आ प्रवेशांक समर्पित कैलकनि। अंकक पहिल रचना हुनके रहनि। ओ ओकरा पढ़ि गम्भीर भ' गेलाह। निश्चित रूपसँ सम्पादकीय धृष्टताक प्रति आक्रोश उत्पन्न भेल हेतनि। हम सभ पहिनहिसँ आशंकित रही। किन्तु, ओ अत्यन्त सहज मुद्रामे संशोधित वर्त्तनीकें तेरह अथवा सतरह ठाम रेखांकित कए उपस्थित सदस्यलोकनिकें देखौलथिन आ कहलथिन जे हमर स्पष्ट आदेशक बादो लेखमे एतेक ठाम संशोधन क' देल गेल अछि। पहिल पृष्ठ पर ओ हमरा लेल संदेश लिखि कए छोड़ि देलनि।

कलकत्ता अयला पर हुनक अप्रसन्नता एवं प्रतिक्रियासँ अवगत भेलहुँ। ई तँ प्रत्याशिते छल। यद्यपि कोनो संशोधन निर्धारित नीतिक अन्तर्गत खूब सोचि-विचारिक' कैल गेल छल तथापि हमरा अपराध-बोध भेल। प्रयोग करब बेजाय नहि छल किन्तु रमानाथ बाबू सन वरेण्य विद्वान, रचनाकार तथा विभिन्न लेखनशैली पर पूर्ण

विचार कयलाक बाद कोनो पद्धति चालू कर' वला भाषाशास्त्रीसँ पूर्वानुमति लेब आवश्यक छल। हम अपन नीतिक दृढ़तापूर्वक पक्ष प्रस्तुत करैत पूर्वानुमतिक बिना शब्दक रूपमे परिवर्त्तनक लेल क्षमायाचना करैत सहयोग दैत रहबाक आग्रह कैलियनि। उत्तरमे ओ लिखलनि—

राजकुमारगंज, दरभंगा

प्रियवर श्री कीर्त्तिनारायण जी, 29.11.1967

अहाँक 24क पत्र राति राँचीसँ आपस भेला पर भेटल। अहीं टा के नहि, हमरहु बड़ मनोहानि भेल जे अहाँसँ भेंट नहि भेल। अपन प्रतिक्रिया हम स्पष्ट शब्दमे 'आखर-परिवार'क सभामे कहल। स्पष्ट कहल ओ स्पष्टवक्ता न वञ्चकः। जे मोनमे भेल से सभ टा कहल। सेवाक हेतु सतत तैयार छी परन्तु एकहि व्यक्तिक लेख बारम्बार नहि छापल करू, सेहो विचार कहि देल। ओना हमरासँ जहिया जाहि विषय पर जतेक टा जेहन लेख कहब, हम लीखि पठाए देब। कनेको संदेह नहि करू जे हम मोनमे किछु राखि कहल। भविष्यक हेतु सावधान करबाक हेतु ओहि अंककें सत्ये अंकित कए राखि देल जे हमर सौहार्द्रक चेन्ह रहए। भाषाक संग श्री राजनन्दन जीकें बहुतरास गप्प कहलिऐन्हि ओ दू टा पोथीक नाम कहि देलिऐन्हि जे पढ़थु—बहुतरास शंकाक समाधान भए जयतैन्हि। अतएव हमर सेवाक हेतु निश्चिन्त रहू। अहीं लोकनिक भरोस अछि मुदा चाहैत छी जे अहाँ लोकनि नवीनताक जोशमे भसिआए नहि जाइ तें अपन अनुभवसँ किछु वेगकें कम कर' चाहैत छी।

कुशलाकांक्षी

श्री रमानाथ

ई पत्र पढ़ि कए लागल छल जे ओ साधनाक जाहि स्तर पर पहुँचि गेल छथि ओतय क्रोध-आक्रोशक लेल कोनो स्थान नहि छैक, क्षमाशीलक लेल अनुकूल एवं प्रतिकूलमे अन्तर नहि रहि जाइत छैक।

हुनक सौहार्द्रक चेन्ह, हुनका द्वारा अंकित प्रवेशांकक ओहि पृष्ठक ब्लॉक बनवा कए अगिला अंकक कवर-पृष्ठ पर छाप' चाहैत छलहुँ किन्तु, आर्थिक कारणसँ से संभव नहि भेल। दुर्भाग्यवश आइ ओ प्रतिओ नहि भेटि रहल अछि।

आखरमे अशुद्धि बहुत रहैत छलैक। भाषा सम्बन्धी तथा हिन्दीआइन शब्दक प्रयोग सम्बन्धी दोष त' रहिते छलैक, प्रूफक अशुद्धि आओर अलंकृत क' दैत छलैक। 'युयुत्सा'क मैथिल कम्पोजीटर आखरोक कम्पोजिंग करैत छलाह। हुनका ज्ञात छलनि जे हम 'दछिनाहा' छी। हमर मैथिलीकें शुद्ध करब ओ अपन

अधिकार बूझैत छलाह। मित्रवर्गक मध्य कार्य-विभाजन एना छल-पहिल प्रूफ राजनन्दन जी देखताह, दोसर वीरेन्द्र जी एवं अंतिम हम। किन्तु सभसँ ऊपर कम्पोजीटर साहब रहथि। ओ फर्माकें मशीन पर चढ़बैत-चढ़बैत अपना हिसाबसँ संशोधन करैत रहब अपन मैथिली सेवा बूझैत रहथि। हम मित्रवर्गक मध्य 'आखर'कें परिहाससँ 'अशुद्धि-पत्र' कहैत छलियैक। दू-तीन अंकक बाद अशुद्धिमे कमी अयलैक। चारिम अंक रमानाथ बाबूकें भेटलनि त' ओ पत्र देलनि–

सी.एम. कॉलेज, दरभंगा

माननीय श्री कीर्त्तिनारायण जी, 20.02.1968

'आखर' भेटैत अछि। बड़ सन्तोष अछि, जे स्तरक रक्षा भए रहल अछि। अशुद्धि सेहो थोड़ भेल जाइत अछि। संस्मरण लिखबाक लगले फुरसति नहि अछि। मनमे रखने छी। अवसर होइतहि लीखिकें पठाए देब। तावत एकटा वक्तव्य प्रकाशनार्थ पठबैत छी। विषय ओहीसँ अवगत करब। काल्हिए दिल्लीसँ आएल छी। 7कें सिन्द्री जएबाक अछि। स्वास्थ्य ठीक नहि अछि, तथापि व्यस्तताक जीवन व्यतीत कए रहल छी। आश्वासन अछि, अहाँ सन सन साहित्यिकक सौहार्द्र।

भवदीय

श्री रमानाथ झा

आखर पर हुनक प्रोत्साहन एवं अनुशासन दुनूक प्रभाव पड़ल छलैक। हमरो ओ भाषाक अनवधानताक सम्बन्धमे बराबरि सावधान करैत रहथि।

डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क संग हमर मैत्री पारिवारिक अन्तरंगता धरि पहुँचि गेल छल किन्तु, ई ज्ञात नहि भेल छल जे ओ आचार्य श्री रमानाथ झासँ निर्देशन पाबि पीएच.डी. कैने छथि अथवा हुनक सम्बन्धी छथि। एक दिन वार्त्ताक क्रममे हम हुनका कहलियनि जे रमानाथ बाबू मिथिलाक बाहर मैथिलीक स्तम्भ मानल जाइत छथि, अपन कृतित्व आ मैथिली सेवाक बलपर ओ शिखर-पुरुष भ' गेल छथि किन्तु, दरभंगामे हुनक चर्चा शुरू भेला पर लोक विरोधमे बाज' लगैत छथि। ओ कहलनि–छैक त' इएह स्थिति किन्तु, ओ छैक ईर्ष्याक कारण। अवसरक ताकमे बैसल शत्रुक लेल हुनक साधना, पद, प्रतिष्ठा आ लोकप्रियता असहनीय छनि। ओ हुनक मनस्विता, मैथिलीक भण्डारकें भर'क लेल कैल गेल संघर्ष, योग्यता, कार्यक्षमता एवं पाण्डित्यकें स्वीकारि हुनक मूल्यांकन कर'क बदलामे हुनका विरुद्ध दुष्प्रचारमे लागल रहैत छथि। ओ एहि सभक परवाहि नहि कए अपन लक्ष्य-साधनमे लागल रहैत छथि। हुनका समक्ष बड़का लक्ष्य छनि, तें छोट बात अथवा निन्दा-स्तुति पर ध्यान नहि दैत छथि। हमरो लागल छल विरोधक मूल

कारण बेशी भाग लोकक हुनका प्रति ईर्ष्याभाव छैक। व्यक्तिगत रूपसँ हमरा हुनक नारिकेलसमाकार विराट व्यक्तित्वक आन्तरिक धवलता-ऋजुता-सरसता-मधुरता, युवावर्गक प्रति आदरभाव, उदारता सभ पर विचार कैला पर हुनका सन दोसर उदाहरण नहि भेटैत छल।

हुनक अध्ययन-वृत्ति, शोध-प्रवृत्ति, सत्यान्वेषणक रुचि, संस्कृत तथा अंग्रेजी साहित्यक वैदुष्य, अनुसंधान एवं समीक्षाक क्षेत्रमे अपनाओल वैज्ञानिक मानदण्ड आदिक जे थोड़-बहुत ज्ञान भेल छल, ओ अति सामान्य आ सूचनात्मक छल, गंभीर अध्ययनसँ नहि। हम हुनका द्वारा सम्पादित-संकलित पोथी-पत्रिका-प्रबन्धक सम्पादकीय तथा भूमिका पर एहि लेल दृष्टिपात कैने रही जे नव लेखन अथवा नव कविताक संबंधमे हुनक दृष्टिकोण जानि सकी; ओहि सभमे जे प्रयोजनीय आओर प्रासंगिक अछि, ओहिसँ अपनाकें परिचित करा सकी। हमर लक्ष्य कतबहु सीमित एवं स्वार्थ-प्रेरित छल, लाभ अशेष भेल। मैथिलीक हित-साधनक लेल हुनक चिन्ता, प्रयास आ विशाल योजनाक पता लागल। मैथिली कविता अथवा गीतक स्वरूप-निर्धारणक लेल कैल गेल हुनक काज जतेक आकर्षित कैलक ओहिसँ बेशी प्रभावोत्पादक लागल मैथिली गद्यकें प्रौढ़ बनयबाक लेल कैल गेल हुनक प्रयास। हुनक हरिश्चन्द्र उपाख्यान ऐतरेय ब्राह्मणक अथवा उदयन कथा कथासरित्सागरक अनुवाद नहि, मूलकें समक्ष राखि गद्य-सृजनक प्रयास लागल छल, जकर आदर्श रूप ओ वररुचि कथामे प्रस्तुत कैलनि। पुरुष-परीक्षाक भूमिका, विद्यापतिक व्यक्तित्वक निरुपण, विद्यापति-कालीन समाजक अध्ययन सभमे ओ अपन सत्यान्वेषी प्रवृत्ति एवं गवेषणाकें वैज्ञानिक आधार देबाक मानसिकताक परिचय देलनि। पंजिआड़क जीविकाक साधन पञ्जी साहित्यक अध्ययन-संकलन तथा ओकर वैज्ञानिक विश्लेषणक अतिरिक्त ओ स्वयं सहस्राधिक पृष्ठक लेखन कैलनि। हुनका पाँजिक आधार पर कवि विद्यापतिसँ बेशी श्रेष्ठ व्यक्ति विद्यापति लागैत छलथिन, हुनक पुरुषार्थ-साहित्य हुनका बेशी आकर्षित करैत छलनि।

हुनकामे विलक्षण बहुमुखी-प्रतिभा, दुर्धर्ष संकल्पशक्ति आ दुर्निवार कर्त्तव्यनिष्ठा छलनि, जकर बहुविध प्रयोग ओ मिथिलाक गौरवकें प्रकाशमे आन' तथा मैथिली साहित्यकें समृद्ध कर'मे कैलनि, हम हुनक प्रभामण्डलक जतबा टा अंश अथवा अंशसँ प्रभावित भेल छलहुँ, ओकरे निरतिशयता एवं विचारोत्तेजकता हमरा श्रद्धावनत आ सक्रिय कर'क लेल पर्याप्त छल।

महाकवि यात्री हुनका 'सारस्वत सरक मराल' एवं 'साहित्यक उद्यानपाल' कहि सम्बोधित कैने रहथि। ई दुनू सम्बोधन हुनका पर पूर्णतः सटीक तथा सार्थक सिद्ध भेल–

सारस्वत सरमे हे मराल!
हे साहित्यक उद्यानपाल!
तुअ तेज पाबि, ई मैथिलीक—
उत्फुल्ल जलज, दृढ़मूल नाल!

प्रकाशित—कर्णामृत, कलकत्ता : जनवरी-मार्च 1995

जन-जन केर हृदयसम्राट प्रो. हरिमोहन झा

संसारमे किछु एहन महान व्यक्ति होइत छथि, जे अपन जीवनकालेमे किंवदन्ती बनि जाइत छथि। मैथिलीक हास्य आ कथा सम्राट प्रो. हरिमोहन झा ओही कोटिक महान व्यक्तिमे अबैत छथि।

हमर परिवारमे बाजल त' मैथिली जाइत रहय किन्तु, चर्चा होइत छलनि संस्कृत आ हिन्दीक साहित्यकार सभक हुनकहि भाषामे। अपवादक रूपमे रहथि मैथिलीक स्व. भुवन जी, प्रो. हरिमोहन झा, यात्री जी एवं आरसी बाबू। कारण, स्व. भुवन जीसँ काका, प्रो. हरिमोहन झासँ पिता आ यात्री जीसँ घरक दुधमुँहा बच्चासँ ल' कए हमर वृद्ध पितामह धरिक मैत्री। आरसी बाबू हमर सम्पूर्ण क्षेत्र अथवा जिला-जैबारक प्रत्येक व्यक्तिक मित्र। हमर परिवार मात्र ओहि क्षेत्रमे अवस्थित छल, जतय आरसी बाबू पर एकछत्र मैत्रीक दाबी कयनिहारक संख्या अनगन्ती। लड़ाइ-झगड़ा, मामिला-मोकदमासँ दूर भाग' बला हमर परिवार हुनका पर दाबी कर'क साहस आइयो नहि क' सकैत अछि।

हमरा परिवारमे जोरसँ हँसल नहि जाइत छल, ठहक्का लगयबाक त' प्रश्ने नहि। हँसी केर मर्यादित होयब आवश्यक होइत छलैक—सेहो शास्त्रीय चर्चाक मध्य अपन आन्तरिक विनोद आ उद्गार प्रकट कर'क क्रममे। हमरा सन पढ़'सँ बेशी खेल'मे रुचि राख' बला बालकक लेल एहि गुरुगंभीर वातावरणमे मोसकिले-मोसकिल। सोचैत रही, पितामह 'बालोहं जगदानन्द...'क बदला 'वृद्धोहं जगदानन्द...' कियैक नहि सिखबैत रहथि।

एक दिन विद्यालयसँ घूरि कए अबैत छी कि दूरेसँ ठहक्का सुनाइ पड़ैत अछि। दू-चारि डेग चलैत छी कि फेर ठहक्का। आओर आगाँ बढ़ैत छी कि बुझाइत अछि, दरबाजा पर भीड़ लागल अछि। सीढ़ी पर पयर रखैत छी त' देखैत छी पर्दाक अ'ढ़मे माय-पितिआइन ठाढ़ि छथि। हम भीतर प्रवेश कए, पोथी राखि बाहर आबैत छी। देखैत छी, भैया 'वैदेही'सँ किछु पढ़ि रहल छथि आ परिवार तथा पड़ोसक लोक सभ सुनि-सुनि ठहक्का पाड़ि रहल छथि।

'वैदेही'क नवका अंकमे प्रो. हरिमोहन झाक कथा छपल रहनि। कातमे राखल छल 'कहानी'क अंक सभ, जाहिमे भैया द्वारा हिन्दीमे अनुवादित प्रोफेसर साहेबक अनेक कथा प्रकाशित भेल रहनि।

अनुवादक क्रममे भैया हरिमोहन बाबूक प्रियपात्र भ' गेल रहथि आ दुनूमे पत्र-व्यवहार होइत छलनि।

पटना कॉलेजक छात्र भेलाक बाद एक दिन एक गोट मित्रकें पूछैत छियैक–'अहाँ प्रोफेसर हरिमोहन झाकें देखने छियनि?' ओ कहैत अछि–'कियैक नहि देखबनि? अपन विभाग (अर्थशास्त्र)क सामनेसँ रोज जाइत छथि।' हम कहलियैक–'कने हमरो चिन्हा देब?' ओ कहलक–'अवश्य, किन्तु तत्काल हुनक बालककें चीन्हि लिअ'। ओ जे पटना कॉलेजक मेन गेटक सामने दू टा 'हीरो' जकाँ लगैत व्यक्ति ठाढ़ अछि, ओहिमे दहिन दिस बला व्यक्ति दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रो. हरिमोहन झा जीक जेठ बालक राजमोहन झा आ बाम दिस अंग्रेजी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर आर.के. सिन्हा जीक सुपुत्र 'विनय'। दुनू संभवतः विश्वविद्यालयक अन्तिम वर्षमे छथि एवं समस्त परिसर आ विद्यार्थीवर्गमे विख्यात छथि। एक त' ओहिना ओहि समयमे कोनो 'सीनियर' सँ बतिआइमे 'जूनियर' बड़ धखाइत छल। ताहूमे, राजमोहन जी हमरासँ चारि वर्ष 'सीनियर' रहथि। परिचय बढ़ाब'क साहस कोना क' सकितहुँ?

प्रो. हरिमोहन झाक दर्शन रोज होम' लागल। हुनका जाइत-अबइत देखि आन-आन विद्यार्थी जकाँ हमहुँ प्रणाम करियनि आ हुनक जँ ध्यान जानि त' मूड़ डोला कए आगाँ बढ़ि जाथि।

महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तथा नगरक सांस्कृतिक-साहित्यिक कार्यक्रममे हुनक भाषण आ कविता-पाठ सुन' केर अवसर भेटए। कवि होयबाक एकटा सद्यः लाभ ई भेटैत रहए जे कवि सम्मेलनमे हमहुँ आमंत्रित भ' जाइत रही, मंच पर बैसाओल जाइत रही। 1960मे ह्वीलर सीनेट हॉलमे चेतना समिति द्वारा आयोजित विद्यापति समारोहमे प्रो. हुमायूँ कबीर, राष्ट्रकवि दिनकर, प्रो. हरिमोहन झा समेत अनेक विशिष्ट व्यक्तिक उपस्थितिमे कविता-पाठ कए अपन स्थान पर आबि बैसैत छी, कि प्रो. हरिमोहन झा पूछैत छथि–'अहाँ दिनेश बाबूक बालक छी ने?' हम सकारात्मक उत्तर दए आश्चर्यमे पड़ि गेलहुँ जे ई हमरा कोना चिन्हलनि? पछाति हमरा पता लागल जे हमर पिताक अन्तरंग सखा डॉ. बेचन झा एवं बरौनी निवासी प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता डॉ. रामशरण शर्मासँ हमर परिचय हुनका पहिनहि भेटि गेल रहनि। परिचय प्राप्त कए तत्काले बिसरि जाइ बला प्रोफेसर साहबकें हम मोन रहलियनि–एहि बातक प्रसन्नता कतेक दिन धरि रहल छल।

कलकत्तासँ 'परिवेश' बहार करैत रही त' ओकर अंक हरिमोहन बाबूकें सेहो पठबैत रहियनि। पटना अयला पर हुनकासँ भेंट करियनि त' ओ ओहि लघुकाय हिन्दी पत्रिकाक प्रशंसा करैत ओकरा निरन्तर बहार कर' लेल प्रोत्साहित करथि, तहिया राजमोहन जी सेहो बेशी हिन्दीयेमे लिखैत रहथि आ हमरा दुनूक परिचय घनिष्ठ मैत्रीमे बदलि गेल छल।

एक बेर गाम अबैत छी त' दरभंगा जाइत छी। ज्ञात होइत अछि, राजमोहन जी सेहो दरभंगेमे रहथि आ किछुए घंटा पहिने पटना चलि गेल छथि। हम पटना पहुँचि प्रोफेसर साहेबक रानीघाट बला प्रोफेसर्स क्वाटर जाइत छी। गेटे परसँ देखायल जे, लॉनमे लागल कुर्सी पर ओ सपत्नीक बैसल छथि। हम लग पहुँचि दुनूक चरणस्पर्श करैत अपन परिचय दए राजमोहन जीक मादे पूछैत छियनि। ज्ञात होइत अछि, जे ओ दिल्ली बला संझुका गाड़ी पकड़'क लेल स्टेशन विदा भ' गेल छथि। हम घड़ी देख' लगैत छी त' ओ कहैत छथि–'आब त' गाड़ी फूजि गेल हेतनि।' हमरा बैस' लेल कहि कुशल-क्षेम पूछ' लगैत छथि।

'आखर' पर हुनक प्रतिक्रिया पत्र द्वारा भेटि जाइत छल तथापि जखन ओकर प्रसंग चलल त' बहुत रास सुझाव देलनि। पछाति अपन छोट बालक मनमोहन जीक अस्वस्थताक मादे कहलनि। तहिया ओ बी.ए. ऑनर्सक छात्र रहथि। राजमोहन जीसँ ज्ञात भेल छल जे हुनको लेखन एवं चित्रकलामे अभिरुचि छनि। हमरा झा साहेब आ माय (श्रीमती सुभद्रा झा) हुनक शयनकक्ष ल' जाइत छथि। ओ ज्वरी अवस्थामे रहथि किन्तु, देखि उत्फुल्ल होइत छथि। हम हुनका मैथिलीमे लिख'क लेल कहैत छियनि। ओ ससंकोच 'बेश' कहैत छथि।

कलकत्ता पहुँचला पर हुनक पहिल मैथिली कथा–'छाता आ शेक्सपीयर' भेटैत अछि। 'आखर'क नवहस्ताक्षर स्तम्भ (चारिम अंक, फरवरी '68)मे हुनक परिचयक संग ओकरा छापल गेल। आइ मनमोहन जी मैथिलीक स्थापित कथाकारमे परिगणित होइत छथि आ निरन्तर लिखि रहल छथि–एकरा हम आखरक उपलब्धि मानैत छियैक।

विद्यापतिक बाद हरिमोहन बाबू मैथिलीमे सर्वाधिक चर्चित भेलाह, सर्वाधिक पढ़ल गेलाह, सर्वाधिक लोकप्रिय भेलाह आ सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध भेलाह। सामाजिक कुप्रथा, अशिक्षासँ उत्पन्न अन्धविश्वास, शास्त्रीय हठधर्मिता, धार्मिक बाह्याडम्बर, कर्मकाण्डी कट्टरता, जर्जर परम्परा–सभ पर ओ समधानि क' प्रहार कैलनि किन्तु, ताहि लेल विनोदात्मक शैली अपना कए ओ लोककें, दर्दक अनुभव करितहुँ, हँस'

(Smile in pain)क लेल बाध्य क' देलनि, बिना आघात पहुँचौनहि लोककें अपन कथ्यक मर्म धरि पहुँचा देलनि। हास्य आन्तरिक संस्तुति पर आधारित शारीरिक प्रक्रिया थिकैक किन्तु, व्यंग्यक मुख्य लक्ष्य होइत छैक अन्तर्वेधन, जकर पीड़ाकें कम कर'क लेल हास्य-विनोदक प्रयोग कैल जाइत अछि। मैथिल जन्मजात विनोदप्रिय होइत छथि। ओ छोटसँ छोट आ गंभीरसँ गंभीर बातमे हास्यक तत्व जोहि लैत छथि। हरिमोहन बाबू लोकक एहि मानसिकता केर रचनात्मक उपयोग कैलनि। शास्त्र, दर्शन आ साहित्य सन गंभीर विषयकें ओ हास्य आ व्यंग्यक प्रयोग द्वारा लोकरंजक एवं सर्वग्राह्य बना देलनि। अपन संदेशकें उपन्यास–'कन्यादान' तथा 'द्विरागमन' एवं कथा संकलन–प्रणम्य देवता, रंगशाला, तीर्थयात्रा, खट्टर ककाक तरंग, चर्चरी, एकादशी आदिक माध्यमसँ जाहि वैदुष्य तथा दूरदर्शिताक संग लोक धरि पहुँचौलनि–ओकर व्यापक प्रभाव पड़तैक, ई असंदिग्ध छल। हमरा जनैत साहित्यक माध्यमसँ विशाल स्तर पर सामाजिक सुधारक लक्ष्यसंधान कर' बला ओ सर्वाधिक सशक्त रचनाकार छलाह। अपन साहस आ प्रतिभासँ ओ शास्त्रसँ स्रोतस्विनी (हास्य-विनोदक) बहार क' लेलनि।

हुनक कथ्यक संवाहक छलनि वार्त्तालाप शैली। ओकरा रोचक बनाब'क लेल ओ अपनाकें विभिन्न पात्रक रूपमे विभाजित कए पक्ष-विपक्षक तर्कक खण्डन-मण्डन स्वयं कैलनि। सर्वज्ञान एवं गुण-सम्पन्न खट्टर कका एवं हुनका ल'ग अपन जिज्ञासा रखनिहार अथवा प्रश्न कैनिहार भातिज ओ स्वयं रहथि। जाहि काव्य एवं शास्त्रसँ मात्र शिक्षित एवं बुद्धिजीवियें वर्गक मनोविनोद होइत छलैक, ओहीसँ ओ अनेकानेक विषय, संदर्भ, मान्यता एवं प्रसंगकें बहार कए सभकें परस्पर विरोधी, विपरीतार्थक ओ अनर्थकारी सिद्ध करैत अपन रोचक शैलीमे ओकरा तेहन हास्य-मूलक अथवा हास्यास्पद सिद्ध क' देलनि जे अशिक्षितो वर्गक समय 'काव्य-शास्त्र-विनोद'मे व्यतीत होअए लगलैक। विनोदक शान्त नदीमे हास्यरूपी बाढ़ि आन'क लेल हुनका बेर-बेर मर्यादाक बान्ह तोड़' पड़ैत छलनि। ओहि बाढ़िमे श्रोता, पाठक आ दर्शक अपन समस्त परिवारक संग डूबैत-भसिआइत रह' चाहैत छल। विनोदकें हुनक रचना लोकक व्यसन बना देलक। जेना प्राकृतिक बाढ़िमे सभ ध्वस्त भ' जाइत छैक, तहिना हुनका द्वारा उत्पन्न हास्यक बाढ़िमे, भलहिं थोड़बे कालक लेल, लोकक दुख-दैन्य, कष्ट-चिन्ता सभ अस्तित्वहीन भ' जाइत छलैक। एहि अर्थमे हुनक हास्य नाश आ निर्माण दुनूमे संलग्न छल।

तार्किकक बुद्धि-क्षेत्रमे भावुकताक लेल कोनो स्थान नहि छैक किन्तु, हरिमोहन बाबूमे भावुकता अपन चरम सीमा पर छलनि। हमरा दृष्टिजे सामाजिक विकृति

आ चारित्रिक स्खलन हुनका जतेक दग्ध-क्षुब्ध करैत छलनि, ओहिसँ बेशी हुनका द्रवित करैत छलनि, लोकक आन्तरिक हाहाकार। हुनक हास्यमे प्रच्छन्न करुणा हँसीक फुलझड़ीसँ वेदनाक स्फुलिंग उत्पन्न करैत छल। हुनक साहित्यक अकल्पनीय प्रभाव पड़ल। 'कन्यादान' पढ़ि कतेक युवक बिना काटरक बिआह कए, व्यवस्था गनयबाक लेल कटिबद्ध पिताक कोप-भाजन बनल रहथि। गामक 'बुच्चीदाय'सभ अंग्रेजी पढ़' लागलि छलीह। पाश्चात्य शिक्षाक गुमानमे ऐंठैत, 'सी.सी. मिश्र' सभक दर्प चूर होअए लागल छलनि। लोकक मनोरंजनक लेल लिखल गेल 'कन्यादान' समाजक आलोचक सिद्ध भेल आ ओहिसँ सुधारक प्रक्रिया शुरू भेल। जतय एक दिस कन्याक पण्डित पिता विकृति, कुरुचि, कृत्रिमता आ फूहर हास्यक लेल हरिमोहन बाबूक खिधांश करैत छलथिन, ओतहि परवश रहि दिन-राति पतिक अविचार-अन्याय सह' वाली कन्याक माय बेटीक संग पठाओल जाय बला साज-सामानक संग 'कन्यादान'क प्रति साँठैत रहथि। हरिमोहन बाबूकें तिरस्कार आ स्वीकार एक्के संग भेटलनि।

कोनो बूढ़कें जँ ओ कहितथिन जे अहाँ ई तेसर वा तेरहम विआह कियैक करैत छी, अहाँक लेल त' भोजनो दुर्लभ अछि, अभावग्रस्तताक कारण अशक्त शरीर काम-सुख सेहो नहि भोगि सकत, पुत्री आ पौत्रीक वयसक कन्या अहाँकें पतिक रूपमे कोना स्वीकार करतीह, दारिद्र्यमे कुहरैत कुलीनता त' अहाँक पार्थिव शरीरकें अग्निसात कर'क लेल काठो कीन'क सामर्थ्य नहि रखैत अछि–तँ हुनक माथ आगाँ किछु सोच'क स्थितिमे नहि रहितनि, शरीर पर पट्टी बान्हल रहितनि किन्तु, ओ बूढ़ोसँ हँसी-ठट्ठा करैत अनमेल विवाह पर चर्चा कैलनि, ओकर दुष्परिणाम ओकरा बुझा देलथिन, आ कहलथिन जे वृद्धक लेल कोना तरुणी विष सिद्ध होइत अछि आ अनमेल विवाहक कारण कोना सौभाग्यवती मायक समक्ष विधवा बेटीक संख्या बढ़ल जाइत अछि। हँसियें-हँसीमे त्रुटिक बोध करा देब हुनक लेखनीक विशेषता छलनि।

गोनू झाक हास्य-व्यंग्य-प्रधान परम्परामे सामाजिक उद्देश्यसँ शुरू कैल गेल हरिमोहन बाबूक लेखन साहित्यक धरातलकें अभूतपूर्व रूपसँ आन्दोलित कैलक, लोकप्रियताक नव कीर्त्तिमान स्थापित करैत मैथिलीकें भारतीय भाषाक मध्य एकटा जीवन्त भाषाक गरिमा दिऔलक।

एकटा निविष्ट विद्वान एवं दर्शनशास्त्रक प्रोफेसरक रूपमे ओ ओहुना प्रख्यात भ' जइतथि किन्तु, जँ लेखक नहि होइतथि त' ई राष्ट्रव्यापी लोकप्रियता आ विशाल पाठक-समुदाय नहि भेटितनि। जँ लेखनो पारम्परिक रूपसँ करितथि त'

ऐतिहासिक महत्व अवश्य भेटितनि किन्तु, जन-जन केर हृदय-सम्राट नहि भ' पबितथि।

ओ अपन अधिकांश पाठकवर्ग केर 'आपनजन' छलाह, अधिकांश व्यक्तिक पारिवारिक मित्र आ अधिकांश संस्थाकें एक सूत्रमे बान्हि क' राख' बला संयोजक शक्ति। शिक्षा-जगतसँ सम्बद्ध रहलाक कारण शिक्षित सभ, भलें हुनकासँ ओ नहि पढ़ने होथि, हुनका अपन गुरु मानैत छलथिन। ओ सभक सम्बन्धी भ' गेल रहथि। ककाजी, मामाजी, मौसाजी, पिसाजी, गुरुजी आदि सम्बोधनसँ ओ अपन अपरिचितोसँ सम्बोधित होइत रहथि। विद्यार्थी वर्ग आ शिक्षक वर्गसँ ल' कए चपरासी, किरानी, जज, कलक्टर, नेता, मिनिस्टर, गवर्नर धरि हुनका प्रति श्रद्धावनत रहैत छलनि। जे वर्ग अध्यापन आ लेखनसँ सम्बद्ध छल, ओ हुनकासँ सम्पर्क बढ़यबामे विशेष सुविधाजनक स्थितिमे छल। ताहूमे, ओ राज्यक राजधानीमे रहैत छलाह आ हुनक ज्येष्ठ पुत्र राजमोहन झा लोकमिल्लू आ लेखक छलथिन।

हुनक असंख्य स्नेह-भाजनमे हमहुँ एक टा रही किन्तु, लेखक होयबाक कारण नहि, राजमोहन जीक मित्र होयबाक कारण। ओ योग्य पिता केर सुयोग्य पुत्रे नहि रहथि, सुयोग्य पुत्रक सौभाग्यशाली पितो रहथि आ पुत्रक अयोग्यो मित्रकें आदर दैत रहथि।

रचनाकाल : 15 अगस्त 1995

हमर पिता, गुरु आ मित्र यात्री जी

1949क जाड़। फुलबड़िया (बरौनी) बाजारक विश्वबन्धु आयुर्वेद भवन। बड़का टेबुलक चारूकात कुर्सी-बेंच लागल। सभ पर बैसल लोक। स्थानक अभावमे ठाढ़ व्यक्ति सभ एक-दोसर पर झुकैत।

हमर एगारहम वर्ष छल। पाँचम अथवा छठममे पढ़ैत छलहुँ। भीड़ देखि-सुनि वाह-वाह क' रहल अछि—से जान'-देख' लेल उत्कंठित छलहुँ, मुदा भीड़कें चीरिक' सन्हियाएब मोसकिल छल।

टेबुल दिससँ रहि-रहिकें श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मुकुर', भागवत प्रसाद सिंह, बाल्मीकि प्रसाद 'विकट', रामावतार यादव 'शक्र', डॉ. भगवान पौद्दार, दिवाकर साहित्याचार्य (हमर पितृव्य डॉ. दिवाकर मिश्र शास्त्री) तथा अन्य परिचितक समवेत स्वरमे बहुराएल प्रशंसाक शब्द आ ठहक्का भितरिया दृश्य देख'क लेल आओर जिज्ञासा बढ़ा रहल छल।

आनन्दातिरेकमे भीड़ कनेक एम्हर-ओम्हर होइत अछि आ हम घुसियाकें आगू आबि जाइत छी। देखैत छी, झबड़ल दाढ़ी-केशमे पूर्णतः बताह सन लगैत एक गोट व्यक्ति कान्ह पर चितकबरा धुस्सा रखने, कुर्सी पर बैसल किछु सुना रहल अछि। ओकर कौतुक मिश्रित भाषा कखनो-कखनो बड़ गम्भीर भ' जाइत छलैक। ओकर धाराप्रवाह बाजब आ लोकसभक ध्यानमग्न भए सुनब हमरा विस्मयसँ भरि देलक। मुदा, लगले टेनिआकें पाछू क' देल जयबाक कारण, ई नहि बूझ'मे आएल जे ओ व्यक्ति के थिक आ कि सुना रहल अछि।

लालटेनक इजोतमे ई क्रम बड़ीकाल धरि चलैत रहल छल। पछाति, भीड़ ओहि व्यक्ति कें अरिआतिकें हमरा घर धरि पहुँचा देलक। ओ व्यक्ति हमर पितामह केर चरण-स्पर्श केलकनि। पितामह हर्षसँ उत्फुल्ल भए कुशल-क्षेम पूछ' लगलथिन।

घ'रमे कोनो पाबनि-तिहार बला उत्साह आ ओरिआओन छल।

भोजन-भात होइत रहल। हम एक कातमे ठाढ़ भए सभ किछु देखैत रहलहुँ।

बुझाएल आगन्तुक हमरा परिवारसँ घनिष्ठ सम्बन्ध रखैत छथि। घरक सब जन-जनीसँ परिचित छथि। एक-एक व्यक्तिक नाम जनैत छथि।

पितामह आ पिता-पितृव्य समेत समस्त परिवारकें स्वागत-सत्कारमे लागल देखि आ हुनका सभक मध्य होइत गप्पकें थोड़-बहुत बुझलाक बाद, अनुमान भेल जे आगन्तुक बताह नहि, कोनो असाधारण विद्वान आ साहित्यकार छथि। जयबा काल हमरा दिस संकेत कए ओ भैया (डॉ. हरिनारायण मिश्र) सँ पुछलथिन–'इएह छोटन छथि' आ लगले हमरासँ प्रश्न–'बाउ, कोन वर्गमे पढ़ैत छी?'

ओहि प्रश्नक सिनेह आ आत्मीयतासँ हमर जिज्ञासा भाव-विभोर भ' चुकल छल। ज्ञात भेल जे ओ यात्री जी छथि, हिन्दीक प्रसिद्ध कवि नागार्जुन, हमर पिता केर अन्तरंग सखा, पितृव्यक साहित्यिक मित्र आ अग्रजक गुरु।

दोसर दिन सौंसे स्कूल आ गाममे हुनक आगमनक चर्चा होइत रहल। सभ बजाकें पूछए, काल्हि तोरा ओतय यात्री जी आयल रहथुन? कल्हुका भीड़मे उपेक्षित रहियोकें आइ हम महत्वपूर्ण भए चुकल छलहुँ। सभकें भरि दिन, पहिलुका दिनक वृतान्त सुनबैत रहलियैक। हमरा घरक वातावरण पण्डिताइ कम, साहित्यिक बेशी छल। व्याकरण-वेदान्त, ज्योतिष, न्याय, जैन आ बौद्ध साहित्यक प्रकाण्ड विद्वान होयबाक कारण पिता देश-परदेशमे विख्यात छलाह। पितृव्य साहित्य-आयुर्वेद-व्याकरणक आचार्य होइतो साहित्य-लेखन, विशेष कए कवितामे रमल रहैत छलाह। घरमे बाल्मीकि, पाणिनि, कालिदास, भासक संग-संग भुवन, मधुप, सीताराम झा, सुमन, यात्री, आरसी आदि चर्चाक विषय होइत छलाह। काका तत्कालीन विभूति, तिरहुत समाचार, मिथिला मिहिर आ हिन्दीक पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ साहित्य जगतमे प्रतिष्ठित भ' चुकल छलाह। भौतिक अभावक अछैतो परिवारकें शास्त्र आ साहित्यक चर्चा सम्पन्न आ विशिष्ट बनौने रहैत छल।

यात्री जीक पत्र कहियो काकाक नाम आ कहियो भैयाक नाम अबैत रहैत छलनि। हमरा होइत छल, कहिया हुनक पत्र पयबा योग्य भ' सकब?

दिनकर, जानकीवल्लभ शास्त्री, आरसी जी आदि प्रतिष्ठित कवि सभक हमरा ओतय आवागमन रहनि मुदा, हमरा पर यात्री जीक प्रभाव सर्वाधिक छल।

हम नुकाक' कविता लिख' लगलहुँ। एकटा मैघ कविता 'महाकवि नागार्जुन के लिए'–लिखिकें मासिक पत्रिका 'मुंगेर' कें पठा देलियैक। हमरा आश्चर्य भेल जखन ओ ओहि पत्रिकाक प्रथम पृष्ठ पर छापल गेल। हम एकटा अंक यात्री जीकें पठा देलियनि। लगले हुनक पत्र भेटल–

'कीर्त्ति बाबू,

आपकी कविता अच्छी लगी। लेकिन अपने नाम के अन्त में 'किशोर' क्यों लगा रखा है? कई किशोर हो गये हैं हिन्दी में। कीर्त्तिनारायण क्या बुरा है–नागार्जुन।'
तकरा बादसँ हमरा नामसँ 'किशोर' हटि गेल। कोनो नवसिखुआकें प्रोत्साहित कर'क लेल लिखल गेल हुनक ओ पत्र, हमर काव्यांकुर पर सुधा-वृष्टि क' गेल।

1957मे हम आइ.ए. पास क' पटना कॉलेजमे अर्थशास्त्रमे ऑनर्स ल' कें पढ़'क लेल पटना अएलहुँ। यात्री जी ओहि समयमे 'राष्ट्रीय प्रकाशन मण्डल', मछुआ टोलीक उपरका कोठरीमे रहैत छलाह। ग्रीष्मक दुपहरिया छलैक। नीचामे दोकानदारकें अपन नाम-ठेकान-प्रयोजन कहलियैक। ओ हमरा उपरका रास्ता देखा देलक। कोठरीमे पहुँचि, रौदमे चोन्हराएल अपन आँखिकें अभ्यस्त करिते छलहुँ कि टेबुल फैनक घर्र-घर्रमे विभोर सूतल यात्रीजी जागि गेलाह। पुछलन्हि–'के?' हम उत्तरमे चरण स्पर्श केलियनि आ 'अर्थशास्त्रमे ऑनर्स ल'कें पढ़बह से त' नीक बात मुदा, पटनामे रहि कविया नहि जइयह।'

बहुत दिन धरि हुनक ओ वाक्य हमरा मथैत रहल छल। ओहिमे एक पिता केर पुत्रक प्रति आशंका आ आकांक्षा व्यक्त भेल छलैक। कोनो पिता पुत्रक भविष्यकें दिशा शून्य अनिश्चयमे परिणत नहि होम' देब' चाहैत अछि। भारतमे साहित्य करब, विशेष रूपसँ कविता लिखब, भौतिक दृष्टिमे अधोमुखी अभियान छैक। एकर यात्री अभाव आ आत्मयातनाक एकपेरियासँ होइत सर्वस्वान्तक चौबटिया पर सपरिवार पहुँचि जाइत अछि।

कोनो बढ़ही यत्नपूर्वक अपन काज आ कला सन्तानकें सिखबैत अछि। नौआ, लोहार, सोनार सभ यैह करैत अछि। उद्योग, व्यवसाय, व्यापार सभ क्षेत्रमे पिता अपन अनुभव आ अर्जन उत्तराधिकारमे सन्तानकें देब' चाहैत अछि। ओहि सभ क्षेत्रमे कला सिखलासँ व्यवसाय चलैत छैक, रोटीक अभाव त' नहियेे रहैत छैक। निपुणता प्राप्त कैला सन्ता सम्पन्नता आबि जाइत छैक। साधनाक परिणति समृद्धिमे होइत छैक। मुदा से बात साहित्यमे नहि छैक। भुक्तभोगी यात्रीजी हमरा अपन वला रस्ता पर चल' लेल कोना अनुमति दितथि। किन्तु, भेल सैह जे ओ नहि चाहैत छलाह। हम कवि त' नहि भ' सकलहुँ मुदा, कविया धरि अवस्स गेलहुँ।

पटना कॉलेज आ पटना विश्वविद्यालयक चारि वर्षक छात्र-जीवनमे यात्री जी हमरा प्रति एक गोट पिता केर दायित्व निमाहैत रहलाह। ओ पटनामे रहथि त' रोज

संध्याकाल भिखना पहाड़ी अथवा आनठाम वला डेरा पर जाक' कुशल-समाचार कहि अबैत छलियनि। बाहर गेने हमर भार काकी आ शोभाकान्त पर रहैत छलनि। सुकान्त आ उर्मिलाक अवस्था बड़ छोट छलनि। श्रीकान्त-श्यामाकान्त कोरमे खेलाइत हेताह।

मासक-मास ओ पटनासँ बाहर रहैत छलाह। अर्थाभावक कारण हुनक अनुपस्थितिमे काकी आ शोभाकान्त पर की बितैत छलनि—ओहि परिवारक एकगोट सदस्य होयबाक कारण, तकर अनुभव हमरा बराबरि होइत रहैत छल। हुनक पत्रमे व्यक्त प्रकाशक द्वारा भेटल आश्वासनक व्यर्थता सभकें ज्ञात छलनि, तें मकान भाड़ा आ रोजक खर्चक चिन्तासँ कखनो ककरहु मुक्ति नहि भेटैत छलनि।

अनिकेतन यात्री जीकें सभ शहरमे मकान भेटि जाइत छलनि, भले ओ मास-क-मास बन्न रहैत हो आ भाड़ा चढ़ल जाइत हो। लिख'क दृष्टिञे जाहि शहरमे जे स्थान नीक बुझाइन ओकरा घेरिकें राखि दैत छलाह। यात्री-प्रकाशनक पता बदलैत रहैत छलैक। पटना, इलाहाबाद, रायपुर, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता सभठाम नागार्जुन-यात्रीक पुस्तक प्रेमीकें नव पोथीक पता लगाबै पड़ैत छलैक।

ओ पटना आबथि त' परिवारक सदस्यसँ भेंट भ' गेलाक बाद हमरो देख' लेल होस्टल आबि जाइत छलाह।

जाड़क मास छल। एक दिन ओ भिनुसरकी रातिमे होस्टल आबि, फूजल दरबाजासँ कोठरीमे प्रवेश कए मुँह परसँ सीरक हटा माथ पर हाथ बुलब' लगलाह। चौंकिकें उठलहुँ त' देखैत छी, ऊनी सूट पहिरने आ कानमे गुलबन्न बन्हने यात्री जी ठाढ़। हमरा हर्ष-विभोर आ आश्चर्यमे पड़ल देखि कहलनि—'रातिए आएल छी। आइये साँझ चल जायब। सोचलहुँ जे तोहरा संग क' कें गंगा कात बूलि आबी। उठ' जल्दी तैयार भ' जाह।'

हमरालोकनि बहराइत छी। ओ शर्त्त रखलनि जे, केओ किछु नहि बाजत आ घुरलाक बाद एखुनका अनुभव पर कविता लिखत।

हुनक 'भोरे-भोर' आ हमर 'धुन्ध' कविता ओही प्रत्यूष-यात्रा केर सुपरिणाम थिक।

पटनामे हुनका माध्यमसँ अनेकानेक साहित्यकारसँ परिचय भेल आ घनिष्ठता बढ़ल। हिन्दी, बंगला आ मैथिलीक सभ पत्र-पत्रिका आ नव पोथी हुनका ओतयसँ पढ़' लेल भेटि जाइत छल। राजकमल जीक 'स्वरगन्धा' हम सर्वप्रथम हुनके डेरा पर देखने छलहुँ।

1961क दिसम्बरमे हम कलकत्ता आबि नौकरी कर' लगलहुँ। ओहि समयमे यात्री जी मास-क-मास कलकत्तामे रहि लिखैत छलाह। मिथिला-निकेतन अथवा भुवन बाबूक चायबला दोकानक सोझ बला मकानक अपन सम्बन्धीक डेरामे रहैत छलाह। मुदा, हुनका सँ कोनो डेरामे भेंट भ' जायब बड़ कठिन छल। हुनक लिख' आ विश्रामक अवधिमे जाकें दिक् करब अनुचित छल आ ओना डेरामे रहितहि नहि रहथि।

दू-चारि दिन नहि बीतय, कि भोरे-भोर आ कि निभोर रातिमे डेरा पर आबिकें दर्शन द' जाइत छलाह।

छुट्टी बला दिन, भरि दिन हुनका संग घूमब आ साँझ कॉफी हाउसमे बिताएब बड़ आनन्ददायक होइत छल।

ओ काशीपुर अथवा बेलगछियासँ 'चाहखाना' आबि दुपहरक विश्राम लेक गार्डेनमे डॉ. प्रबोधनारायण सिंहक ओतय कए, साँझ कॉफी-हाउसमे बिता, रतुका अल्पाहार शालीमार (शिवपुर)मे हमरा डेरा पर लए, रातिमे शान्त वातावरणमे लिख'क लेल सीतेश शर्माक आवास पर पहुँचि जाइत छलाह। ने कखनहुँ यात्राक हराराति‍क अनुभव, ने कखनो आलस। सभ समय यात्री जी किशोर-वयसक स्फूर्ति आ उत्साहसँ भरल शारीरिक आ मानसिक रूपसँ यात्रा करैत रहैत छलाह। मुदा, कतहु कोनो नियम, क्रम अथवा बन्धन नहि। पूर्ण उन्मुक्त यात्रा।

मक्खुरामक तत्कालीन चौरंगीक मैदान बला पोथीक दोकानसँ बंगला, हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आदिक पत्र-पत्रिका ल' क' कान्ह पर टांगल झोराकें भरने यात्री जी जाड़क कोनो दुपहरमे अहाँकें एकसरो चिनिञा बदाम फोड़ैत चौरंगी, बिक्टोरिया अथवा दू'न गार्डेनक मैदानमे भेटि सकैत छलाह।

यात्री जीक संग विभिन्न भाषाक नवतुरिया लेखक वर्गक भीड़ चलैत छल। कल्पना अथवा चिन्तनमे हेराएल यात्री एकाएक लोककें कहि दैत छलथिन—'आब अहाँलोकनिक जाउ, हम एकसरे घूम' चाहैत छी।'

घूम' लेल एकसर बहराएल यात्री जीकें मैदान बड़ आकर्षित करैत छलनि। ठामहिठाम एकसर आ कि संगी-साथीक संग बैसल-पसरल लोक। बेशी भाग मिल-मजूर, रिक्सा-ठेला चालक, झाका-मोटा उठाब' वला वर्ग। कतहु ढोलक-हरमुनिया पर अल्हा-ऊदल होइत, कतहु मुरगाक युद्ध। व्यक्ति-व्यक्ति धरि पहुँचैत चाह-पान, बीड़ी-सिकरेटक दोकान। गरीब आ साधारण मनुक्खक आह्लाद-उच्छवास, मनोदशा

आ क्रिया-कलापक मौलिक आनन्द लैत, यात्री जी कतहु कोनो भीड़ लग ठाढ़ भ' सकैत छलाह।

साहित्यकारक अखहरा, कलकत्ताक कॉफी हाउस। रवि आ छुट्टीक दिन कॉलेज स्ट्रीट आ सप्ताहक शेष दिन सेन्ट्रल एवेन्यू वला कॉफी हाउसमे।

देश-विदेशक साहित्यकारक कतबो व्यस्त कार्यक्रम मुदा, कॉफी हाउसक लेल समय बहार करब आवश्यक। शनि, रविकें साहित्यकारक जमघट। आनो दिन पहुँचि गेला पर कोनो-ने-कोनो साहित्यकारसँ भेंट भए जायब असंदिग्ध आ ओहि साहित्यकारसँ सूचना पाबि मान-दान हेतु साहित्यकारक दोसर दिन कॉफी हाउसमे उपस्थिति आवश्यक। किन्तु, यायावर यात्री-नागार्जुन एहि नियमक अपवाद।

अपन पचीस वर्षक प्रवासमे हम सभ दिन कॉफी हाउसकें 'नागाबाबा' केर प्रतीक्षा करैत देखलियैक। कहियो प्रतीक्षामे उदास त' कहियो उपस्थितिमे उल्लसित। ओ कहिया कोन गाम अथवा शहरमे रहताह, कहिया कतेक दिनक लेल कलकत्ता अयताह, आओर कोन पोथी केर लेखन-प्रकाशनमे लागल छथि, सभक सूचना कॉफी हाउसकें रहैत छलैक। आवश्यकता एतबे होइत छलैक जे हुनकामे रुचि रखनिहार व्यक्ति कोनो 'साहित्यिक टेबुल' पर जा क' पुछारि करथि।

यात्री जीकें कोनो व्यक्ति, स्थान, भाषा आ विधासँ बान्हिकें राखब, असंभव छल। हुनक चर्चा हिन्दी, मैथिली, बंगला, उड़िया, गुजराती, मराठी, मलयालम, तेलुगु–सभ परिवेशमे होइत छल।

जुलाइ 1967मे हमर 'सीमान्त' छपल। ओकर भूमिकाक दोसर पृष्ठक अंतिम अनुच्छेदमे, 1950सँ 1960 धरिक मैथिली काव्य-चेतनाक विश्लेषण क्रममे हुनका सम्बन्धमे लिखल एकगोट वाक्य हमरा हुनक कोपभाजन बना देलक। ओ हमरा प्रति अपन तात्क्षणिक आक्रोश-प्रतिक्रियाकें 'पिता-पुत्र सम्वाद' लिखिकें अभिव्यक्त कैलनि। ओहि कविताक रचनाक सूचना हमरा भैयाक पत्रसँ पहिनहि भेटल छल। कलकत्ताक मित्र-वर्गमे ओ 'यात्री-कीर्त्ति सम्वाद' नामसँ प्रचारित भ' रहल छल। छपलाक बाद, जखन ओहि कविता कें पढ़'क अवसर भेटल त' आश्चर्यक अन्त नहि रहल। ओहि रचनाक व्यक्तिगत सन्दर्भ बड़ थोड़ व्यक्तिकें ज्ञात छलैक। सामान्य पाठकक लेल ओकर प्रयोजनो नहि छलैक, महत्वपूर्ण ई छल जे पुत्रक प्रति व्यक्त आक्रोशक माध्यमसँ एकगोट महान साहित्यिक पिता द्वारा मैथिली कविताकें ओतेक श्रेष्ठ व्यंग्य रचना भेटि गेल छलैक। दू पीढ़ी केर संघर्ष आ

अकविताक व्याख्याताक प्रति यात्री जीक तत्कालीन प्रतिक्रियासँ पाठक वर्ग परिचित भए चुकल छल।

1967क अन्तिम दू-तीन मासमे ओ इलाहाबादमे रहथि। पत्रहीन नग्नगाछक किछु कविता आ अन्तमे प्रकाशित आठो गीत ओ ओहि प्रवासमे लिखलनि। पोथी छपि रहल छलनि आ दिसम्बरक अन्तमे ओकर विमोचन होम' बला छलैक।

इलाहाबादसँ डॉ. सुधाकान्त मिश्रक हकार आएल विमोचन समारोहमे उपस्थित होयबाक लेल। यात्री जीक 'पोस्टल एड्रेस' पर पहुँचला पर हमरा हुनक दारागंज बला डेरा पर पहुँचा देल गेल।

हमरा देखितहि यात्री जी एवं शोभाकान्त आश्चर्यमिश्रित आह्लादसँ भरि गेल छलाह। शोभाकान्त अपना सभक लेल बिलैती भांटा द' कें पालकक साग आ रोटी बनौने छलाह–अपन महाकवि पिता केर मौलिक निर्देशनमे खयबाकाल जे आनन्द आ स्वाद भेटल छल, ओ हम आजीवन नहि बिसरब।

दोसर दिन विश्वविद्यालयक सभाकक्षमे महाकवि सुमित्रानन्दन पंत मंच पर विराजमान छलाह, पोथीक विमोचनक लेल। बगलमे यात्री जी बैसल आ सुधाकान्त जी स्वागत भाषण पढ़ैत। सभाकक्ष हिन्दी-मैथिली आ दूर-दूरसँ आएल साहित्यकार-विद्वानसँ भरल।

हम कने विलम्बसँ पहुँचल छलहुँ। पहुँचैत देरी मंच परसँ हमर परिचय देल जाय लागल आ लगले हमरा आधुनिक मैथिली कविता आ यात्री जी पर बाज'क लेल बजा लेल गेल। हम की बाजल छलहुँ से त' मोन नहि अछि मुदा, ई अनुभव आइयो होइत अछि जे कोनो महान व्यक्तिक सम्पर्क क्षुद्रातिक्षुद्रो व्यक्तिकें महत्वपूर्ण आ प्रासंगिक बना दैत छैक।

समारोह समाप्त भेल। पन्त जी विदा होम' लगलाह। हम हुनक चरण-स्पर्श कैलियनि। डॉ. जयकान्त मिश्र आ किछु अन्य व्यक्ति कुशल-समाचार पूछि विदा भ' गेलाह। हमरालोकनि आन-आन साहित्यकारक संग बड़ी काल धरि बतिआइत रहलहुँ।

संध्याकाल यात्री जी हमरा उपन्यासकार आ अपन शिष्य अजित पुष्कलक डेरा पर ल' गेलाह। हुनक किछु उपन्यास पहिनहि पढ़ि चुकल छलियनि। यात्री जी हुनक पत्नीकें नाम ल' कें बजौलथिन। सभ धीआपुताक नाम ल', बजाकें किछु-ने-किछु पूछ' लगलथिन। ओहिठामसँ आओर कतेक साहित्यकारसँ भेंट करब' ल' गेलाह। सभठाम आत्मीयता आ पारिवारिक वातावरण। हम सोचैत रहि गेलहुँ–यात्री जीकें कतेक पुत्र-पुत्री छनि, सभ पर समान रूपें कृपा-भाव रखनिहार यात्री जी कतेक महान छथि।

कलकत्तासँ 1963मे हिन्दीक प्रथम लघु-पत्रिका–'परिवेश' आ 1967-68मे 'आखर'क प्रकाशनक अवधिमे हुनक प्रोत्साहन, दिशा-निर्देशन आ परामर्श हमर संबल आ पूँजी छल। अदगोइ-विदगोइ कएनिहार आ सहयोग देबाक बदलामे टांग घिचनिहार हुनक बिनु डांट खएने नहि रहैत रहथि।

1968क उत्तरार्धसँ 1970क पूर्वार्धक दू वर्षमे हम 'ब्रेन ट्यूमर'सँ रोगग्रस्त भ' घ'र आ अस्पतालमे मृत्युसँ संघर्ष करैत रहल छलहुँ। ओहि अवधिमे प्रायः साल भरिक लेल हमर आँखिक ज्योतियो चल गेल छल। यात्री जी कतहु रहथि, हमरा आ भैयाकें पत्र लिखि समाचार पूछैत रहथि। कलकत्ता रहलासँ त' नियमित रूपसँ आबिकें देखिते रहथि, बाहरो सँ हठात दू-एक दिनक लेल आबिकें देखि जाइत रहथि। हुनक आगमनक सूचना आ स्पर्श किछु कालक लेल यंत्रणा आ बेहोशीसँ त्राण दिया दैत छल।

ओहि मध्य हुनक प्रेरणा आ मित्र सभक सहयोगें हमर हिन्दी कविता पुस्तक 'शिखर पर साँझ' प्रकाशित भेल। 1970क अन्त धरि ऑपरेशन आ विश्रामक बाद हम स्वस्थ त' भ' गेलहुँ किन्तु, कलकत्ताक भीड़-भार, व्यस्तता आ दिनचर्या स्वास्थ्यक लेल प्रतिकूल पड़ैत छल। पिता केर आन्तरिक इच्छा छलनि, जे हम कलकत्ता छोड़ि दी। हम चितावालसा (विशाखापतनम) स्थानान्तरण करबा लेलहुँ। प्रस्थान कर' सँ पहिने यात्री जी केर अनुमति आ आशीर्वाद आवश्यक छल। हम पत्र लिखलियनि आ ओ विदा कर' सुकान्तकें ल'कें आबि गेलाह। यात्री जी केर एहि वात्सल्यकें कहियो कोना विसरब?

बिहारमे रहलासँ ओ बेगूसराय (जाहि समयमे स्व. प्रो. राधाकृष्ण चौधरी रहैत छलाह) आ बरौनीकें नहि बिसरैत छलाह।

एकबेर ओ जेठक दुपहरियामे सौभद्र-निवास पहुँचलाह। हमर पिता-पित्ती आ माय-पितिआइन हर्षे उत्फुल्ल। रौद आ गरमीसँ झमारल यात्री जी हकमैत काकाकें कहलथिन–'दिवाकर बाबू, हम अहाँ केर घरक भूगोल बिसरि गेल छलहुँ।' ठहक्का संग काकाक स्वर बहराएल–'हमर सभक सौभाग्य, जे अपनेकें इतिहास मोन अछि।'

यात्री जी ओहि यात्रामे कहि आएल छलथिन–'लिख'क लेल ई स्थान बड़ उपयुक्त बुझाइत अछि। हम एतय दू मास आबिकें रहब आ एकटा उपन्यास पूरा करब।' किन्तु यात्री जीक लेल त' सभ स्थान लेखनक लेल उपयुक्त। सौभद्र-निवास एखनहुँ हुनक प्रतीक्षा क' रहल अछि।

किछु मित्रक विचार छलनि, जे 'हम स्तवन नहि लिखब' कें यात्री जीकें समर्पित कैल जाय। ई प्रस्ताव हमरो नीक लागल। यात्री जीसँ एकर चर्चा कैलियनि त' ओ कहलनि–'ई स्थूल विज्ञापन बला हल्लुक काज कतेक व्यक्ति क' चुकल छथि। की तहूँ, हुनके सभक पाँतिमे ठाढ़ होब' चाहैत छह?'

हमरा अपन गलती केर अनुभव भेल आ समर्पण बला विचार तत्काल त्यागि देलहुँ।

नवम्बर 1977मे सप्ताह-व्यापी समुद्री तूफान आएल छलैक। आन्ध्रप्रदेशक समुद्रतटीय समस्त पूर्वी क्षेत्र, विशेष कए, विशाखापतनम तबाह भ' गेल छल। सर्वत्र हाहाकार आ मृत्युक आतंक। हजारक-हजार मृत लोकक लहास कतेक सप्ताह धरि सड़ैत रहि गेल छल। तूफान आ बाढ़िक कारण सड़क आ रेल लाइन टूटि गेल छलैक। ने प्रभावित क्षेत्र धरि सहायता पहुँचि सकलैक आ ने लहास बहार भ' सकलैक।

यात्री जी केर कवि हृदयकें प्रकृतिक ओ ताण्डव अपन पुत्रक प्रति आशंकित क' देलकनि। ओ पत्र लिखलनि–

प्रिय कीर्त्तिनारायण, कलकत्ता, 30.11.77

समुद्री तूफान में तुम्हारे कारखाने को भी झटका लगा क्या? इन दिनों बार-बार तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की और अपनी उस बहू की याद आ रही है, जिसका नाम भूल बैठा हूँ।

अपने पिता के स्वास्थ्य के बारे में भी सूचित करना। मैं 10 तक तो इधर हूँ ही।

पत्र शीघ्रातिशीघ्र दो।

–नागार्जुन तुम्हारा

देशक किछु भाग पर यात्री जी विशेष रूपसँ सदय रहैत छथि। मध्यप्रदेशक रायपुर ओहिमे सँ एक अछि। हुनका बजयबाक लेल ओहिठामक साहित्यिक संस्था सभ द्वारा तरह-तरह केर आयोजन कैल जाइत अछि। नहि-नहि करितो यात्री जी साल-दू-सालमे निश्चित रूपसँ ओतय जाइत अछि।

पटनामे एकबेर उलहन देलियनि जे अपने रायपुर आबियोक' चितावालसाकें बिसरि जाइत छी। ओ आश्वासन देलनि–'आशा आ धीआपुतासँ भेंट कर' अबस्स आयब। तों हमरा विजयनगर आ विशाखापतनमक भूगोल बूझा देह।'

हम कहलियनि–'अपने मात्र सूचना पठा देल जाय, हम रायपुर, कलकत्ता अथवा कोनो स्थानसँ आबिकें चितावलासा ल' जायब।' ओहि सौभाग्यसँ हम एखन

धरि वंचिते छी। 23 जनवरी '86 कें हम किछु घन्टाक लेल पटना पहुँचैत छी। रिक्सा डाक बंगला रोडसँ आगाँ ससरैत अछि, आकि भैया कहैत छथि—'यात्री जी सड़कक ओहि कातसँ जा रहल छथि।' हम रिक्सा परसँ कुदकि कए दौड़ैत छी।

पिरिछाओन चद्दरि आ हाथमे सोंट नेने कोनो सूट-बूटधारी व्यक्तिक संग यात्री जी कॉफी हाउस दिस जा रहल छलाह। हम आ भैया हुनक चरण-स्पर्श कैलियनि। ओ कुशल-समाचार पूछैत छथि। ठाढ़े-ठाढ़ किछु काल धरि बतिआइत रहैत छी। पुनः हुनकासँ आशीर्वाद लैत छी आ विदा भ' जाइत छी।

केश, दाढ़ी आ अपन अबढंग परिधानमे यात्री जीकें आइयो ओहिना तेजोदीप्त, गतिशील आ लेखनरत देखलियनि जेना आइ सँ 37-38 वर्ष पूर्व देखने छलियनि। अपन आयु केर पच्चहतरिमो वर्षमे ओ अबाध रूपसँ लिखि रहल छथि आ आधुनिक लेखक वर्गक मसीहाक रूपमे सम्मानित छथि। की ई सम्पूर्ण देशक लेल सौभाग्यक विषय नहि।

कश्मीरसँ केरल धरि एहन कोनो क्षेत्र नहि, जतय जनकवि आ उपन्यासकार नागार्जुन-यात्री केर पाठक, शिष्य, प्रशंसक ओ मित्र नहि रहैत छथि। भाषा आ क्षेत्रक व्यवधान हिनक साहित्य आ सम्पर्कक लेल कहियो नहि रहलनि। सभ राज्यमे हिन्दी पढ़निहार-पढ़ौनिहारकें यात्री जी केर व्यक्तिगत सम्पर्क-मैत्रीसँ लाभ भेटैत छनि। सभठाम आदरपूर्वक बजाओल जाइत छथि आ सभठाम किछु-ने-किछु एहन परिवार अवस्स अछि जकर प्रत्येक सदस्यक व्यक्तिगत मित्रता हुनका संग छैक। अधिकांशसँ हुनक नियमित पत्र व्यवहारो होइत छनि।

हमरा जनैत एक व्यक्ति आ लेखकक रूपमे सौंसे देशमे विख्यात, ओतेक व्यापक रूपमे पढ़ल जाइत आ सभ भाषासँ सम्बन्ध रखनिहार यात्री-नागार्जुन केर समकक्ष ककरो ठाढ़ करब सम्भव नहि। तेलुगु, कन्नड़ आ मलयालममे हिनक मित्र आ अनुवादकक संख्या बड़ पैघ छनि। राजनीतिक कारणे हिन्दी-विरोधक लेल नाना यत्न करैत मद्रासोमे तमिल-हिन्दी साहित्यकार आ पाठक वर्गक मध्य एकटा व्यवस्था-विरोधी तथा जीवन्त भारतीय साहित्यकारक रूपमे ओ सम्मानित छथि। सभ भाषामे पढ़ल जाइत छथि।

हुनका जाहि मैथिली प्रेम आओर व्यवस्था-विरोधी लेखनक कारण पहिने हिन्दी पोथी पर साहित्य अकादमी पुरस्कार नहि भेटलनि (मैथिली पोथीक लेल हुनका पुरस्कृत करब अकादमी केर बाध्यता छलैक), संभवतः सैह कारण एखन धरि भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार सँ वंचित रखने छनि अन्यथा दिनकर आ अज्ञेयसँ पहिनहि ओ पुरस्कृत भेल रहितथि।

संसारक पैघ-सँ-पैघ पुरस्कार यात्रीजीक विराट व्यक्तित्व ल'ग मूल्यहीन भ' गेल अछि। हुनक व्यक्तित्वक महार्णव ल'ग आबिक' आब केहनो स्वागत, स्तुति, अभिनन्दन आ पुरस्कार अपन महिमा नहि बनौने राखि सकैत अछि।

बिहारकें, खास क' मिथिलाकें, हुनक जन्मभूमि होयबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। विद्यापतिक बाद पछिला पाँच सौ वर्षक इतिहासमे ओ पहिल कवि छथि जे बिहारक बाहरो, देश-विदेशक अधिकांश भागमे एतेक व्यापक रूपमे पढ़ल-गुनल जाइत छथि। साम्यवादी-समाजवादी देश सभक साहित्यिक माहौलमे त' ओ चर्चाक विषय रहितहि छथि, पूँजीवादियो देशक बुद्धिजीवी वर्ग तथाकथित तेसर विश्वक शोषण-पीड़न आ जनमानसकें बूझ'क लेल हुनक रचना पढ़ैत अछि। संसारक विभिन्न देशसँ आयल साहित्यिक सांस्कृतिक प्रतिनिधि वर्गक सम्पर्कमे अएनिहार व्यक्ति सभकें ई अनुभव बराबरि होइत होयतनि।

हमरा सभ छी हुनक गाम-घरक लोक। अति परिचयक कारण हुनक वास्तविक महत्व कें बूझ'मे सर्वथा असमर्थ। एखन हमरालोकनिकें हुनकासँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध अछि। सभक संगमे अछि हुनकासँ जुड़ल-जोड़ल अनेकानेक प्रसंग, संदर्भ, संस्मरण आ अनुभव मुदा कालक प्रवाहमे हमरालोकनि भसिआ जायब, रहि जेताह कालजयी मृत्युंजय यात्री जी।

प्रकाशित—हालचाल : जून-जुलाइ 1986

पत्रक दर्पणमे यात्री-नागार्जुन

कोनो महान रचनाकारक महत्ताक कारक तत्वकें ओकर रचनेमे नहि, ओकर व्यक्तिगत सम्पर्क आ व्यवहार एवं साहित्येत्तर सरोकारोमे जोहल जाइत छैक, ओकर बाल्यकालसँ ल' कए विदाकाल धरिक लेखा-जोखा होइत छैक, ओकर प्रत्येक क्रिया-कलापक शल्यक्रिया तथा विवेचन-विश्लेषण होइत छैक।

अपन जीवनकालेमे किंवदन्ती बनि गेल यात्री–नागार्जुनक जीवन, साहित्य आओर व्यवहार प्रारंभहिसँ सभसँ फराक, सभसँ विलक्षण रहलनि। एतय हमर अभिप्रेत अपन नाम लिखल हुनक किछु पत्र प्रस्तुत करब थिक आ ओहि बहाने हुनक स्नेह-वत्सलता नवसिखुआ/नवतुरिया वर्गकें प्रेरित-प्रोत्साहित करैत रहबाक प्रवृत्ति, ओकर मार्गदर्शन करबाक दायित्व-बोध, ओकर प्रतिभाकें सृजनोन्मुख करबाक आतुरता, ओकर विकास आ उपलब्धिसँ आह्लादित होइत ओकर चर्चा-प्रकाशन-मूल्यांकनक चिन्ता दिस संकेत करब थिक।

हुनक पाठक, शिष्य आ मित्रक संख्या असंख्य छलनि आ ओ सभकें पत्र लिखैत रहथि–कखनहुँ छोट, कखनहुँ पैघ, ककरो अविलम्ब त' ककरो एतबे–'शीघ्र ही लम्बा खत लिखूंगा' अथवा 'पत्र लिखना अभी संभव न होगा।'

देश-विदेशक विभिन्न व्यक्तिकें लिखल हुनक समस्त पत्रकें जँ संकलित कैल जाय त' हमरा अनुमानसँ ओ लक्षाधिक हैत। किछु हजार पत्र त' हमर अग्रजेक संगमे होयबाक चाही। हमरो ओ शताधिक पत्र लिखने हैताह मुदा शोभाकान्त जीक आग्रह पर जखन जोह' लगलहुँ त' किछुए दर्जन पत्र भेटल। आओर सभ एखनहुँ कोनो पोथी-पत्रिका, कोनो गेंठ, कोनो फाइलमे नुकायल अछि। पैंतालिस वर्षक दीर्घ अवधिमे हुनकासँ प्राप्त पत्रकें अमूल्य धरोहरि बूझैत रहितहुँ, सभकें जोगा-सम्हारि क' नहि राखि सकलहुँ।

प्रथम पत्र ओ हमर हिन्दीक पहिल कविता पर प्रतिक्रिया स्वरूप तरौनीसँ 12.06.1954 कें लिखने रहथि। हमर ओ कविता–'महाकवि नागार्जुन के प्रति' मुंगेर जिला परिषदक मासिक पत्र-मुंगेर-मे, अप्रैल 1954क अंकमे छपल छल–यद्यपि ओहिसँ पूर्व कविता/गीतक नाम पर लिखल बहुत रास तुकबन्दी, कविताक ककहरा सीख'क क्रममे, लिखि-छपा-फाड़ि चुकल रही। एतेक पूर्वाभ्यासक बादो लिखल हमर ओ कविता कमजोर छल मुदा बालकोचित उत्साहवश छप' पठा देने रहियैक। ओ पत्रिकाक प्रथम पृष्ठ पर छपल। सम्पादककें कविता नहि, कविताक शीर्षक आकृष्ट कैने हैतनि। चाहे जे भेल हो, ओही कविताक कारण श्रद्धेय नागार्जुनजीक प्रथम पत्र हमरा भेटल–

तरौनी, सकरी पी. ओ.
दरभंगा जिला, 12.06.1954

प्रिय कीर्त्ति बाबू,

रचना मिली। पसन्द आई। प्रवाह अच्छा लगा। दो-चार जगहों पर शिथिलता खटकती है। प्रथम प्रयास में ही आपने ऐसी कविता तैयार की, इससे आपके विषय में काफी आशावान हूँ।

अपना उपनाम 'किशोर' मत रखें। कई किशोर हो गये हैं हिन्दी में। कीर्त्तिनारायण क्या बुरा है?

–नागार्जुन आपका

ई पत्र पाबि निश्चित रूपसँ किछु दिन धरि हमर पयर धरती पर नहि पड़ैत हैत। एही पत्रक प्रभाव छल जे हमर नामसँ 'किशोर' हटि गेल आ कवि-कर्मक गंभीरताक ज्ञान भेल।

(यात्री जी पर लिखल संस्मरण–'हमर पिता, गुरु आ मित्र यात्री जी'–1985मे स्मृतिक आधार पर उद्धृत एहि पत्रमे किछु शब्द/पंक्ति छूटि गेल छल)

हम '55मे मैट्रिक पास कए 'इन्टर'मे नाम लिखौलहुँ। 1956मे भैया एल. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुरमे एम. ए.मे नाम लिखौलनि। यात्री जीक कार्ड आयल–

193, बहादुर गंज,
जी. टी. रोड, इलाहाबाद–3

प्रिय कीर्त्ति,
09.08.1956

हरिनारायण ने कहाँ नाम लिखाया है? मुजफ्फरपुर या पटना में? अपनी प्रतिभा के लिए तुम मेरा अभिनन्दन स्वीकार करो...।

–नागार्जुन

58क ग्रीष्मावकाशमे हम पटनासँ गाम आबि गेल रही। हुनक पत्र–

C/O राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल
मछुआ टोली, पटना—4
21.05.1958

प्रिय कीर्त्ति,

पत्र मिला। 26 मई को जा रहा हूँ, 2 जून को लौटना होगा। शोभा-सुकान्त तरौनी गये हैं और सब ठीक है।

आम खाते वक्त मुझे भी याद कर लिया करना—

—नागार्जुन

लगले दोसर पत्र—

पटना—4
17.06.1958

प्रिय कीर्त्ति,

क्षितीश की मृत्यु की खबर से (हमर एहि पितिऔतक नामकरण हुनके द्वारा भेल छलैक) दिल को भारी ठेस लगी...। क्या हुआ था उसे?
हरी पहुँचे होंगे।

तुम्हारी कलम तो नहीं मिली थी, हाँ, फोटोग्राफ वाली रसीद और रुपये अवश्य रखे थे। शोभा और सुकान्त आ गये हैं। गर्मियों में लिखना-पढ़ना सब बन्द पड़ा है।

—नागार्जुन

एहिसँ पूर्वक हुनक एकटा पत्र छल—

राष्ट्रीय प्रकाशन मंडल
पटना—4
27.05.1958

प्रिय कीर्त्ति,

पत्र मिला। 31 या 1 जब चाहो आ जाओ। भीमसेन मौजूद रहेगा। मैं 2 को लौट आऊँगा।

—नागार्जुन

सितम्बर '58मे ओ दिल्ली जाइत छथि। किछु दिन बाद दमाक आक्रमण होइत छनि। एहि यात्रामे ओ अनेक पत्र लिखने रहँथि। मुदा जोहला पर मात्र चारिटा भेटल—

हिन्दी भवन
कनाट सर्कस, नई दिल्ली
03.10.1958

प्रिय कीर्त्ति,

इन दिनों वर्षा खूब हो रही है यहाँ। दमा का हमला हुआ तो मैंने भी इसके खिलाफ मोर्चा लगा दिया है... अपना हाल लिखो...

नागार्जुन तुम्हारा

प्रिय कीर्त्ति,
11.10.1958

पत्र मिला। हाँ, ठीक है। दो-चार रोज शोकहरा जरूर हो आओ... फिर तो तुम हो और गर्दनतोड़ इम्तहान है!

सुकान्त को इलाज हकीमं से करने कहना, X-ray का पचड़ा और डाक्टरी चिकित्सा के खटराग तो अपने बूते से बाहर की बातें है भई!

मुरली 'सीमान्त' (पटनासँ प्रकाशितव्य एकटा पत्रिका) की दौड़-धूप में कहीं बीमार न पड़ जाएँ, फिक्र बस इतनी है।

अपने मित्रों तक मेरी दुआ और प्यार पहुँचा देना।

—नागार्जुन

कीर्त्ति,
21.10.1958

17 का पत्र मिला है। वापस पटना जाओ तो अपने होस्टलीय बन्धुओं तक मेरी तरफ से प्यार और दुलार और दुआ पहुँचा देना। हाँ, मगर लौटने की इतनी जल्दी क्या पड़ी है? मैं 8-11 की शाम को जनता से पटना जा रहा हूँ। मुरली कहाँ है? 'सीमान्त' पर तुम्हारे मित्रों का क्या Reaction है? स्वास्थ्य ठीक है। ग्वालियर, चिरगाँव, झाँसी जा रहा हूँ। 1 तक लौटूँगा।

अपनी माँ से मेरा आशीष कह देना। दिवाकर बाबू से भी। हरी कलकत्ता गया होगा।

—नागार्जुन

प्रिय कीर्त्ति,
01.11.1958

कई रोज बाद लौटा हूँ—ग्वालियर और झाँसी गया था...।
तुम्हारा पत्र मिला।
8 की शाम को जनता से पटना पहुँच रहा हूँ।
अपने मित्रों से मेरा दुलार-प्यार कह दो और थोड़ा खुद भी ले लो।

—नागार्जुन तुम्हारा

सूचनानुसार ओ पटना अबैत छथि आ किछु दिन रहि दिल्ली घुरि जाइत छथि आ गुमकी लादि लैत छथि। हम शिकायत करैत छियनि त' हुनक उत्तर भेटैत अछि—

नई दिल्ली
27.01.1959

प्रिय कीर्त्ति,
अभी-अभी तुम्हारा पत्र मिला है। अबकी इस ट्रिप में किसी को शायद ही मैंने पत्र लिखा हो... तुम्हें भी नहीं लिखा।
शोभा वगैरह देहात चले गए होते अगर हठ न किया होता कि बगैर काफी रकम के देहात नहीं जाएँगे। अभी तक उतनी रकम जुटा नहीं पाया हूँ... शायद फरवरी के अन्त तक कामयाबी मिले... खैर, 1 फरवरी तक पटना आ रहा हूँ। कुछ हाथ-पैर उधर भी मारूँगा। राजकमल वाले 20-2 तक रुपये देंगे। शोभाकान्त यदि देहाती स्कूल में एडमीशन नहीं पा सके तो मुझे भी समूचा साल पटना रहना पड़ेगा और कोई उपाय नहीं है।

हरिनारायण ने पत्र का जवाब नहीं दिया है। लगता है कि रंज हो गये हैं।

—नागार्जुन

मई 59 मे ओ कलकत्ता पहुँचि जाइत छथि। ओहू प्रवासमे बहुत रास पत्र लिखलनि जाहिमे मात्र दू गोट भेटल अछि—

कलकत्ता—7
26.05.1959

प्रिय कीर्त्ति,
लौटते वक्त मौका ही नहीं मिला कि तुम्हारी सुध लूँ। हरिनारायण लौट आए? उन्हें यह पता दे देना।

—नागार्जुन

ओ जखन कलकत्ता जाइत छलाह, किछु मास ओतय रहैत रहथि। मिथिला निकेतन मे एकटा कमरा हुनकहि अधिकारमे रहैत रहनि। एहि मध्य ओ यात्री प्रकाशनक कार्ड छपबौलनि मुदा ओहि पर ओ कोनो पता नहि छपबौलथिन। अर्थात् घुमन्तू यात्री जी जकाँ यात्री प्रकाशनो मोबाइल। देशक जाहि शहरमे ओ जतेक दिन रहैत रहथि ओतहि ओतबे दिनक लेल यात्री प्रकाशनक कार्यालय। एकटा शहर छोड़ि देलनि त' दोसर कोन ठेकान पर हुनक पड़ाव पड़तनि-तकर पता लगायब क्रेता-विक्रेता, पाठक-शुभचिन्तकक काज।

यात्री प्रकाशन
36, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कोलकाता—7
06.08.1959

प्रिय कीर्त्ति,

पत्र मिला। रिजल्ट जैसा भी रहा ठीक समझो। पटना पहुँच रहा हूँ। 16 तक रहूँगा। दिनेश बाबू से अबतक मुलाकात नहीं हो सकी है।

—नागार्जुन

उपर्युक्त पत्रक बाद जे पत्र उपलब्ध अछि ओहि पर तिथि 16.06.1966 छैक। अर्थात् साढ़े छओ वर्षक अन्तराल। यात्री जी कोनो-कोनो बेर पत्र देबामे विलम्ब क' दैत रहथि, मुदा निश्चित रूपसँ एतेक विलम्ब नहि। हम एम.ए. सेहो पटनेसँ कैने रही। काकी (श्रीमती अपराजिता देवी), शोभाकान्त, सुकान्त, उर्मिला प्रभृति सेहो पटनेमे भिखना पहाड़ी बला डेरा पर रहैत रहथि जतय हमर दैनिक आवागमन रहए। शिक्षा समाप्तिक बाद कलकत्ताक नौकरी स्वीकार कर'क परामर्श वैह देने रहथि, ई प्रलोभन दैत जे—वहाँ राजकमल है, मुद्राराक्षस है, तुम्हारे बहुत सारे मित्र हैं... मैं भी तो साल के कुछ महीने वहीं बिताता हूँ...। ओहि साढ़े छओ वर्षमे पटना आ कलकत्ताक पता पर लिखल हुनक एकोटा पत्र उपलब्ध नहि अछि। ओ सभ भेटि गेने तत्कालीन हिन्दी-बंगलाक पत्र-पत्रिका, हुनका द्वारा बताओल बंगला सीख' के 'गुर' आ आवश्यकता, राजकमल एवं मैथिल परिवेश, सनीचर-ग्रुप, बंगलाक तत्कालीन साहित्यिक आन्दोलन आदि पर यात्री जीक टिप्पणीसँ पाठक अवगत होइतथि। मुदा...

हम जून 66 मे गाम अबैत छी, हुनक दर्शनक लेल पटना जाइत छी, अनुपस्थित पाबि एकटा स्लिप छोड़ि कलकत्ता घुरि जाइत छी। कलकत्ता पहुँचलाक बाद हुनक कार्ड भेटैत अछि —

भाई, स्लिप मिली थी।

राँची
16.06.1966

हाँ, अर्से से हम एक दूसरे से अलग रहे। पत्र तक नहीं दे सके। हरिनारायण जी से भी सम्पर्क टूटा हुआ है। अब लिखूँगा। परिवार के सभी लोग प्रसन्न होंगे... इधर क्या लिखा?

—नागार्जुन

जाड़ समाप्त होइतहि यात्री जी कलकत्ताक प्रोग्राम बनाव' लगैत छलाह। ओतय सभ दिन कोनो ने कोनो साहित्यिक गोष्ठी, सम्मेलन, सांस्कृतिक आयोजन चलिते रहैत छल। गर्मीमे संस्था सभ द्वारा आयोजित समारोहमे देश-विदेशक आमंत्रित साहित्यकारक आवागमन सँ कलकत्ता आओर आकर्षक भ' जाइत छल।

हुनका सभकें पाइ संस्था सभसँ भेटैत रहनि, संतोष हमरा सभक मध्य कॉफी हाउस अथवा कोनो गोष्ठी वा ककरो आवास पर आयोजित अनौपचारिक बैसकमे। मौसम वा अवसर, भाषा वा विधा कोनो हो, नागार्जुन सर्वत्र चर्चाक केन्द्रमे। सर्वत्र, नागार्जुन कहाँ हैं, कब आ रहे हैं...।

यात्री जी कलकत्ताक 'आपन लोक' छलाह। हुनका रहने कलकत्ता आओर रंगीन आओर उत्साहपूर्ण, आओर गरिमामय भ' जाइत छल, नहि रहने रीढ़-विहीन लगैत छल।

कोनो भेंटमे कविवर भवानी प्रसाद मिश्र एकाधिक बेर हुनका मादे पुछलनि। अनेक आत्मीयतापूर्ण संस्मरण सुनौलनि। हम यात्री जीकें लिखलियनि–एहि वर्ष कलकत्ता पर एतेक रुष्ट कियैक? हुनक उत्तर–

सम्मेलन भवन
कदम कुआँ, पटना–3

प्रियवर कीर्त्तिनारायण 12.08.1966

2 का पत्र मिला। बड़ी प्रसन्नता हुई। सौभाग्यवती आशा को मेरी तरफ से आशीर्वाद कह देना...

हाँ, कलकत्ता नहीं पहुँच पा रहा हूँ। मन ही मन आशा के हाथों का बनाया खाना खाकर, फिर हम तीनों साथ ही साथ कई बार बोटेनिकल गार्डेन घूम आए हैं! मन ही मन मैं कई दिनों तक तुम्हारी हावड़ा वाली उस कुटिया में वक्त गुजार चुका हूँ। कविताएँ लिख चुका हूँ...।

भवानी भाई का और मेरे आपस में भारी अपनापा रहा है। पारिवारिक रिश्ता है न?

चि. सुकान्त यहीं साथ हैं। बाकी सभी तरौनी... इधर तुमने क्या लिखा है?

अभी और क्या लिखूँ? आशा लौटकर कब तक फिर हावड़ा आएगी?

–नागार्जुन

सरसठिक प्रारम्भमे सीमान्त प्रेसमे छल। यात्रीजीकें सूचित कैलियनि। ओ लिखलनि–छपलहा फर्मा पठा दिअ'...

सम्मेलन भवन
पटना–3

प्रिय कीर्त्तिबाबू 23.05.1967

पत्र पाओल।

'सीमान्त'क छपलहा फर्मा पठा दिअ'... ओना हम अपनहुँ कलकत्ता आबए लए छी मुदा ताहिमे विलम्ब भए सकइए।

विशेष पछाति।

–नागार्जुन

हम हुनका छपलहा फर्मा पठा दैत छियनि आ हुनक पत्रक प्रतीक्षा कर' लगैत छी। हुनक उत्तर हमरा सोझे नहि आबि कए भैयाक नाम लिखल पत्रक माध्यमसँ कलकत्ता पहुँचैत अछि–

सम्मेलन भवन
पटना–3

प्रिय हरी बाबू, 05.06.1967

तुम आये और हमारी मुलाकात नहीं हुई। शायद इधर साक्षात्कार असंभव रहे। लगता है।

'सीमान्त' पर महज दस-बीस लाइनें मुझे लिखनी हैं। सारा कुछ तो कवि ने खुद ही कह डाला है। वक्तव्य कितना जोरदार है। यात्री के बारे में एक जगह लिखते हैं कवि महोदय... 'मार्क्सवादी कंबल ओढ़ कर बैठे हुए एक पंडित जो उनकी राय में (खुद उनकी तुलना में) नवीनता को नहीं पकड़ सके...' यात्री अब तुम्ही बतला दो कि सिवा आशीर्वादों के भला और कुछ क्यों लिखें? मैं कौतुक महसूस कर रहा हूँ–छोटी उम्र के बच्चे मुझे इसी तरह गुदगुदाते रहें–यही चाहता हूँ।

–नागार्जुन

यात्री जीक ई 'कौतुक' अथवा स्नेहिल क्रोध-आक्रोश किछु मास धरि रहलनि। हमर बेर-बेरक आग्रह पर सीमान्तक भूमिकाकें एक बेर आओर ओ पढ़लनि।

साहित्यक प्रायः सभ विधामे ओहि समयमे न'व आन्दोलन चलि रहल छलैक। कोनो भाषा छूटल नहि छल।

कवितोमे भूखी पीढ़ी, श्मसानी पीढ़ी, दिगम्बर कविता, सूर्योदयी कविता, नक्सलवादी कविता आ अकविता आदिक युग छलैक। सर्वसुलभ, सर्वप्रिय बाबाकें कोनो छौड़ाकें डाँटैत आ कोनो छोड़ाकें पीठ थपथपाबैत देखल जा सकैत छल। कखनहुँ ककरो कान अमेठि, ककरो झापड़ लगा, ककरो चश्मा छीनि तत्कालीन साहित्यिक 'शैतान' आ 'उग्रवादी' पर अंकुश लगबैत छलाह। कखनो कोनो 'छपरकनाती'क रचना पर 'रेडिकल डायनामिक'क ठप्पा मारि कॉफी हाउसक हवाकें गर्म क' दैत रहथि।

ओ हमरा प्रति नहुँ-नहुँ 'नॉर्मल' भ' रहल छलाह। एक दिन कहलनि–अपनी आक्रामकता को थोड़ा शालीन बनाओ, जूते चलाओ लेकिन...। हम पुलकित होइत

जोड़लियनि—क्या 'शाल' में लपेटकर? ओ ठहक्का लगबैत कहलनि—नहीं, सिर्फ 'कील-काँटी' निकालकर...।

'आखर'क योजनाक मादे हुनका कलकत्तामे सविस्तर बतौने रहियनि। ओ अपन सहमति दैत पूर्ण सहयोगक आश्वासन देलनि किन्तु लगले ओ इलाहाबाद चलि गेलाह। हम कविताक लेल मोन पाड़लियनि त' ओ लिखलनि—

114, सोहबतिया बाग

इलाहाबाद—6

प्रिय कीर्त्तिनारायण, 28.10.1967

आपका 'आखर' वाला पत्र मिला। मैं कविता अभी नहीं भेज सकूँगा। कौन कॉपी करे? कौन भेजे? यहाँ अभी और कोई है भी नहीं। शोभाकान्त 10 के बाद आएँ शायद।

—नागार्जुन

हमरा ज्ञात छल हुनकासँ मैथिली आन्दोलन पर लिखा लेब बा कोनो रचना ल' लेब कतेक कठिन अछि। हम सोचिते रही जे इलाहाबाद जाइ, हुनक कविता आ मैथिली आन्दोलन पर विचार ल' आबी कि डॉ. सुधाकान्त मिश्रक आमन्त्रण आएल—'पत्रहीन नग्नगाछ'क विमोचन समारोहमे उपस्थित होयबाक लेल। इलाहाबाद गेलहुँ, 'संगम' भेल मुदा रचना-लाभ नहि।

हम अपन मनोव्यथा व्यक्त करैत हुनका लिखलियनि—अपनेसँ रचना प्राप्त नहि क' सकबाक हमर असमर्थताक लेल 'आखर'क पाठक हमरा कहियो क्षमा नहि करत। ओहुना यात्री-विहीन आखरक की मूल्य होयतैक? 'पिता-पुत्र संवाद'क पुत्र आइ अपनाकें हारल बूझि रहल अछि।

कोनो पिता अपन पुत्रकें 'हारल' नहि देख' चाहैत अछि। ओ हमर हताशाकें दूर करैत मार्ग-दर्शन कैलनि—

इलाहाबाद—6

प्रिय कीर्त्तिनारायण, 02.01.1968

'आखर' हेतु 'प्वाइण्ट' पठा रहल छिअहु—

(क) भाषा-आन्दोलनक प्रसंगमे शासन-प्रशासनक हेतु भारतीय भाषा सबहिकें अकुंठ समर्थन देबाक चाही। पृथक-पृथक क्षेत्रकें जखन अपन भाषा भेटि जएतइक तखन सहजहिं 'लिंक लैंगुएज'क आविर्भाव भ' जेतइ। से निश्चिते हिन्दीये रहतइ। एखन हिन्दीक दिशसँ अपने विशाल क्षेत्रमे सर्वांशतः—मुख्य स्थान देआब'क संघर्ष उचित हेतइ, समग्र भारत पर एक्के बेर हिन्दी लादबाक आग्रहसँ आन-आन भाषा वलाकें पृथक रहबाक बहाना भेटि जएतइ। तमिलनाडुमे तमिलेक पूर्ण अधिकार चाही। हिन्दी क्षेत्रमे हिन्दीयेक पूर्ण अधिकार चाही। प्रत्येक भारतीयकें दू टा भाषा सिखबेक चाही। दोसर भाषाक रूपमे अंग्रेजीक अनिवार्यता आवश्यक नहि। उच्च प्रशासन हेतु तेसर भाषाक रूपमे मैट्रिकक उपरान्त अंग्रेजी-जर्मन-रशियन-चीनी आदि आवश्यक हेतइ। प्रतियोगिता परीक्षासँ अंग्रेजीक अनिवार्यता तत्काल समाप्त करक चाही।

(ख) बिहारमे हिन्दीक संग-संग उच्च प्रशिक्षण ओ उच्च प्रशासन हेतु मैथिलीकें अनिवार्य ओ ऐच्छिक रूपें सम्मानपूर्ण स्थान भेटबाक चाही। से नहि भेने कइएक प्रकारक उत्पात हेबाक सम्भावना।

(ग) बिहारमे हिन्दीक माध्यमसँ जे लोकनि प्रशासन चला रहल छथि ओ लोकनि जानि-बूझि क' मैथिली सन विकसित भाषाक तिरस्कार कए रहल छथिन। प्रवंचनाक ई कूटनीति बहुतो दिन धरि झाँपल नहि रहतइन। मैथिलीक माध्यमसँ शिक्षित हजारक हजार तरुण वृन्दकें अनिश्चित काल धरि अंधकारमे आब के राखथीन?

(घ) मिथिलाक शिक्षित जनगण हिन्दीकें मैथिलीसँ सम्मानित करैत आएल छनि। मिथिलाक माटि-पानिमे हिन्दीक प्रति एकोरती कटुता-विरसता नहि छइक। मुदा बिहारक शासन-सूत्र जाहि बाबू-भइया लोकनिक हाथमे छइन ओ लोकनि मैथिलीक अत्यधिक उपेक्षा करइ छथीन। ई अन्याय आब लोक नहि सहतइन।

(च) मैथिली प्रेमी तरुण समाज अंग्रेजीक स्थानमे राष्ट्रभाषा हिन्दीक सर्वांश समर्थन क' रहल अछि। मुदा अपना क्षेत्रमे ओ अपन मातृभाषाक अपमान नहि देखि सकइए।

(छ) मैथिलीक हेतु बिहार-सरकार की की करए चाहइए—से ओकरा स्पष्ट घोषित करबाक चाहिअइ।

हमरा लोकनि आगामी अंकमे अही प्रसंग अपना दिशुक कथ्य राखए चाहब।

—नागार्जुन

पुनश्च —तुम इन्हीं बातों को अपने शब्दों में फिर से लिख सकते हो।

—नागार्जुन

हुनक ई पत्र राष्ट्रभाषा आ मातृभाषाक सीमा रेखा/अन्तर्संबंध, हिन्दी आ मैथिलीक सम्बन्धमे हुनक स्पष्ट विचार आ मैथिली आन्दोलनक मूल उद्देश्य

(तत्कालीन) कें बूझ'क लेल एकटा महत्वपूर्ण दस्तावेज छल। आजुक परिस्थितिमे एकर प्रासंगिकता आओर बेशी छैक।

यात्री जी जाहि शहरमे रहैत रहथि, ओहू शहरमे हुनक पता बदलैत रहैत छलनि। फरवरीमे पता-परिवर्तनक सूचना दैत छथि—

608, अतर सुइया
इलाहाबाद—3

कीर्त्ति, 14.02.1968

अंक नवका प्राप्त भेल।

नवका पता नोट क' लैह। ईहो अंक अपूर्व लागल, आगाँ?

—नागार्जुन

उपर्युक्त पत्रक बादक 8/9 वर्षमे जे पत्र भेटल हैत ओ सभ एखन धरि नहि भेटल अछि।

1977मे सप्ताहव्यापी समुद्री तूफानसँ विशाखापटनमक तबाहीक समाचार पाबि ओ लिखने रहथि—

कलकत्ता

प्रियवर कीर्त्तिनारायण, 30.11.1977

समुद्री तूफान से तुम्हारे कारखाने को भी झटका लगा क्या? इन दिनों बार-बार तुम्हारी और तुम्हारे बच्चों की और उस बहू की याद आ रही है, जिसका नाम भूल बैठा हूँ।

अपने पिता के स्वास्थ्य के बारे में सूचित करना। मैं 10 तक तो यहीं हूँ।

पत्र शीघ्र दो।

—नागार्जुन तुम्हारा

एहि खेप ओ कतेक मास कलकत्तामे रहि गेल रहथि। संयोग एहन जे ओहि अवधिमे हमरा कलकत्ता जयबाक अवसर नहि भेटल। जूनमे हुनका लिखलियनि जे अपने कहिया धरि कलकत्तामे छी, हम आब' चाहैत छी। हुनक उत्तर आयल—

जन संसार
19/बी, चौरंगी, कलकत्ता—13

प्रिय कीर्त्ति, 15.06.1978

पत्र प्राप्त भेल छल। हम 25/30 धरि पटना जेबा ले छी। एक सप्ताह लेल। ओत' सँ 5 दिनुका निमित्त इलाहाबाद। ततः परं? 15 दिनक लेल दिल्ली... पुनः कलकत्ता वापसी। ई भेल अगिला प्रोग्राम—एहि मध्य अर्थात् 30 जूनक मध्य किंवा 20क बादे यदि तोरा तीन अहोरात्रक 'ट्रिप' एम्हुरका लगाबक होउ त'...।

मुदा नहि, नहि। हड़बड़ीमे नीक जकाँ गपशप नहि हेतउ... हड़बड़ी तोरा हमरासँ बेशिए—विशाल मित्र-मण्डल तोहर।

—नागार्जुन

हरिनारायण ग्रीष्मावकाश कतए खेपि रहल छथुन?

सूचित करिहें... अपन पिताक स्वास्थ्य?

—नागार्जुन

एहि पत्रक बादक दू वर्षमे किछु आओर पत्र आयल हैत। ता धरि नियमित पत्राचार होइत छल। जँ हुनक उत्तरमे विलम्ब होअए, शोभाकान्तकें लिखियनि—हुनका हमर यादि दिआबिअनु अथवा ओ कोन पता पर छथि से लिखू।

शोभाकान्त आ सुकान्तक लेल जेठ भाइ जकाँ छलियनि। दुनू हमरा आ यात्री जीक मध्य आत्मीय सेतुक काज करथि, यात्री जीक अनुपस्थितिमे पत्रोत्तर देथि आ हमर पत्र हुनका धरि पहुँचैबाक व्यवस्था करथि।

बाहरसँ घुरि ओ लिखलनि—

कीर्त्तिनारायण, 24.06.1980

शोभा मिसरक नामें तोहर पत्र देखलिअउ।

हम रातिखन 'तूफान' सँ कलकत्तासँ एत' आएल छी।

फेर 28 को... (कलकत्ता)

12 जुलाइ कें पटना घूरब।

पटना 20 दिन रहिकें पुनः कलकत्ता।

तखन कलकत्ता पूरा तीन मास रहनाइ हेतइक।

तुम्हारा पत्र शोभाकान्त को दे दूँगा। दिल्ली पहुँचते ही।

देखो, चितावालसा पहुँचबा मे हमरा कै वर्ख लगइए।

अभी और क्या लिखूँ?

—नागार्जुन

यात्री जी मैथिलीमे लिखल पत्रक उत्तर हिन्दीमे आ हिन्दीमे लिखल पत्रक उत्तर आओर कोनो भाषामे द' दैत रहथि। एतबे नहि, एक पत्रमे किछु शब्द/पांति

मैथिली त' किछु शब्द/पांति हिन्दी अथवा... (उपर्युक्त पत्र द्रष्टव्य)।

80क बाद ओ पत्र लिखब कम क' देने रहथि। हमरा लेल ई दायित्व शोभाकान्तजी कें द' देने रहथिन।

90क बाद हुनक यदा-कदा आब' वला पत्र सेहो बन्न भ' गेल। कारण, किछु-किछु अन्तरालक बादक अस्वस्थता आ ओहू अस्वस्थतामे ककरो संग ल' यात्रा पर बहरा गेलाक बाद रोगक विकरालता। शोभाकान्त लिखथि—कहिया कत' जाइ? हुनका कोन रूपमे अपन पिता कें आन' आ हास्पीटलाइज्ड कर' पड़नि, सेवा-चिकित्सा कर' पड़नि। हम शोभाकान्त जीक पत्नी एवं धिया-पुताकें नहि देखने छलियन्हि। बिनु देखनहि हुनका सभक प्रति जे स्नेह-भाव छल ओ कृतज्ञता आ श्रद्धाभावमे बदल' लागल। हमरा लागय जे ओ सभ यात्री जीक सेवा कए हमर पितृ-ऋण-शोध क' रहल छथि।

हुनक जीवनक अंतिम किछु वर्ष दरभंगामे बितलनि। एहि अवधिमे ओ पत्र लिखैत नहि, कहैत छलाह। हुनकासँ भेंट कर' जाइ वला मित्र सभ हुनक अस्पष्ट स्वरमे कहले पत्रकें लिखि क' पठबैत छलाह।

हुनक दर्शन हमरा कवि बना देलक, हुनक पत्र हमरा लेखनक प्रति गंभीर बनौलक, संरक्षण, सुरक्षा आ आत्मबल देलक, द्रवणशील हिमालय-व्यक्तित्व अन्तःसलिल बनि हमर आत्माक प्रक्षालन कैलक...

पत्राचार-साहित्यक आधार पर जहिया यात्री-नागार्जुनक मूल्यांकन हैतनि त' ओहूमे ओ समस्त भारतीय साहित्यकारमे श्रेष्ठतम आ विश्व पत्राचार साहित्यमे अन्यतम सिद्ध हैताह, हुनक लक्षाधिक पत्रकें गौरवपूर्ण स्थान भेटतैक। हुनक पहिल पुण्यतिथि पर हमर विनम्र श्रद्धांजलि।

रचनाकाल—01.11.1999

कालजयी यात्री-नागार्जुन

1997क आरम्भ। हमर कलकत्ता पुनरागमनक प्रायः डेढ़ वर्ष बीति गेल छल। ने एहि मध्य कहियो हमर पिता एतय अयलाह ने यात्रीजी। कलकत्ता हमर पिताक कर्मस्थली रहनि। मुदा वृद्धावस्थाक कारण ई भीड़भाड़ आ व्यस्ततावला स्थान हुनका लेल अनुकूल नहि छलनि। किन्तु यात्री जी अही भीड़-भाड़मे प्रत्येक वर्ष किछु मास बितबैत रहथि। आब हुनको स्वास्थ्य कोनो कष्टसाध्य यात्राक अनुमति देब बन्न क' देने रहनि।

हम 1961क दिसम्बरमे जखन नौकरी ज्वाइन कर' आयल रही, हमर ई दुनू अभिभावक ओतहि रहथि। कलकत्ताक भूगोल-इतिहास, गली-चौरस्ता, व्यापारिक-सांस्कृतिक-साहित्यिक केन्द्र आ फुटपाथक जिनगीसँ इएह दुनू परिचय करौने रहथि। पछाति एतय रह' वला प्रत्येक व्यक्तिक जेना अपन-अपन कलकत्ता होइत छैक, तहिना हमरो एकटा कलकत्ता भ' गेल, ओहिमे हमर पिताक लेल कोनो स्थान नहि रहनि मुदा यात्री नागार्जुन ओकर सूत्रधार एवं सर्वेसर्वा रहथि।

राजकमल, ललित, मुद्राराक्षस, छेदीलाल गुप्त, राजेन्द्र यादव, मन्नू भंडारी, शरद देवड़ा, सकलदीप, अवधनारायण, रमेश बक्षी समेत हमर साहित्यिक मित्र मंडलीक एक उमिरिया सखा जकाँ सर्वप्रिय मित्र। भिनसरमे चाहखाना आ साँझमे कॉफी हाउस सभक मिलन-स्थल होइत छल। सांध्य विहारक लेल चौरंगी, पार्क स्ट्रीट, विक्टोरिया, ढ़ाकुरिया! रात्रि-विश्राम गीतेश नेवाड़ आ कि हमरा आवास पर। जहिया जेहन 'मूड'।

एम्हर 10/12 वर्षसँ यात्री जीसँ भेंट आ पत्र-व्यवहार दुनू कम भ' गेल छल। हुनका लेल बिना 'एसकोर्ट' (अनुचर)क बहरायब कठिन भ' गेल छलनि। तथापि जाड़ कम भ' गेलाक बाद जँ इच्छा भेलनि त' शरीर आ स्वास्थ्यक स्थितिकें बिसरि यात्रा पर बहरा जाइत छलाह आ मास-दू-मास कतहु रहि लिख' पढ़'मे लागि जाइत छलाह। हमरा हुनक स्वास्थ्य, यात्रा एवं प्रकाशनक मादे शोभाकान्त यदा-कदा लिखैत रहैत छलाह, एहि दीर्घ अवधिमे मोसकिलसँ ओ तीन चारि टा पोस्टकार्ड

लिखने हेताह। कालान्तरमे ज्ञात भेल जे अत्यन्त अस्वस्थ छथि आ आब स्थायी रूपसँ अपन ज्येष्ठ पुत्र शोभाकान्तक आवास पर खाजासराय, लहेरियासरायमे रहि रहल छथि। ता धरि हमर ज्येष्ठ पुत्र संजय (डाक्टर) सेहो एम.एस. कर'क लेल दिल्लीसँ दरभंगा मेडिकल कॉलेज आबि गेल रहथि। हमर पितिऔत डाक्टर वागीश कुमार मिश्र ओतहि रहथि, एहि दुनूक अतिरिक्त यात्री जीक स्वास्थ्यक मादे नियमित सूचना चन्द्रेश जी दिअ' लगलाह।

हम कलकत्तासँ 24 मइ 1997क साँझमे, ट्रेन लेट भ' गेलाक कारण किछु विलम्बसँ हुनक बासा पर पहुँचैत छी। ता धरि ओ साँझुक बैसकी समाप्त कए विश्रामक लेल अपन कमरामे जा चुकल छलाह आ अर्धनीमिलित अवस्थामे छलाह।

हुनक पुत्रवधूकें अपन परिचय दैत छियनि। धियापुता सभ पहुँचि जाइत अछि। बेटीक बिआहक ओरिआओनमे गेल शोभाकान्त जी सेहो आबि जाइत छथि। हमर मना करैत रहलाक बादो यात्री जीकें उठा देल जाइत छनि। ओ किछु कालधरि निद्रालसमे रहैत छथि, मदति कए हुनका बैसाओल जाइत छनि। हम चरण-स्पर्श करैत छियनि। ओ किछु क्षण हमरा अपलक देखैत रहैत छथि, माथ पर हाथ राखि पुनः हाथ पकड़ैत छथि आ बैसल रहैत छथि। पूछैत छथि चितावालसासँ कहिया अयलहुँ?

हम कहैत छियनि—आब हम चितावालसा (विशाखापटनम्) सँ कलकत्ता आबि गेल छी। ओ कहैत छथि—अच्छा हुआ, अब कलकत्ते में तुम्हारा साथ रहेगा। थोड़ा ठीक होते ही आ धमकूँगा। फेर पूछ' लगैत छथि कलकत्ताक हाल-चाल, हमर विशाल मित्र-मंडली (हुनकहि शब्दमे)क एक-एक मित्रक नाम लैत, हुनका मादे। मुदा सभ लटपटायल शब्दमे।

हमरा लागल जे ओ बड़ी काल धरि बैसि चुकल छथि, आब हुनक विश्राम करक लेल कोठरी खाली क' देबाक चाही। हम कहैत छियनि—हमर ज्येष्ठ पुत्र सम्प्रति एतहि रहैत छथि। अपनेक चिकित्सकीय परिचर्याक दायित्व हुनका पर छोड़ि हम विदा लिअ' चाहैत छी। ओ बाँहि पकड़ि लैत छथि। हुनक स्पर्शक आवेश अभिभूत क' दैत अछि। मोन पड़ि गेल अपन वयसक दशम् वर्षमे प्राप्त हुनक प्रथम स्नेह-स्पर्श। आँखि डबडबा गेल।

हम हुनक चरण-स्पर्श कए बाहर बरण्डामे आबि किछु काल शोभाकान्त जीक परिवारक संग बितबैत छी। शोभाकान्त जीक भाग्य पर ईर्ष्या होइत अछि। एकटा ओ छथि जिनक सम्पूर्ण शक्ति, साधन आ चेतना अपन पिताक सेवामे लागल

रहैत छनि, दोसर हम जे चाकरी कें सर्वस्व बूझि, यात्री जीसँ मात्र दू-तीन वर्ष छोट अपन पिताक परिचर्याक लेल कहियो समय बहार नहि क' पबैत छी।

पुनः शीघ्र आयब कहि भाव-विह्वल अवस्थामे हम कलकत्ताक लेल प्रस्थान करैत छी किन्तु ओतयसँ गाम घुरि अयबाक बदलामे पुनः दक्षिण भारत जयबाक लेल विवश क' देल जाइत छी। यात्री जीक स्वास्थ्यक जानकारीक लेल संजयक फोन आ पत्र पर निर्भरता बढ़ि जाइत अछि। चन्द्रेश जी हमर आतुरताकें बूझैत नियमित रूपसँ पत्र लिख' लगैत छथि।

विजयानगरम्‌मे छओ-सात मास बीति जाइत अछि। प्रोजेक्ट नहि पूरा होयबाक कारण ने कलकत्ता घुरबाक स्वीकृति हेड ऑफिस दैत अछि ने बरौनी-दरभंगा जयबाक छुट्टी। हारि कए हम त्यागपत्र दैत छी। मुदा सेहो स्वीकृत नहि होइत अछि। ओहि मध्य साहित्य अकादेमी 1997क लेल पुरस्कारक घोषणा होइत अछि। चन्द्रेश जी बधाइ पठबैत लिखैत छथि, यात्री जी सूचना पाबि कोना आह्लादित भेलाह आ कोन शब्दमे प्रतिक्रिया व्यक्त केलनि। हुनका कहलथिन—उसे लिखो कि चटकल छोड़े और लिखना-पढ़ना शुरू करे। कब आ रहा है—पूछो।

हम 22 मार्च 98क भिनसरमे दरभंगा पहुँचैत छी। चन्द्रेश जी कहैत छथि—अहाँक सम्मानमे पहिल गोष्ठी यात्री जीक आवास पर 'साक्षर' द्वारा आयोजित कैल गेल अछि, अध्यक्षता करताह श्री रमानन्द रेणु।

हमरा होइत अछि जाहि यात्री जीक सान्निध्यो लोककें सम्मानितक श्रेणीमे आनि दैत रहल छैक, ओहि यात्री जी ल'ग आन कोनो सम्मानक की महत्ता?

हमरालोकनि ओहि साहित्य देवताक मन्दिरमे पहुँचैत छी। किछु घंटाक लेल हुनक शयनकक्ष सभागार बनि जाइत अछि।

हमरा आ आशा (हमर पत्नी) कें ओ दुनू दिस बैसा लैत छथि। हमरा दुनूक हाथ अपन हाथमे लए ओ चुपचाप देखैत रहैत छथि। हम दुनू भाव-विह्वल भेल ओहि पारस-स्पर्शकें अश्रु-विन्दुसँ भिजबैत रहैत छी। सामने ठाढ़ वागीश आ संजयकें ओ ल'ग आबि बैस'क संकेत करैत छथिन।

ओहि स्नेहार्द्र वातावरणमे गोष्ठी शुरु होइत अछि। वक्तालोकनि बाजैत छथि, सम्मानित कैल जाइत अछि, अभिनन्दन-पत्र पढ़ल जाइत अछि...। यात्री केन्द्रित चेतना किछु सुन'-बूझ' नहि देलक। ध्यान भंग होइत अछि जखन ओ ऊपर आलमारी दिस तकैत छथि। शोभाकान्त संकेत बूझि ऊपरसँ दू टा पोथी बहार करैत छथि। दुनू वाणी प्रकाशनसँ 1997मे प्रकाशित—हिन्दी आ बंगलामे लिखल 1996 धरिक हुनक कविताक संकलन।

'अपने खेत में...'क कवर उनटाबैत छथि। शोभाकान्त हुनक हाथकें स्थिर राख'क लेल पकड़ि लिख'मे सहयोग करैत छथिन। ओ थरथराइत हाथें लिखैत छथि—'परमप्रिय कीर्त्तिनारायण से मिलकर मैं उनके... (तकर बादक अक्षर हाथ ऊपर-नीचाँ भ' गेलाक कारण अस्पष्ट)।

हमरालोकनि कहलियनि आब छोड़ि देल जाय तथापि ओ नीचाँमे दस्तखत करैत छथि—नागार्जुन, 22.03.1998।

लगले 'मैं मिलिटरी का बूढ़ा घोड़ा' (हुनक बंगला कविताक शोभाकान्त द्वारा हिन्दी अनुवाद) पर हाथ रखैत छथि। शोभाकान्त पृष्ठ फोलि क' दैत छथिन। ओ दस्तखत करैत छथि—नागार्जुन, 22.03.1998

चन्द्रेश जी हमर पुरस्कृत पुस्तक 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' दैत छथिन। हाथकें किछु स्थिर करैत ओ लिखैत छथि—

'भविष्यमे सम्पूर्ण विश्वक भ्रमण करताह'—नागार्जुन।

ओ की लिखि रहल छथि, हमर ध्यान ओहि पर नहि, अपितु हुनक मुखाकृति पर एकाग्र छल, हुनका मुँहसँ बहरायल प्रत्येक शब्द/ध्वनिक श्रवण-अर्थान्वेषणमे लागल छल। ओ कनेक गम्भीर होइत छथि, फेर हमर भावातिरेक पर जेना अंकुश लगाब'क लेल स्पर्श करैत छथि। बुझाइत अछि नहुँ-नहुँ स्वस्थ होइत ओ अपन स्वाभाविक रूपमे आबि गेल छथि। हमरासँ कलकत्ताक साहित्यिक गतिविधि आ पत्र-पत्रिकाक मादे हँसि-हँसिक' लटपटाइत स्वरमे पूछ' लगैत छथि। मुद्रा अतिप्रसन्न-प्रफुल्ल। ओही मध्य वागीशक कैमरा 'क्लिक' करैत अछि। ओहि क्षण लागल जेना आइसँ तीस वर्ष पहिने हमरा इन्टरव्यू दैत काल हुनक जे मुद्रा छलनि, तकरे आइ पुनर्प्रकटीकरण भ' रहल अछि। (एहि दुनू फोटोग्राफ कें अमूल्य धरोहरि जकाँ हम संजोगिकें रखने छी)।

हमरालोकनि बेर-बेरक आग्रहक बादो ओ विश्रामक लेल तैयार नहि होइत छथि। तथापि लेटा देल गेलनि। हम कहलियनि—अपनेक आदेश छल जे आब बोरा बनायब (चटकलक नौकरी) छोड़ि हम पढ़' लिख'मे लागी। आदेशानुसार हम त्याग-पत्र द' आयल छी। स्वीकृत होइतहि हम बरौनी घुरि आयब आ अपनेक सेवा लेल हम दुनू जीव किछु दिन लहेरियासराय आबि रहब। ओ अस्पष्ट स्वरमे जे बजलाह तकर भाष्य शोभाकान्त कैलनि जे जल्दिये आब' कहैत छथि।

हुनका ल'गसँ उठि हमरालोकनि शोभाकान्त जीक कमरामे आबि जाइत छी। हुनक श्रीमती यात्री जीक शारीरिक कष्ट एवं मानसिकताक मादे सुनबैत छथि; शोभाकान्त दरभंगावासी मैथिल एवं साहित्यिक वर्गक निस्पृहता उपेक्षाक मादे

कहैत छथि आ चन्द्रेशक विभिन्न स्थानसँ भेंट कर' आयल साहित्यकार सभक नाम गनबैत छथि।

हम दरभंगासँ विदा भए विजयानगरम् पहुँचैत छी। कहल जाइत अछि—जे प्रोजेक्ट पूरा भेलाक बादे त्याग-पत्र पर विचार कैल जायत। एकर अर्थ भेल साल-डेढ़ साल आओर यात्री जी एवं अपन छियासी वर्षीय पितासँ दूर रह' पड़त। ता धरि की ई दुनू हमर प्रतीक्षा करताह?

हम गाम नहि घुरि पबैत छी। फोन पर संजयसँ यात्री जीक मादे एवं गामसँ पिताक मादे प्रायः प्रत्येक दू-तीन दिन पर समाचार लैत आठ मास बीति जाइत अछि।

5 नवम्बर 1998क भोरमे फोन पर संजय सर्वप्रथम यात्रीजीक निधनक सूचना दैत छथि। हमरा अपना पर ग्लानि होइत अछि। यात्री जीक 'कोमा'मे चलि गेलाक सूचनाक बादो हम दरभंगा नहि पहुँचि सकलहुँ। काल्हि पिता विदा भ' जयताह आ हम एहिना नौकरी करैत रहब। वाह रे नौकरी!

हम तत्काल फोन पर ऑफिसकें सूचित करैत छियैक—हम त्यागपत्रक स्वीकृतिक आओर अधिक प्रतीक्षा नहि कए गामक लेल विदा भ' रहल छी।

हम गाम घुरैत छी आ दू सप्ताहक अभ्यन्तरे पिता विदा भ' जाइत छथि। पारिवारिक आ साहित्यिक दुनू स्तर पर हम निराश्रित भ' जाइत छी। यात्री जी हमर जन्म देखने रहथि, हम हुनक मृत्युक अवसरो पर उपस्थित नहि भ' सकलहुँ—ई ग्लानि आ पश्चाताप आजीवन संग लागल रहत।

हिन्दीक एहि जनकवि एवं मैथिलीक एहि महाकवि पर हुनक जीवनकालोमे असंख्य लेख, आलोचना, शोध प्रबन्ध, संस्मरण आ कविता लिखल गेल छल। मृत्युक चारि-पाँच मास धरि समस्त भारतीय भाषाक पत्र-पत्रिकामे ओ चर्चाक केन्द्रविन्दु बनल रहलाह। चालीस-पचास पत्र-पत्रिकाक हुनका पर केन्द्रित विशेषांक हमरा दृष्टिपथ पर आयल अछि। आओर नहि जानि कोन-कोन भाषामे कतेक विशेषांक बहरयलैक? हमरा जनैत एहि शताब्दीक किछुए भारतीय साहित्यकार पर हुनक जीवनकालमे आ मृत्युक उपरान्त एहन देशव्यापी चर्चा भेल हेतनि। एहिमे कोनो संदेह नहि जे एहि कालजयी जनकवि/महाकविक चर्चा अनन्तकाल धरि राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होइत रहतनि।

रचनाकाल : 10 नवम्बर 1998

विस्फोटक ढेरीपर फूलक गाछ रोपैत महाकवि आरसी

व्यक्तिगत-प्रसंग

प्राथमिक स्कूलमे बच्चासभ गाबैत छल–'चलो देखें ललन भैया, नदी में बाढ़ आई है' आ माध्यमिक स्कूलमे पहुँचि ओ सभ गाब' लगैत छल–'यह जीवन क्या है? निर्झर है मस्ती ही इसका पानी है। सुख-दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।' बालमनकें एहि तरहें प्रभावित कर' वला आ ओकरासँ एतेक व्यापक रूपसँ जुड़ल महाकवि आरसी प्रसाद सिंहकें बाल्यावस्थेमे हमरा देख' सुन' केर अवसर भेटल छल।

हम प्राथमिक विद्यालयक अन्तिम वर्ष अथवा चमड़िया हाई स्कूलक पहिल वर्षमे छलहुँ। 1948 अथवा 1949मे गंगामे बाढ़ि आएल रहैक। ओ निपनियाँ गामकें डूबबैत रेलवे लाइनक दक्षिण कात धरि पहुँचि गेल रहैक। अपन ओहि वयसमे बाढ़िक विभीषिकाक दुष्परिणामक अवगति हमरा नहि छल किन्तु, 'चलो देखें ललन भैया...' गाबैत बाढ़िक आनन्द लिअ' आबि गेल छल।

कोनो दिन ककरो मुँहसँ सुनलहुँ जे काल्हि आरसी बाबू बरौनी आएल रहथि किन्तु, बाढ़िक कारण रेल-लाइनसँ नीचा नहि उतरि सकलाह आ खगड़िया घुरि गेलाह।

संयोगवश किछुए दिनक बाद हुनक पुनरागमन भेलनि। स्टेशन रोडक एकान्त सड़क पर बात-बात पर खिलखिलाइत कोनो सौम्य-सुदर्शन व्यक्तिकें घेरने क्षेत्रक पैघ-पैघ व्यक्ति कें ठाढ़ देखलहु ँ। श्रद्धेय मुकुर-भागवत-दिवाकरक त्रिमूर्ति दूरेसँ देखा गेल छल। ड'रें बगलमे दोसर दिस देखैत आगू बढ़ि गेल रही किन्तु, चौक परसँ झोरा भरने जखन घुरैत रही तँ भीड़कें नहुँ-नहुँ चलैत देखि पाछू लागि गेलहुँ। ओ भव्य पुरुष किछु सस्वर गाबि रहल छलाह आ अगल-बगल चलैत मित्र-मण्डली सुनि रहल छल। कोनो दोसर बच्चासँ ज्ञात भेल जे ई कविवर आरसी प्रसाद सिंह छथि आ कोनो सद्यः रचित रचना लोककें सुना रहल छथिन। हम स्वर दिस अकानलहुँ। कानमे पड़ल–'हम मरण के द्वार पर भी गीत जीवन के सुनाते ही रहेंगे।' एहि तरहें हुनक ई प्रसिद्ध कविता, जे बादमे कलकत्तासँ प्रकाशित होम' बला 'नया समाज'मे छपल आ चर्चित भेल छल, हमरा सड़क पर चलैत सुन' केर सौभाग्य भेटि गेल छल।

आरसी बाबू कोशी कॉलेज, खगड़ियामे हिन्दीक प्राध्यापक छलाह आ मासमे दू-एक बेर मुकुरजी, भागवतजी एवं दिवाकरजीसँ भेंट कर' बरौनी आबि जाइत रहथि। हमरा हुनक दर्शन एवं कविता सुन' केर अवसर बेर-बेर भेटैत छल। श्रद्धेय श्री लक्ष्मी नारायण शर्मा 'मुकुर' चमड़िया स्कूल (आर. के. सी. एच. स्कूल, फुलबड़िया)मे शिक्षक छलाह आ कविक रूपमे विख्यात भ' चुकल छलाह। ओ हिन्दी पढ़ाब' काल आ 'नोट' लिखाब' काल प्रसिद्ध कवि सभक कविताक उद्धरण सुनबैत-लिखबैत रहथि। ओहिमे अपनहुँ कविता सुना दैत छलाह, स्थानीय कवि सभक कवितांश सेहो।

हुनक सम्पर्क आ देल संस्कारसँ स्कूलक अधिकांश विद्यार्थीमे कविताक आंकुर फुट' लागल छलैक। प्रायः सभ घरमे कोठी पर आ कि चारमे खोंसल कविताक कॉपी रहैत छलैक।

मुकुरजी बारहो-तेरह वर्षक विद्यार्थीकें 'आप' कहि सम्बोधित करैत छलथिन आ जँ कविता दिस ओकर अभिरुचि रहलैक त' नामक आगाँमे 'जी' लगा दैत छलथिन। हुनक कृपासँ हम छोटे वयसमे 'कीर्त्तिनारायणजी' भ' गेल रही।

बरौनीक आकाशमे काव्य-वितान हरदम तनल रहैत छल। दिनकर, विकट, शक्र, सुहृद, आनन्द नारायण शर्मा, कर्मशील, मुकुर, भागवत, दिवाकर, हरिनारायण, प्रलयंकर, पुष्प आदि चर्चित कवि सभक अतिरिक्त प्रत्येक गाम, विद्यालय, महाविद्यालयमे कविये-कवि। सौंसे क्षेत्रक सभ इनारमे कविताक भाँग घोरायल। जतय कविएबाक एहन उन्मादक वातावरण हो, ओतय ककरो कवि भ' जायब राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्तक शब्दमे 'सहज संभाव्य' छल। हमहुँ संक्रमित भए 'तुकबन्दी' कर' लागल छलहुँ। पारिवारिक वातावरण आ बाहरसँ पैघ-पैघ साहित्यकार सभक आवागमन उत्तरोत्तर रोगकें असाध्य बनौने गेल।

एक दिन आरसी बाबूक 'आरसी' नामक कविता संकलन मुकुरजी पढ़' लेल देलनि। ओहिमे हुनक विभिन्न प्रकारक 796 कविता संकलित छलनि आ ओकर प्रकाशन स्वयं आरसी बाबू फरवरी 1942मे मुजफ्फरपुरसँ करौने रहथि। ताधरि

हिन्दीमे छपल ओ कविताक सभसँ मोट पोथी छल। विद्यालय आ गामक पुस्तकालयसँ ओकरा 'इशू' करैबाक लेल सभ मारि क' लैत छल। ओ विशाल ग्रन्थ मुकुर जीक कृपासँ हमरा सहजे प्राप्त भ' गेल छल।

'आरसी' देखि हमर बालमनकें कल्पनालोकक 'मानसरोवर' आ कविता पढ़ि ओहिमे विचरण करैत 'राजहंस' मोन पड़ल छलैक। घरमे संस्कृत साहित्य, विशेष कए कालिदासक चर्चा होइत रहैत छल। तें कैलाश पर्वत, मानसरोवर, राजहंस आदि मोनमे आ कल्पनामे बराबरि आबि जाइत छल।

'आरसी'क सरल, सुबोध आ मर्मस्पर्शी कविता सभ हमरा राजहंस सन कियैक लागल छल—ओकरा लेल आइ कोनो तार्किक आधार जोहब मोसकिल किन्तु, 'आरसी' मानसरोवर झील जकाँ शान्त, प्रवहमान आ मोतीसँ भरल अवश्य लागल हैत आ कविता पढ़ैत काल कैलाश पर्वतक हिम-धवलता आ राजहंसक शुभ्रता, सौन्दर्य एवं गरिमा ध्यानमे आबैत हैत।

भारतक कोनो कोनसँ स्तरीय अथवा नव-सँ-नव हिन्दी पत्र-पत्रिका बहराइत छल, ओहिमे आरसी बाबूक कविता रहिते छलनि। गीति-काव्यधाराक शीर्षस्थ कविक रूपमे ओ आदरपूर्वक चर्चित-विश्लेषित होइत रहथि। हुनक तुलना कालिदास, शेक्सपीयर, वर्डस्वर्थ, शैली, कीट्स, रवीन्द्र आदिसँ कैल जाइत रहनि। हुनक कवितामे वर्णित प्रकृति, प्रेम, राष्ट्रीय भावना, जन एवं जनपद, विरह-मिलन, आशा-निराशा आदि पर चर्चा-परिचर्चा होइत रहय।

1957मे हमर नाम पटना कॉलेजमे लिखाओल गेल। होस्टलमे 'सीट' भेटितहि पूर्व परिचित पटनाक साहित्यकार सभसँ भेंट करबाक लालसा जागि उठल।

'नवराष्ट्र' कार्यालय वला रस्तासँ सटल मुख्यमार्ग पर किरायाक मकानमे आरसी बाबूक डेरा छलनि आ ओकरे एक हिस्सामे तारामंडल प्रकाशन। हम एकदिन भिनसरे-भिनसर हुनक दर्शन लेल पहुँचैत छी। महाकवि बरण्डे पर भेटि गेलाह। हमरा देखि आह्लादित होइत प्रकाशनक भितरिया भागमे ल' गेलाह। 'रैक' सभ खाली आ पोथी गेंठिआएल। आकाशवाणीक विशेष गीतकारक रूपमे पुनः कार्यारम्भ करक लेल ओ लखनऊ केन्द्र जा रहल छलाह, जतय ओ 1965 धरि रहलाह। एहि मध्य 1961मे हम एम.ए. कए ओहि वर्षक अन्तमे कलकत्ताक एक गोट फर्ममे नोकरी ध' लेलहुँ। तकर बाद कतेक वर्ष धरि हुनक कवितेसँ भेंट होइत रहल।

कलकत्ता आरसी बाबूक पाठक, प्रशंसक एवं मित्रसँ भरल छल। 'मिथिला दर्शन' बहराइत छल। राजकमल छलाह। प्रवासी-मैथिल सभमे मैथिलीक विकासक

लेल उत्सर्ग-भावना छलनि। प्रायः कोनो-ने-कोनो आयोजन होइते रहैत छल। हरिश्चन्द्र मिश्र 'मिथिलेन्दु', प्रबोधनारायण सिंह, उदितनारायण झा, दिनेश मिश्र, बाबूसाहेब चौधरी, सत्यनारायण लाल, पीताम्बर पाठक, राजनन्दन लाल दास सन कर्मठ मैथिलीसेवीक उद्योगें मैथिलीकें भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान दिअयबाक लेल आन्दोलनक आयोजन होइत छल, मिथिलाक गाम-गाम जाक' लोककें जागृत करबाक लेल कार्यकर्त्ताक दल पठाओल जाइत छल, पोथीक प्रकाशन कैल जाइत छल आ 'अछि सलाइमे आगि जरत की बिना रगड़ने? पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने?' संकल्प-मंत्र जकाँ सभकें अनुष्ठानबद्ध कैने रहैत छल। किन्तु, आरसी बाबू केर दर्शन कोनो आयोजन अथवा समारोहमे नहि होअय।

एक दिन स्थानीय दैनिक 'सन्मार्ग'मे पढ़ल जे महाकवि आरसी प्रसाद सिंहक सम्मानमे हावड़ा होटलमे संध्याकाल कवि-गोष्ठी आयोजित हैत। हम ऑफिससँ बहरा हावड़ा होटल पहुँचैत छी। ताधरि कवि-गोष्ठी शुरू भ' गेल छल, बहुतरास कवि कविता सुना चुकल छलाह आ आरसी बाबूक काव्य-पाठ चलि रहल छल। हम पछिला दरबज्जासँ सभागारमे प्रवेश करैत छी जे चुपचाप पाछाँ जाक' बैसि जाइ किन्तु, आरसी बाबूक दृष्टि हमरा पर पड़िये गेलनि। ओ कविता पढ़ब रोकि अपना लग बजा लेलनि आ अपूर्ण कविताकें पूरा कए श्रोता सभसँ कहलथिन—'आज इतना ही। और कविताएं फिर कभी सुनाऊँगा।' आ हमरा कहलनि—'चलू।' हम आश्चर्यचकित! जकरा लेल गोष्ठी आयोजित सैह उठबाक लेल तैयार। संयोजक एवं साहित्यकार सभक क्षुब्ध दृष्टि हमरा पर गड़ल। हम अपना कारण उत्पन्न व्यतिक्रमक परिणामक अनुमान करैत अनुरोधपूर्वक कहलियनि—'अपनेक थोड़ेक काल आओर रहि गेने गोष्ठी नीक जकाँ सम्पन्न भ' जयतैक।' ओ कहलनि—'कोनो बात नहि। ई सभ तँ एहिना होइत रहैत छैक। हमरा अहाँक बासा पर जाय कनिञाकें आशीर्वाद देबाक अछि।'

हम हुनका संग अपन तत्कालीन बासा 36, मणिलाल चटर्जी लेन, हावड़ा पहुँचैत छी। श्रीमतीजी विस्मय-विमुग्ध। महाकविसँ पारिवारिक मित्रताक मादे त' ज्ञात छलनि किन्तु दर्शन, सेहो अप्रत्याशित, पहिले बेर भ' रहल छलनि। चरण-स्पर्श कैला पर ओ हुनका अपन परिचय दिअ' लागलथिन। श्रीमती बाजलीह—'हम अपनेसँ परिचित छी।' 'कोना? अहाँक बिआहमे तँ हम नहि गेल रही।' ओ कहलथिन—'कोर्सक किताबमे अपनेक कविता आ परिचय दुनू रहैक। पोथीमे फोटो देखने रही आ हिनका घरमे सभक मुँहे अपनेक चर्चा सुनैत रही।' ओ कहलथिन—'कोनो कविता सुनाउ।' आ श्रीमती कोर्समे पढ़ल हुनक कोनो सौंसे

कविता सुना देलथिन। आरसी बाबू गद्गद् होइत हुनका आशीर्वाद देलथिन आ परिवार एवं कलकत्ताक मादे पूछ' लागलथिन।

श्रीमतीजी चाह-जलखइक ओरिआओनमे लगलीह आ हमरालोकनि साहित्य-चर्चामे। समय-सीमा पहिनहि बान्हि देल गेल रहय तें रात्रि-भोजनक लेल आग्रहो करबाक उपाय नहि छल।

वार्ताक क्रममे 'परिवेश'क चर्चा चलि गेल। ओहि लघु-पत्रिका केर चारियेटा अंक बहरायल छलैक कि ओकरा बन्न कर' पड़ल। अर्थाभाव सभ साहित्यिक पत्रिकाकें रहैत छलैक, ओकरो छलैक मुदा, ओकरा बन्न करबाक कारण सहयोगी-मित्र सभक विचारसँ हमर असहमति छल।

चीनी आक्रमणक बाद साम्यवादी दृष्टिकोण आ प्रगतिशील विचारधारा पर पुनर्विचारक प्रयोजन छलैक। हमरा दृष्टियें चीनी आक्रमण आ ओकर विस्तारवादी नीतिक स्पष्ट शब्दमे साहित्यकार द्वारा विरोध आवश्यक छलैक किन्तु, मित्रवर्ग ओकरा प्रति प्रच्छन्न रूपसँ समर्थन-भाव रखैत छलाह। 'परिवेश' कोनो पार्टीक पत्र भए अधोगति प्राप्त करय–ई हमरा स्वीकार नहि छल। एकसर पड़ि गेलहुँ। 'परिवेश' कें बन्न क' देबाक अतिरिक्त तत्काल कोनो उपाय नहि सूझल।

हम आरसी बाबूकें कहियो रचनाक लेल आग्रह नहि क' सकल छलियनि। हमर विवशतासँ ओ परिचित छलाह। 'परिवेश' सन साठिक उभरल साहित्यिक प्रवृतिक प्रतिनिधित्व करैत छल। ओहिमे कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंह सन नवकविक (ई बात 1963क थिकैक) कविता छपि सकैत छल किन्तु, आरसी बाबू सन प्रतिष्ठित-प्रख्यात कविक पारम्परिक गीत-कविता नहि। ओ हमरालोकनिक विचारधारा आ 'परिवेश'क दृष्टिकोणसँ असहमति राखितहुँ ओकर बन्न होयबाक बात सुनि दुखी भ' गेलाह। ओ कहलनि–'अहाँ असहयोग आ विरोधक पूर्वानुमान अवश्य कैने हैब तखन चारिये अंकक बाद हतोत्साह कियैक भ' गेलहुँ, साहित्यिक काजमे तँ एहि तरहक समस्या आबिते छैक।'

हुनक सहानुभूति आ उत्साहवर्द्धन बड़ीकाल धरि ओकर पुनर्प्रकाशनक मादे सोच'क लेल बाध्य क' देने छल किन्तु, से संभव नहि भेल। हमरा होइत छल जे ओ अपन पीढ़ीक आन मूर्धन्य साहित्यकारकें, 'परिवेश'कें 'नोटिश'मे नहि लैत हयताह। किन्तु वैचारिक विरोधक अछैत अपन साहित्यिक प्रयासक प्रति हुनक साकांक्षता हमरा हतप्रभ क' देने छल।

तकर बाद हमरा कलकत्तामे हुनक दर्शन नहि भेल। ओ प्रकाशनक काजसँ ओतय अबैत छलाह किन्तु, पूर्व सूचनाक अभावमे हम हुनक दर्शनसँ वंचित रहि

जाइत छलहुँ। दू-तीन बेर पटना गेला पर आ मुजफ्फरपुर जाक' हुनकासँ भेंट करबाक प्रयास कयलहुँ किन्तु, कोनो खेप हुनक गाम चल जयबाक त' कोनो खेप आन कतहु जयबाक सूचना भेटैत रहल।

एकबेर पटना पहुँचलहुँ त' भीमनाथ जीसँ हुनका मादे पूछलियनि। ओ कहलनि–'आरसी बाबू हमर पड़ोसेमे रहैत छथि आ सम्प्रति पटनेमे छथि।'

'मिथिला मिहिर' सँ दुनू गोटे हुनका डेरा पर पहुँचैत छी। भीमनाथ जी फूजल खिड़की सँ हुलकी मारैत छथि आ दरबज्जा खट-खटबैत छथि। आँखिक सोझमे आरसी बाबू ठाढ़। हमरालोकनिकें देखि ओ कोनो निर्दोष चंचल बालक जकाँ उत्फुल्ल होइत छथि। हम चरण-स्पर्श करैत छियनि आ ओ कुशल-क्षेम पूछैत छथि।

भौतिक सम्पन्नताक छद्ममे बोरल कृत्रिम हास-विलास आ विवेकान्ध आभिजात्यक दंश सँ आ हमर मनप्राण पर हुनक आन्तरिक आह्लादमे डूबल सहज-निश्छल हास्य अमृत वर्षा करैत अछि। टकटकी लगऔने मात्र हम हुनका देखैत रहैत छियनि। भीमनाथजी हिमाच्छादित कैलाश पर्वतक शुभ्रहास आ मृगशावकक हत चांचल्य अबोधताकें विस्मित भ' देखैत रहैत छथि। ओ हमरा सन कतेक मृगशावककें एहि कैलाशक चरणतल पर एहिना कतेक बेर देखने हयताह किन्तु, हमरा त' अपन स्रष्टाक स्नेहिल दृष्टिक मानसरोवर सौंदर्य-विद्ध कैने छल। ओ हमर ध्यान तोड़ैत छथि आ चलबाक संकेत करैत छथि आ हमरालोकनि विदा भ' जाइत छी।

ओहि वर्ष 1979मे, पटनासँ हमर कविता-पुस्तक–'हम स्तवन नहि लिखब' छपल। पोथी भीमनाथ जीक सहयोगसँ बहरायल छल। ओकर प्रति आरसी बाबूकें अवश्य भेटल होयतनि। हुनक कोनो प्रतिक्रिया नहि भेटल त' भेल जे पोथी नीक नहि लागल हेतनि त' सम्मति देब ओ आवश्यक नहि बूझने हेताह। आठ-नओ वर्ष बीति गेल। 1989क फरवरीमे वागीशक (डॉ. वागीश कुमार मिश्र, रमेश्वर लता संस्कृत कॉलेज, दरभंगा) पत्रसँ ज्ञात भेल जे विद्यापति-स्मृति पर्व समारोहक अवसर पर डॉ. रामदेव झाक सम्पादनमे बहरायल स्मारिका 'संकल्प'मे 190 पांतिक आरसी बाबूक कविता–'अहाँकें स्तवन लिखय पड़त'–'हम स्तवन नहि लिखब' केर संदर्भमे छपल छनि। सूचना त' भेटल किन्तु, 'संकल्प'क प्रति नहि।

कोनो पोथी पर प्रतिक्रिया व्यक्त करबाक आरसी बाबूक ई पद्धति अद्भुत लागल। साधना-सर्जनाक शिखर पर पहुँचि गेल एहि महाकविकें 'हम स्तवन नहि लिखब' सन सामान्य कृति कोना आकृष्ट क' लेलकनि, से जानबाक लेल 'संकल्प' देखब आवश्यक छल। हम जीवकान्तकें लिखलियनि। ओ हुनक उक्त कविताक

मादे अपन विचार व्यक्त करैत लिखलनि जे अंकक लेल सोझे आरसी बाबू अथवा रामदेवजीकें लिखिऔन। हमर पत्र भेटलाक बाद आरसी बाबू 04.04.1989 कें पटनासँ एकटा कार्ड पठौलनि–'अहाँक 24/3 दिनांकित पत्र प्राप्त भेल। जीवकान्तजी जे लिखलनि, से यथार्थ छै। आइकाल्हि कवि एवं साहित्यकारक प्रति समाज तथा सरकारक की धारणा छै, ताहि आधार पर हम चर्चित कविताक रचना कैने छी। आ कवि एवं साहित्यकारक स्वाभिमान, सम्वेदना तथा रचनाधर्मिता केहन होइत छै, तेकर जीवंत चित्र अहाँ अपन कवितामे प्रस्तुत कैने छिये। हम ओहि मानसिकताकें वास्तविकतामे उतारि देने छियै। 'संकल्प'क प्रति लेल अहाँ डॉ. रामदेव झाकें लिखिऔन। विशेष अपन समाचार दिअ'। की, केहन रचना भ' रहल छै। अहाँक–आरसी'

पछाति हमर पत्र भेटितहि रामदेवजी संकल्पक अगिला-पछिला सभ अंक आ अपन पोथी सभ पठा देलनि।

उक्त कविता पढ़लाक बाद भावनाक संग-संग कतेक रास प्रश्न जागि उठल। आरसी बाबूक प्रतिक्रियामूलक कविताक समक्ष क्रियामूलक कविता (मूल कविता) तेजहत लाग' लागल। हमरा लक्ष्य कए कहियो यात्री जी 'पिता-पुत्र संवाद' लिखने रहथि। ओहने सौभाग्य मैथिलीकें महाकवि आरसीक 'अहाँकें स्तवन लिखय पड़त' पाबि भेटलैक। हमरा जनैत ई कविता 'स्मारिका'मे बहरयलाक कारण बहुत कम पाठकधरि पहुँचल हेतैक किन्तु, जहिया ओ पढ़ल जायत–एहि श्रेष्ठ कविताक निमित्त होयबाक लेल हम अवश्य स्मरण कैल जायब। दू-दू गोट महाकवि केर दू गोट श्रेष्ठ कविता मैथिलीकें भेटलैक–हमर कवि कर्मक एहिसँ बढ़िक' सार्थकता की हैत?

हुनक मैथिलीमे आगमन आ अवदान

महाकवि आरसीक प्रथम दर्शन हमरा हुनक वयसक पूर्वार्द्धक अंतिम चरणमे भेल छल। ओ प्रसिद्धि, लोकप्रियता आ उत्कर्षक शिखर पर पहुँचि गेल रहथि। तत्कालीन साहित्यिक परिवेशमे ओ सर्वाधिक लिख'-छप' आ पसिन्न कैल जायवला कवि मानल जाइत छलाह। हमर बालमन हुनक प्रतिमा गढ़ि मोनक सिंहासन पर एक गोट आदर्श कविक रूपमे हुनका प्रतिष्ठित क' लेलक।

विद्यार्थी जीवनमे छलहुँ त' 'माटिक दीप' पढ़ने छलहुँ। 'पूजाक फूल' प्रकाशित भेलनि त' 'आखर' बाहर करैत छलहुँ। ओकर समीक्षा 'आखर'क छठम अंक (अप्रैल 1968)मे बहार करबाक सौभाग्य भेटल छल। ताधरि हमर काव्यादर्श बदलि

गेल छल आ भाव-विह्वलताक स्थान वैचारिक संघर्ष ल' लेने छल। किन्तु, आरसी बाबू ओहिना सहज-सरल, प्रकृति, जीवन आ मनुक्खक गरिमाक गीत गाबैत, अपन आन्तरिक आह्लादकें कोनो शिशु जकाँ निश्छल हास्यक माध्यमसँ सभपर लुटबैत आस्था प्रेम विश्वासक स्रोतस्विनी बहबैत। हमरा लेल हुनक ई सहज व्यापार रहस्यसँ भरल छल। परिवर्तित मानसिकताक कारण हुनक आत्म-रागमे वर्त्तमान विमुखताक दर्शन होइत छल, हुनक जीवन-संगीत वास्तविक जीवनसँ पलायनक संकेत दैत छल आ ओ हमरा 'अतीतजीवी' कवि लाग' लागल छलाह। ई सभ धारणा ताधरि प्रकाशित आरसी-साहित्यक आधार पर बनल छल। किन्तु, कालान्तरमे प्रकाशित हुनक हिन्दी कविता संकलन सभ–'मैं किस देश में हूँ', 'रजनीगंधा', 'युद्ध अवश्यम्भावी है' आदि हमर ओहि धारणाकें निर्मूल सिद्ध क' देलक। ओकर स्पष्टीकरणक लेल हमरा हिन्दीमे फराकसँ लिखबाक चाही। एतय तँ मात्र मैथिलीक सम्बन्धमे हुनका पर विचार करब उचित हैत।

आरसी बाबूक रचना बहुआयामी एवं द्विभाषी (हिन्दी एवं मैथिली) अछि। प्रकृतिक सुकोमल उपहार पुष्प आ मानवक कोमलतम रूप शैशव हुनका प्रारम्भहिसँ आह्लादित-आन्दोलित एवं सर्जनारत करैत रहलनि। प्रकृतिक हुनक कवितामे आलंबन उद्दीपन भए नहि, आत्मरूपमे प्रकट भेल अछि। तहिना शैशव वर्णित अभिव्यक्ति नहि, देह धारण क' उपस्थित भेल अछि। परिमाणमे कोनो भारतीय कवि आरसी बाबूसँ बेशी कविता नहि लिखने हेताह–हिन्दी-मैथिलीमे त' नहिये।

आरसी बाबूक मातृभाषा मैथिली छलनि आ मित्र छलथिन अपना समयक विख्यात हिन्दी-मैथिली कवि एवं मैथिलीक अनन्य हितैषी बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' जे स्वयं स्वच्छन्दतावादी कविता लिखैत छलाह। ओ एहन चतुर छलाह जे हिन्दीक मंच पर मैथिलीक मान-प्रतिष्ठाक लेल हिन्दीयेक एक गोट विख्यात कविकें मैथिलीमे कविता लिख'क लेल आग्रह कैलनि। कविक क्षमता एवं प्रतिभाक आधार पर ओ कविता लिखयबाक पहिनहि ओकर श्रेष्ठताक अन्दाज लगा नेने हेताह। आ मैथिलीक प्रसिद्ध कविता–'शेफालिका' विरचित भ' गेल आ काव्य जगतमे एकटा 'माइलस्टोन' गड़ि गेल। लोककें कविमे रवीन्द्रनाथ टैगोरक दर्शन होम' लगलनि।

एतय विचारणीय ई अछि जे जँ आरसी बाबू पहिनहिसँ हिन्दीमे कविता नहि लिखैत रहितथि त' की मैथिलीमे हुनक प्रथमे प्रयासमे 'शेफालिका' सन श्रेष्ठ आ सर्वग्राह्य कविता लिखा जइतय? हिन्दीमे पहिनहि जड़ि जमाकए मान-प्रतिष्ठा अर्जित नहि क' लेने रहितथि त' अपन मातृभाषाक लोक हुनका ओहि रूपमे शिरोधार्य कए आदर-अभिनन्दन करितनि?

आरसी बाबू ककरो आग्रह पर कोनो आन भाषामे 'शेफालिका' सन कविता लिखितथि त' ओकरा ओहिना मान्यता भेटितैक जेना मैथिलीमे भेटल छैक। रचनाक श्रेष्ठता रचनाकारक प्रतिभा, क्षमता आ अभिव्यक्ति-कौशल पर निर्भर करैत छैक आ ओकर प्रसिद्धि भाषाक व्यापकता पर। से जँ नहि रहितैक त' रवीन्द्रनाथ 'गीतांजलि'क अंग्रेजीमे भाषान्तरणक मादे नहि सोचितथि।

आरसी बाबूक समक्ष हिन्दीक प्रशस्त मार्ग छलनि आ हुनक मातृभाषोक लोक हिन्दीयेमे भेटल मान-प्रतिष्ठाक कारण सम्मान दैत छलनि। सुमन-मधुप-अमर-मोहन सेहो सभ हिन्दी आ मैथिली दुनूमे लिखैत छलाह, किन्तु हिन्दीमे नहि जमि पयबाक कारण मैथिलीमे अपन सम्पूर्ण चेतना लगा देलनि। मुदा ओ त' हिन्दीक प्रतिष्ठित कविमे अग्रगण्य भ' चुकल रहथि आ राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति पयबाक लेल रचनारत रहथि। ओ कियैक राष्ट्रभाषाक राजमार्ग त्यागि मातृभाषाक एकपेरिया पर चलैत दू-चारि जिलामे प्रसिद्धि पयबाक लेल प्रयासरत होइतथि?

निश्चित रूपसँ भुवनजी, डॉ. अमरनाथ झा एवं आन मैथिली प्रेमीकें शेफालिकासँ प्रभावित भए आरसी बाबूसँ आओर श्रेष्ठगीतक अपेक्षा रहल होइतनि। आरसी बाबू स्वयं एहि बातकें बूझैत हेताह। कहियोकाल आग्रह विशेषवश अथवा स्वेच्छासँ मैथिलीमे लिखि दैत छलाह, किन्तु अपन मुख्य लक्ष्य राष्ट्रभाषाक सेवासँ विचलित भए मैथिलीमे नहि उतरलाह।

हुनक पहिल मैथिली कविता शेफालिका 1936मे छपल छल आ पहिल मैथिली कविता संकलन 'माटिक दीप' बहरायल छलनि 1958मे। एहि 22 वर्षक अवधिमे ओ हिन्दीमे सहस्त्राधिक कविता लिखलनि, किन्तु मैथिलीमे मेघदूतक अनुवादक अतिरिक्त मात्र 28 गोट। ओहि अवधिक लिखल मात्र एकटा आओर-मधुयामिनी (1944) छलनि जे 1967मे 'पूजाक फूल'मे संकलित भेल।

एतय हमर उद्देश्य मैथिलीमे नहि लिखि सकबाक हुनका पर आक्षेप लगायब नहि अपितु स्थिति स्पष्ट करब अछि।

1960-61 धरि हिन्दी कविताक स्थिति बहुत बदलि गेल रहैक। नव काव्यान्दोलनक बिहाड़ि कविताक अवस्थेकें नहि, अस्तित्ववादी युकिलिप्टस आ कैक्टसोकें जड़िसँ हिला देने रहैक। स्थापितक प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लगाओल जा रहल छलैक। स्थापनाक लेल प्रतीक्षारत रचनाकारक शल्य-परीक्षा चलि रहल छलैक। आलोचनाक मापदण्ड बदलि गेल रहैक। मात्र कबीर, निराला, मुक्तिबोध आ नागार्जुन प्रासंगिक रहि गेल रहथि। ओ बिहाड़ि अज्ञेय धरिकें उखाड़ि क' राखि देने रहनि। अतलसँ केदार-नागार्जुन-शमशेर-त्रिलोचनक प्रतिमाकें बहार क'

प्रतिष्ठित करबाक नामवरी प्रयास चलि रहल छलैक, एहना स्थितिमे आरसी बाबूक अतीत ऐतिहासिक आ अप्रासंगिक भ' जायब स्वाभाविके छल।

'पूजाक फूल'क बाद आरसी बाबू मैथिली दिस उन्मुख भेलाह। अपन रचनाधर्मिता पर अखण्ड विश्वास रहितहुँ, 'राष्ट्रभाषा'क सर्वजन स्वीकृति आ ओकर साहित्यक समृद्धिमे आजीवन साधनारत रहबाक संकल्प आ दृढ़ निश्चयक बादो हिन्दीवलासँ हुनक मोह-भंग होम' लागल छलनि। जेना स्वतंत्रता-प्राप्तिक बाद स्वतंत्रताक अर्थ नौकरशाह एवं राजनेताक लूटि-मारिमे बदलि गेल, तहिना स्वतंत्रता-संग्रामक भाषा हिन्दी राष्ट्रभाषाक स्थान पर हमरालोकनिक औपनिवेशिक संस्कारक कारण एवं अंग्रेजी भक्त राजनेताक कुचक्रसँ 'सम्पर्क भाषा' घोषित भेल किन्तु, सेहो आइ धरि किछु राज्यमे मान्य नहि भेल। उनटे ओकर ठीकेदार सभ साम्राज्यवादी दृष्टिकोण अपनाक' आधिपत्य बढ़यबाक चिन्तामे लागि गेलाह। हिन्दीक सहयोगी क्षेत्रीय भाषाक विकाससँ हिन्दी आओर समृद्ध होइतय–ई मूढ़मति राजनेता केर प्रस्तरीभूत मस्तिष्कमे नहि प्रविष्ट भ' सकलनि आ ओ भाषाक राजनीति शुरू क' देलनि। हुनका एतबो नहि बूझल छलनि जे सय-सवा सय वर्ष पहिने हिन्दी स्वयं क्षेत्रीय भाषा छल आ ओ संस्कृतमूलक विभिन्न क्षेत्रीय भाषाक समाहारसँ बनल अछि। कबीर, विद्यापति, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा हिन्दी कविमे कोना परिगणित होम' लगलाह ओ तकरो अध्ययन नहि क' सकलाह आ मातृभाषाक अस्मिताकें राष्ट्रभाषाक बैरिन बूझि ओकरा पदाक्रान्त कर'मे लागि गेलाह।

कोनो रचनाकारक कार्य क्षेत्र भाषा नहि, साहित्य छैक किन्तु साहित्य जाहि भाषामे लिखल जाइत छैक ओकर उन्नयनसँ त' साहित्य प्रभावित आ समृद्ध होइते छैक। साहित्यकारोकें विस्तार भेटैत छैक।

दोसर बात-शिविर, प्रान्त, वाद, क्षेत्रमे बँटा क' साहित्यक रचनाधर्मिता आ साहित्यकारक संघर्ष दुर्धर्षिता ओहुना कम भ' जाइत छैक। ताहू पर जँ भाषा एवं राजकीय सेठिया सम्मानक राजनीति लादि देल जाय त' ओ आओर अधोगतिमे पहुँचि जाइत छैक।

आरसी बाबू सन स्वतंत्रचेता, स्वाभिमानी आ साधनकें सर्वस्व बूझ'वला साहित्यकारक संदर्भमे उपर्युक्त कथन विशेष अर्थ रखैत अछि। ओ जाहि भाषाक संवर्धनमे लागल रहलाह, ओहिमे साहित्य-साधनासँ बेशी साहित्यिक राजनीति महत्वपूर्ण भ' गेलैक एवं जाहि मूल्यक लेल अद्यावधि संघर्षरत रहलाह, ओकर अवमूल्यनसँ जे दृष्टि विकसित भेलैक ओहिमे हुनका सन साहित्यकारक मात्र ऐतिहासिक महत्व रहि गेलैक।

ओ एहि सभसँ अप्रभावित रहि अपन साधनामे लागल रहलाह। वर्तमानक प्रति असन्तोष एक दिस अतीतमे आरम्भ कैल काज (वीरवर कुँअर सिंह, चाणक्य शिखा, रजनीगन्धा, आस्था का अग्निकुण्ड आदि, हिन्दीमे) पूरा कर'क लेल प्रेरित कैलकनि त' दोसर दिस मातृभाषाक प्रति ध्यान दिऔलकनि।

आ अपन मातृभाषाक अन्हार घरमे आन्तरिकता, स्नेह-प्रेम आ नैसर्गिक सौन्दर्यक दीप (माटिक दीप) बार'वला कवि आरसी 'पूजाक फूल' लए उपस्थित भेलाह। ओकर यथेष्ठ स्वागत-सम्मान भेलैक। एहिमे संकलित तीस गोट कवितामे 1944मे लिखल 'मधुयामिनी' कें छोड़ि उनतीसो कविता 1960क बाद थिकनि। तकर बाद त' ओ मैथिलीयोमे निरन्तर लिख' लगलाह। परिणामतः प्रायः सय गोट कविताक संकलन 'सूर्यमुखी' 1981मे प्रकाशमे आयल।

'सूर्यमुखी'क विस्तृत भूमिका (प्रवेशिका) कतेक अर्थमे महत्व राखैत अछि। एहिमे ओ अपन काव्य-संघर्ष, रचना-प्रक्रिया, चिन्तन आ सरोकार, आधुनिकताक प्रति अपन दृष्टिकोण स्पष्ट कैलनि अछि, कविताक प्रयोजन आ आधुनिक संदर्भमे आकर प्रासंगिकता एवं मैथिली कविताक साम्प्रतिक स्थिति पर विचार कैलनि अछि, आओर अपन पुष्प-चेतनाकें स्पष्ट करैत आत्मस्वीकारक रूपमे 'शेफालिका' सँ 'सूर्यमुखी' धरिक यात्राक प्रसंगमे लिखैत छथि–

'तें कहल, जे 'शेफालिका' हमर जीवनक पहिल प्रातेसँ तेना ने हमरा विमुग्ध करय लागल, जे परिपूर्ण यौवनक मादक-मांसल उद्वेगक कथे की? आइ वृद्धोपन धरि पिण्ड नहि छोड़लक अछि, एखनो हरसिंगारक फुलायल गाछक सान्निधिमे अबिते मनप्राण जेना कोनो स्वप्न लोकमे जाक' मूर्च्छित भ' जाइत अछि। ...एहि प्रसंगमे जँ डूबिक' देखल जाय, तँ लागत जे हमरा जीवनमे फूलसँ जेना लगाव भ' गेल अछि, तेना संसारक कोनो आन वस्तु सँ किएक ने?'

संसारक आन वस्तु दिससँ आँखि मूनि फूल अथवा प्रकृतिक प्रति एहने लगाव प्रायः सभ स्वच्छन्दतावादी प्रकृति प्रेमी रोमांटिक कविक रहनि। हिन्दीक उत्तर छायावादी काव्य परम्परामे दीक्षित कवि आरसीक समक्ष वर्डस्वर्थ, कीट्स, शेली, बायरन, रवीन्द्र, प्रसाद, पन्त आदिक आदर्श छलनि। एहि कवि-वर्गक लेल जीवनक वास्तविकतासँ बेशी रागात्मकता महत्वपूर्ण छल, प्रकृतिक ऐश्वर्यलोकक काल्पनिक आनन्दक समक्ष सभ किछु तुच्छ।

महाकवि आरसी जाहि फूलक बात एतेक सरल-सुबोध ढंगसँ कहने छथि ओ गाछक डारि पर प्रस्फुटित होइवला सामान्य फूल नहि अछि। ओ संसारक सभ ऐश्वर्य, सभ दुख-दर्द, सभ समस्या, सभ विडम्बना-प्रताड़ना, सभ अभाव-अभियोगक

माटिकें मर्दित कए ओहि पर उगैत अछि, अपन सुगन्धि जीवनक दुर्गन्धि पर पसारि दैत अछि, काँट-कुशसँ क्षत-विक्षत शरीर पर परागक स्तर-पर-स्तर चढ़ा दैत अछि, आ संसारक समस्त विकृतिकें स्मितिमे बदलि दैत अछि। ई फूल कविक आत्मदुर्बलता नहि, काव्य-सत्य थिकनि। ओकर परिक्रमा, ओकरे विस्तारमे अपन सत्य-शिव-सुन्दरक अन्वेषण हुनक काव्य-यात्रा–ननु पुष्पमेव निदर्शनम्। हुनक ई फूल ब्रह्म जकाँ विराट अछि आ ओकरे जकाँ रहस्यमय। नहि त' की ओहिना साठि वर्षक पुष्प-साधनाक बादों ओ ओकरा लेल 'नेति-नेति' कहि रहल छथि?

महाकवि आरसीकें शैशव-किशोरावस्थामे बूझब जतबे सरल छल, आइ ओतबे कठिन। सम्पूर्ण आरसी-साहित्य हमरा लेल महासागरक विस्तार ल' लेलक आ मल्लिनाथक श्लोक मोन पड़य लागल–

'करीन्द्र जीमूत वराह शंखमत्स्यादि शक्त्युद्भववेणुजानि
मुक्ताफलानि प्रथितानिलोके तेषांतु शुक्त्युद्भवमेव भूरि'

सितुआ-शंख, शार्क-ह्वेल सभसँ लड़ैत-बचैत 'मुक्ताशुक्ति'क भण्डार धरि पहुँचियो कए जँ मोती बहार नहि क' सकी त' एकरा हमर व्यक्तिगत अक्षमताक अतिरिक्त आओर की कहल जा सकैछ?

तीन-चारि पीढ़ीसँ लगातार बिहारमे हिनक कविता-गीत पढ़ल-गायल जा रहल छनि। हुनक जीवनी आ काव्य-यात्रासँ बच्चा-बच्चा परिचित अछि। कोटि-कोटि हृदयक ओ स्पन्दन बनि गेल छथि, अपन निर्मल भावधारासँ लोक-भावनाकें परिष्कृत-उत्तोलित क' रहल छथि।

कविताक उद्देश्य, दिशा आ मापदण्ड समयक परिवर्त्तन आ आवश्यकताक अनुसार बदलैत रहैत छैक, किन्तु ओकर लोकपक्ष ओहिना रहैत छैक, कियैक त' ओकर सृष्टिक मूलमे प्राणि-जगतक श्रेष्ठतम रचना मनुक्ख ओकर कविताक विषय अथवा लक्ष्य भ' जाइत छैक। कविक भाव पर जाहि तरहक प्रभाव, अनुभव, सौन्दर्य, रूप-रंग, यथार्थ एवं सत्यसँ अभिभूत-आन्दोलित होइत छैक, ओ ओकरे अभिव्यक्ति कवितामे करैत अछि। किन्तु अभिव्यक्तिक माध्यमक चयनक ओकरा स्वतंत्रता रहैत छैक तथापि ई काज ओ अपन रुचि, संस्कार आ आन्तरिक दबावक अनुसार करैत अछि। स्वयंभू कविकें प्राप्त असीमित स्वतंत्रता ओकरा निरंकुशो बना दैत छैक।

महाकवि आरसी संकल्पक निरंकुश कवि छथि। विकल्प, बन्धन, अनुशासन, आवसरिक प्रयोजन, प्रलोभन–ककरो अपन ध्येय एवं निष्ठाक मार्गमे अवरोधक नहि बन' दैत छथि। सभ तरहक बाहरी दबावसँ असंपृक्त-अप्रभावित रहि ओ

अपन भाव-साम्राज्यक सम्राट बनल छथि। हुनक सफलता एवं विफलता दुनूक कारण हुनक एही अनियंत्रित-निरंकुश स्वेच्छाचारितामे ताकल जा सकैछ।

प्रतिभा एवं मौलिकताक धनी कविकें अपन रचनात्मकता पर अटूट आस्था छनि। आ आस्था, प्रेम, करुणा, वात्सल्य आ सौहार्द्रक गीत गाबैत रहैत छथि—एकर बिना परबाहि कैने कि एहि सभ मानवीय वृत्तिक प्रतिकूल आइ कोन धारा बहि रहल छैक अथवा ओहि सभकें फाँस बना कए कोना सम्पूर्ण मानवीयताकें ओहि पर लटका देल गेल छैक। अपन अदम्य उत्साहमे ओ बारूदक ढेरी पर फूलक गाछ रोपैत रहैत छथि।

संभवतः हुनका ई बूझल होनि जे आधुनिक 'कसौटी' पर हुनक कविता अपन तार्किक प्रयोजनीयता नहि सिद्ध क' सकैत अछि आ ने अणु इलेक्ट्रॉनिक संचालित हृदयकें स्पन्दित-उल्लसित। किन्तु ओ त' एही अतार्किकता, अप्रयोजनीयता एवं अप्रासंगिकताकें अपन लक्ष्य बना नेने छथि—

'यैह यदि आत्मा केर ज्योति स्वयं सिद्ध थिक।
ओकरा सँ अन्हारे कियै ने नीक गिद्ध थिक?
पाँखिमे जकर आँखि मूनि क' नुकाइ छी।
धुआँ जकाँ बन्न घरमे हम औनाइ छी।'

आत्मज्योति (सूर्यमुखी)

अपन मित्र महाकवि दिनकरकें सम्बोधित हिन्दी कवितामे ओ लिखैत छथि—

'कौन है जीवन्त कवि? यह प्रश्न जब कौंधा क्षितिज पर,
मैं अगत-परिणाम उस ललकार को स्वीकार बैठा।
काल के प्रच्छन्न पट को कौन रेखांकित करेगा,
इस द्विधा में दाव पर सम्पूर्ण जीवन हार बैठा।'

(मैं किस देश में हूँ)

अपन रचनाक लेल धुआँक घरमे औनाइत सम्पूर्ण जीवनकें हार'वला ई विराट कवि अपनहु मादे त' सभ किछु स्वयं कहि रहल छथि।

मैथिली जगतकें हुनकासँ बड़ पैघ आ युगान्तरकारी अवदानक अपेक्षा रहैत छैक। एहिमे कोनो संदेह नहि जे अद्यावधि हुनक अवदानक महार्धता चिर-स्मरणीय, चिर-अभिनन्दनीय रहतनि किन्तु, कोनो भाषा साहित्यक महती प्रतिभासँ अपेक्षाक व्यापकता आओर बेशी होइत छैक। कहियो 'शेफालिका'मे रवीन्द्रक दर्शन कर'वला मैथिली जगतकें आरसीमे मात्र रवीन्द्रक गीतितत्वे नहि, हुनक दृष्टि-विस्तार आ वैविध्यक आभास सेहो भेटल होयतैक आ ओ बंगला भाषा जकाँ अपन साहित्यक समृद्धिक ओही अनुपातमे कामना कैने हैत।

कविमे अपार प्रतिभा, क्षमता, मौलिक दृष्टि, साधना-शक्ति आ सर्जनात्मक ऊर्जा छनि। हिन्दीक हुनक पचास-साठि टा पोथी हमर एहि धारणाक पुष्टि करैत अछि। मैथिलीक लेल हुनक ई उपलब्धि कम गौरवक बात नहि थिकैक किन्तु, अपनो लेल ओहने समृद्धिक कामना कर' सँ ओकरा रोकल नहि जा सकैछ।

पछिला किछु वर्षमे हुनक बहुतरास पोथी (प्रायः सात-आठ गोट) हिन्दीमे छपल अछि। जँ ओ अगिला तीन-चारि वर्ष मैथिलीकें द' दैत छथि त' ओकर भण्डारमे स्पृहणीय वृद्धि हेतैक। महाकविक मातृभाषाकें ओकर प्राप्य भेटि ज यतैक।

भाषाक स्तर पर अपनहि सन्तान सभक अदूरदर्शिता-उपेक्षाक कारण मैथिली आइ एहि अवस्थामे पहुँचि गेल अछि। पहिने ओकरा संस्कृतक दासी बना कए राखल गेलैक आब ओ हिन्दीक बहिकिरनी कहाइत अछि। बात एक्के छैक। लिपि, भू-भाग, जनशक्ति—क्रम-क्रम सँ सभ छीनि लेल गेलैक। ओकर अपनहि जनपदक 'बोली' सभकें ओकरा विरुद्ध ठाढ़ क' देल गेलैक, अपनहि सन्तान सभक राजनीतिक लाभ-लोभ आ राजनीतिक कुचालिक कारण ओकर पद प्रतिष्ठा सभ चलि गेलैक। ओकर अस्तित्वकें बन्हकी राख'वला सन्तान सभ आइ अधिकार, मान्यता, विकास आदि नाटकक मंचन करैत अपन अभिनय-कलाक प्रदर्शन क' रहल छथि।

मैथिली जँ आइयो जीवित अछि त' मात्र अपन साहित्यक कारण। साहित्य ओकरा कहियो मर' नहि देतैक। विद्यापति अपन मातृभाषाक लड़ाइ लड़' लेल आइ जीवित नहि छथि, किन्तु हुनक साहित्य जीवित छनि। तहिना आरसी बाबू 'भाषाक योद्धा'क रूपमे भलें नहि, अपन साहित्यक माध्यमसँ सभ दिन जीवित रहताह। जाहि भाषामे अमर साहित्य छैक, ओकरा के मारि सकैत छैक?

आइ सिद्धावस्था (वृद्धावस्था नहि)मे पहुँच'वला महाकवि आरसी मात्र साधनाकें जीवनक लक्ष्य आ सार्थकता मानैत रहलाह। के हुनका सम्बन्धमे की कहैत, लिखैत छनि तकर बिना परवाहि कैने अपन संवेदनाक महासागरीय विस्तारमे भावनाक रत्न भरैत रहलाह। मिथिलाक एहि रत्नाकरसँ मैथिली अपन उचित प्राप्यक लेल एखनहुँ आशा लगओने अछि। हमर कामना जे ओ पूर्ण स्वस्थ रहथि, शतायु होथि आ मातृ ऋणसँ उऋण भए कृतार्थताक अनुभव करथि। हुनक सूर्यमुखी चेतनाकें हुनकहि शब्दमे हमर प्रणाम—

'सूर्यमुखी, तों गाबह मंगल, करह कृतार्थ जनम तों
आलिंगन द' रहल केन्द्र-चैतन्य प्रकाश-परिधि कें'
(सूर्यमुखी)

प्रकाशित—संकल्प-4 : अप्रील 1994

पत्रक दर्पणमे महाकवि आरसी

1995क अन्तमे चितावालसा (विशाखापटनम) छोड़लाक बाद हम श्रद्धेय महाकवि आरसी प्रसाद सिंहकें पत्र नहि लिखि सकलियनि। पछाति बरौनीमे हम प्रायः एक मास रहल रही मुदा पटना नहि जा सकलहुँ यद्यपि हुनका लिखने छलियनि जे अपनेक सान्निध्यमे दू-चारि दिन बिताब' चाहैत छी। ओतय हमरा ज्ञात भेल छल जे किछुए दिन पूर्व दिनकर सम्मान ग्रहण करबाक हेतु महाकवि बरौनी बेगूसराय आयल रहथि आ ओहि क्षेत्रक साहित्यप्रेमी सभसँ हमरा मादे पुछने रहथिन।

हम अपन आदि-कार्यस्थली (कलकत्ता) पहुँचलहुँ त' पहिलोसँ बेशी व्यस्त भ' गेलहुँ मुदा मोनमे लागल रहैत छल जे पटना जाइ आ आरसी बाबूकें देखि आबियनि। एहि तरहें एक वर्ष बीत गेल। 18.11.1996क 'जनसत्ता' (कलकत्ता)मे पढ़लहुँ—'लेखक आरसी प्रसाद सिंह नहीं रहे... 85 साल के श्री सिंह को नौ नवम्बर को अचेतनावस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया था। कल (15.11.96) को दोपहर बाद उन्होंने दम तोड़ दिया। बिहार के कुछ सबसे बड़े साहित्यकारों में से एक आरसी प्रसाद सिंह का हालचाल लेने के लिए भी कोई मंत्री अथवा बड़ा अफसर अस्पताल नहीं पहुँचा। ...करीब सौ से अधिक पुस्तकों के लेखक और प्रसिद्ध साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी के सहयोगी रह चुके आरसी प्रसाद सिंह का जीवन अभावों में ही कटा।'

पितातुल्य श्रद्धेय आरसीबाबूक देहावसानक समाचार हमरा लेल मात्र कोनो महान साहित्यकारक मृत्युक सूचना नहि छल, एकटा भावनात्मक विपत्ति छल आ पारिवारिक शोक। कलकत्ताक मित्रवर्गकें ई ज्ञात छलनि। अभिज्ञात आबि कए कहलनि—'अरविन्द चतुर्वेदी आरसी बाबू पर लिखल, अपन एकान्त मे प्रकाशित संस्मरणक हिन्दीमे अनुवाद करा जनसत्ता सबरंगमे छाप' चाहैत छथि। ओकर संक्षिप्तीकरणक लेल अहाँक अनुमति लिअ' आयल छी।' हम कहलियनि—'समाप्तीकरणक बाद आब संक्षिप्तीकरण की? एकटा अखिल भारतीय स्तरक

महान कवि केर 'बिहारक कवि'क रूपमे संक्षिप्तीकरण क' देलाक बाद आब की संक्षेप कर'क लेल बाकी रहि गेल अछि? ओना बिहारोमे त' ओ आजीवन छपाइते रहलाह।'

किछु दिनक बाद उड़िया-बंगला केर तरुण लेखक-अनुवादक श्री अमर कुमार पटनायक तथा दैनिक विश्वमित्र केर उपसंपादक श्री बलराम जी आबिक' ल' गेलाह विकास मंच द्वारा आयोजित शोक सभामे। भेल छल जे आरसी बाबू हमरे नहि, उपस्थित सभ व्यक्तिक आत्मीय आ पारिवारक सदस्य छलथिन। 'कर्णामृत'क सम्पादक श्री राजनन्दन लाल दास आ कवि-कथाकार-समीक्षक श्री नवीन चौधरी सूचित कैलनि जे 'कर्णामृत' आरसी बाबू पर स्मृति अंक बहार कर' चाहैत अछि आ ओहि लेल हुनकासँ भेल पत्र-व्यवहारक आधार पर अहाँक एकटा लेख चाही।

महान साहित्यकारक व्यक्तिगतो पत्र महत्वपूर्ण होइत छैक–ई ज्ञात रहितहुँ विभिन्न साहित्यकारसँ प्राप्त पत्र सभ, सम्हारिकए राखलाक बादो, दीर्घकालक अन्तरालमे एक ठाम नहि रहि सकल। 1967 सँ 1994 धरिक किछु पत्रकें छोड़ि कए, हुनक बहुत रास महत्वपूर्ण पत्र नहियें भेटि सकल। 1967क पहिनेक पत्र जोहब असंभव।

प्रत्येक पत्र पत्र-लेखक आ पत्र-प्राप्तिकर्ताक भावनात्मक सम्बन्धकें उद्घाटित करैत छैक, भावेतिहासकें वर्तमानक फलक पर ल' अबैत छैक। आरसी बाबू त' सदिखन भावनाक सागरमे समाधि लगौने रहैत रहथि। हुनक ओहि भाव-समाधिसँ प्रकट प्रत्येक शब्द-चाहे ओ हुनक कोनो पोथीमे हो वा कोनो पत्र-पत्रिका वा व्यक्तिगत पत्रमे–सहजहिं मर्मस्पर्शी होइत छल। बाल्यावस्थेसँ हमरा हुनक स्नेह प्राप्त होइत रहल–ई हमर सौभाग्य छल। ओ सामर्थ्यवान् उदारचरित छलाह आ आजीवन अपन उदारताक अमृत जेना सभकें पीयाबैत रहलथिन, हमरो पीयाबैत रहलाह।

पैघ अन्तरालक बाद 1967मे हुनकासँ भेंट कर' हम मुजफ्फरपुर गेल छलहुँ। ओ गाम गेल रहथि। कलकत्ता घुरि हुनका हम पत्र लिखलियनि त' उत्तर भेटल–

तारामण्डल प्रकाशन
मजफ्फरपुर (बिहार)
दिनांक 30.11.1967

मान्यवर, प्रणाम!

21.11.1967 तारीखक लिखल अपनेक भाव-भीजल पत्र प्राप्त भेल। किन्तु, 'आखर' नहि भेटल। कि अपने भेजब बिसरि गेलहुँ, कि कोनो दुर्घटनाक शिकार भ' गेल। जे हाँ, अपने यदि चाही, त' आखर पठा सकै छी। हम अपन रचना 'आखर' भेटलाक बादे भेज सकब। हम सहर्ष सहयोग देब।

'सीमांत' नीक लागल। खूब नीक। मन प्रसन्न भ' गेल।

एक बेर हम पुनः कलकत्ता अयबाक आकांक्षी छी। किन्तु, राजनीतिक हलचल एहिमे बाधक भ' रहल अछि। हाबड़ाक जाहि होटलमे ओहि बेर अपनेसँ भेंट भेल छल, तकर की नाम छैक? बिसरि रहल छी। ई वीरेन्द्र मल्लिक की मैथिले थिकाह?

विनीत–आरसी प्रसाद

सरसठिक पहिने, आखर-काल आ तकर बादक बहुत रास प्रसंगक उल्लेख हम 'अपन एकान्तमे' 'विस्फोटक ढेरी पर फूलक गाछ रोपैत महाकवि आरसी'मे कैने छी। हुनक 04.04.1989क पत्रो ओहिमे उद्धृत छल। ओकरा पुनः उद्धृत करब आवश्यक नहि। उल्लेखनीय एतबे जे कालान्तरमे श्री चन्द्रेश लिखने रहथि–'हुनक (आरसी बाबूक) रचना पर ध्यान अंटकल। पहिनो पढ़ने रही। संकल्प-5 (दरभंगासँ प्रकाशित)मे। अपनेक 'हम स्तवन नहि लिखब'क उत्तरमे ओ 'अहाँकें स्तवन लिख' पड़त' लिखने रहथि। हमरा नहि रहल गेल छल। एही प्रतिक्रियामे मिथिलांचल सम्पर्क विशेषांक (सितम्बर 89सँ मई 90)मे लिखने रही जे 'हम स्तवन किए लिखब'।

आरसी बाबूक प्रतिक्रिया छलनि जे 'आइ-काल्हि कवि एवं साहित्यकारक प्रति समाज तथा सरकारक की धारणा छैक ताहीक आधार पर हम चर्चित कविताक रचना कैने छी। आ कवि एवं साहित्यकारक रचना धर्मिता केहन होइत छैक, तकर जीवन्त चित्र अहाँ अपन कवितामे प्रस्तुत कैने छियै। हम ओही मानसिकताकें कवितामे उतारि देने छियै।

एकहि संग अपन, पूर्ववर्ती एवं परवर्ती पीढ़ीक मानसिकता, स्वाभिमान एवं रचना धर्मिताक प्रश्न पर एहन रचनात्मक युयुत्सा कतेक रचनाकारमे उत्पन्न होइत छनि? हुनक ई युयुत्सा हुनक जीवन आ साहित्य दुनूमे व्याप्त रहलनि।

हुनक खाँसी-दमा आ इलाजक प्रसंग

उक्त पत्रक बादक डेढ़ वर्षक अवधिमे हुनक जे पत्र भेटल ओहिमे कुशल-समाचार आ स्नेह-आशीर्वादक अतिरिक्त कोनो एहन चर्च नहि छल जकरा पढ़िकए हुनक

स्वास्थ्य मादे चिन्ता उत्पन्न होइतए। अस्सीक दशकमे ओ दीर्घकाल धरि रोग-शय्या पर रहि तथा सरकार एवं साहित्यकार वर्गक उपेक्षा सहि प्रायः स्वस्थ भ' गेल रहथि किन्तु खाँसी-दमाक कारण चिन्ता बनल रहैत छलनि।

ओ लिखलनि–

13–बी, राजेन्द्र नगर
पटना–800016
दिनांक 15.01.1990

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,
प्रणाम!

आशा करैत छी जे अहाँ सपरिवार सुखी-स्वस्थ होयब। तदुपरान्त एक टा जरूरी काज ल' क' ई पत्र लिखि रहल छी। अहाँ के शायद बूझल हुए बा नहि जे हम खाँसी दमाक मरीज छी। एहि संदर्भमे बात ई छैक जे जी. के. स्वामी नामक एक डाक्टर पटना आयल छलाह ओ एत' खाँसी-दमाक दवाइ द' अपन प्रदेश आन्ध्र, घुरि क' चल गेलाह। हुनक पता छनि–49-46-5 डी. ई. अक्कायापालम, विशाखापटनम। अहाँ जाहि ठाम छी ताहिसँ डॉ. जी. के. स्वामीक उपर्युक्त आवास कतेक दूर छै, से हमरा नहि बूझल अछि। पता लगयला पर जँ संभव होए, त' अहाँ ओहि डाक्टरसँ मुलाकात क' हमरा सूचित करी जे ओ कोन तरहें कोन दवाइ (की की) पथ्य-परहेज, कतेक समयमे, कतेक फीस आ दवाइक दाम लैत छै–से हमरा सूचित करू। अहाँक–आरसी

हम पत्र पाबितहिं ओहि डाक्टरक पता पर पहुँचैत छी। पता लागइत अछि जे ओ साइते-संयोग कहियो ओतय अबैत अछि। ठाम-ठाम जा दवाइक आर्डर ल' एतय अपन सहायककें पठा दैत अछि। एहि ठामसँ मात्र दवाइक पार्सल पठाओल जाइत छैक। ने कोनो जाँच-निदान, ने रोगीसँ साक्षात्कार।

बासा घुरि अपन मित्र-वर्गसँ महाकविक रोगक मादे चर्चा करैत छी। ज्ञात होइत अछि जे एकटा डाक्टर भुवनेश्वरमे छथि जकरासँ हमर दू टा मित्र-पत्नी इलाज करवा रहलि छथि। इलाज नहि, डाक द्वारा पठाओल ओकर दवाइ साल-दू-सालसँ खा रहलि छथि आ प्रायः दमा-मुक्त भ' गेलि छथि।

दोसर दिन दुनू मित्र-पत्नी आबैत छथि (जे स्कूल-कॉलेजमे महाकविक कविता पढ़ि चुकल छलीह) आ हमरासँ हुनक रोगक लक्षणक मादे पूछ' लगैत छथि। हम कहियोक 'तन्वी श्यामा'... रहलि विमलाजी दिस साकांक्ष होइत छी त' हुनक मांसल लावण्य विस्मित करैत अछि। पहिने ओ बतिआएब शुरू करितहिं खाँस' लगैत छलीह, आइ अपन अबाधित हास्यसँ मुग्ध क' रहल छलीह। कहलनि जे आब खाँसी त' एक्को बेर नहि होइत अछि मुदा ओजन पनरह किलो बढ़ि गेल

अछि। हम कहलियनि–ओजन बढ़ला सँ अहाँक क्षति नहि। शरीरक क्षति-पूर्ति भेल अछि। अहाँ आब बेशी सुदर्शन भ' गेल छी।

एतबेमे दोसर मित्र-पत्नी मालाजी कहलनि जे हमर ओजनमे आओर वृद्धि भ' रहल अछि, ओना हम पहिनहिसँ भरिगर छी। खुशी एतबे जे हमहुँ रोगकें बिसरि गेल छी, खाँसी-दमा एकदम बन्न अछि।

हुनक पाठिका-प्रशंसिका आ अपन मित्र-पत्नीसँ विशाखापटनम आ भुवनेश्वर वला डाक्टरक सम्बन्धमे प्राप्त सूचनाकें लिखैत आग्रह कैलियनि जे भुवनेश्वर वला डाक्टरकें अपन केस-हिस्ट्री पठा देल जाय।

ओ समस्त विवरण डाक्टरकें पठा हमरा लिखलनि–

रोड नं. 13/बी,
राजेन्द्रनगर, पटना
26.01.1990

प्रियवर कीर्त्तिनारायण जी
प्रणाम!

अहाँक 21 आ 22.01.1990क लिखल दुनू पत्र एके संग प्राप्त भेल। अहाँक विशाखापटनम वला डाक्टरक दवाइ पटनेमे भेटि गेल। एक शीशी कीनि क' ल' आयल छी आ आइ भोरसँ एक खोराक ल' क' खायब शुरु क' देने छियै। फलाफल त' बादमे मालूम होयत। एखन की कहल जाय? मुदा एक बात त' अवश्ये कहबाक जोग अछि जे दवाइ बड़ महग छै। मासमे 3-4 सै टाका त' जरूरे पड़ि जयतय।

भुवनेश्वर वला डाक्टरकें सेहो पत्र पठा रहल छियै। पत्रक नकल अहाँकें पठा रहल छी। ओकर की जवाब आबइ छै से त' अयले पर हमरो ज्ञात होयत आ अहाँकें अवगत करायब। ताबत धरि कार्यक्रम यैह जे कीनल दवाइ खाइ आ भुवनेश्वरक प्रतीक्षा करी।

ई त' हम अपन समाचार सभटा देलहुँ। आब अहाँ अपन समाचार दिअ'। भुवनेश्वर वला दवाइक कतेक कीमत छै, ओ खयबामे मासिक रूपें कतेक खर्च हेतय, से सभ अहाँ अपन मित्रसँ बूझि क' विस्तारपूर्वक लिखब। जड़ि मूलसँ उखाड़क दाबा त' दुनू डाक्टर करै छथि।

अहाँक
आरसी प्रसाद सिंह

दू दिनक बाद ओ पुनः लिखैत छथि–

मान्यवर कीर्त्तिनारायण जी, पटना

प्रणाम! 28.01.1990

अहाँक 23.01.1990 दिनांकित पत्र प्राप्त भेल। जँ विशाखापटनम वला दवाइ नोकसान-देह छै, त' ओकरा छोड़ि देबइ। अहाँ भुवनेश्वर वला दवाइ अतिशीघ्र पठा दिअ'। हमर बीमारीक ब्यौरा निम्नलिखित रूपें अछि—

आयु लगभग 80 वर्ष

खाँसीक संगे-संग दम फुलब। भोरमे सूति क' उठला पर जबरदस्त खाँसी लगातार 15 मिनट धरि। राति सूतक बेर 12 बजे आ फेर दू बजे खाँसीक वेग आ नीनमे रहलोक बाद खाँसी।... जाड़ भरि स्नानमे असमर्थ भ' जाइ छी।

लगभग 10 वर्षसँ खाँसी-दमा अछि।

दवाइमे एखन 1 वर्षसँ एलोपैथी आ च्यवनप्राश। एक माससँ विशाखापटनम वला दवाइक सेवन क' रहल छी। एक सीसी कीनलिए—जे आब जतेक दिन चलओ। तकर बाद अहाँ जे भुवनेश्वर वला दवाइ पठेबइ, सेवन करबइ। तें यथाशीघ्र पठाउ कारण जे बिना ओहि दवाइ सेवन कयने खाँसी-दमा खूब परेशान करत।

शुभकामनापूर्वक

आरसी प्रसाद सिंह

एहि मध्य हम भुवनेश्वरसँ पत्र-व्यवहार कए डाक्टरकें एक मासक लेल दवाइ पठयबाक मूल्य पूछि मनिआर्डर क' देलियैक। प्रेषकमे आरसी बाबूक नाम-ठेकान दैत अनुरोध कैलियैक जे दवाइ सोझे हुनका पठा हमरा सूचित क' देल जाय, संगहि ई सेहो लिखि देलियैक जे चिकित्सार्थी राष्ट्रीय ख्यातिक महाकवि छथि, हुनका जे दवाइ पठाओल जानि तकर सेवनोपरान्त पड़' वला दुष्प्रभावक पूर्वाकलन क' तकर निदान की छैक—से सुनिश्चित क' लेल जाय।

हमरा अपन ज्येष्ठ पुत्र संजयसँ ज्ञात भेल छल जे रोगीक बिना जाँच निदान कैने देल जाय वला एहितरहक दवाइमे कार्टिजजोन (स्टेरोइड)क मात्र बेशी मिला देबाक कारण खाँसी-दमा पर नियंत्रण त' भ' जाइत छैक मुदा तकर अनेकानेक दुष्प्रभाव पड़ैत छैक एवं एक अवस्थाक बाद कोनो दोसर दवाइक असर नहि होइत छैक, दवाइक लति लागि गेलाक बाद ओकरा बिना रहल नहि जाइत छैक। संगहि इहो ज्ञात भेल छल जे एहि तरहक दवाइ बेच' वला व्यक्ति छद्म नामसँ बेपार करैत अछि। रोगीसँ साक्षात्कारो कर' नहि चाहैत अछि। तथापि लोक पूर्ण निरोग

होयबाक आशामे वर्षक वर्ष ओकर दवाइ लैत रहैत अछि आ स्वस्थतोक अनुभव करैत अछि।

हम सभ बात विस्तारसँ आरसी बाबूकें लिखने रहियनि, तथापि एहि तरहक चिकित्सा पर हुनक विश्वासक दृढ़ता कम नहि भेलनि। ओ खाँसी-दमाक तीव्रताक कारण अपार कष्टमे रहथि तें हमर सुझावक वैज्ञानिक पक्ष पर सोच'क स्थितिमे नहि रहथि। बाध्य भए हम डाक्टरकें दवाइ पठयबाक लेल लिखलियैक आ ओ प्रतीक्षा कर' लगलाह। 29.01.1990क पत्रमे ओ तमिलनाडुक कोनो डाक्टरक नाम पता लिखलनि आ लगले—

13-बी, राजेन्द्र नगर

प्रियवर कीर्त्तिनारायणजी, पटना

प्रणाम! 28.02.1990

आजुक डाक देखि क' पत्र लिखि रहल छी। अहाँक 08.02 दिनांकित जे पत्र भेटल ताहिसँ विदित भेल जे अहाँ दवाइक दाम 07.02 कें पठा देने छियै। हम आइ धरि एहि प्रतीक्षामे रही जे दवाइ अयला पर अहाँकें पत्र लिखल जाय। मुदा एखन लिख' पड़ल जे दवाइ नहि भेटला कारण कि भ' सकइ अछि? मनिआर्डर पठौला 17 दिन भ' गेलय? कि एतेक समय M.O. पहुँचब आ दवाइ भेज' ले पर्याप्त नहि छै? मोन पड़इ अछि जे अहाँ अपन पहिल पत्रमे भुवनेश्वर वला डाक्टरक नाम लिखि क' ब्रेकेटमे पुनः लिखने छलिये जे (ई छद्म नाम बूझि पड़य अछि) ई बात कोन आधार पर लिखने छलिये—से हम जानय चाहैत छी। ओना हम अहाँक कथनानुसार स्वयं ओहि पतासँ भुवनेश्वर पत्र लिखने छलिये मुदा हमरा कोनो उत्तर नहि भेटल जे भेट'क चाहैत रहय। एहिसँ हमरा भुवनेश्वर वला दवाइमे आ ओहि डाक्टरमे किछु गोलमालक अंदेशा होइत अछि। भगवान जानथि असल बात कि थिकय? मुदा अहाँक लिखब जे एहि नाममे 'छद्म' अछि, एखन धरि हमर पत्रक उत्तर नहि भेटब आ ताहू पर दवाइ नहि भेटब, चिन्तनीय भ' रहल अछि।

हम कोन उपाय करू?

अहाँक—आरसी

प्रसाद सिंह

पुनः दोसर पत्र—

प्रियवर कीर्त्तिनारायण जी, पटना

प्रणाम! 03.03.1990

आइ तीन तारीख धरि भुवनेश्वरसँ दवाइ नहि पहुँचल अछि। मास पूर'मे चारिये दिन विलम्ब छै। दवाइये नहि, मनिआर्डर पाब'क कूपनो निपत्ता भेल अछि। एहिसँ इहो संदेह भ' रहल अछि जे मनिआर्डर कतो भटकि त' ने रहल छै।

दवाइ एखन धरि नहि भेटल अछि तथापि प्रतीक्षा त' करिते रहब। एहि सम्बन्धमे की कैल जाए—से किछु ने फुरइ—ए। ओना आइ एकटा पत्र हम भुवनेश्वर पठा रहल छियै। देखा चाही जे ओकर जवाब आबय—कि ने।

अहाँक—आरसी प्रसाद सिंह

स्वास्थ्यलाभसँ उत्पन्न उत्साह आ लेखन-प्रकाशन

भुवनेश्वरसँ दवाइ आबि जाइत छनि। किछु दिन ओकर सेवन कैलाक बाद दमाक वेग संभवतः किछु कमलनि त' साहित्य प्रकाशन आदि दिस ध्यान जाइत छनि—

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी, पटना

प्रणाम! 29.03.1990

भुवनेश्वर वला दवाइ आबि गेलय। 5-6 दिनसँ दिनमे चारिबेर नियमानुसार चलि रहल छै। किछु सुगबुगी त' बूझि पड़य लगलै अछि। मुदा एखन त' शुरुआते छै? कि कहल जाय? लाभ जँ होबक होयतै, त' होबे करत। भगवान् जगन्नाथक कृपा।

आब एक टा आओर काजक गप्प। हम अपन साहित्यक प्रकाशन शुरु क' देने छियै। नव प्रकाशनमे 'वीर कुँअर सिंह' नामक हिन्दी महाकाव्य प्रकाशित भेल छै।

मूल्य छै—सजिल्द 100/—पेपर बैक—80/—

दोसर ग्रन्थ छै—'आरसी अभिनन्दन ग्रन्थ' जे हमरा समर्पित कैल गेल छलय, एकटा साहित्यिक समारोहमे, जकर परिचय-पात संलग्न क' रहल छी। ओहि पातमे हमर किछु आनो पोथीक चर्चा छै।

अहाँ हमर पुरान प्रेमी बन्धु छी, तें अहाँ लग हमर पोथी पहुँचैबाक दायित्व हमरा अछि से हम गछि रहल छी।

तें अनुरोध क' रहल छी जे आदेश द' क' हमर ई पोथी सभ मंगाउ।

शुभकामनापूर्वक

अहाँक—आरसी प्रसाद सिंह

उपर्युक्त पत्र भेटलासँ पूर्वहि हम दोसरो प्रबन्ध कए भुवनेश्वर वला औषध पठा देने छलियनि। दुनू दिससँ हुनका दवाइ भेटि गेल रहनि। ओ अपन प्रसन्नता व्यक्त करैत छथि—

प्रियवर कीर्त्तिनारायण जी, पटना

प्रणाम! 31.03.1990

अहाँक 28.03.1990 दिनांकित पत्रक संग भुवनेश्वर बला दवाइ (दोसर प्रबन्ध कए पठाओल) भेटला पर बड़ प्रसन्नता भेल। चौबीसे दिनांकित एकटा आनो पत्र अलगसँ भेटल। अहाँ हमरा लेल एतेक चिन्ता आ आयास क' रहल छी, से भूलब मोसकिल होयत। धन्यवाद आ आभार प्रकट कयनाय बड़ थोड़ होयत। एहिसँ पूर्व यैह एकटा लिफाफा वला पत्र पठौने छी, ताहिसँ सब हालचाल मालूम होयत। तेकर बाद आजुक पत्र लिखल, कोनो तेहन उल्लेखनीय बात नहि पाबि रहल छी। दबाइक सेवन नियमानुसार भरि दिनमे चारि बेर चलि रहल अछि।

शुभकामनापूर्वक

अहाँक—आरसी प्रसाद सिंह

किछु दिन आओर दवाइ लेलाक बाद हम हुनका मोन पड़ैत छियनि—

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी, पटना

प्रणाम! 12.04.1990

एहि ठाम सब ठीक-ठीक चलि रहल अछि। दवाइक सेवन नियमपूर्वक क' रहल छी, दिनमे चारि खोराक दवाइ बुकनीक रूपमे छै। हम त' सोझे फाँकि जाय छी ऊपरसँ पानियो नहि पीबय छी। जरुरतो नहि पड़ैत छैक। कारण जे दवाइ अपने आप जी पर राखिते मिल जायत छै। INSTRUCTION जे डाक्टरक एहिमे कोनो उल्लेख नहि छै। तें, अहाँ अपन मित्रक पत्नीसँ पुछबनि जे हुनक की अनुभव छनि? दवाइ खाक' पीबी पानि किने?—आरसी

दवाइक नीक असर हुनका पर पड़लनि। खाँसीक प्रकोप कम भेलनि। पहिलुक उत्साह आ प्रसन्नता आब' लगलनि। हमरा होइत अछि, एकबेर पटना जा हम हुनका देखि आबियनि। पत्नी सेहो हुनका लेल तीन-चार वर्षसँ चिन्तित

छलीह तें स्वयं जाकें देखि आब' चाहैत छलीह। एक सप्ताहक कार्यक्रम बनैत अछि—चारि दिनक यात्रा वला समय छोड़ि कए—बरौनी, पटना आ कलकत्ताक लेल एक-एक दिन। मुदा संयोगवश छुट्टीमे दू दिनक कटौती भ' जाइत अछि। हम बरौनी भिनसर वला गाड़ीसँ पहुँचि ओही दिन साँझमे विदा भ' जाइत छी। ओही अवधिमे आन्ध्र प्रदेशमे चक्रवात आयल छलैक। आरसी बाबू चिन्तित भ' लिखैत छथि।

परमप्रिय कीर्त्तिनारायण जी, पटना

प्रणाम! 10.06.1990

अहाँक 14.05 दिनांकित पत्र प्राप्त भेल। समाचारसँ अवगत भेलहुँ। भुवनेश्वर वला दवाइ प्रतिदिन प्रति सप्ताह नियमपूर्वक चलि रहल छै। एखन धरि कोनो तरहक व्यवधान नहि भेलइ—ए। दमा रोग किछु दबल छै, मुदा पिण्ड नहि छोड़य छै। ओकर वेग आबिए रहल छै, मनोबल, कर्मशीलता एवं शारीरिक शक्तिमे किछु वृद्धिक अनुभव होइत अछि। मुदा, रोगोक शक्ति बनल छै। आब देखा पर चाही, जे आगाँ की सब घटय छै? जखन अहाँ बिहारमे छल होयबै तखने संभवतः आन्ध्र प्रदेशमे चक्रवात आयल छलय। अहाँक नगरमे उत्पात भेलय कि नहि? हमरा त' बड़ चिन्ता लागि गेल रहय। 'कुँअर सिंह' पर आधारित एकटा काव्य हिन्दीमे प्रकाशित भ' चुकल अछि। 'रजनीगन्धा' नाम सँ एकटा काव्योपन्यास छपि रहल अछि। किछु पूर्वक एकटा अभिनन्दन ग्रन्थ सेहो प्रकाशित भेल छलय। एखन किछु हिन्दी रचनामे लागल छी।

शुभकामनापूर्वक
अहाँक—आरसी प्रसाद सिंह

1990क मध्य धरि ओ प्रायः कष्टमुक्त भ' गेल रहथि आ लेखन प्रकाशनमे पूर्ण रूप सँ लागि गेल रहथि। बादक हुनक पत्रमे रोग-प्रसंग आ स्वास्थ्य-चर्चाक स्थान साहित्यिक चर्चा लिअ' लागल। ओ जोहि-जोहि क' अपन अपूर्ण पोथी सभकें पूरा कर'मे लागि गेलाह। ओहुना खराप स्वास्थ्य हुनका कहियो लेखन आ प्रकाशनसँ विरत नहि क' सकलनि।

संयोगवश ओही अवधिमे हिन्दीमे हमर दोसर काव्य-संकलन—'विराट् वट-वृक्ष के प्रतिवाद में' आ मैथिलीमे तेसर काव्य-संकलन—'ध्वस्त होइत शान्ति-स्तूप' छपल। 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' पटनासँ अग्निपुष्प छापने रहथि। महाकवि धरि ओकर प्रति पहुँचैबाक भार ओ अपना पर नेने रहथि किन्तु हिन्दी कविता संकलन

कलकत्ताक नाद प्रकाशन छापने छल, जकर सर्वेसर्वा रहथि हिन्दीक चर्चित कवि-पत्रकार अभिज्ञात। ओ पहिनहि लिखि देने रहथि जे कम्प्लीमेंटरी कॉपी किछुए साहित्यकारकें पठाओल जयतनि। पछाति जखन ज्ञात भेल जे ने श्रद्धेय आरसी बाबूकें प्रति पठाओल गेलनि आ ने मैथिलीक हमर मित्र-वर्गकें त' हमर अनुरोध पर 'न्यूमैन' सँ कहि किछु प्रति विशाखापटनम पठबा देलनि। जखन आरसी बाबूकें ओकर प्रति भेटलनि त' हुनक पत्र भेटल—

पटना

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी, 07.09.1991

आपका 27.08 दिनांकित पत्र मिला। साथ ही पुस्तक भी (विराट् वट-वृक्ष के प्रतिवाद में) प्राप्त हुई। भूमिका पूरा पढ़ गया। कुछ कविताएं भी पढ़ी। कुछ आधी-अधूरी पढ़ी। फिर एक धारणा तो बन ही गयी। वैसे नयी कविता के नाम पर आज जितना जो कुछ लिखा जा रहा है, वह कोरा बकवास-सा लगता है। पर, अपवाद स्वरूप आप जैसे कुछ कवि-लोग उसकी शैली को अक्षुण्ण रखने में समर्थ हैं, जिसके कारण नयी कविता की आबरू बची है, उसे सर्वांशतः नकारा नहीं जा सकता। इस संग्रह की पहली ही रचना ने मेरा ध्यान आकृष्ट कर लिया और इसके बाद तो मैं बहुत सारी कविताएँ एक सांस में पढ़ गया। पढ़ने के बाद मेरी धारणा यह बनी कि आपने अपनी पहचान बना ली। वह दृष्टि, भाषा और शैली पा ली जो एक युगधर्मी कवि के लिए आवश्यक है।

मेरे स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है। पर क्रमशः बढ़ती आयु के कारण प्रगति धीमी है।

आपका—आरसी प्रसाद सिंह

अनेक वर्षक बाद जे हिन्दीमे पत्राचारक क्रम अगस्त 1991मे आरंभ भेल ओ दू वर्ष धरि चलैत रहल—लेखन, प्रकाशन आ साहित्यिक गतिविधिसँ भरल, व्यक्तिगत प्रसंग आ मैथिलीक चर्चासँ पूर्णतः शून्य।

संस्मरण-लेखनक अवधि आ हुनक सहयोग

केदार कानन पाँच-छय वर्षसँ जोर द' रहल छलाह जे किछु आओर साहित्यक वरेण्य आ मित्र पर संस्मरण लिखि ओकरा पुस्तकाकार छपाबी। प्रत्येक दू-चारि सप्ताहमे हुनका दिससँ आग्रह होइत छल जे अमुक साहित्यकार पर संस्मरण लिखि अविलम्ब हुनका पठा दिअनि। हम प्रत्येक बेर अपन व्यस्तताकें देखैत हुनक

आग्रहकें टारि दैत छलियनि। ओ आरसी बाबूक प्रति हमर श्रद्धा, आत्मीयता आ आन्तरिक लगावसँ परिचित छलाह। एहि खेप ओ सम्पूर्ण आरसी-साहित्य पर दृष्टिपात करैत हुनका पर संस्मरण लिख'क आग्रह कैलनि। आत्मिक सहमतिवश हम गछि त' लेलियनि किन्तु सम्पूर्ण आरसी-साहित्य जुटायब सहज नहि छल। संस्मरण लिखबाक लेल सम्पूर्ण आरसी-साहित्यक अध्ययन-मननक कोनो प्रयोजन नहि छल किन्तु केदार काननक आदेश पालनक लेल ओहि पर दृष्टिपात करब आवश्यक छल। आओर कोनो उपाय नहि देखि हम सोझे आरसी बाबूकें अपन बेगरताक मादे लिखलियनि। ओ उत्तर देलनि—

प्रियवर कीर्त्तिनारायण जी, पटना

प्रणाम! 14.11.1993

अहाँक 05.11.1993 दिनांकित पत्र भेटल। कुशल-समाचारसँ अवगत भेला पर हर्ष भेल। आब अहाँक जिज्ञासाक समाधान।

हमर लिखल पुरान पोथी सभ आब अप्राप्य भेल अछि। ताहि मध्य 'आरसी' नामक काव्य-संकलन सेहो दुर्लभ भ' गेल। पुरान पोथीमे भेटि सकैत अछि, दू-चारि बालोपयोगी एवं किशोरोपयोगी पुस्तक टा, जेना—

कथामाला (काव्य कथा-संग्रह)	मूल्य 15.00
कलम और बन्दूक (काव्य संग्रह)	मूल्य 15.00
संजीवनी (खण्डकाव्य)	मूल्य 10.00
कागज की नाव	मूल्य 10.00
बालगोपाल	मूल्य 10.00
जगमग	मूल्य 10.00
तकर बाद लिअ'	
अभिनन्दन ग्रन्थ	मूल्य 250.00

मैथिली पोथीमे 'सूर्यमुखी' अहाँक लग अछिये। की बचल-माटिक दीप—10. 00 टाका आ 'पूजाक फूल'—10.00 टाका।

बस एतबे ल' क' हमर उपलब्ध पोथी (पुरान)क सूची समाप्त बूझू।

तखन 'बाओ डाटा'? से पर्याप्त मात्रामे अभिनन्दन-ग्रन्थमे भेट जायत। ओना हमर साहित्यक आनो-आन संदर्भ आ सूचना सेहो अभिनन्दन ग्रन्थमे भेट जायत। हमर पुस्तक सभक भूमिकासँ किछु आओर बात मालूम होयत। एकटा फोल्डर पैकेट अलग बुक-पोस्ट सँ पठा रहल छी, ताहूसँ बहुत बात ज्ञात होयत।

आब जेहन अहाँक विचार होयतय तेहन काज कयल जयतय।

हमर रोग (खाँसी-दमा)मे किछु सुधार अछि। किन्तु, वृद्धावस्थाक कारण रोग किछु दबय-ए, त' बुढ़ारी किछु बढ़ि जाइ-एते जोड़-घटाव भ' क' फेर बरोबरि भ' जाइ-ए बेस, त'—

अहाँक—आरसी

उपर्युक्त पत्रक संग-संग ऊपर चर्चित फोल्डर सेहो प्राप्त भेल। एम्हुरका 4/5 वर्षमे प्रकाशित हुनक 8/9 गोट हिन्दी कविता पुस्तकक सूची सेहो छल। हम तत्काल 500 टाकाक मनिआर्डर पठा अनुरोध कैलियनि जे तारामण्डलक पोथी सभ पठयबाक व्यवस्था क' देल जाय आ अतिरिक्त देयक सम्बन्धमे सूचित कैल जाय।

तारामण्डल 'लेटर हेड' पर हुनक पत्र भेटैत अछि—

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी, पटना

प्रणाम! 31.12.1993

अहाँक 15.12.1993 दिनांकित पत्र भेटल, तदनुसार पुस्तक सभ रजिस्टर्ड डाकसँ पठा देल गेल। वाउचर पुस्तके संग पठाओल गेल। अभिनन्दन-ग्रन्थक पहिले पृष्ठमे राखल भेटत। बीजकसँ ज्ञात होयत जे 160.00 (एक सौ साठि) टाका फाजिल दाम भेलय। से सुविधानुसार पठा देल जयतय।

'यह जीवन क्या है? निर्झर है' कविता 1940मे लिखल गेल छल आ ओही वर्ष 'किशोर' मासिक पत्र (पटनासँ प्रकाशित)मे छपल छल।

'चलो देखें ललन भैया' कविता 1948मे लिखल छल। ओ कोन पत्रमे छपल छल से आब मोन नहि पड़यए। (उक्त दुनू कविताक रचनाकाल आ प्रकाशनक मादे पूछल गेल हमर प्रश्नक उत्तर-ले.)

संस्मरण लिखू, खूब डटि क' लिखू। हमर जतय जे प्रयोजन बूझी-से अवश्य निस्संकोच लिखू।

शुभकामनासहित

अहाँक—आरसी प्रसाद सिंह

पोथी सभक पार्सल भेटल त' भेल जे आरसीबाबू पर किछु लिखब पार लागय वा नहि हुनक उपलबध साहित्यक अध्ययन अवश्य भ' जायत। मुदा अध्ययन चितावालसाक व्यस्ततामे संभव नहि छल। लिख'-पढ़'क लेल प्रायः हम कतहु

बाहर चलि जाइत छलहुँ। नहि बेशी त' दू-चारिये दिनक लेल। किन्तु ई पार्सल त' मतब' लागल। पत्नीकें कहैत छियनि जे एक सप्ताहक एकान्तवास पर जाय चाहैत छी। ओ हमरासँ स्थानक नाम बिना पुछने यात्राक तैयारीमे लागि जाइत छथि आ स्वयं पार्सल फोल' लगैत छी।

पोथी सभ उनटाबैत छी। अभिनन्दन ग्रन्थमे अनेक पृष्ठ नहि छल, अनेक पृष्ठ दोहरा-तेहराकें बाइण्ड कैल छल। हुनक जीवन-वृत्त वला जाहि अंशक लेल हम ओ ग्रन्थ अनौने छलहुँ, ओ नहि छल। आरसी बाबूकें दोसर प्रतिक लेल पत्र लिखि दोसर दिन एकसरे यात्रा पर बहराइत छी आ उड़ीसाक पहाड़ (चन्द्रगिरि आ महेन्द्र गिरिक मध्य 'तप्तपानी') पर पहुँचि जाइत छी। ओतय पोथी सभ पढ़ैत-पढ़ैत बाल्यावस्थेसँ आरसी बाबूक संग बिताओल एक-एक क्षण मोन पड़' लगैत अछि। पोथी छूटि जाइत अछि आ कलम चल' लगैत अछि।

चितावालसा घुरैत छी त' आरसी बाबूक पत्र भेटैत अछि–

तारामण्डल
पटना
18.01.1994

प्रियवर कीर्त्तिनारायण जी,
प्रणाम!

10-1क लिखल पत्र भेटल। समाचार विदित भेल। दफ्तरीक असावधानीसँ कोनो-कोनो पुस्तकक प्रतिमे त्रुटि रहि जाइत छै। एहिसँ पहिने एहन कोनो शिकायत नहि भेटलासँ हम पूर्ण आश्वस्त छलहुँ। मुदा, आब हम पठैबाक पूर्व पुस्तकक प्रति जाँच क' लेबैक।

अभिनन्दन ग्रन्थक दोसर प्रति हम आब स्वयं जाक' पठा रहल छी। तें एहि प्रतिमे कोनो त्रुटि नहि भेटत। पूर्वक भेजल प्रति ले क्षमाप्रार्थी छी।

हमरा नहि मोन पड़य अछि जे अहाँक कोनो पत्र निस्तरित रहि गेल हो मुदा भ' सकैत अछि अहाँक पत्र हमरा हाथमे नहि पड़ल हो। ओना हम अहाँक ई पत्र पयबाक पूर्व अहाँक कोनो पत्र पयबाक आशा करैत छलहुँ–भ' सकैत अछि वैह पत्र रस्तामे कतओ गुम भ' गेल हुए।

पोथी सभक अध्ययन मनन मनोयोगपूर्वक चलि रहल अछि, ई जानि प्रसन्नता भेल। पोथी जे पठा रहल छी तेकरा पाबि क' हमरा पत्र लिखब तथा अपन कुशल-समाचार तथा पोथी सभक अध्ययन-मननक प्रतिक्रिया जनायब।

शुभकामनापूर्वक
अहाँक–आरसी प्रसाद सिंह

दू-तीन दिनक बाद अन्य पत्र–

पटना
21.01.1994

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,
प्रणाम!

11.01.1994 दिनांकित पोस्टकार्ड मिलल। एहिसँ पूर्व जे लिफाफा मिलल छल ताहिमे अभिनन्दन ग्रन्थक सम्बन्धमे लिखल छल जे प्रेषित प्रतिमे खराबी छलय। अतः दोसर प्रति पठा देल गेल। एहू पत्रमे प्रायः तेहने सन गप अछि। अस्तु, आब विदित भेल जे जाहि पत्रक शिकायत अहाँ पूर्व पत्रमे कयने छलहुँ, जे उत्तर नहि भेटल, से स्यात् यैह पत्र थिक जे आब भेटल अछि। तें जवाबो प्रस्तुत अछि। जे बनय तेहन संस्मरण लिखि दी। पहिलुका अभिनन्दन ग्रन्थ जँ पठाब' चाही त' पठा दिअ–रजिस्ट्री द्वारा।

शुभकामनापूर्वक
अहाँक–आरसी प्रसाद सिंह

हुनक अगिला पत्र फरवरी 94क प्रथम सप्ताहमे भेटल अछि–

पटना
30.01.1994

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,
प्रणाम!

160.00 टाकाक मुद्रादेश प्राप्त भेल। धन्यवाद। अभिनन्दन ग्रन्थक दोसर प्रति बजरिये रजिस्टर्ड डाक पठा देने छी, जे भेटल होयत। आब अहाँक लेखन-कार्य पूर्ण होयबामे कोनो तेहन अवरोध नहि होयत। आ हमरा उमेद अछि, हमर ई पत्र पहुँचैत अहाँक लेख सफलताक शिखर छूबैत होयत। जहिना लेख प्रस्तुत भ' जाए, तहिना एकटा प्रति हमरो पठायब। अहाँक बुझले हैत जे हम दमाक रोगसँ स्थायी रूपसँ चिरकाल धरि ग्रस्त रहलहुँ। अहाँ दबाइ पठौने रही, से मोने होयत। अहाँक दवाइसँ कोनो विशेष लाभ नहि भेल रहय। मुदा, भगवत्कृपासँ एम्हर आधा-आधी रोग हमर ठीक भ' गेल अछि। जाड़मे किछु बेसी कष्ट रहय। मुदा, आब जेना–जेना, गर्मी आबैत जाइत अछि, तेना-तेना कष्ट कम भ' रहल अछि। आशा अछि, अपनहुँ सानन्द होयब।

अहाँक–आरसी प्रसाद सिंह

प्रायः दू मास धरि आरसी बाबूमे डूबल रहलाक बाद संस्मरण पूरा भेल। केदार काननकें ओकर आतुर प्रतीक्षा रहनि। मूल प्रति हुनका आ ओकर जेराक्स-प्रति आरसी बाबूकें पठौलियनि। हुनक प्रतिक्रिया छल–

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,
पटना
प्रणाम!
17.02.1994

अहाँक पठाओल पार्सल भेटल। ओहिमे अहाँक डायरी, अभिनंदन ग्रंथ त' भेटबै कैल, संस्मरणो प्राप्त भेल। संस्मरण पढ़ि रहल छी। समाप्त भेले उत्तर एकरा सम्बन्धमे किछु उद्‌गार प्रकट करब। एहिपत्रकें अहाँक सामग्री सभक पहुँचनामा बूझू। डायरी बड़ नीक लागल। एकर सदुपयोग हयतै। पत्र पढ़िक' अहाँक भावनासँ अभिभूत भ' गेलहुँ। एहि बीचमे अहाँक दोसरो मैथिली कविता संकलन–'ध्वस्त होइत शांतिस्तूप' बड़ मोन पड़ि रहल अछि। ई पोथी हम प्रथम पाबि गेल छी। पहिने नहि भेटल छल। ओहो पढ़ि रहल छी। एहि पोथीकें जाहि तन्मयता, एकाग्रता, समग्रता, धैर्य आ निष्ठासँ अध्ययन, मनन, चिन्तन कैलहुँ–से जानिक' हमरो हृदयमे अपूर्व भावानुभूतिक अनुभव भेल। अहाँ सन रस-सिद्ध पाठक जँ कोनो कविकें भेटय, त' वस्तुतः कविता लिखबाक सार्थकतामे कोनो कसरि नहि हेतैक। 'आस्था के अग्निकुंड'मे एक कविता छैक–'युग-युग के तुम जीवन साथी, जनम-जनम के मीत रे'। लगै अछि अहाँ हमर कविताकें चरितार्थ कयलहुँ।

शुभकामनासहित
आरसी प्रसाद सिंह

ओ पुनः लिखैत छथि–

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,
प्रणाम!

अहाँक संस्मरण पढ़ि गेलहुँ। बड़ नीक लागल। पहिल खण्डमे सरस संस्मरण छैक। संस्मरणमे जँ लेखक नहि रहलैक त' संस्मरण नहि भ' सकय। मुदा प्रयोजने भरि रहल त' नीक से, अहाँक संस्मरणमे सन्तुलन बनल अछि। समीक्षा-खण्ड बड़ सोझ, सटीक आ अंतरंग भेल अछि। वैह चाही। 27 पृष्ठमे अहाँक लेख विस्तार पौलक अछि। ओहिमे एकटा 17म पृष्ठ गायब अछि, हमरा नहि भेटल। अहाँ अपना कागज-पत्तरमे तकबय। लेखक जे प्रति हमरा पठौने छियै, से अहींक हस्तलिपिमे छैक। ओकर फोटो-स्टेट करौने छी कि नहि? आब हमरा एहि संस्मरणक मादे की कर' पड़तैक? प्रकाशनार्थ कतय पठयबैक? एहि संस्मरणमे हमरासँ किछु संशोधन, परिवर्तन अथवा परिवर्द्धन होयबाक संभावना नहि अछि।

संस्मरणात्मक शैली त' ठीक लागल। ठीक छै। विचारात्मक अंशो बढ़िये छै। पुरान आ नव पीढ़ीक भावधारामे किछु अन्तर रहबैक चाही। से नहि रहने नव-पुरानमे भेद की रहलय? तें ओहिमे हम अपन विचार मिलाब' जाइ त' ओहिमे सामंजस्यताक अकाल पड़ि जयतैक आ रसभंगताक प्रसंग उपस्थित भ' जयबाक संदेह छै। तें, हमर विचारें लेखमे स्वयं अहीं घटाबी-बढ़ावी त ठीक नहि त' ओहिना रहतय।

शुभकामनासहित
अहाँक–आरसी प्रसाद सिंह

संस्मरणक प्रसंगमे हुनक अंतिम पत्र छल–

प्रियवर कीर्त्तिनारायण जी,
पटना
प्रणाम!
07.03.1994

अहाँक 26.02 दिनांकित पत्र हस्तगत भेल। पढ़िक' मोन प्रसन्न भेल। संगहि संस्मरणक 19म पृष्ठ तँ प्राप्त भेल मुदा हमर अभिलाषित पृष्ठ संख्या 17म छल। कि हम 17म क स्थान पर 19म लिखि देने छलिये जे हुए, हमरा 17म पृष्ठ पठाओल जाए।

स्वास्थ्य हमर नीक जा रहल अछि। नीक एहि अर्थमे जे दमा वला रोग दबि रहल अछि। पहिनेसँ बहुत कमल अछि, यद्यपि एकदम पिण्ड नहि छोड़लक अछि। मुदा औषध, पथ्य, पथ्य-परहेज सभटा बरोबरि चलि रहल अछि। अहाँ सभक शुभकामना एहिना भेटैत रहतैक त' बिलकुल नीरोग भ' क' साहित्य-सेवामे लागल रहबय। अहाँ अपन हाल-चाल बरोबरि लिखैत रहब।

हमर असीम स्नेह आ शुभकामना
अहाँक–आरसी प्रसाद सिंह

संस्मरण कोना आ कतय छपय ताहि चिन्तासँ केदार कानन ओकरा संकल्प-4क लेल मांगि मुक्त क' देने रहथि। लगले ओ अंक बहार क' देलनि। ओकर प्रति ओ आरसी बाबूकें त' पठेबे कैलथिन, हुनक किछु मित्र सभकें सेहो पठौलथिन।

किछु दिनक पश्चात् हमरा डाक द्वारा चितावालसामे एकटा लिफाफ प्राप्त भेल जाहिमे पत्रक स्थान पर एक छन्दबद्ध दीर्घ कविता छल। आरसी बाबूक कोनो अन्धभक्तकें संस्मरणक किछु अंश पर, जाहिमे हुनक साहित्यक सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत प्रतिक्रिया छल, घोर आपत्ति छलनि। ओ क्रोधमे हमरा गाम जा हमर पितृव्यसँ पता मांगि अपन आक्रोश कें छन्दबद्ध कए डाकसँ पठा देने रहथि। कवितामे जाहि तरहक शब्द ओ मनोभाव व्यक्त भेल छल ओहिसँ लागल छल जे एहन भक्त अपन भगवानक लेल ककरो माथो-कपार फोड़ि सकैत अछि। ओ कविता

हम महाकविकें पठा देने छलियनि। अपन भक्तक कविता पढ़ि ओ परिहासपूर्ण पत्र लिखलनि। हुनक ओ पत्र हम कतेक बेर पढ़ने रही आ एकसरोमे हँसय लागैत रही।

आदरणीय आरसी बाबू स्वयं विदा भए पत्रक ओ क्रम समाप्त क' देलनि। पितृ-ऋण सँ अन्तरात्मा दाबल बुझाइत अछि।

रचनाकाल : 10.02.1994

मैथिलीपुत्र मणिपद्मक ऊर्जस्वल व्यक्तित्व

हमर पिताक मित्र आ हमरा लेल पितातुल्य श्रद्धेय श्री बाबूसाहेब चौधरी 1960क अन्त अथवा 1961क आरम्भमे, कलकत्तासँ पटना आबैत छथि आ स्टेशनसँ सोझे हमर होस्टल पहुँचि जाइत छथि। पिताक समाचार-संदेश सुनौलाक बाद पूछैत छथि–'मणिपद्म जीक उपन्यास 'विद्यापति' पठौने रही, की पढ़लहुँ?' हमर सकारात्मक उत्तर आ ओहि ऐतिहासिक उपन्यास पर हमर संक्षिप्त प्रतिक्रिया सुनि आह्लादित होइत छथि आ कहैत छथि–'आदिकथा' आ 'बिहाड़ि पात पाथर' पर अहाँ 'मिथिला दर्शन'मे आलोचनात्मक लेख लिखने रही, अहू उपन्यास पर अहाँकें लिखबाक अछि।'

ओ हमरा सद्यः प्रकाशित 'चर्चरी'क एक प्रति दैत छथि आ श्रद्धेय प्रो. हरिमोहन झाजीक बासा पर चलबाक लेल कहैत छथि। हमरालोकनि हुनका डेरा पर पहुँचैत छी त' ज्ञात होइत अछि जे ओ अस्वस्थ छथि। भीतर पहुँचैत छी। ओ लेटल आ एक गोट प्रौढ़ व्यक्ति ल'गमे बैसल। हम दुनू गोटे झाजीकें प्रणाम करैत छियनि। चौधरी जीक मुँहसँ बहराइत अछि–'अहा, मणिपद्मजी, अहूँ एतहि छी?' आ हमरा उज्जर बग-बग खादीक धोती-कुर्त्ता-टोपीमे कोनो नेता जकाँ लगैत व्यक्तिक परिचय भेटि जाइत अछि। हम हुनक चरण-स्पर्श करैत छियनि। चौधरीजी हुनका हमर परिचय दैत छथि–'ई विद्यार्थी दिनेश बाबूक बालक थिकाह आ लेखनमे रुचि राखैत छथि।'

एम.ए. करितहि नौकरी पाबि हम कलकत्ता पहुँचि जाइत छी। मणिपद्म जीक आगमन कलकत्तामे बराबरि होइत छलनि। पिताजीसँ घनिष्ठ परिचय छलनि मुदा, हमरा हुनकासँ ओतय एक्के बेर भेंट भेल। कालान्तरमे बेगूसरायक जी.डी. कॉलेजमे विद्यापति जयन्तीक अवसर पर हुनक ओजपूर्ण भाषण आ कविता पाठ सुनबाक संयोग लागल। ओ सुअवसर हमरा लेल अविस्मरणीय अछि। किछु बेर आओर

साक्षात्कार भेल मुदा, ओ अति संक्षिप्त आ औपचारिक छल। हम चिर-प्रवासी, मंच आ मिथिलासँ दूर रहलाक कारण हुनक स्नेह-भाजन रहितो, सान्निध्यसँ प्रायः वंचित रहि गेलहुँ।

'आखर'क प्रकाशनक अवधिमे हुनक बहुतरास पत्र आयल छल। हुनक हस्तलेख अस्पष्ट होइत छलनि। प्रेस कॉपी प्रायः हमरे बनाब' पड़ैत छल, यद्यपि हमरो लिखलकें कम्पोजीटर हमरेसँ आबि कए पढ़बाबैत छल। पुनर्लेखन कर' काल हुनक वैचारिक तीव्रता आ उत्तेजक भाषा हरदम बान्हने रहैत छल। 'आखर'क प्रत्येक अंक पाबितहि ओ अपन प्रतिक्रिया पठबैत छलाह।

फरवरी '68क अंकमे जीवकान्तक कथा—'टिल्हाक धुकधुकी' प्रकाशित भेल। अंक लोकक हाथमे पहुँचैत देरी ओहि पर अश्लीलताक आरोप लाग' लागल। हमर बुद्धि-विवेक पर सन्देह व्यक्त कैल गेल। मात्र मैत्रीक निर्वाहक लेल ओहि कथाकें छापि पत्रिकाक स्तर कें खसयबाक लेल किछु पाठक द्वारा परतारल गेलहुँ। हमरा खुशी भेल जे लोक पढ़लक तखन ने अश्लीलता जोहलक। मैथिलीमे त' अधिकांश रचना अपठिते रहि जाइत अछि।

हम मणिपद्मजीकें पाठकक आक्षेपकें ध्यानमे राखि प्रतिक्रिया व्यक्त करबाक अनुरोध कयलियनि। ओ लगले—'टिल्हाक धुकधुकी : आलोचना दृष्टि'—लिखि कए पठा देलनि जे आखरक अक्तूबर 1968क अंकमे प्रकाशित भेल। ओकरा पढ़लाक बाद कतेक पाठक हुनक आलोचकीय प्रतिभा आ निष्पक्षताक प्रशंसा करैत पत्र लिखने छलाह।

प्रो. राधाकृष्ण चौधरीसँ हुनक घनिष्ठ मैत्री आ सम्बन्ध छलनि। जहिया कहियो बेगूसराय जाइ अथवा श्रद्धेय राधाबाबू शोकहरा आबथि, मणिपद्म जीक चर्चा चलय। दुनूक रुचि आ विचारधारामे अद्भुत साम्य छलनि। दुनूकें प्राचीन लोकजीवन, पुरातत्व, इतिहास आ मिथिलाक अतीतमे सर्वत्र अमूल्य निधिक दर्शन होइत छलनि। दुनूक मैत्री अपना पीढ़ी सँ बेशी नवका पीढ़ीसँ एवं दुनूमे अध्ययन, चिन्तन तथा लेखकीय ऊर्जा केर अपार भण्डार। राधा बाबूक 'कुसुमावलीक नीलकमल'क प्रकाशन पर हुनक अद्भुत प्रतिक्रिया कतेक मास धरि चर्चाक विषय रहल छल।

हमर मित्रवर्गमे सोमदेवजी एवं जीवकान्तजी हुनक बेशी सम्पर्कमे रहैत रहथि। तन्त्र पर आधारित हुनक लघु जासूसी उपन्यास 'कोब्रागर्ल' (पॉकेट बुक) पठबैत सोमदेवजी लिखने रहथि जे मैथिलीकें सभ दिससँ भरबाक अछि। सामान्य मैथिली पाठक हिन्दी दिस भागैत अछि। जँ मैथिलीमे ओ विविधता, सामान्य

पाठककें ध्यानमे राखि, आनल गेल, त' मैथिलीक विकास पर ओकर व्यापक प्रभाव पड़तैक। हिन्दीक जासूसी उपन्यास लोकके स्टेशन आ सड़क पर सेहो भेटि जाइत छैक। मणिपद्म जीक 'कोब्रागर्ल' आ 'पॉकेट बुक'मे प्रकाशित आन-आन एकटकही पोथीसँ पाठकक संख्यामे खूब वृद्धि हैत।

डॉ. बी. झा आ सोमदेव जीक 'पॉकेट बुक' योजना बन्न भ' गेलनि किन्तु, मणिपद्मजी द्वारा लोक रुचि जगाब' बला लेखकीय अभियान चलैत रहल। ओ एक-पर-एक उपन्यास, कथा, नाटक, विज्ञान एवं तंत्र कथा, बाल नाटक, यात्रा-वृतान्त आदि लिखैत गेलाह। मैथिली समाजकें हुनक कथा-भूमिसँ जन्मजात आ संस्कारगत सम्बन्ध छलैक। साहित्यमे ओकरा व्यापक आ सर्वग्राह्य बनाब'क लेल, ओ जाहि तत्परता आ परिश्रमसँ काज कैलनि, ओ विरल अछि। साहित्यिक आभिजात्यकें तोड़ि साहित्यकें सामान्य जन अथवा 'सोलकन्ह' धरि पहुँचौलनि। एहि हेतु हुनका द्वारा कैल गेल प्रयास सर्वविदित अछि।

ओ समस्त लेखन योजनाबद्ध रूपसँ कैलनि। खाहे 'अनलपथ' हो अथवा 'विद्यापति' अथवा 'लोरिक विजय', 'राजा सलहेश', 'लवहरि कुशहरि', 'नयका बनिजारा', 'राय रणपाल', 'दुलरा दयाल', 'कोब्रागर्ल', 'अर्धनारीश्वर', 'कनकी', 'कंठहार' सभक लेल ओ मासक मास अथवा सालक साल सामग्री जुटाब'मे लगौलनि। निम्न-उपेक्षित शोषित-दलित वर्गक संग मात्र हुनक सहानुभूतिये नहि छलनि अपितु ओकर जीवन-शैली, हर्ष-विषाद, राग-द्वेष, लोकाचार, आस्था-अन्धविश्वास सभक संग ओ एकात्म छलाह, ओकर भावलोक आ कर्मक्षेत्रक प्रत्यक्ष अनुभव छलनि। एहि वर्गक अदम्य उत्साहक मूल स्रोत धरि पहुँच'क लेल ठाम-ठाम भटक' लगलाह। सामग्रीक संचयन आ ओकर परीक्षण-विवेचन-विश्लेषण आ ओहि आधार पर साहित्यक-प्रणयन ओ अपन मुख्य लक्ष्य बना लेलनि। हुनक प्रत्येक रचना एकटा खोजी, अनुभव सम्पन्न आ चिर उत्साही लेखकक विराट व्यक्तित्वसँ साक्षात्कार कराबैत अछि। विभिन्न विधामे दू सयसँ बेशी पोथी लिखनिहार मणिपद्म जीक प्रायः 20/22 टा संकलन प्रकाशित भेल छनि। अप्रकाशित पौने दू सय संकलन छपि गेने, परिमाणक दृष्टिसँ, समस्त भारतीय भाषामे सर्वाधिक लिख' बला किछु शीर्षस्थ लेखकक कोटिमे आबि जयताह। किन्तु, अपन भाषामे प्रकाशनक वर्त्तमान स्थितिकें देखैत ई विश्वास नहि होइत अछि जे कहियो सम्पूर्ण मणिपद्म-वांगमय अथवा मणिपद्म रचनावली प्रकाशित भ' सकत एवं मैथिलीक ई सपूत अखिल भारतीय स्तर पर भारतीय भाषामे अपन योगदानक लेल चर्चित-विश्लेषित हेताह।

ई बात मणिपद्मजीकें बूझल छलनि तथापि पोथी पर पोथी लिखैत गेलाह आ आगामी लेखनक लेल सामग्री जुटबैत रहलाह। एक अवस्था आ बोधक बाद, भाव आ विचारक संसारमे जिअइत लेखक लेल लेखन विवशता भ' जाइत छैक। प्रकाशन, मूल्यांकन, पुरस्कार, सम्मान सभ ओहि आन्तरिक बाध्यताक समक्ष अविचारणीय, नगण्य। ओकर लक्ष्य मात्र लिखब रहि जाइत छैक, उपलब्धि अथवा सिद्धि-प्रसिद्धि नहि। सिद्धि-प्रसिद्धि आ प्राप्तिक वर्त्तमान बुभुक्षा जँ आइसँ हजार-पाँच सय वर्ष पहिनहि जागि गेल रहितय अथवा वर्त्तमानो कालक समस्त साहित्यकारकें क्षुधार्त्त कैने रहितय त' एक्को टा महान रचनाकार आइ नहि भेटितथि आ साहित्य 'मिडिओकर' सँ भरि जइतय। मुदा, स्थिति से नहि छैक। प्रत्येक युगमे मणिपद्मजी सन महान रचनाकार जन्म लैत रहलाह अछि आ रहताह। विश्व वांगमय एहिना समृद्ध होइत रहत।

हुनकामे अदम्य आत्मविश्वास छलनि। एक बेर राजनन्दन लाल दास हुनका पूछने छलथिन–'मैथिलीमे एतेक जे लिखि रहल छी से के छापत आ के पढ़त?' हुनक उत्तर छलनि–'हमरा विश्वास अछि, हमरा मरणोपरान्त लोक घरसँ आलमारी तोड़िक' हमर पांडुलिपि ल' जेतैक, छापतैक आ पढ़तैक।' एहन दृढ़ आत्मशक्ति वला व्यक्तिकें कोन भौतिक कष्ट, सांसरिक बाधा आ अभाव-विपत्ति लक्ष्य धरि पहुँच' सँ रोकि सकैत छैक?

एहि शताब्दीक पूर्वार्धे धरि ओ ततेक काज क' गेल रहथि जे उत्तरार्धक शेष वर्षमे ओकरा भजबैत रहि सकैत रहथि किन्तु, हिन्दीमे लेखन आ स्वतंत्रता संग्राममे योगदान कैलाक बाद अपन मातृभाषाक बहुविध विकासकें लक्ष्य बना आजीवन लेखनरत रहि प्रचुर साहित्यक सृजन कैलनि। आइ जे उच्च एवं मध्यवर्गीय दर्प आ नायकत्व पर सर्वहारा भूलुंठितक वर्चस्व अछि, ओकर सामाजिक एवं भावनात्मक भूमिका तैयार कर' तथा साहित्यक आदर्श आ सरोकारकें बदल'मे मणिपद्म जीक अद्वितीय भूमिका छनि। हुनक विपुल साहित्य एकर साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि।

हुनक सक्रियता लेखने धरि सीमित नहि रहनि। मैथिलीक अस्मिताक रक्षा आ ओकर अधिकारक प्राप्तिक लेल लेखनक संग-संग आन्दोलनो हुनका आवश्यक बुझयलनि। ओ मिथिलाक गौरवपूर्ण सांस्कृतिक, भाषिक एवं साहित्यिक परम्पराकें विभिन्न मंचसँ तथ्ययुक्त, तर्कपूर्ण आ ओजस्वी शैलीमे सभक समक्ष राखि मैथिलीकें अनुपेक्षणीय समर्थ भाषा सिद्ध कैलनि, अपन निष्ठा आ भाषा-विवेकसँ मातृभाषाक उत्थानक लेल अपनाकें आजीवन संघर्षोन्मुख राखलनि। विराट व्यक्तित्वक रचनात्मक

दृष्टि आ महनीयता ओकर प्रत्येक क्रियाकलाप आ मानवीय व्यवहारमे प्रकट होइत छैक। मणिपद्मक रूपमे मैथिलीकें एकटा आओर विराट व्यक्तित्व भेटलैक–ई ओकर सौभाग्य छैक।

रचनाकाल : 5 अगस्त 1995

संवाद-सेतु श्री सुधांशु शेखर चौधरी

सन साठिक उत्तरार्धक कोनो भिनसरमे छात्रावासक अधिकांश मैथिली छात्रक हाथमे एकटा नव पत्रिका देखल। नयनाभिराम आवरण पृष्ठ आ माछक पार्श्व पर मिथिलाक्षरमे 'मिथिला मिहिर' लिखल। लगले एकटा अंक हमहुँ कीनि कए ल' आनलहुँ आ आद्यांत पढ़ि गेलहुँ। छपल सामग्री आ ओकर स्तरीयतासँ ततेक प्रभावित भेलहुँ जे परवर्त्ती प्रत्येक अंकक लेल प्रतीक्षा रह' लागल। किछु सप्ताहक बाद अपन एकटा गीत–'हमर आशा केर गगन पर' ओहिमे छप' लेल पठौलियैक। ओ 16 अप्रैल 1961क अंकमे छापल गेल-भाव चित्रक संग।

हिन्दीक पत्र-पत्रिकामे पहिनहिसँ छपैत छलहुँ। 'मिथिला दर्शन' आदि किछु मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे सेहो, दू-चारि टा रचना छपि चुकल छल। 'आर्यावर्त'क रविवासरीय अंकमे प्रायः नियमित रूपसँ लिखैत छलहुँ आ श्री श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकारक स्नेह-भाजन भ' चुकल छलहुँ।

एक दिन 'आर्यावर्त'सँ घुरैतकाल सीढ़ी परसँ उतरैत 'मिथिला मिहिर'क तख्ती पर नजरि पड़ल। कक्षमे प्रवेश करितहि जे व्यक्ति हमरा प्रति साकांक्ष भेलाह, ओ रहथि श्री सुधांशु शेखर चौधरी। हम अपन परिचय देलियनि त' हुनक कुतूहलपूर्ण दृष्टि स्वागत दृष्टिमे बदलि गेलनि। ओ आत्मीयतापूर्वक अध्ययन, लेखन आ रुचिक मादे किछु-किछु पूछैत रहलाह। तावत हुनक किछु सहायक कक्षमे प्रवेश कैलथिन। ओ सभकें हमर परिचय दैत जखन हमरा मादे कह' लागलथिन त' बुझायल जे आर्यावर्तक माध्यमसँ हमरा नामसँ सभ गोटे पूर्व परिचित रहथि।

शेखर जीसँ ओ हमर पहिल साक्षात्कार छल। पत्र-पत्रिका, विशेष कए 'वैदेही'क माध्यमसँ हुनक नामसँ हम परिचित छलहुँ, ओ हिन्दीमे पत्रकारिता करैत छथि–संभवतः से हमरा ज्ञात नहि छल।

मिथिला मिहिरक नियमित प्रकाशन, स्तरीयता आ शेखर जीक सम्पर्क हमर मैथिली लेखनमे नियमितता आ गति आनने छल।

कलकत्तासँ बरौनी जाय त' पटना अवश्य जाइत रही आ हमरा लेल पटनाक अर्थ होइत छल–आर्यावर्त आ मिथिला मिहिर।

सालमे कय गोट रचना छप' लेल पठौलियनि–शेखरजी तकर हिसाब राखैत रहथि। मासक मास अथवा एकआध साल खाली चलि जाय त' हुनक उपराग सुन' पड़ैत छल। अपन असमर्थताक लेल क्षमा याचना करैत छलियनि आ भविष्यमे क्रमकें अटूट रखबाक आश्वासन दए हुनकासँ चाह अथवा पानक दोकान परसँ विदा ल' लैत छलहुँ। किन्तु, क्रम छल जे टूटिते रहैत छल आ शेखर जीक उपराग एवं हमर क्षमा याचनाक चक्र चलैत रहैत छल।

हुनका बूझल छलनि जे हंसराज जी हमर घनिष्ठ मित्र छथि। थोड़बे कालमे ओ आन-आन साहित्यिक मित्रकें बजा कए हमरा संग विदा भ' जयताह। तें कुशलादि पूछलाक बादे कोनो-ने-कोनो साहित्यिक प्रसंग उठा दैत छलाह। प्रत्येक भेंटमे हुनका कार्यालयेमे छोट-मोट विचार-गोष्ठी सम्पन्न भ' जाइत छल आ मैथिलीक समस्त साहित्यिक गतिविधि केर परिचय भेटि जाइत छल।

सरसठिमे 'सीमान्त' छपल त' हमरा प्रति हुनक धारणा आ स्वर किछु बदलि गेलनि। मिथिला मिहिरमे ओकर समीक्षा ओ स्वयं लिखलनि आ हमरा मूर्त्तिभंजक करार देलनि, यद्यपि ओकर अधिकांश कविता-अकविता ओ स्वयं मिथिला मिहिरमे छापने रहथि आ आर्यावर्त अपन विस्तृत समीक्षामे ओहिसँ एकटा नव काव्य-प्रवृतिक सूत्रपात मानने छल। तत्पश्चात हुनकासँ भेंट भेल त' ओ 'सीमान्त'क कोनो चर्चा नहि कैलनि।

पछाति 'आखर'क प्रकाशन शुरू भेल। हंसराज जी नव लेखन आन्दोलनसँ सम्बद्ध रहथि किन्तु, अकविताक हमर अवधारणासँ हुनक पूर्ण सहमति नहि रहनि। यद्यपि हमर आग्रहक रक्षाक लेल अकविता समवेतमे ओ अपन कविता छपौने रहथि। हमरा होम' लागल छल जे मिहिर कार्यालयक लेल हम 'फोरेनर' अथवा 'पतिआ' लागल कवि भ' गेल छी तथापि बेर-बेर जाइ आ हंसराज जीकें ल' कए विदा भ' जाइत छलहुँ।

एहि मध्य राजकमलक प्रथम पुण्यतिथि पर 'आखर'क 'राजकमल स्मृति अंक' बहार करबाक वृहद योजना बनल। एक गोट साधनहीन पत्र द्वारा एहि महायज्ञक लेल समिधा कोना जुटाओल जाय–एहि मुख्य प्रश्नकें तत्काल गौण अथवा हमर व्यक्तिगत समस्या मानि, रचना जुटायब आवश्यक बुझना गेल।

हंसराज जी कहलनि–'हमर रचना अहाँकें भेटि जायत मुदा, सम्पादक जी (शेखरजी) सँ लिखयबाक लेल अहाँकें स्वयं प्रयास कर' पड़त।'

हम राजकमल जीक अनुज सुधीरजीसँ भेंट कए पुनः मिहिर कार्यालय अबैत छी आ शेखर जीक समक्ष जाकें बैसि जाइत छी। ओ किछु पूछथि ओहिसँ पहिनहि स्मृति अंकक योजना हुनका ल'ग राखि दैत छियनि आ राजकमलजी पर संस्मरण लिख'क लेल निवेदन करैत छियनि। ओ 'हँ-नञि' किछु नहि बाजैत छथि आ हमरा विस्मय-युक्त दृष्टिञें देख' लगैत छथि। हम आश्वस्त भ' जाइत छी जे ओ अवश्य लिखताह।

रस्तामे एक गोट मित्र आशंका व्यक्त कैलनि जे 'अहाँ कोना मानि लेलहुँ जे ओ 'आखर'क लेल लिखताह?' हम कहलियनि—'ओ आखरक लेल भलें नहि लिखथि, किन्तु राजकमल पर अवश्य लिखताह, ई बात दोसर थिक जे ओ जे लिखताह ओ आखरमे छपत।'

हमर एहि दृढ़ विश्वासक दू टा कारण छल। पहिल त' राजकमलसँ हुनका अगाध स्नेह छलनि—व्यक्तिगत दुर्बलताक स्तर धरि। ओ हुनक समस्त तथाकथित चारित्रिक दौर्बल्य एवं मिथ्यात्वसँ परिचित रहितहुँ, हुनक रचनाकारक प्रतिभा-तेजस्विता-अद्वितीयता पर मुग्ध रहैत रहथि। हुनक समानधर्मा-समवयसी सभ राजकमलकें मिथिला-मैथिलीक कलंक बूझैत रहथि आ हुनका विरुद्ध घृणाक प्रचार करैत रहथि जे हुनका पसित्र नहि रहनि। जरद्‌गव (राजकमलक शब्दमे) सभकें खौंझाब'क लेल राजकमल अपन वाणी एवं व्यवहारकें असामान्य आ घृण्य बना लेबामे पटु छलाह। अपना विरुद्ध दुष्प्रचारमे हुनका आनन्द आबैत छलनि, बड़ नीक लगैत छलनि जखन क्यो परोक्षमे हुनका अबारा कहैत छलनि। शेखरजी सँ परिचयक शुरुआती दिनमे ज्ञात भ' गेल छल जे ओ राजकमलक सच आ स्वांग दुनूसँ परिचित छथि। प्रसंग कोनो हो, घुरि-फिरि कए चर्चा राजकमलक पर केन्द्रित भ' जाइत छल।

दोसर कारण अपना प्रति हुनक स्नेह आ प्रोत्साहन छल। हमर परम्परा-विरोध आ उग्र आधुनिकता केर ओ परम विरोधी रहथि आ 'आकथूः' एवं 'विद्रोही अहम' कविताकें परम्परा तथा पुरनको पीढ़ी पर सोझ प्रहार मानि ओकर भर्त्सना कैने रहथि, तथापि आग्रहपूर्वक रचना मंगा कए मिहिरमे छापैत रहथि। भ' सकैत अछि एहिमे मात्र हमरा प्रोत्साहित करबाक भावना रहल होनि अथवा नवका पीढ़ीकें उपेक्षित छोड़ि देबाक आरोपसँ बचबाक उद्देश्य होनि किन्तु, हम हुनक अनेक आदेशक पालन क' चुकल छलियनि। तें विश्वास छल, हमर एकटा अनुरोध अवश्य मानताह।

ओ हमर विश्वासक रक्षा कैलनि। 'कैक व्यक्तिक सम्मिश्रण राजकमल' लिखि पठौलनि, जे स्मृति-अंकमे छपल। ओहि अतिसंक्षिप्त भावनापूर्ण लेखमे ओकर लेखक आ राजकमल दुनू केर अनवगुंठित रूप प्रकट भेल छल।

श्री सुधांशु शेखर चौधरीकें मैथिल परम्परा, संस्कृति आ साहित्यक गहन अध्ययन रहनि। पेशासँ ओ पत्रकार रहथि एवं प्रवृत्तिसँ सृजन-धर्मी चिन्तक। ई एकटा गौरवशाली संयोग छल जे ओ मिथिला मिहिर सन नियमित साप्ताहिकक सम्पादक छलाह। अद्‌भुत वाकपटुता एवं विश्लेषण-क्षमताक ओ धनी छलाह। समसामयिक समस्याक प्रति जागरूकता छलनि किन्तु, प्रारम्भमे ओ हमरा घोर परम्परावादी आ नव लेखनक (हुनका शब्दमे नवतावाद) विरोधी बुझयलाह तथापि मिहिरमे प्रकाशनार्थ अपन रचना पठबैत रहियनि। ई हमर विवशता छल। जखन ओ छपैत छल त' होइत छल जे ओ साहित्यिक करुणावश छापल गेल अछि। मैथिलीमे पत्र-पत्रिकाक संख्या नगण्य होयबाक कारण महत्वहीनो पर सामन्ती कृपा-वृष्टि करबाक निर्देश होइतनि। की ओ नवलेखन अथवा नवतावादकें मधुर माहुर चटा कए मारि दिअ' चाहैत छथि, जाहिसँ हुनक पीढ़ीक वर्चस्व अक्षुण्ण रहनि?

पछाति जखन भेंट भेल त' पुछलियनि—'नवका पीढ़ी पर ई अहेतुक कृपा कियैक? ई कतहु प्रोत्साहन-प्रशंसा द्वारा विरोधकें निष्प्राण कए सामन्ती परम्परावादक मार्गकें निष्कंटक बनायब त' नहि?'

ओ कहलनि—'ई कृपा नहि, न'वकें प्रश्रय देब थिक, ओकरा बुझ'क लेल ओकर अन्तर्प्रक्रियासँ पाठक एवं अध्येताकें परिचित करायब थिक, सोन आ पित्तड़ि केर अन्तर स्पष्ट करब थिक, आइ जे नवका पीढ़ी द्वारा मूर्त्तिभंजन भ' रहल अछि ओकर उद्देश्य मात्र ध्वंस थिक आ कि नव मूर्त्तिक स्थापनो तकरा बेकछाएब थिक।'

हमर प्रतिक्रिया छल—'अदौसँ मैथिल समाज सामन्तवादक पूजक रहल अछि। आइ जखन कि सामन्तवादी परम्पराक लोप भ' गेल छैक, ओ एकटा बौद्धिक सामन्तवादकें ओढ़ि लेलक अछि। ओकर निघेंसो ओकरा लेल रत्नवत छैक तखन त' न'वक प्रति कोनो उदारता ओकरा कृपाश्रयमे आनबाक प्रयासे कहल जयतैक?'

'से बात नहि छैक? नवका पीढ़ीकें ई सिद्ध कर' पड़तैक जे ओकर विद्रोहक लक्ष्य की थिकैक? कोन मूल्य, कोन स्थापना, कोन उपलब्धिक लेल ओ सभ पुरानकें ध्वस्त कर' चाहैत अछि? आन्दोलनक दिशा की छैक? जें परम्पराकें ओ नहि मानैत अछि त' पारम्परिक परिवार-समाजमे कियैक रहैत अछि? परम्पराक बिना ओकर जन्म कोना भेलैक?'

—'अपने मानवीय विकासक परम्परा एवं काव्य-परम्परा दुनूकें एक क' कए देखि रहल छियैक। कोनो परम्परा विकसित होइत सैकड़ो-हजारो वर्षमे जातीय

संस्कृतिक अभिन्न अंग बनि अपन वैशिष्ट्य स्थापित क' लैत अछि जँ ओकर जड़ि लोक-जीवन पर आधारित रहैत छैक। मिथिलाक समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा आ अनुकृति रूढ़ि, धर्म, आत्मदया एवं अलौकिक चिन्तन पर आधारित काव्य-परम्पराकें एक्के निकष पर नहि परेखल जा सकैत छैक।'

—'हम विद्रोह अथवा अस्वीकारक विरोधी नहि छी जँ ओकर दिशा विकासोन्मुख हो। विद्यापतियो अपना समय केर बड़का विद्रोही छलाह किन्तु, ओ परम्परा अथवा पूर्व स्थापनाक मूलोच्छेदनक प्रयास नहि कैलनि।'

—'सद्यःजात शिशुसँ अपने सम्पूर्ण जीवनक लेखा-जोखा मांगि रहल छियैक? साहित्यक कोनो विधाक लेल 5/10 वर्षक अवधि बड़ छोट होइत छैक। नवका पीढ़ी अपन रचनात्मक क्षमता आ काव्य दृष्टिक परिचय रचनाक माध्यमसँ द' रहल अछि किन्तु, ओकर उपलब्धि पर विचार कर'क लेल धैर्यपूर्वक थोड़ेक प्रतीक्षा करब आवश्यक। विद्यापति पण्डित समुदाय द्वारा कैल गेल विरोधक परवाहि करितथि त' समृद्ध संस्कृत-काव्य परम्परासँ अपनाकें फराक कए अपन अभिव्यक्ति भाखामे नहि करितथि। ओ अपन ज्ञान आ पाण्डित्यकें भावना तथा काव्य विवेक पर आरूढ़ नहि होअए देलनि। जे पण्डित समाज हुनका उपहासक पात्र बूझैत छलनि, ओहो हुनका मान्यता देलकनि। किन्तु, दुर्भाग्यवश हुनको एक परम्परा बनि गेल आ परवर्त्ती काव्य-बोध प्रकारान्तरसँ बेशी भाग हुनकहि परिक्रमा क' रहल अछि। अपवाद-स्वरूप किछु नाम आ कृतित्व भलें गना देल जाय।'

—'किन्तु, राजकमलकें त' सद्यःजात काव्य-शिशु नहि मानल जा सकैत छनि?' ओ चर्चाकें विषय-केन्द्रित करैत छथि।

—'राजकमल जाहि तीव्रताक संग मैथिलीक काव्य-परम्परा एवं संस्कार पर प्रहार कैलनि ओ सर्वथा अप्रत्याशित तथा अपूर्व छल। एक बेर सभक ध्यान हुनक कथ्य, शिल्प एवं प्रयोग दिस आकृष्ट भेल। ओ पाठककें यथार्थक क्रूर पक्षसँ अवगत करौलनि एवं ओकरा देखबाक लेल नव दृष्टि देलनि। ओ जानैत छलाह जे पुरनका पीढ़ीकें बुझाब'मे जतेक समय आ शक्ति नष्ट हैत, तकर अपेक्षा बड़ कम समयमे नवतुरिया वर्गमे आधुनिकताकें बूझ' केर चेतना जगाओल जा सकैछ। ओ एहि वर्गक दिशा-निर्देश कैलनि। जागृति आबि गेल रहैक, अंध परम्परा आ कुसंस्कारक नाग-फांसकें तोड़ब आरम्भ भ' गेल छल। राजकमलक लेल एहि तैयार होइत धरती पर विद्रोहक बीज-वपन बेशी सुविधाजनक छलनि। हुनक एहि प्रयासकें अभूतपूर्व सफलता भेटलनि।'

ओ हमर बातकें राजकमलक सन्दर्भसँ मोड़ैत छथि। कहलनि—'कोनो मान्यता विरोधक संग जन्म लैत छैक। जँ ओ सशक्त भेल त' विरोध विलीन भ' जाइत छैक। परम्पराक आँकुस भले स्वीकार करय किन्तु, अहाँक छिड़िआएल पीढ़ी त' कोनो अनुशासन स्वीकार कर'क लेल तैयार नहि अछि। संयम आ वस्तुस्थितिक ज्ञानक अभावमे ओ भटकि रहल अछि। दर्पेषणाकें उपलब्धि त' नहि मानल जा सकैछ? ओहि लेल साधना चाही। एहि पीढ़ीमे तकरो अभाव छैक।'

वार्ताक क्रम आओर चलैत रहितय किन्तु, घड़ी पर नजरि पड़ैत, हम हड़बड़ा उठलहुँ। ओ एकरा लक्ष्य कए बातकें समाप्त करैत कहलनि—'व्यक्तिगत रूपसँ हम नवलेखनक प्रति आस्थावान छी आ हमरा एकर भविष्यो पर सन्देह नहि।'

शेखर जीमे अद्भुत नमनीयता छलनि। ओ अपन मान्यता पर दृढ़ रहितहुँ दोसर केर तर्क आ विचारकें सुनैत रहथि आ ओहिमे जँ हुनका तथ्य बुझयलनि त' अपन मान्यता पर पुनर्विचार कर'मे विलम्ब नहि करैत रहथि। अध्ययन एवं मनन हुनक बड़का गुण छलनि। सम्पादकीय विवशतावश पढ़ब वा ककरोसँ पढ़बा लेब एकटा प्रविधि थिकैक किन्तु, कोनो रचनामे डूबि कए ओकर आस्वादन करब व्यक्तिक आन्तरिक विवशता होइत छैक। ओ गम्भीरतापूर्वक कोनो रचनाकें पढ़ैत रहथि आ ओकर गुण-दोष एवं प्रवृतिक विश्लेषण करैत रहथि। हुनका पीढ़ीक साहित्यकार नव लेखकक रचना पढ़ब प्रतिष्ठाक विरुद्ध बूझैत रहथि किन्तु, बिना पढ़नहुँ रचनाकें घृण्य घोषित कर'मे विलम्ब नहि करैत रहथि। ठीक एकर विपरीत शेखर जी नवतुरिया वर्गमे रुचि लैत रहथि, ओकर साहित्यकें पढ़ैत रहथि, ओकरे सभक संग बेशी समय बितबैत रहथि आ ओकर प्रहार एवं प्रशंसा दुनूकें समान रूपसँ सहन करैत रहथि। साहित्यिक चर्चा-परिचर्चा, गोष्ठी-सेमिनार सभमे हुनका देखल जा सकैत छल। सभकें ध्यानपूर्वक सुनबाक अवसर भेटैत रहनि, संगहि सभक रिक्तता-सम्पन्नतासँ परिचित होयबाक अवसर सेहो। समय-समय पर आक्रमण आ प्रहार सेहो सह' पड़ैत छलनि किन्तु, एहि सभक नकारात्मक प्रतिक्रिया हुनका पर कम होइत छलनि आ विचार-पुनर्विचार-संशोधनक प्रक्रिया अनवरत चलैत रहैत छलनि। इएह कारण छल जे शुरू-शुरूमे नवतावादक विरोध तथा राजकमलक खिधांश कर' वला शेखर जी अन्ततः ओकर प्रबल समर्थक भ' गेलाह आ ओकर स्थितिकें स्पष्ट कर'क लेल एक-पर-एक लेख लिख' लगलाह।

हुनक अवदान पत्रकारिता एवं आलोचनाक अतिरिक्त कथा, कविता, एकांकी, नाटक, निबन्ध, समीक्षा, उपन्यास आदि अनेक क्षेत्रमे अनेक नाम (शेफालिका देवी, पराशर, कामरूप आदि) सँ छनि। सभ विधामे ओ अपन विलक्षण प्रतिभाक

परिचय देलनि किन्तु, हमरा दृष्टिऍं हुनक सभसँ बड़का अवदान छनि अपनाकें पुरान एवं न'व पीढ़ीक मध्य एकटा मजगूत संवाद-सेतुक रूपमे ठाढ़ करब।

प्रकाशित—आरंभ : मार्च 1995

मिथिला-मैथिलीक यायावर भविष्य-द्रष्टा : डा. श्रीजयकान्त मिश्र

अपन बाल्यावस्था-किशोरावस्था केर सन्धि पर जहिया हम महाकवि यात्रीक 'चित्रा'क चर्चा परिवारक साहित्यिक वातावरणमे सुनने रही, ओहू समयमे ओकर प्रकाशन-प्रसंगमे डॉ. श्री जयकान्त मिश्रक नाम सेहो सुनयमे आयल छल। ज्ञात भेल छल जे राष्ट्रीय ख्यातिक विद्वानमे परिगणित होइवला म.म. डॉ. श्री उमेश मिश्रक ई ज्येष्ठ पुत्र छथि आ अपन सभ विद्वान भाइमे सर्वाधिक व्युत्पन्न-विश्रुत विद्वान तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे अंग्रेजीक प्राध्यापक छथि।

एतेक जानलाक बादो हमरा मोनमे हुनका प्रति ओ आकर्षण एवं श्रद्धाभाव नहि जागल छल जे सहजहि यात्रीजीक प्रति छल अथवा प्रो. श्री हरिमोहन झाजीक कथा पढ़लाक बाद हुनका प्रति जागल छल। ता धरि हमर किशोर-मन पर 'एकेडेमिक'क आतंक नहि पसरल छल आ तें डॉ. श्री मिश्र सन प्रख्यात एकेडेमिष्ट आकृष्ट नहि क' सकलाह।

1955मे मैट्रिकक परीक्षा देबाक छल। फॉर्म भर' काल 'वर्नाकुलर' (देशीय अथवा मातृभाषा) बला 'कॉलम'मे सभकें 'हिन्दी' भरैत देखि हम दुविधामे पड़ि गेलहुँ। कनेक काल धरि ठमकल रहलाक बाद ओहि कॉलममे 'मैथिली' लिखि फॉर्म जा क' देलियैक।

विद्यालयसँ बहरयलाक बाद मित्रलोकनि कहलनि, 'वर्नाकुलर' वला पत्र मैथिलीमे नहि हिन्दीमे लिखल जाइत छैक—तें अहाँकें मैथिलीक स्थान पर 'हिन्दी' लिखबाक छल। एहि विद्यालयमे मात्र 'उर्दू' फराकसँ पढ़ाओल जाइत छैक।

डॉ. श्री मिश्र हमर 'फॉर्म' भर' सँ बहुत पहिनेसँ प्राथमिक स्तरसँ मैथिलीक पढ़ौनी पर जोर दैत छलाह, गाम-गाम, घर-घर जा कए मैथिलीक प्रचार करैत छलाह। अपन भाषण आ लेखसँ मातृभाषाक महत्वकें स्पष्ट करैत छलाह आ

मैथिली आन्दोलन चलबैत छलाह। भ' सकैत अछि 'फॉर्म' पर 'मैथिली' लिखबा काल हुनक अप्रत्यक्ष प्रभाव काज क' रहल हो।

डाक्टर साहब सर्वाधिक जानल जाइत छलाह अपन पोथी–'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर'क कारण। अपन संक्षिप्त एवं इतिवृतात्मकताक कारण ओकरा आलोचकक एक वर्गसँ कोनो 'मोजर' नहि भेटैक त' दोसर दिस ओहि परिचयात्मक इतिहासमे लेखकक इतिहास-दृष्टि एवं साहित्यिक सोच जोह' बला आलोचक वर्गक कटुक्ति भेटैक। मुदा, ओ इतिहास आन-आन भाषा-भाषीकें मैथिलीक समृद्धिसँ परिचित करयबाक लेल लिखल गेल छल। ओकर संक्षिप्त आ परिचयात्मक होयब तत्कालीन आवश्यकता छलैक आ अपन उद्देश्यमे ओकरा पूर्ण सफलता भेटलैक।

पहिल बेर हम हुनका पटनामे, 1957 अथवा 1958मे कोना मंचसँ भाषण दैत देखने-सुनने रहियनि, सेहो श्री अमरनाथ जी (डॉ. श्री अमरनाथ, सी. एम. कॉलेज, दरभंगा) द्वारा पकड़ि क' ल' गेलाक कारण। हमरा लेल विस्मयक बात ई छल जे एकटा अंग्रेजक प्रकाण्ड विद्वान धोती-कुर्त्ता-चद्दरि-पागमे मैथिलीमे बाजि रहल छलाह।

तकर बाद हुनका बिसरि जायब स्वाभाविक छल। कोनो एहन सूत्र नहि रहय जे भावनात्मक रूपसँ जोड़ने रहितय। मुदा हमर किछु मैथिली पढ़' वला मित्र हुनका बात-बातमे स्मरण करैत छलथिन। हुनका बूझल छलनि जे डाक्टर साहबक दृष्टि पड़ि गेने कोना केओ सनाथ भ' सकैत अछि। हम किछु सुनैत रहियनि वा नहि ताहि पर बिना ध्यान देने ओ हुनका मादे कहैत रहथि।

हुनका मादे हमर पिता सेहो कहैत रहथि। तहिया कलकत्तामे 'अखिल भारतीय मिथिला संघ' अपन चरम उत्कर्ष पर छल आ हमर पिता ओकर प्रधानमंत्री (आब संभवतः प्रधानमंत्रीक बदलामे दोसर शब्दक प्रयोग कैल जाइत छैक) छलाह। ओहि समयमे मिथिला संघ मिथिला मैथिलीक विकासक लेल अनेक आन्दोलन चला रहल छल आ मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे लागल छल। साहित्य अकादेमी एवं संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे स्थान दिआएब, बरौनी धरि जाइ वाली बड़ी लाइनक गाड़ीक नाम 'मिथिला एक्सप्रेस' करबाएब पोथी-पत्रिका बहार करब आ मिथिलाक गाम-गाममे जा कए जागृति उत्पन्न करब आदि आन्दोलनक लक्ष्य छलैक। ओकर समर्पित कार्यकर्त्तामे रहथिन श्री मिथिलेन्दु जी, श्री उदित नारायण झाजी, पं. श्री देवनारायण झा जी, श्री बाबू साहेब चौधरी जी, श्री महावीर झा जी, प्रो. श्री प्रबोध नारायण सिंह जी, श्री सत्यनारायण लाल जी, श्री पीताम्बर

पाठक जी, श्री राजनन्दन लाल दास जी, श्री नरेन्द्र झा जी आदि सन दुर्द्धर्ष जीवट वला व्यक्ति सभ। पिता आबथि त' गाम-घ'रे मैथिलीक चर्चा चल' लागय। ओहि चर्चामे घुरि-फिर कए डॉ. श्री जयकांत मिश्रक नाम आबि जाय।

बादमे स्वयं मैथिली लेखन दिस प्रवृत भेलहुँ त' ओकर भाषा साहित्यक अध्ययन प्रयोजनीय भ' गेल। आ ओही क्रममे डॉ. श्री मिश्र हमरा लेल प्रासंगिक भ' गेलाह।

होस्टलक टेबुल पर 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' देखि श्री रामदेव जी (डॉ. श्री रामदेव झा) पूछने रहथि–'भाइ तोहरो टेबुल पर जयकांत बाबू आबि गेलथुन?' हम कहलियनि–'अयलाह नहि, हम यात्री जीक ओतयसँ ल' आनने छियनि।'

ओ कहलन्हि–'मैथिलीमे रहितैक त' विद्यार्थीकें बड़ काज दितैक।'

हमर उत्तर छल–'अंग्रेजीमे छैक तखनो त' काज द'ए रहल छैक, अमैथिलो पाठक वर्गकें मैथिलीक परिचय भेटि रहल छैक। मुदा एहि इतिहासक एकटा 'ट्रेजडी' छैक।'

ओ विस्मित भ' देख' लगलाह। हम बातकें स्पष्ट कैलियनि–'जे एकरा देखने-पढ़ने अछि–ओकरा दृष्टिमे ई अति संक्षिप्त आ 'अन-रिप्रजेन्टेटिव' छैक, मुदा साहित्यिक वर्ग ओकरा ओतबे सम्मान दैत अछि जे सम्मान हिन्दीमे रामचन्द्र शुक्लक हिन्दी साहित्य का इतिहासकें भेटल छैक। जिनक नाम ओहिमे ल' लेल गेल छनि, ओ महत्वपूर्ण भ' गेल छथि, यद्यपि, ओ पोथी स्वातंत्र्योत्तर आ सौंसे विश्वक आन-आन भाषा-भाषीकें मैथिलीसँ परिचय करयबाक लेल आ मैथिलीक भाषागत पक्षकें मजगूतीसँ राख'क लेल लिखल गेल छल। ई बात दोसर थिक जे ओहिसँ आगाँ अनेक वर्ष धरि ककरो द्वारा किछु नहि लिखल जा सकबाक कारण ओ 'बीजग्रन्थ' मानल जाय लागल, पढ़ल लिखल समाजक 'सेल्फ'क शोभा बढ़ाब' लागल आ विद्यार्थी वर्गक दिशा-निर्देशन करैत रहल।'

रामदेव जी मुसुकिआइत चर्चा समाप्त करैत कहलनि–'बुझलहुँ, आब अहाँ मैथिलीमे प्रवेश कर'क लेल तैयार छी।'

कालान्तरमे डाक्टर साहेबकें पटना, कलकत्ताक विविध आयोजनमे अनेक बेर देखलियनि। भ' सकैत अछि कोनो भीड़मे कहियो केओ हमर परिचय हुनका देने हेथिन मुदा निश्चित रूपसँ ई कहि नहि जे ई विद्यार्थी नवोदित कवि छथि अपितु कहने हेथिन जे ई पं. दिनेश मिश्रक छोट बालक छथि। हमर पिताक सहयोगी पटनाक डॉ. श्री बेचन झा जीक कृपासँ बालकक सम्पूर्ण छात्र-जीवन 'पंडित दिनेश मिश्रक छोट बालक' कहबैत बीतल छल। कलकत्ता त' हमर पिता केर कार्यक्षेत्र

छलनि। ठट्ठा-प्रिय साहित्यिक मित्रक जीह पर सेहो येह नाम रहैत रहनि। कलकत्ता पहुँचला पर 'भारतीय संस्कृति संसद'मे आयोजित स्वागत गोष्ठीमे ओकर सचिव पंडित श्री अक्षय चन्द्र शर्मा, जे हमर पिताक संग चौदह वर्ष धरि बीकानेरमे बितौने रहथिन, हमर परिचय दैत कहलथिन—'अभी हम हिन्दी के जिस कवि का स्वागत करने जा रहे हैं, वे मेरे मित्र पं. श्री दिनेश मिश्र के छोटे लड़के हैं। अपन बीस मिनटक वक्तव्यमे जखन ओ हमर एक्कोबेर नाम नहि लेलनि त' हमर एकटा मखौलिया मित्र ठाढ़ भए बाजल छल—'उस कवि का नाम कीर्त्तिनारायण है।' हॉल ठहक्कासँ भरि गेल।

मुदा एकर निस्तार नहि छल। दरभंगामे डॉ. दिवाकर मिश्रक भातिज एवं पटनामे डॉ. हरिनारायण मिश्रक अनुजक रूपमे वरेण्य साहित्यकार लोकनिसँ हमरा स्नेह-आदर प्राप्त करैत देखि मित्रवर्गकें परिहासक मसाला भेटैत छलनि आ हमरा आन्तरिक आनन्द।

हमर एहि मनोभावक निवारण कैलनि श्रद्धेय श्री जयकांत बाबू।

पटनाक एक गोट पत्रिकाक लेल हुनकासँ 'इन्टरव्यू' लेल गेलनि। पूछल गेलनि—'अपने की कीर्तिनारायण मिश्रक नाम सुनने छियनि।' ओ सद्यः प्रकाशित 'सीमान्त'क उल्लेख करैत, ओहिमे संकलित किछु कविता पर टिप्पणी द' कए, किछु पाँति सुना देलथिन, प्रश्नकर्ता निरुत्तर, मित्र वर्ग आश्चर्यचकित।

कोनो गाछ वृक्षकें ज्ञात नहि रहैत छैक जे ओकर जड़ि कतय-कतय केर जलसँ जीवन प्राप्त क' रहल छैक, कतेक माली ओकर संरक्षण आ पोषणमे लागल छैक। हमरो लेखक ओहि गाछ वला स्थितिमे रहल अछि। नहि जानि कोन-कोन भाषा आ देशक पानि ओकर जड़िकें जीवन दैत छलैक किन्तु जखन फ'ड़ देबाक बेर अयलैक त' देख'-बूझयमे आयल जे ओकर रक्षाक लेल मालीक रूपमे प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, प्रो. रमानाथ झा आ डॉ. श्री जयकान्त मिश्र ठाढ़ छथि। ई तीनू विभूति हमर लेखक रूपी गाछकें छोपैत-छाँटैत, सीटैत-सम्हारैत मजरि-फूल-फ'ड़ देबाक स्थितिमे ल' आनलनि पूर्णतः अदृश्य रहि। हम ज्ञानक अभावक कारण तीनूकें अपन तर्क-कुतर्कमे ओझराबैत रहैत छलियनि। ओ लोकनि बचावक नकली प्रयास करैत अन्ततः चित्त भ' हमरा विजय-बोध करा दैत छलाह।

1968क बात अछि। इलाहाबादमे यात्रीजीक 'पत्रहीन नग्न गाछ'क विमोचन महाकवि सुमित्रानन्दन पंत द्वारा होइ बला छल। कलकत्तासँ हमरो बजाओल गेल। इलाहाबाद विश्वविद्यालयक सभाकक्षमे, प्रथम पंक्तिमे एकसँ बढ़ि कए एक संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी आ मैथिलीक विद्वान एवं साहित्यकार बैसल। मंच

पर महाकवि पन्तक दुनू दिस यात्रीजी एवं श्री जयकांत बाबूक अतिरिक्त अनेक महारथी विराजमान। मंचसँ मैथिली नवकविताक प्रतिनिधि कविक रूपमे कविता पर बाज'क लेल बजाओल जाइत छी। ओहि समयमे लागल छल ई सम्मान हमरा नहि आखरेक सम्पादककें देल जा रहल छैक। आइ बुझाइत अछि—विद्वान गुरु द्वारा शिष्यसँ कियैक भागवत पढ़ाओल गेल छल-विद्यावताम् भागवते परीक्षा।

अपन एहि महापण्डित गुरु द्वारा गेल परीक्षामे हम कतेक बेर अनुत्तीर्ण आ उत्तीर्ण भेल छी से त' नहि ज्ञात मुदा एकटा आओर परीक्षाक लेल बजाहटि भेल।

कलकत्तामे (1997मे) हमरा ज्ञात भेल छल जे पण्डित जी अत्यन्त अस्वस्थ छथि आ हुनका इलाजक लेल दिल्ली ल' गेल छनि आ ओतय 02.01.97 कें 'पेसमेकर' लगाओल गेल छनि। लगले हमरा कलकत्ता छोड़ि एकबेर पुनः दक्षिण भारत आब' पड़ल। एतय आबि हम हुनका इलाहाबादक पता पर पत्र लिखलियनि। अनेक दिनक बाद मिथिलाक्षरमे लिखल बिना तारीखक पत्र (जे हमरा नैल्लिकला विजयानगरमे 29.10.97कें भेटल छल) भेटैत अछि—

स्वस्ति। नतयः

1/1 बी, सर पी.सी. बनर्जी रोड,
इलाहाबाद—2

आगाँ हमरा अहाँक पत्र भेटल। हम आब ठीक छी। हम चाहैत छी जे बरौनीमे 03.04.98कें एकटा कार्यकर्ता शिविर, मिथिला राज्य संघर्ष समितिक, हो। तदर्थ अपने ओहि क्षेत्रमे पूर्वे जाय कम-सँ-कम चारि-पाँच गाम टहलि सम्पर्क करब, तखने होयत।

अपनेक स्वीकार कैला पर विस्तृत पत्र सभ पठायब। कृपया शीघ्र पत्र दी।

हम 14.12.97 सँ भागलपुर, पूर्णियाँ, सहरसा, बेगूसराय, सीतामढ़ी, दरभंगा आदिक भ्रमणमे रहब।

बरौनी ल'गक दू-तीन गोट सम्पर्क-पता लिखी। बरौनीसँ किछु पता ल'गा पासहुक गाम सभक हो।

श्रीजयकांत

हम पत्र पाबि स्तब्ध रहि जाइत छी। वयसक छिहत्तरिम वर्ष आ एतेक अस्वस्थ। विश्रामक बदलामे पदयात्राक योजना। गाम-गाम जा कए लोककें जागृत करबाक निश्चय आ मिथिला राज्यक लेल संघर्ष आरम्भ करबाक दृढ़ संकल्प।

हम चिन्तित भ' इलाहाबाद फोन करैत छियनि। रिसीवर हुनक ज्येष्ठ पुत्र डाक्टर श्री रुद्रकान्त मिश्र उठबैत छथि। कहैत छथि, बाबूजी वाराणसीमे छथि। कल्पवासक बाद यात्रा पर बाहर हेताह।

हम कहलियनि–एहि वृद्धावस्थामे एहन रुग्ण शरीर ल' कए पेसमेकर लगौने, अपनाकें एतेक कष्ट द' रहल छथि, अहा ँ लोकनि रोकैत नहि छियनि?

ओ कहैत छथि–ओ मान' बला नहि। कहैत छथि–मैथिलीक लेल अंतिम सांस धरि संघर्ष करैत रहब, 'पेस संकट' त' आब एहि जीवनमे छूट' वला नहि अछि।

किछु दिनक बाद, वाराणसीसँ हुनका फिरबाक जानकारी प्राप्त कर' हेतु सम्पर्क करैत छियनि त' फोन आदरणीया श्रीमती मिश्र उठबैत छथि आ लाइन डाक्टर साहबकें दैत छथिन।

हमर भावना, चिन्ता आ जिज्ञासाकें बूझैत ओ हमरा कहैत छथि–आब पूर्ण स्वस्थ भ' गेल छी आ चिन्ताक कोनो बात नहि अछि।

ओ लगले, किशोरवय वला उत्साहसँ अपन कार्यक्रमक विवरण दिअ' लगैत छथि आ हमरा हतप्रभ क' दैत छथि। हम कहैत छियनि-बेगूसराय-बरौनी अपनेक कार्यक्रममे हमर मित्र वर्ग, पिता-पितृव्य, स्कूल-कॉलेजक शिक्षक-छात्र, क्षेत्रक युवा-प्रौढ़ सभ सक्रिय सहयोग देताह। हम एतेक दूर आबि गेल छी से अपनेक संग दू दिन रहबाक लेल पाँच दिन यात्रामे लगाब' पड़त।

ओ कहलनि–अहाँक क्षेत्रमे हमर कार्यक्रम फरवरी-मार्च '98मे अछि। ताधरि अवकाशक लेल कोनो-ने-कोनो रस्ता बहार क' लेब।

हम निरुत्तर। लागल छल जे हमर एकटा आओर परीक्षा लेल जायवला अछि। नौकरी आ लेखने धरि सीमित छी कि अपन (क्षेत्र) कोनोमे प्रभाव अछि? गाम-घ'र सँ कतेक जुड़ल छी? जन-जीवन की निकटक सम्पर्क अछि? लोकवेद कोन रूपमे जानैत अछि? सभक प्रत्यक्ष अनुभव कर'क लेल हमरा बजाओल जा रहल अछि।

अपनाकें सम्हारैत हम कहैत छियनि–हम बेगूसराय-मंझौल, बरौनी-बीहट आदि क्षेत्रक मित्रवर्गकें पत्र लिखि शीघ्र अपनेकें सूचित करब। हमरा मुँहसँ किछु व्यक्तिक नाम लेलाक बाद ओ कहलनि हुनका सभसँ सम्पर्क भ' गेल अछि। संस्कृत कॉलेज, बेगूसरायक श्री भास्कर जीक पत्र अयलाक बाद ई ज्ञात हैत जे अहाँक पिता-पितृव्यक प्रभावक कोना उपयोग कैल जाय।

सभसँ सम्पर्क साध'क लेल हमरा पत्रो लिख'मे दस दिन लागि जाइतय किन्तु ओ त' इलाहाबादेसँ सभसँ सम्पर्क साधि नेने छथि। हमरा त' मात्र परीक्षा देबाक लेल संगमे राख' चाहैत छथि।

मार्चक तेसर सप्ताहमे हम गाम पहुँचैत छी। पिता-पितृव्य एवं अपन तथा पड़ोसक गाम सभक लोक सभसँ ज्ञात होइत अछि जे पण्डितजी (डॉ. श्री जयकान्त मिश्रजी) हमर गाम-घ'र समेत पड़ोसक अनेक गामक यात्रा कैलनि। व्यक्तिगत

सम्पर्क, गोष्ठी, सभा-कए गाम-गाममे मिथिला राज्य संघर्ष समितिक गठन कैलनि। मिथिला राज्य भेलासँ मिथिलांचलक विकास कोना हैत, कोना मैथिली भाषा आ मैथिल संस्कृतिकें सुनियोजित षड्यंत्रसँ बचाओल जा सकैत अछि, कोना आजीविकाक अभावमे बढ़ैत अपराधकर्म पर अंकुश लगाओल जा सकैत अछि आ युवाशक्तिक रचनात्मक उपयोग कैल जा सकैत अछि।

बरौनीक निकटस्थ गाम गौड़ाक श्री अशोक कुमार पाठक एवं बेगूसरायक डॉ. गौरीनाथ झा, आदिनाथ जी तथा अग्निशेखर जी ठाम-ठाम देल गेल हुनक भाषणक अंश सुनौलनि। कोनो पक्ष मध्य बेगूसरायक मैथिली भाषा एवं मिथिलाक एक मात्र औद्योगिक क्षेत्र होइतो, मैथिलीक नाम खाइ आ कमाब'वला स्वार्थी तत्व तथा मिथिलाक संस्था सभ द्वारा उपेक्षाक बात उठाओल गेल त' हुनक उत्तर छलनि–से बात नहि छैक। एहि क्षेत्रक फजलुर रहमान हाशमीकें अनुवादक लेल एवं कीर्तिनारायण मिश्रकें कविताक लेल साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कैल गेल छनि तथापि एहि बातमे कोनो सन्देह नहि जे एहि क्षेत्रक लोककें मैथिलीक प्रति जागृत करबाक प्रयास बड़ कम भेल अछि। आब आशा अछि समिति सभक गठन भेला बाद एहि क्षेत्रकें जागृत कैल जायत, कार्यकर्त्ता सभक आवागमन बढ़त आ सदस्यता अभियान चलाकए सभ जाति, वर्ण आ धर्मक लोककें मिथिला-मैथिलीक लेल चल'बला संघर्षक मुख्यधारामे आनल जायत।

सुन'मे आयल छल जे पण्डित जी अपन समस्त आयोजनमे एहि क्षेत्रक उत्साहपूर्ण सहभागिता देखि बड़ प्रसन्न छलाह। अनेक स्थल पर ओ हमरा स्मरण कैलनि आ अ. भा. मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा द्वारा आयोजित 22.03.1998 कें कार्यक्रममे सम्मिलित भ' हमरा आशीर्वाद देलनि। एहि तरहें हम हुनका द्वारा लेल जाइ बला परीक्षामे बिना बैसनहुँ, पास क' गेलहुँ।

पण्डित श्री जयकान्त मिश्रकें विद्वता परम्परासँ भेटलनि। विद्वतोमे महामहोपाध्यायी विद्वता। पिता म. म. श्री उमेश मिश्र, पितामह म.म. श्री जयदेव मिश्र, पूर्वज म.म. शंकर मिश्र, म.म. पक्षधर मिश्र, म.म. केशव मिश्र, म.म.म. हरिनन्दन मिश्र आदि। हिनक कुलक कोनो कुलभूषणक लेल विद्वताक न्यूनतम अहर्ता महामहोपाध्याय।

छात्र जयकान्त एहि चुनौतीकें गंभीरतासँ नेने हैताह। ओ कौलिक विद्वता आ प्रतिष्ठाकें आओर वैविध्यपूर्ण, आओर व्यापक बनाब'क लेल ओकर पाश्चात्यीकरण आ ओहि 'वैज्ञानिक शिक्षा'क समावेश आवश्यक बुझने हैताह। ओ ओहि दिशामे सुचिन्तित समधानल डेग बढ़ौलनि।

हमरा बुझैत हुनका लेल विद्वता अर्जित क' लेब अथवा कोनो महाविद्यालय/ विश्वविद्यालयसँ नियुक्ति-पत्र प्राप्त क' लेब ओतेक कठिन नहि छलनि, जतेक कौलिक वैशिष्ट्यक दुर्लंघ्य शिखरसँ आओर उच्च शिखर जोहब आ ओहि पर अपन ध्वजदण्ड गाड़ि आगामी पीढ़ीक विकास-यात्राकें आओर प्रतिस्पर्धापूर्ण बना देब।

अनुसंधानक क्रममे ओ पुस्तकालय एवं पाण्डुलिपिमे हेरायल रहितहुँ, अन्तर्मनसँ नव क्षितिजक अन्वेषणमे लागल रहैत रहथि। नेपालमे हुनका 1225 ई.मे लिखल ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'धूर्त समागम' (तिरहुतामे लिखल नाटक) भेटलनि आ ओ मैथिली साहित्यक इतिहासमे 100 वर्ष आओर जोड़ि देलनि। चर्चित होयबाक लेल, ई उपलब्धि हुनका सन्तोष द' सकैत छलनि। किन्तु एतबासँ ओ सन्तुष्ट होइवला नहि रहथि।

ई पढ़ैत रहलाह अंग्रेजी किन्तु हिनक चिन्तनक विषय रहलनि, मैथिली। 1943 ई.मे अंग्रेजी भाषा आ साहित्यमे एम.ए. कयलाक बाद अगिला छओ वर्ष धरि ओ मैथिलीमे डूबल रहि ओकर छिड़िआयल रचना सभक संकलन-अध्ययन, ओकर ऐतिहासिक क्रमनिर्धारण आ ओहि पर पड़ल अंग्रेजी साहित्यक प्रभावक विश्लेषणमे लागल रहलाह। अंग्रेजीमे बड़ कम समय आ श्रमसँ कोनो शोध प्रबन्ध लिखि देश-विदेशमे सम्मान पाबि सकैत रहथि किन्तु ओ त' संकल्पबद्ध रहथि अधिकारसँ वंचित अपन मातृभाषाकें पुनः प्रतिष्ठित करबाक लेल।

मातृभूमि आ मातृभाषा प्रति अनुरक्ति कोनो विस्मयक बात नहि। ई कम-बेशी सभमे होइत छैक। मात्र पढ़ल-लिखल आ नौकरी पेशेवला लोकमे नहि, अपढ़-अशिक्षित बोनिहारोमे। किन्तु, दृढ़ संकल्प आ संघर्ष शक्तिक अभावमे ओकर अनुरक्ति महज उद्‌गार धरि सीमित रहि जाइत छैक।

जयकान्त बाबू सन मातृभाषाभिमानी, महत्वाकांक्षी आ संघर्षप्रिय व्यक्ति एतबासँ सन्तुष्ट होइवला नहि रहथि। नवक्षितिज नवशृंगक-अन्वेषण लेल प्रतिवेशी हिमालय दिस नहि ताकि मिथिलाक सरजमीन पर ठाढ़ भ' गेलाह जकर विस्तार नेपालक तराइसँ ल' कए गंगा, कोशी, गंडकीक किनार धरि रहैक।

एतय सभ किछु रहैक। धर्मप्राण आत्मा, निर्दोष विचार, ब्रह्मान्वेषी दर्शन एवं चिन्तन, भाषा आ लिपि, साहित्य आ संस्कृति। अर्थात शास्त्र त' रहैक, शस्त्र नहि, आत्मदया त' रहैक आत्म-दर्प नहि।

युवा जयकान्त मिथिलाक एहि परिदृश्य पर चिन्तन-मनन कैने हैताह, ओकर पतनोन्मुखताक विश्लेषण कैने हैताह, ओकर भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक स्वरूपक सहज अध्ययन कैने हैताह, तखन जा कए अपेक्षित रणनीति बना अपनाकें तैयार केने हैताह।

ई बात नहि छलैक जे हुनकासँ पूर्व अथवा हुनका समयमे मिथिला-मैथिलीक समस्या पर ककरो ध्यान नहि गेल रहैक। मिथिलाक अनेक सपूतकें मिथिलाक दुर्दशा संघर्षक लेल कटिबद्ध कैने रहनि आ ओ लोकनि योजनाबद्ध आन्दोलन चलौने रहथि आ हुनको समयमे मिथिलासँ एवं मिथिलाक बाहरसँ मैथिल आन्दोलन चला रहल छलाह। हुनकहि जकाँ अनेक प्रवासी मैथिल कतेक ठामसँ संघर्षक आगि सुनगा रहल छलाह। किन्तु, ओहिमे अधिकांश तात्कालिक समस्यासँ अनुप्रेरित-आन्दोलित छल, दीर्घकालीन अथवा अन्तहीन संघर्षक लेल ओहिमे अपेक्षित संकल्प-शक्ति, सांगठनिक क्षमता, व्यूह रचना आ रणकौशलक अभाव छलैक। ओ एहि सभसँ अवगते नहि, ओकर सहभागी आ साक्षी रहथि, ओकर समस्त दुर्बल पक्षसँ पूर्णतः अवगत। इहो बूझल रहनि जे कोना मैथिली समृद्ध भाषाक आसनसँ उतारल गेल, कोना राष्ट्रभाषाक नाम पर ओकरा हिन्दीक उपभाषा आ अन्ततः बोली सिद्ध कैल गेल आ कोना ओकरा स्वतंत्र लिपि (तिरहुता अथवा मिथिलाक्षर) छोड़ि 'देवनागरी' अपनयबाक लेल विवश कैल गेल।

ओ, एहि सभ विडम्बनाकें ध्याने राखि अपन संघर्षक रणनीति बनौलनि। ओ भाषाज्ञानक भित्ति पर भाषानुराग जगाब' चाहैत छलाह आ एहि लेल मातृभाषाक माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षाक व्यवस्था करब आवश्यक बुझलनि। ओ ओकरा अनिवार्य बनयबाक लेल सरकार पर जोर दिअ' लगलाह। मैथिली भारतक एकटा प्रमुख भाषा थिक, ताहि लेल तथ्य संग्रह कए विभिन्न मंचसँ प्रस्तुत कर' लगलाह। ओकर भाषा वैज्ञानिक पक्षकें देशक विद्वत् वर्ग आ राजनेताक समक्ष राखैत ठाम-ठाम पुस्तक-प्रदर्शनी करैत देशकें मैथिलीक भाषिक समृद्धि तथा साहित्यिक सम्पदासँ परिचित कराबैत रहलाह। देशक प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूक समक्ष मैथिलीक पक्षकें रखलनि आ हुनक अनुशंसासँ गठित कमेटी द्वारा 1965मे मैथिलीकें साहित्य अकादेमीमे स्थान भेटल। मुदा ई संभव नहि होइत जँ डॉ. मिश्र 9 दिसम्बर 1963 कें दिल्लीक आजाद भवनमे मैथिली साहित्यक पुस्तक-प्रदर्शनी आयोजित कए पण्डित नेहरूसँ उद्घाटन नहि करबौने रहितथि, हुनका मैथिलीक प्रति आकृष्ट आ प्रभावित नहि कैने रहितथि।

हुनक एहने उद्योगसँ मैथिली प्राथमिक शिक्षामे प्रवेश पौने छल।

डॉ. मिश्र मैथिलीक एक समर्पित कार्यकर्ताक रूपमे शुरूसँ जानल जाइत छथि। हुनकामे विलक्षण संगठनात्मक क्षमता छनि। नगर-महानगरक राजपथसँ ल' कए गाम-गामक धूरा फाँकि ओ आम जनताकें सम्बोधित करैत रहला अछि, आन्दोलनक लेल सहयोगक आह्वान करैत रहलाह अछि आ अपन व्यक्तित्वक

चुम्बकीयताक प्रतापें विशाल जनसमूह आ अनेकानेक संस्थाक नेतृत्व करैत ओ अपन प्रतिवेदन, प्रस्ताव आ प्रतिवाद दिल्ली आ पटना पहुँचाबैत रहलाह अछि।

मैथिलीकें संविधानक अष्टम अनुसूचीमे स्थान दिअएबाक हुनक संकल्प आगू बढ़ि आइ मिथिला राज्यक लेल संघर्ष क' रहल अछि।

मिथिला-मैथिलीक एहि भगीरथक अपन जीवन-कालमे, भ' सकैत अछि, लक्ष्य प्राप्त नहि होनि मुदा जहिया मैथिलीकें संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे स्थान भेटतैक आ मिथिला राज्य बनत, डॉ. श्री जयकान्त मिश्र ओकर प्रतिष्ठाताक रूपमे स्मरण कैल जयताह।

एकरा हम अपन सौभाग्य मानैत छी जे एहि यायावर भविष्यद्रष्टासँ हमर व्यक्तिगत सम्पर्क रहल आ बाल्यावस्थासँ ल' कए आइ धरि हुनक ज्योतिपुंजसँ आलोक ग्रहण करैत रहल छी।

रचनाकाल : 01.06.1998

किसुन जी, 'आखर'क संदर्भ आ हुनक पत्र

1967सँ पूर्व किसुन जीसँ हमर पत्राचार नहि छल। मुदा, एक दोसरसँ रचनाक माध्यमसँ परिचित छलहुँ।

हमरा ओ पहिल पत्र राष्ट्रीय सार्वजनिक मेला, सुपौल दिससँ जनवरी 1967मे लिखने छलाह कलकत्ताक पता पर आ अन्तिम पत्र फरवरी 1970मे, जे हमरा बरौनीमे प्राप्त भेल छल। एहि तीन वर्षक अवधिमे हुनक साक्षात्कार, आत्मीयतापूर्ण पत्र आ अकुण्ठ स्नेह हमर त्रिवर्षीय अस्वस्थताक यंत्रणा-सहनक लेल कतेक शक्ति आ मैथिलीमे लेखनक लेल कतेक प्रेरित-प्रोत्साहित कैलक—से हमरा लेल शब्दातीत अछि। अनेक घटना-दुर्घटना केर ओ मात्र साक्षिये नहि, सूत्रधारो छलाह। 'सीमान्त' आ 'आखर'क प्रकाशनमे राजकमल आ किसुन जीक प्रेरणा, सहयोग आ निर्देशन हमरा समान रूपें प्राप्त भेल छल। सत्त त' ई जे हिन्दीक संग-संग मैथिलीमे क्रमबद्ध लेखनक लेल यैह दुनू व्यक्ति हमरा अग्रसर कैने छलाह।

राजकमल संस्कारतः क्रांतिकारी आ आधुनिक छलाह। आधुनिकता बोध हुनक चिन्तन-प्रक्रियामे छलनि। आचरण भलें असाधारण आ कखनहुँ असामाजिक भ' जाइत छलनि मुदा, हुनक जीवन आ विचारमे कतहु आडम्बर अथवा आरोपित विडम्बना नहि छलनि। जीवन आ साहित्यमे ओ शत-प्रतिशत आधुनिक छलाह तथा आजुक जीवन-विपर्यय एवं क्रूरता केर निर्भीक वक्तो।

किसुन जी सहज मानवीयता केर महान उद्‌गाता छलाह। हुनक आडम्बरशून्य निश्छल जीवन आ व्यवहार सभकें आकृष्ट करैत छलैक—खाहे ओ कोनो अत्याधुनिक नवतुरिया साहित्यकार हो अथवा चानन-चद्दरि-पागधारी कोनो कर्मकाण्डी पण्डित। ओ एक संग परम्परा-प्रेमी आ आधुनिकता केर पक्षधर छलाह। परम्परा आ आधुनिकता केर एक गोट संगम, दुनू केर बीच एक गोट जीवन्त सन्तुलन। हुनक दस वर्ष पूर्वक रचना सभमे परम्पराक प्रति अगाध मोह तथा संस्कार-संवेदित भावुकता केर दर्शन होइत अछि, जे हुनका साहित्यिक यजमनिकामे व्यस्त पण्डित सभक प्रिय-पात्र आ मित्र बनौने छलनि, तँ दोसर दिस जीवनक अन्तिम दशकमे

ओ उग्र आधुनिकतावादी तथा सड़ल परम्परा एवं कुसंस्कारक विरोधी बनि गेल छलाह। पण्डित लोकनि (एहिठाम पण्डालोकनि कहब उचित हैत) पर कुठाराघात भेलनि। हुनक पूर्ववर्त्ती मित्रवर्गकें आश्चर्यक ठेकान नहि। किसुन जी सन गम्भीर साहित्यिक आ विनीत विद्वान आधुनिकता केर बिड़रोमे कतय भसिया गेलाह! जेना कोनो कुलवधू केर अवैध गर्भपातक पता गामक कुटनी माउगि सभकें लागि गेल हो। सभतरि दुर-दुर, छिः-छिः! मुदा, किसुन जीकें जड़ परिवेशसँ समस्त अवैध सम्बन्ध तोड़बाक छलनि, तोड़ि लेलनि। ओ भारतीय आ पाश्चात्य साहित्यक समुद्रमे डुबकी मारि आधुनिक बोध केर रत्न बहार क' चुकल छलाह, पोखरिक काश-सेमारमे ओझड़ाएल रहब कोना नीक लगितनि?

हुनक पहिल पत्रसँ हमरा बड़ आश्चर्य भेल छल। मैथिलीमे नवकविता पर सेमिनार, आ सेहो सुपौलमे। मुदा, किसुन जी सन कर्मठ आ दृढ़ संकल्पक व्यक्तिक लेल किछुओ असंभव नहि छल। आब तँ रामानुग्रह झाक सत्प्रयासें प्रकाशित 'मैथिलीक नवकविता' किसुन जीक नवकविता सम्बन्धी दृष्टिकोणकें स्पष्ट कए चुकल अछि।

सुपौलक नवकविता सेमिनारक पूर्व ओ पुरनका पीढ़ीसँ असम्पृक्त नहि भेल छलाह। नवीन बोधकें स्वीकार क' चुकल छलाह आ सस्त लोकप्रियताक लेल साहित्यकें सीढ़ीक रूपमे प्रयोग कयनिहार व्यक्ति सभक नियतिसँ ओ परिचित भ' चुकल छलाह, तथापि पूर्ण रूपसँ मोह-भंग नहि भेल छलनि।

किसुन जी मैथिली नवलेखनक मार्ग प्रशस्त करए चाहैत छलाह, नवतुरिया वर्गक रचनात्मक क्षमता आ वैचारिक नवीनता, शिल्पगत नवीन प्रयोग आ निर्भीक अभिव्यक्तिसँ मैथिलीकें सम्पन्न देखए चाहैत छलाह। एहि सभक लेल एक गोट स्वस्थ मंचक प्रयोजनीयता पर एक्केसंग राजकमल, जीवकान्त, रेणु जोर देलनि। 'आखर'क योजना तें सफल भ' सकल। 'राजकमल स्मृतिअंक' बहार करएमे सोमदेव जी द्वारा पठाओल सुझाव तथा किसुन जीक अथक प्रयाससँ राजकमलक परिवारिक जीवन पर लिखल लेखसँ बड़ मदति भेटल छल।

'आखर'क नियमित प्रकाशनक लेल किसुन जी बड़ उद्योगशील छलाह। मुदा, 'राजकमल स्मृति अंक' बहार कैलाक बाद जे 1968 सँ हमर अस्वस्थता आरम्भ भेल तकर क्रम 1970क अंत धरि चलैत रहल। एहि बीच 'आखर' बन्द भ' गेल, किसुन जी विदा भ' गेलाह आ मैथिलीमे जे नवीन विद्रोही स्वर, स्वस्थ साहित्यक सर्जनाक मार्गकें प्रशस्त कर'क लेल संघर्षरत छल, प्रकाशन तथा संघटनक अभावमे घबराकें अपन सुविधा आ विज्ञापनक लेल समझौतापरस्त भ' गेल।

किछु व्यक्तिगत पत्र उद्धृत क' रहल छी, जाहिमे हुनक व्यवहार, विचार, कर्मठता तथा 'आखर'क लेल उद्योगशीलता स्पष्ट होइत अछि।

प्रियवर,

सुपौल, 10.03.1967

अहाँक 7-3क पत्र काल्हि भेटल। सुपौलसँ गेलाक बाद जे एको टा पत्र नहि आयल छल से चिन्तित छलहुँ।

संकलनक काज चलि रहल अछि। निबन्ध सभक प्रतीक्षा अछि। सुपौलमे जे निबन्ध सब प्राप्त भेल छल, तकरा बादसँ कोनो नहि आयल अछि। कविता-संकलन लेल सर्वश्री जीवकान्त, श्रीकान्त, गंगेश गुंजन, रेणु जी अपन दस गोट कविता, अधुनातन पासपोर्ट साइज फोटो, वक्तव्य आ परिचय पठौलनि अछि। अहाँक उक्त वस्तु सभक प्रतीक्षा अछि।

अहाँक
किसुन

प्रियवर,

सुपौल, 22.11.1967

कार्ड (14.11.67क) भेटल। 10 प्रति 'आखर' सेहो। धन्यवाद। जेना उत्साह आ लगन सँ काज भ' रहल अछि, आखर अवश्ये नवलेखनक प्रतिमान सिद्ध होयत। शर्त्त जे उद्देश्यमे अवान्तर भेद नहि हो। रचना लेल आग्रह करबनि। अपन कथा यथाशीघ्र पठा देब। संकलन सुपौलमे छपत। कवर आनठाम छपायब।

स्नेहाधीन
किसुन

प्रियवर,

'आखर'क पाँचम अंक भेटल। सामग्री सब नीक। केवल प्रूफ पर कने ध्यान राखी से आवश्यक। 'आखर'क लोकप्रियता बढ़ि रहल अछि। वार्षिक ग्राहक बनयबाक उद्योगमे छी।

श्री मायानन्दकें पुनि पत्र देलियनि अछि कि ने?

हम अप्रैल धरिक हेतु क्षमा चाहैत छी। तकरा बाद लिखब।

राजकमल अंक लेल श्री सोमदेव जीसँ पटनामे गप्प भेल छल। कार्यारम्भ अछि कि ने? रचना संग्रह भ' रहल अछि?

सुपौलक चर्चा लेल एहिठामक सब क्यो बड़ आयन प्रकट क' रहल छथि।

अहाँक

किसुन

प्रियवर, सुपौल, 23.04.1968

पत्र आ आखर भेटल। अहाँक अस्वास्थ्यक चिन्ता अछि। स्वास्थ्य पर ध्यान राखी। अहाँक स्वास्थ्य केवल अहींक नहि, मैथिलीक आ हमरा सभक स्वास्थ्य थिक।

राजकमल-स्मृति-अंकक हेतु हमहुँ आवश्यक पत्राचार आइसँ आरम्भ क' देल अछि। प्रायः सबकें अहूँ पत्र देने हेबनि।

'आखर'क टाकाक की स्थिति छैक–से बूझल नहि अछि! रचनाक अभाव नहि होमक चाही–से विश्वास अछि।

10 मइ धरि जे रचना मंगलियैक अछि से बड़ कम समय भेलैक तथापि प्रयत्न क' रहल छी।

किसुन

प्रियवर, सुपौल, 16.05.1968

पत्र भेटल। पटना आबि सकी तकर प्रयत्नमे छी। छुट्टी पर निर्भर करैछ प्रोग्राम। श्री जीवकान्त जी रचना सब पठा देलनि से लिखने छलाह। डॉ. बालगोविन्द झाकें कहने रहियनि। ओ रचना कलकत्ता पठा देलनि अछि। श्री रामानुग्रहकें रचनाक सेहो तगेदा कयने छियनि। श्री धीरेन्द्र जीकें जनकपुर पत्र देलियनि अछि। महिषी जयबाक अछि। हमर सर्वविध सेवा उपलब्ध हो, तकर समग्र चेष्टामे छी।

स्वास्थ्य नीक नहि रहैत अछि। दरभंगाक प्रतिक्रिया बूझि हर्ष भेल अछि।

अहाँक

किसुन

प्रियवर, राँची, 12.06.1968

अहाँक 29 मइ '68 वला कार्ड हमरा सुपौलहिमे भेटल छल। मुदा अत्यधिक अस्वस्थ रहक कारणे तत्काल उत्तर नहि द' सकलहुँ। एम्हर फरवरियेसँ हमर स्वास्थ्य हासोन्मुख भेल जा रहल अछि। मइक अन्तिम सप्ताह धरि बेशी अस्वस्थ भ' गेलहुं। तखन 7 जूनकें सुपौलसँ एतय चलि आयल छी। एहिठाम जमायक डेरामे ठहरल छी। मेडिकल कॉलेजक ख्यातनामा डाक्टर के. के. सिन्हाक चिकित्सा चलि रहल अछि। बीचमे मरणासन्न भ' गेल छलहुं। मरय नहि चाहैत छी से आब क्रमशः नीके भेल जाइत अछि।

अस्वस्थताक कारणे किछु नहि लिखि-पढ़ि सकल छी, से बुझाइत अछि जे एतेकरास जिनगी हेरा गेल अछि।

अहाँक

किसुन

प्रियवर, काँके, 26.06.1968

कतय राजकमल-स्मृति अंक लेल सम्पादन, संकलन आ आरो-आरो अनेक आयोजनक योजना बनौने छलहुँ आ कतय अपनहुँ रचना एतेक विलम्बसँ पठा रहल छी। शरीर-दौर्वल्य सब तरहें निरस्त क' देलक।

इहो रचना रोग-शय्येसँ अनेक दिनक प्रयासें लिखने छी–थोड़ेक-थोड़ेक क' कें। तहिना जे चाहैत छलहुँ से नहि लिखि सकलहुँ। विचार आ योजना किछु छल आ भ' सकल किछु।

तैयो हमरा जनैत स्मृति अंककें ई बेशी दूरि नहि करत से विश्वास अछि। आ कि नहि!

रचनाक प्रसंग हमर एकेटा हार्दिक अनुरोध जे एकरा बिनु काट-छाँटक अक्षुण्ण प्रकाशित क' देबैक। कारण जे एहिमे बहुत रास एहन सूत्र सब अछि–जे हमरहु आ अहूँ कें, मने आखरकें–मैथिलीक आन्दोलनकें, कहियो काज देतैक। 24.6 कें तार पठबौने छलहुँ। अहाँ अपन स्वास्थ्यक हालति लिखब।

अहाँक

किसुन

प्रियवर, काँके, 27.06.1968

राजकमल-स्मृति अंक लेल काल्हिये निबन्धित डाकसँ अपन निबन्ध आ चिरंजीवी ओझा जीक कविता पठौने छी।

आइ श्री शैलेश कुमार पाठकक एकटा रचना 'राजकमल चौधरीक अन्तिम साहित्यिक मंच' पठा रहल छी। एहिमे सुपौल सेमिनारक सम्पूर्ण विवरण, राजकमलक योजना सब आ राजकमलक असामान्य चरित्रक एकटा घटना (जकर साक्षी आ भोक्ता एकटा अहूँ छी) सभक उल्लेख अछि। हमरा विचारें ई स्मृति अंकमे अवश्य छपक चाही।

अहाँक

किसुन

प्रिय बन्धु, सुपौल, 02.07.1968

काल्हिये राँचीसँ अयलहुँ। आब पूर्वापेक्षया स्वस्थ भेल जाइत छी। एहिठाम अयला पर पता लागल जे प्रायः अहाँ सुपौल आयल छलहुँ आ संगमे आरो क्यो रहथि। की बात थिकैक, कृपया सूचित कए जिज्ञासा निवृत्त करी।

राजकमल चौधरीक प्रसंग किछु बेशी प्रामाणिक जानकारीक प्रयत्न हुनका परिवारसँ कयने रही, मुदा हमरा से उपलब्ध नहि भ' सकल छल। गाम अयला पर प्राप्त भेल अछि। तें से लिखिकें पठा रहल छी। जँ हमर वला निबन्धमे एखन गुंजाइश भ' सकय तँ तकर उपयोग क' लेब। ई भेने बड़ प्रामाणिक विवरण एहिमे आबि जायत।

पत्र देब। देब कि ने? अपन स्वास्थ्य केहन अछि? अहाँक

किसुन

प्रियवर, सुपौल, 02.08.1968

अहाँक 27.07क कार्ड भेटल। 'आखर'क चिन्त्य आर्थिक स्थितिसँ दुख भेल। वस्तुतः एकर उपाय करहि पड़त। एहि प्रसंग पूर्व पत्रमे हम एकटा योजना लिखने छलहुँ।

विशेषांक सनगर बहरायल अछि। पुनि दोसर खेप।

अहाँक

किसुन

प्रियवर, सुपौल, 29.11.1968

पाँच टा कविताक संग अहाँक चिन्ताप्रद पत्र भेटल। अहाँक अस्वास्थ्य बड़ चिन्तित क' देलक। ओना हमहुँ, आइ चारि-पाँच माससँ अस्वस्थ रहैत छी। अतीव दुबरा गेलहुँ अछि। बन्धुवर राजकमलक बाद आब जँ कोनो साहित्यकार बन्धुक अस्वास्थ्य-संवाद पबैत छी तँ मन बड़ घबड़ा उठैत अछि। स्वास्थ्य पर बेशी ध्यान राखू। बीचमे मधुबनी गेल छलहुँ। श्री जीवकान्त जीसँ गप्प भेल। वीरेन्द्र जीक प्रसंग हुनकासँ ज्ञात भेल छल। एम्हर सुपौलसँ एकटा कथा त्रैमासिक बहार क' रहल छी। जनवरीमे प्रवेशांक भेटय, से नेआरने छी। सहयोग मँगैत छी।

अपन कविता-कथा पठा देब। बिसरि गेल छलहुँ। पाँच टाक अतिरिक्त शेष कविता शीघ्र पठाबी। संकलन ठीके अहाँ ल'ग आबिकें अटकल अछि। श्री जीवकान्त जी 15-16 दिसम्बरकें कलकत्ता जयताह।

किसुन

प्रियवर, सुपौल, 06.02.1970

आइ बहुत दिन पर अहाँक पत्र पाबि भाव-विभोर भ' उठलहुँ।

एम्हर श्री जीवकान्त जीक पत्रसँ अहाँक सम्बन्धमे यदा-कदा समाचार भेटैत छल, जाहिसँ दुख एवं औत्सुक्य बढ़ैत रहैत छल।

हमहुँ मरणासन्ने छलहुँ। अस्पतालमे भरती छलहुँ। ऑपरेशनसँ पूर्व आत्महत्याक प्रयासमे पकड़ल गेलहुँ आ अतीव दुर्बल रहक कारणे ऑपरेशन नहि भेल।

एखन होमियोपैथी चलि रहल अछि। सुधरि रहल अछि।

श्री हंसराज हमरे संग भरती छलाह। आब पटना छथि। सुधरल।

पत्रसँ सब ज्ञात क' दुखी छी। मुदा आब नीके भ' रहल छी, से जानि सन्तोष अछि। हमर शुभकामना।

स्नेहाधीन

किसुन

प्रियवर, सुपौल, 28.02.1970

15.02क कार्ड पहिनहि भेटल छल, मुदा उत्तर एहिसँ पूर्व नहि द' सकलहुँ।

हमर स्वास्थ्य ठीके अछि। अहाँसँ भेंट कर'क बड़ उत्कण्ठा भ' रहल अछि। यदि पटना दिसुक यात्रा भेल तँ बरौनी उतरि अवश्य भेंट करब। हमरा राँची प्रवास (रोग क्रममे) आर्थिक दृष्टियें तेना थकुचि देलक अछि, जे होश नहि भ' सकल अछि। अपन कुशलादि लिखैत रही।

शुभैषी

किसुन

एकर बाद ने कोनो पत्र, ने साक्षात्कार। एहिसँ पूर्व आओर बहुत रास पत्र आयल छल, जकर उद्धरण अनावश्यक बुझना गेल। सोमदेव जी बरौनी आबि कहलनि जे हमरा संग किसुन जी, गंगेश गुंजन, जीवकान्त आदि सेहो आब' बला छलाह मुदा, हुनका सभक कार्यक्रम बदलि गेलनि।

15 जून 1970। सोमदेव जी, जीवकान्त, श्री रामानुग्रह झा आदिक एक्के संग पत्र-टेलिग्राम–'किसुन जी हमरा सभकें छोड़ि विदा भ' गेलाह।' 19 जून राजकमल चौधरीक पुण्य-दिवस। 15 जूनकें किसुन जी द्वारा महाप्रयाण। एकरा की कहल जाय? अनुजक असहनीय मृत्यु-शोकमे अग्रज द्वारा मृत्यु-वरण!

प्रकाशित–वैदेही : फरवरी 1973

किसुन जी, आगि, सुमन-मधुप-अमरक भनसाघरक चूल्हि आओर...

सरल, सोझ आ निश्छल व्यक्तिसँ बड़ सहजतासँ सम्पर्क स्थापित कैल जा सकैछ अथवा भ' जाइत छैक। ताहूमे जँ ओ व्यक्ति ग्रामीण परिवेश आ संस्कारक हो, सहृदय आ विद्वान हो, छल-छद्मसँ दूर आ मानवीय सम्बन्धकें सर्वोपरि बूझ' बला हो, स्नेह श्रद्धा आ आत्मीयतामे डूबल रहैत हो, तखन तँ ओकरा संग मात्र सम्पर्के नहि स्थापित कैल जा सकैछ, अपितु स्वार्थो साधल जा सकैछ, थोड़-बहुत मान-सम्मान द' ओकरासँ सेवा-टहल सेहो कराओल जा सकैछ। कहबाक अभिप्राय जे नागरिक कुटिलता आ ग्रामीण वंचकताक हाथमे ओकर सरलताकें औजार जकाँ व्यवहृत होइत देखल जा सकैछ।

किसुन जीक मादे सोच' काल ई बात कियैक हमरा मोनमे आयल? की हुनक विद्वता, कवि-हृदयता आ आन्तरिक निश्छलता हुनका बुड़बकीक सिमान पर ठाढ़ क' देने छलनि, जतयसँ हुनका केओ केम्हरो पटा-फुसलाकें ल' जा सकैत छल, केहनो काज करबा सकैत छल आ काज निकालि लेलाक बाद 'डिस्पोजेबल पेकिंग' जकाँ हवामे उड़' लेल छोड़ि द' सकैत छल?

संभवतः हमर एहि विचारक उत्स किसुन जीक किछु समकालीन आ प्रायः समवयसी पंडित-सह-साहित्यकार द्वारा व्यक्त एवं प्रचारित एहि धारणामे अछि जे–'किसुन जी भसिया गेलाह। काव्य ककहरो केर अवगति नहि राख' बला नवतुरिया आ नवसिखुआ कवि सभक अगुआ बन'क लेल, काव्य-परम्परामे स्थापित-स्वीकृत भ' गेलाक बादो अपनाकें अग्रणी कहयबाक लेल ओ आधुनिकता, नवकविता, अकविता आदिक नाम पर दिग्भ्रमित आ मूर्त्तिभंजक कवि सभक संग द' रहल छथि, ओ पथभ्रष्ट भ' गेलाह।'

हमरा जनैत किसुन जी ने बुड़िबक जकाँ सोझ छलाह, जकरा प्रलोभित-प्रभावित कए लोक कोनो काज करबा सकैत छल, आ ने भसियाकें मैथिलीक नवीन काव्य-धारामे सम्मिलित भेल रहथि। हुनक व्यक्तित्वक निश्छलता-सरलता-सहजता, आत्मानुशीलन एवं सामाजिक-साहित्यिक अध्ययनसँ प्रतिफलित जीवनक सहज व्यवहार अथवा व्यवहार बनि गेल छलनि। इएह गुण कोनो व्यक्तिकें वास्तविक अर्थमे महान बनबैत छैक। ई गुण प्रतिकूल परिस्थिति, अभाव, रोग आ नानाविध कष्टक मध्यो मृत्युपर्यन्त हुनक संग नहि छोड़लकनि।

सभक लेल सहज-सुलभ रहितो कतेक व्यक्ति द्वारा ओ बुझल गेलाह? खाहे हुनक गाम-घर हो अथवा मैथिली साहित्यक समाज–कतेक व्यक्ति हुनका चीन्हि सकलनि?

जतय धरि मैथिलीक नवीन काव्य-धारामे भसियाकें हुनक सम्मिलित होयबाक प्रश्न अछि–ई बात बड़ हास्यास्पद लगैत अछि।

संस्कार, परम्परा, अध्ययन आ अध्यापनसँ हुनका संस्कृत-साहित्यक विशाल भण्डार प्राप्त भेल रहनि। देश-विदेशक विभिन्न भाषा-साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन ओ करैत रहैत छलाह। हुनकामे सर्जनात्मक प्रतिभा छलनि आ विश्लेषणक अदभुत क्षमता। मैथिल समाजमे ओतेक आदर-सम्मान पाबि अपन समानधर्मा सभ जकाँ आत्मतुष्ट अथवा आत्ममुग्ध रहि सौखिया लेखन करैत रहि सकैत छलाह आ कवि सम्मेलनकें 'पार्ट-टाइम' केरियर बना अपनाकें 'ग्लेमेराइज्ड' क' लोकप्रियता आ वाहवाही लूटैत आजीवन प्रसन्न रहि सकैत छलाह। किन्तु, से हुनका स्वीकार नहि छलनि।

समवर्त्तीसँ बेशी हुनका पूर्ववत्ती आ परवर्त्ती आकृष्ट करैत छलथिन। पूर्ववर्त्ती यात्री जी अपन समकालीन कवि सभकें संस्कृत साहित्यक पीठिका पर पद्मासन लगा हिन्दी आ बंगला साहित्यसँ प्राण-वायु लैत, पारम्परिक साहित्य-सर्जन कर' लेल छोड़ि, सर्जनाक नव मार्गक अन्वेषण केने छलाह। क्षेत्रीय गंधसँ अनुप्राणित रहितहुँ, हुनका राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मुक्तिकामी जन-आन्दोलन आओर व्यवस्थासँ लड़ैत एवं शोषणक देबालकें तोड़ैत श्रमजीवी आ सामान्य लोक बेशी प्रभावित करैत छलनि। शुरू-शुरूमे पण्डित-समाज द्वारा उपहासक पात्र बनि गेलाक बादो यात्री जी 'चित्रा'क प्रकाशनक उपरान्त मैथिली साहित्यक लेल आधुनिकताक विशाल स्तम्भ बनि गेलाह।

तहिना किसुन जीकें परवर्त्ती राजकमल प्रभावित-आकृष्ट कैलथिन। मैथिल समाज आ साहित्य द्वारा निन्दा-कुचर्चाक पात्र बनल रहितहुँ वैचारिक क्रान्ति, देह-दर्शन, निम्न-भूख-नारीक परिक्रमा करैत फोंक आदर्शक नग्न चित्रण करैत राजकमल नवतुरिया वर्गक 'मसीहा' बनि गेल छलाह।

यात्री जी एवं राजकमलक माँझ छुटि गेल रिक्तताकें भरबाक लेल किसुन जी संवेदनात्मक सेतु बनाब'मे लागि गेलाह।

डॉ. भीमनाथ झाक शब्दमे, 'यात्री अपन चूल्हि आदियेसँ फराक क' लेलनि आ राजकमल-ललित अपन चूल्हि दोसर घर (अंग्रेजी)मे गाड़ि लेलनि किन्तु, किसुनक चूल्हि छलनि गाड़ल मधुप-सुमन-अमरक भनसाघरमे। यात्री-राजकमल जकाँ अपन कौलिक घरमे किसुनकें गारि नहि सुन' पड़लनि, गरदनियाँ नहि भेटलनि अपितु अन्त धरि स्नेह आ आदर भेटैत रहलनि। तें प्रायः नवका घर, मैथिलीक नव कवितामे, हिनक स्वागत तँ भेलनि मुदा यात्री- राजकमल जकाँ कान्ह पर उठा क' हिनक जय-जयकार नहि कैल गेलनि, हिनक हाथमे झण्डा तँ देल गेलनि मुदा हिनका झण्डा नहि बूझल गेलनि।'

अस्वस्थ परम्पराक विरोध आ नव यथार्थकें स्वीकार क' नवीन मान-मूल्यक स्थापनाक लेल सदति झण्डा उठायब, झण्डा बनब आ झण्डा गाड़ब आवश्यक नहि होइत छैक। ई काज व्यक्तिगतो स्तर पर अनुभवकें विस्तार द' आ अपन सर्जनात्मक प्रतिभाकें युगानुकूल मोड़ द' कैल जा सकैछ।

किसुन जीक समक्ष बड़का 'चैलेंज' छलनि। यात्री जी आ राजकमल जाहि पारम्परिक काव्य-चिनुआरसँ फराक भ' अपन सर्जनात्मक व्यंजन दोसर चूल्हि पर बनाब' लगलाह, किसुन जी ओहि चिनुआर पर बैसि नानाप्रकारक देशी-विदेशी, नवीन आ स्वास्थ्यप्रद मानसिक खाद्य बनाब'मे लागि गेलाह आ ओकर आधुनिकता बोधक 'न्युट्रिशन'सँ युक्त कर' लगलाह।

संस्कृतक विशाल आ विश्वव्यापी काव्य-परम्परा पर मुग्ध आ ओकर वैभव आ क्षमता सँ आह्लादित-आतंकित पण्डित-समुदायकें वाल्मीकि, व्यास, दण्डी, भारवि, भास, शूद्रक, माघ, कालिदासक समक्ष विद्यापति झूस लगैत छलथिन। ओहि वर्गकें हुनक 'कोमलकान्त पदावली' नहि, हुनक पाण्डित्यपूर्ण संस्कृत रचना प्रभावित करैत छलनि। तथापि अपन रचनाक बल पर हुनका लोकप्रियता आ लोक-स्वीकृति भेटलनि आ अन्ततः ओ पण्डितो समाज द्वारा स्वीकार कैल गेलाह।

किसुन जीक समक्ष दू टा विकल्प छलनि।- सुमन-मधुप वला परम्परागत शैलीमे संस्कृत-साहित्यक भावधारामे बहैत तथाकथित उत्कृष्ट आ शाश्वत काव्य-सृजनमे लागल रहब अथवा यात्री-राजकमल जकाँ नव यथार्थकें स्वीकार क' आधुनिक भाव बोधकें नवीन शैलीमे अभिव्यक्त करब।

पूर्व संस्कार आ परम्परागत रूढ़िकें तोड़ब बड़ कठिन काज होइत छैक, तहिना कठिन होइत छैक आधुनिकताक नाम पर पसरैत अतिवादकें स्वीकार करब।

किसुन जी व्यक्तिगत चेतना, अनुभव, आत्ममंथनक आधार पर अपन साहित्यिक दायित्वकें बूझैत मध्यम मार्ग अपनौलनि।

भीमनाथ जी जकरा सुमन-मधुप-अमरक चूल्हि कहैत छथि, मिथिलामे चूल्हि आ भनसाघरक बड़ व्यापक रूढ़िवादी अर्थ छैक। ओ किसुन जीक लेल मात्र 'आगि' रहि गेलनि। पजरैत आगि पर खिच्चड़ि बनाओल जाय आ कि 'पोलाव', रोटी आ कि 'नन', साग आ कि 'करी'—सभ भनसिया पर निर्भर करैत छैक। आगि व्यक्ति-व्यक्ति अथवा वस्तु-वस्तुमे भेद नहि करैत छैक। ओकर उपयोग भानस बनाब' धरि सीमित राखल जाय आ कि ओहिसँ ऊर्जा सेहो प्राप्त कैल जाय, ओकरा ऊकधरि सीमित राखल जाय आ कि समिधा सेहो बना देल जाय—ई उपयोग कर'वला पर निर्भर करैछ।

आगिक धर्म मात्र ताप छैक। ओकर संयोगसँ निर्माण आ नाश दुनू होइत छैक। की हो, ई प्रयोगकर्त्ता निश्चित करैत अछि।

निष्क्रिय समाजमे आगि छाउर तरमे तोपल रहि जाइत छैक आ लोक अनन्तकाल धरि यथास्थितिकें स्वाभाविक अवस्था बुझैत ठिठुरैत रहि जाइत अछि।

आगि स्वयं उत्पन्न कैल जा सकैछ आ दोसर ठामसँ माँगि, आनि कतहु तेसर ठाम पजारल जा सकैछ। मिथिलामे माँगिकें पजार' वला रेबाज बेशी छैक।

यात्री जी आ राजकमल अपन ऊर्जाक लेल आगि स्वयं उत्पन्न कैलनि किन्तु, किसुन जी सुमन-मधुपक भनसाघरसँ ल' आनलनि।

एतय मुख्य प्रश्न ई अछि जे किसुन जी ओहि आगिक उपयोग कोना कयलनि, कतेक दूर धरि पूर्वाग्रह आ परम्पराक व्यामोहसँ दूर रहि ओहिसँ युग-धर्मक निर्वाह कैलनि? ओ मैथिलीक नव कविताक भूमिकामे लिखैत छथि—'ककरा पलखति छैक एहि उद्दाम प्रवाह (आजुक जीवनक अवकाश विहीन दौड़ा-दौड़ी) सँ किछुओ क्षणक हेतु अपनाकें फराक राखि एहि अयथार्थ गप्प (अतीतक भ्रामक आ बाँझ गौरव अथवा सामंती शोभा वा पारम्परिक काव्य रचना) सँ झूमि उठय? सोझाँमे पसरल छैक जिनगी आ जिनगीक नीक-अधलाह चित्र, चित्र सभक अनेक दृष्टिकोण—तकरा सहबाक आ भोगबाक यथार्थताकें अनठा-फुसिया क' पुरना परम्पराक प्राचीन कविलोकनिक भावुकता जर्जर-सड़ल लहासकें पँजिऔने रहब—कोना संभव छैक आजुक कवि सभक हेतु? तें मैथिलीक नव कविताकें, नव कविकें अपन कवि-काव्यक परम्परासँ कटबाक आ परम्पराकें काटबाक प्रश्ने निरर्थक थिक... । मैथिलीक नव-कविता एहि दृष्टि भ्रमोत्पादक कुहेसकें फाड़िक', मिथ्या अवधारणाकें हटाक' वास्तविकताक दर्शन करबैत अछि...। ओकर (नवकविताक) मापदण्ड आ

मानदण्ड नितान्त परिवर्तनशील आ अस्थिर छैक, तें परम्पराक पोखरिक हरियरका-सड़लाहा पानिकें अवगाहन योग्य नहि बूझि क', ओकरा बहा देब' चाहैत अछि आ नवका पानि ओहिमे खसब' चाहैत अछि, जाहिसँ ओ स्वच्छ आ टटका बनल रहैक, से खाहे ओहि सड़लाहा पानिक संग किछु पोसल-पालित रोहु-भुन्नो कियैक नहि बहरा जाउ!'

अपना समयक साक्षात्कार आ साक्ष्य प्रस्तुत कर'मे आ युगधर्मक निर्वाह कर'मे किसुन जी अपना पीढ़ीमे सभसँ आगाँ छलाह। ओ सभसँ बड़का विद्रोही आ क्रान्तिदर्शी सिद्ध भेलाह। परम्पराक विरोध ओ नवका पीढ़ीक अगुआ बनबाक लेल नहि, आन्तरिक विवशतावश कैने रहथि। परम्पराक गतानुगतिकता, पिष्टप्रेषण-पद्धति, कुण्ठाकीर्ण विचारधारा आदिक एहन घटाटोप छलैक जे ओहिमे नवका पीढ़ी दिग्भ्रमित भ' सकैत छल। किसुन जीकें साहित्यक गहन अध्ययन छलनि एवं मैथिल मनोभूमि तथा परम्परा केर पर्याप्त ज्ञान। अपन अनुभव, चिन्तन आ अध्ययनसँ ओ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे 'अयथार्थ गप्प'क आनन्दक लेल उद्दाम प्रवाह ने रूकि सकैत अछि आ ने ओकरा रोकल जा सकैछ (द्रष्टव्य उपर्युक्त उद्धरण)। ओ स्पष्ट शब्दमे अपन पूर्ववर्त्ती आ तत्कालीन पारम्परिक लेखनकें 'दृष्टि भ्रमोत्पादक कुहेस' कहैत छथि आ नव कविताकें ओकरा फाड़ि वास्तविकताक दर्शन कराब' वला प्रयास। ई दुस्साहस कर' वला हुनका पीढ़ीमे कतेक रचनाकार रहथि?

ई दुस्साहस आ बोध हुनका आत्म-मंथन आ आत्म-संघर्षसँ प्राप्त भेल छलनि। बड़ कठिन छैक पूर्वार्जित ज्ञान, बुद्धि-सम्पदा आ अनुभव सभकें अस्वीकार क' देब, सभकें एकहि धक्कामे अपनासँ दूर भगा देब आ बीच चौबटिया पर दिगम्बर भ' जायब। किसुन जी सन ताहि समय केर स्थापित-सम्मानित कविक लेल आओर कठिन।

किसुन जीक मनोभूमि प्रारम्भहिसँ भिन्न छलनि। ओ पारम्परिक लेखनक स्थान पर नव लेखनकें प्रतिष्ठित कर' चाहैत छलाह आ तें समतुरियासँ बेशी नवतुरियाक प्रति साकांक्ष छलाह आ यैह कारण छल जे कोशीक अभिशाप भोगैत सुपौल सन सुदूर देहातमे रहियो क' मैथिली नवँ लेखन पर, आइसँ पच्चीस-छब्बीस वर्ष पूर्व, 1967क शुरुआती दिनमे, पहिल विचार-गोष्ठी अथवा सेमिनार आयोजित कैलनि। एहि तरहक दुस्साहस ओहि समयमे, किसुन जी सन दुर्द्धर्ष संकल्पशक्ति बला व्यक्ति क' सकैत छल। गोष्ठीक आयोजनसँ ल' क' दूर-दूरसँ खर्चा द' साहित्यकार सभकें बजायब बड़ बेशी खर्चा वला काज छलैक, जकर व्यवस्था सुपौल सन स्थानमे क' लेब कठिन तथापि किसुन सेमिनारक आयोजन नहि, ओहिमे पढ़ल जाइबला 'पेपर' कें पुस्तकाकार छपयबाक निर्णयो ल' लेलनि। जेना-तेना सुपौलक राष्ट्रीय मेलाक सांस्कृतिक विभागसँ सहयोगक आश्वासन लेलनि। सहकर्मी आ मित्रवर्गकें मदतिक लेल तैयार कैलनि आ अपन व्यक्तिगत प्रभावक उपयोग कर' लगलाह।

ताधरि हम मैथिलीमे अत्यल्प लिखने रही। हिन्दीक 'नयी कविता'क कवि, आलोचक आ प्रवक्ताक रूपमे चर्चामे आबि गेल रही आ 'परिवेश'क सम्पादनक कारण सम्पर्क-विस्तार सेहो भ' गेल छल। किन्तु, मैथिलीक लेल अपरिचित नहि तँ अल्पख्यात अवश्ये छलहुँ। तथापि किसुन जी औपचारिक निमंत्रण-पत्रक संग व्यक्तिगत पत्र लिखि 'सेमिनार'मे भाग लए 'पेपर' पढ़बाक आग्रह कैलनि। अपन योजनाक प्रारूप तैयार कर'मे राजकमलक सहयोग लेलनि—ई बात कतेक बेर लोक सभकें कहने रहथि। अपन संकल्पकें क्रियान्वित करबामे ओ कतेक गम्भीर छलाह तकर अन्दाज ओहि सभ कविकें होयतनि जे 'मैथिली नवकविता'मे संकलित छथि आ जिनका बेर-बेर किसुन जीक पत्र भेटल होइतनि।

सुपौलक सेमिनारमे नवलेखन पर मात्र विचार, चर्चा भेल छल। कविलोकनि दस-दस गोट कविता आ वक्तव्य पठयबाक आश्वासन द' विदा भ' गेलाह। आब ई किसुन जीक दायित्व छलनि, हुनका सभसँ आन-आन संकलनीय कविसँ रचना कोना आबय। ओ सभ कें पत्र-पर पत्र लिख' लगलाह। कतेक मास बीति गेलनि। किछु व्यक्तिकें छोड़ि किनकहु उतारा नहि। एम्हर ओ अस्वस्थ रह' लगलाह आ चिकित्साक लेल बेर-बेर राँची-पटनाक अस्पताल जाइ लगलाह। सभठाम एकहि चिन्ता-पोथी कोना बहरायत। अन्ततः रचना जुटा आ भूमिका लिखि ओ प्रेस कॉपी तैयार क' लेलनि किन्तु, छपयसँ पहिनहि विदा भ' गेलाह। पोथी छपलाक बाद लोककें ज्ञात भेलैक जे किसुन जी केहन ऐतिहासिक काज क' गेलाह आ केहन छलनि हुनक लेखकीय प्रतिभा आ संगठनात्मक क्षमता।

कोनो भाषामे साहित्यिक विधा केर लेखक कविकें एतेक शीघ्र मान्यता नहि भेटैत छैक। किसुन जीकें नहि भेटितनि, जँ रोग हुनका संसार छोड़'क लेल बाध्य नहि करितनि। आब जखन ओ विदा भ' गेलाह त' लोकक लेल हुनक प्रशंसामे स्तुतिगान, बाजब-लिखब, रचनावली बहार करब, श्रेष्ठ आ महान कहब आवश्यक भ' गेलैक। हमहुँ अपनाकें ओहि वर्गसँ बाहर नहि बुझैत छी आ हुनका पर अपन संस्मरण, लेख, कविता लिखि कर्त्तव्यक इति-श्री बुझि लैत छी—'किसुन जी/कोना लागत जँ हम अहाँकें/पनरह अगस्त अथवा छब्बीस जनवरी जकाँ/स्मरण करी/सौंसे

वर्ष/विस्मृति केर धूरा तोपि/एक दिन/झाड़ि कए सुखा कए/आत्मनेपदसँ/चौपहरा पुरश्चरण करी

अहाँ चौंकब नहि किसुन जी/एहिना होइत छैक/आस्था अधः गमन करैत पाबनि बनि जाइत छैक/आ प्रेम/झण्डामे बान्हल फूल जकाँ झड़ि जाइत अछि/ओना अहाँ भाग्यवान छी/वर्षक पक्ष-विशेष मे/पितर जकाँ स्मरण कैल जाइत छी/ई बात दोसर थिक जे अहाँ कें/कवि सँ समाधि बना देल गेल/आ सभ लिखलाहा कें/शिलालेख मे जड़ा देल गेल

आब अहाँ एहिना दाबल रहि जायब/पाथर कें संवेदनशील बनयबामे/जिनगी उत्सर्ग कर'बला केर/इएह नियति होइत छैक/अहाँ त' देखि गेल छी/कोना भुवन जी आ राजकमल/प्रस्तरीकृत भ' गेलाह

अहाँक प्रतिमाकें माला पहिरा/लोक सभ कीर्त्तनमे लागल अछि/किछु कीर्त्तन करैत अछि/आ किछु मात्र सुनैत अछि/किन्तु, आँखि मूनि सभ केओ मूड़ी डोलबैत अछि/झालि-मजीरा ढोलक केर ताल पर

केहन लगितय किसुन जी अहाँ कें/ई आवयविक संलग्नता/आ अष्टयामी मुद्रा/केहन लगितय/अपन अभूतपूर्व समानधर्मा सभक/ई अभूतपूर्व भक्तिभाव...'

हुनक सुपुत्र केदार कानन अपन पिताक 'संकल्प' कें लोक धरि निष्ठापूर्वक पहुँचा रहल छथि। नेना छथि। हुनका बुझल नहि छनि, हुनक पिताक आदर्श केहन आत्मघाती छलनि?

प्रकाशित—संकल्प - 4 : अप्रील 1994

किसुन जी सत्तकें सत्त कहैत रहथि

राजकमल जीक प्रति किसुन जीमे अपरिमित स्नेह छलनि। हुनक दुर्बलतोकें ओ दुलार करैत छलाह। हुनक रोग, पीड़ा, अभाव, यायावरी, परिवार, बाल-बच्चा, मित्र-वर्ग सभ हुनका प्रिय छलनि। एकर कारण आओर जे किछु हो, हमरा जनैत ओ छल दुनूमे अद्भुत समानता। दुनू निस्सारताक उपासक छलाह। स्वास्थ्यक संग निरन्तर अत्याचार कर' वला राजकमलकें लोक आत्महंता मानैत छलनि आ किसुन जी आत्महत्याक प्रयासमे पकड़ल गेलाह (हमरा नाम हुनक 06.02.'70क पत्र), नवता अथवा न'वक स्थापनक लेल आवांछित पुरातनक ध्वंसकें दुनू आवश्यक मानैत छलाह आ दुनूक साहित्य आ समाजक प्रति दृष्टि एवं विचार अत्युग्र छलनि।

राजकमल जीक मृत्युक बाद बहुतरास हिन्दीक पत्र-पत्रिका हुनका पर केन्द्रित अंक आ विशेषांक बहार कैलक। हुनक मित्र आ शत्रु दुनूक भावोद्रेकमे स्नेह आ द्वेषक आत्यन्तिक प्रवाह छलैक जाहिमे हुनक व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं साहित्यिक स्वरूपकें तथ्याधार पर कम, अतिरंजना तथा राजकमल द्वारा प्रचारित भ्रमोत्पादक सूचनाक अनुसार विवरण प्रस्तुत कैल गेल छलैक।

कुमार प्रिन्टर्सक मालिक आ हमरालोकनिक घनिष्ठ मित्र जयन्त कुमार 'युयुत्सा'क राजकमल विशेषांक बहार कैलनि। हुनकहि प्रेस आ सहयोगसँ 'आखर'सेहो बहराइत छल। हमरालोकनिक लेल 'राजकमल-स्मृति अंक' बहार कर' काल ई आवश्यक छल जे वस्तुस्थितिक पूर्वाग्रहरहित आकलन प्रस्तुत कैल जाय, जाहिसँ भ्रान्तिपूर्ण चर्चाक खण्डन हो।

किसुन जी ई भार अपना ऊपर लेलनि। किन्तु, अनवरत अस्वस्थ रहलाक कारण लिखब कठिन भ' गेलनि। रोग-शय्यो पर स्मृति अंकक लेल लिखब एवं लिखयबाक चिन्ता लागल रहैत छलनि।

ओ किछु अंश लिखि कए पठौलनि किन्तु पाठकक भ्रम-परिहारक लेल जे लिखब आवश्यक छलनि ताहि हेतु आवश्यक छलनि, राजकमल जीक परिवारसँ सम्पर्क कए स्पष्टीकरण करब। राँचीसँ सुपौल अबितहिं अपन शोचनीय शारीरिक

अवस्थाक बिनु परबाहि कैने सम्पर्क साधलनि आ अपेक्षित अंश लिखि कए पठा देलनि। राजकमल पर ओहन प्रामाणिक लेख ने हिन्दीमे बहार भेल, ने बंगलामे, ने मैथिलीमे दोसर।

गद्य लेखनमे किसुन जी पारंगत छलाह। खाहे आलोचनात्मक, समीक्षात्मक आ सामयिक विषय पर लेख हो अथवा कथा, संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक, सम्पादकीय आ पत्र-लेखन, सभमे हुनक गद्य-शैली विलक्षणता नेने रहैत छल। एहिसँ बड़का लाभ नव लेखन तथा 'आखर' कें भेटलैक। हुनक जीवनक अन्तिम दशक नव कविताक प्रतिष्ठापन, व्याख्या आ समालोचनामे व्यतीत भेलनि। एही मध्य सुपौलमे नव कविता पर द्विदिवसीय सेमिनार आयोजित भेल छल आ 'आखर' बहरायल। हुनक योगदान आइ सर्वविदित अछि।

यात्री, किसुन, सोमदेव, मायानन्द आ राजकमल नव कविताक लेल वातावरण तैयार कर' वला छथि। रूढ़िवादिता आ कविता-सम्बन्धी पारम्परिक मान्यता पर प्रहार करैत ई लोकनि परवर्ती पीढ़ीकें परिवेशक प्रति जाग्रत आ वायवीय आदर्शसँ बहार कए जीवनक कठोर वास्तविकताक प्रति सावधान कैलनि।

कविक रण-क्षेत्र ओकर भाव, विचार आ अनुभूति होइत छैक। समस्त वाद-संवाद, जय-पराजय ओही पर निर्भर करैत छैक। युद्ध क्षेत्र, शिविर आ सेना तीनू वैह होइत अछि। सिपाही आ कमाण्डर दुनूक काज एसकरे कर' पड़ैत छैक। किसुन जी सेहो मोर्चा पर संघर्षरत एहने सिपाही, कमाण्डर अथवा सेनानायक छलाह।

हुनक अवदान विशेष उल्लेखनीय अछि। हुनक द्वारा तैयार कैल गेल मंच अथवा मोर्चा सँ जे भावनात्मक, वैचारिक एवं साहित्यिक परिवर्तन आयल ओ निर्णायक सिद्ध भेल। सामान्यतः आधुनिकता आ आधुनिक बोध शहरसँ गाममे पहुँचैत अछि, किसुन जी ओकरा गाममे परीक्षित-प्रतिष्ठित कए मिथिलाक शहर धरि पहुँचौलनि। ओ साहित्यक क्षेत्रमे आधुनिकताक सामाजीकरण अथवा व्यावहारिक आधुनिकता विकसित कैलनि। ई अवदान हुनक रचनात्मक उपलब्धिसँ बेशी महत्व राखैत अछि। उद्देश्यक प्रति हुनकामे जे सजगता आ समर्पण-भाव छलनि, ओकरे आन्तरिक शक्ति एकटा सामान्य सेमिनारकें नवता बोधक ऊर्जा-स्रोत सिद्ध क' देलक, ओकरा साहित्यिक अनुष्ठानक मर्यादा दिया देलक।

हुनक सौम्य-शान्त-सुदर्शन व्यक्तित्वमे दुर्धर्ष इच्छा-शक्ति छलनि। ग्रामीण वातावरण, रोग, अभाव-तीनूसँ संघर्ष करैत ओ भावात्मक एवं क्रियात्मक प्रयोग करैत रहैत छलाह। प्रयोगे हुनक प्रतिरोधक एवं प्रेरक शक्ति छलनि।

सुपौलक सेमिनारमे किसुन जी हमरा मैथिलीक नव कविता पर आलेख तैयार कर'क आदेश देने छलाह। हम हुनका लिखलियनि—'कविता पर नहि, अकविता पर लिख' आ पढ़' चाहैत छी।' ताधरि बहुतरास अकविता मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे छपि चुकल छल। राजकमल, किसुन, वीरेन्द्र मल्लिक, जीवकान्त समेत अनेक कविक अकविता पाठक धरि पहुँचि चुकल छल। अतः किसुन जी हमर प्रस्तावकें सहर्ष स्वीकार कैलनि आ हमरा मंच सँ अपन बात राख' आ ओहि पर चर्चा करयबाक अवसर देलनि। ओ स्वयं नव लेखन, नव कविता, अकविता, नवतावाद आदिक अवधारणाकें स्पष्ट कर'क लेल अनेक लेख लिखने रहथि। हुनका द्वारा तैयार कैल गेल वातावरणमे कोनो तरहक प्रयोगक लेल प्रचुर संभावना रहैक।

नवका पीढ़ीक लेल प्रमुख छलैक 'एक्शन'। तदुपरान्त रुक्ष यथार्थक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति। रचनात्मक संवेगमे अभिव्यक्ति प्रमुख रहलैक आ कला, भाषा तथा सम्प्रेषण गौण पड़ि गेलैक। एहि अभावक अनुभव करैत आ सम्प्रेषणक समस्या पर बेर-बेर लेखनी चलौलनि। 'आत्मनेपद'क भूमिकामे सम्प्रेषणक नवीन विम्ब योजनाक चर्चा करैत ओ लिखने छलाह—'ई स्पष्ट वा दुरूह नहि होइत अछि; मुदा बुझल जाइत अछि, एहि कारणे जे एहि कविता सभमे अपूर्व-अपरिचित, नवीन आ सघन विम्ब सभक अधिकता रहैत अछि, जकरा लेल अधिक सुसंस्कृत आ सहृदय पाठकक अपेक्षा अछि। हर्षक विषय जे नव कविताक साधारणीकरण भ' रहल अछि आ ओकर रसानुभूति कयनिहार पाठक समुदाय खूब बढ़ि रहल अछि।'

एहि समस्या पर पुनः विचार करैत ओ 'नव लेखनः किछु विचार'मे लिखैत छथि—'ई निर्भ्रान्त अछि, जे कोनो क्षण-विशेषमे तीव्र संवेगक सूक्ष्म भाव-वहन करबाक क्षमता शब्दमे नहि होइत छैक, जे ओ कथ्यक सम्पूर्ण संवेगकें अक्षुण्ण रूपें अभिव्यक्त क' सकत। तें नव लेखन भाषाक उक्त अक्षमताकें तथा ओकरासँ पूर्वक असहज व्यक्तिकें बुझि, मानि क' एकदम अनिवार्य युगानुरूप, आपाततः यथार्थ आ नव बोधानुकूल नवीन विम्ब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदिकें स्वीकृत क' नवीन संकेत-अंक आ नव रेखाकें प्रयुक्त कयलक अछि, जे जन सामान्य द्वारा पूर्ण परिचित तथा अभिज्ञात नहि रहबाक कारणे दुर्बोध आ दुरूह कहि क' बदनाम कयल जाइत अछि।'

'ई मानबामे हमरा कनेको दुविधा वा आपत्ति नहि अछि, जे नव लेखनक नाम पर एहनो लिखल जाइत अछि, जे केवल शब्द-जाल मात्र थिक, जाहिमे अनेको रेखा मात्र अछि, नवीन होयबाक उपक्रम-आकांक्षा अछि आ अनेक अंशमे फालतू वा निरर्थको अछि।'

नव लेखन आ नव कविताक नाम पर अनुत्तरदायित्वपूर्ण लेखन हुनका पसिन्न नहि रहनि। अपन लेख, कविता, वक्तव्य आ पत्रक माध्यमसँ एहि दिस सभक ध्यान ओ आकृष्ट करैत रहैत छलाह। नवतावाद अथवा आधुनिकता मूल्यबोध आ नव मूल्यक सृष्टि थिकैक किन्तु, जखन ओकरा 'फैशन'क रूपमे लेल जाइत छैक त' ओ रचनात्मकताकें रुग्न (इनफेक्टेड) कए सर्जनाक संभावनाकें 'अबसर्डिटी' धरि सीमित करैत रचनाकारक भावावेश, अन्तः संगति तथा अन्तर्दृष्टिकें दिशा-भ्रष्ट क' दैत छैक। ओ एहि दिशा-भ्रष्टताक विरोधी छलाह संगहि, सत्तकें सत्त कहबाक दुस्साहस सेहो हुनकामे छलनि। हुनका शब्दावलीमे, ई गदहाकें गदहा कहब थिक–'सरिपहुँ आइ-काल्हि/गदहा कें बाप कहबाक एहि युगमे/ओ थिक दुस्साहसी/अथवा थिक गदहा/जे गदहाकें बाप कहबाक बेगर्त्ते मे/बाप नहि कहिक'/गदहा कहि दैत अछि।'

कोनो क्षेत्रमे ने गदहाक कमी होइत छैक, ने गदहाकें बाप कह' वला केर। किसुन जी एहि अवसरवादिताक प्रति नवका पीढ़ीकें सावधान कैलनि आ गदहाकें गदहा कहबाक साहसिकतासँ युक्त कैलनि।

हुनक कविता त' अकविता भइए गेल छल, विरोधो 'अ-विरोध' भ' गेल छल–'कोनो फूल/कोनो निर्झर/कोनो वन्याक गीत जे गबै छथि/तनिका सँ कोनो विरोध हमरा कहाँ अछि?/मुदा, पुरनका प्रतीक आ सन्दर्भ/जनिक कल्पनाक विषय थिक/अज्ञान वा आज्ञान/दोहरबैत रहब जनिक रचना थिक/ओहिमे कोनो शोध कहाँ अछि?...गतिमान इतिहास, धन्न रहू/पुरना उच्चैः श्रवा पर चढ़ब अहाँकें पसिन्न अछि/हमरा अहाँ सँ कोनो प्रतिशोध कहाँ अछि?/विरोध कहाँ अछि/किन्तु/कनरसियाक साधुवाद सँ गर्वित/मंचाधीशी काव्यक पराजित स्वर छोड़ि/दोसर की संज्ञा छैक/आ जँ केओ परम्पराक जंगल तोड़ि/नवका फसिल कें पटबैत अछि/त' अहाँक माथमे दर्द कियैक होइत अछि?/आजुक युगसत्य सँ परिचय करू हे गीत-बन्धु/कनेक जीवनक यथार्थ कें बुझू/चीन्हू ई कुण्ठित/ओझरायल/संत्रस्त श्वास अहाँक थिक आ कि नहि?'
(अ-विरोध, 1969)

प्रकाशित–आरंभ : जून 1995

मैथिलीक सफल साधक पं. गोविन्द झा

किछु व्यक्तिकें जानए वला व्यक्ति केर संख्या बड़ बेशी होइत अछि। ओ अपनाकें सर्वसुलभ बना कए छोट-पैघ सभक परिचित आ मित्र भए जाइत छथि। सभक संग निश्छल व्यवहार। सभ हुनका लेल आत्मीय।

एहन व्यक्ति पहिने सभ ठाम भेटि जाइत रहथि, किन्तु जेना-जेना भौतिक संघर्ष आ स्वार्थ-केन्द्रित दृष्टिकोण बढ़ल, हुनक संख्या न्यून होइत गेल। किन्तु ओतेक संख्या एखनहुँ अछि जिनका गनबाक लेल आँगुरिक व्यवहार आवश्यक भए जाय। अपन जन्मजात प्रतिभा/संस्कारक कारण एहन व्यक्ति पद-प्रभुताक अभावोमे समाजमे विशिष्ट स्थान बना लैत छथि ओ सम्माननीय आ आदर्श मानल जाइत छथि।

आइ यद्यपि एक दिस एहन व्यक्तिक संख्यामे उत्तरोत्तर ह्रास भए रहल अछि किन्तु दोसर दिस एहि मानवीय गुणक प्रयोजन आ प्रासंगिकता बढ़ल जा रहल अछि। आइ दुष्टक लेल सहृदय, वंचकक लेल विनम्र, धूर्तक लेल निर्विकार, चोरक लेल इमानदार, भ्रष्टक लेल पवित्र, शत्रुक लेल मित्र आ विध्वंसक लेल सर्जक देखब आवश्यक भए गेल छैक। ओ ओहन नहि होअए तथापि ओकरा देखबामे ओहने लगबाक चाही।

एहि लुप्त होइत जन्मजात गुण, प्रतिभा आ संस्कारक आहरण, प्रत्यारोपण आ कृत्रिम विकासक लेल बहुविध प्रयास भए रहल अछि। विज्ञान एहि क्षेत्रमे अनुसंधान आ परीक्षण कए रहल अछि आ प्रोफेसनल इन्स्टीच्यूट सभ 'बोनसाई टेकनीक' द्वारा एकर विकास कए रहल अछि, ठीक ओहिना जेना विशाल वट-वृक्षकें शयन कक्षमे सजा देल जाइत अछि, 'टेल्समेड' मानवीय गुण आजुक संवेदनात्मक क्रान्तिक नव्यतम रूप थिक।

पण्डित श्री गोविन्द झाकें पहिल कोटिमे दुर्लभ मानवीय गुणसँ सम्पन्न व्यक्तिक रूपमे राखल जा सकैछ।

हम हुनक नामसँ कहिया परिचित भेलहुँ अथवा हुनक पहिल दर्शन कहिया

कएलहुँ से मन नहि अछि मुदा एकटा बात छल जाहि हेतु हम हुनका बेर-बेर स्मरण करैत छलियनि। हम मैथिली सीखब आ लिखब जहिया शुरू कैने रही, सोचैत रहैत रही जे अमुक शब्दकें मैथिलीमे कोना लिखल जाय अथवा ओकर साहित्यिक रूप की होएतैक। यद्यपि घरमे खाँटी मैथिली (ओ कतेक खाँटी छल से आइयो नहि बूझल अछि) बाजल जाइत छल, मुदा मैथिलीक कोनो शब्दकोष नहि छल। एकटा हितैषी हमर आतुरता देखि महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक 'मिथिला भाषा कोष' जखन आनि कए देलनि त' भेल जे कोनो अमूल्य वस्तु पाबि गेल छी। शब्द आ पृष्ठक संख्या ओहिमे बेशी नहि रहैक। ताहूमे मैथिली शब्दक लेल अर्थ अथवा पर्यायक रूपमे अधिकांशतः संस्कृत शब्दावलीक प्रयोग। यथा नोकरीक लेल 'दास्य' आ नोचनीक लेल 'कण्डूति' तथापि व्यवहारमे आबएवला मैथिली शब्दकें कोन रूपमे लिखल जाइ, ताहि लेल ओकरे बेर-बेर उनटाबैत रही ओ हमरा संगमे हरदम रहए लागल। घरमे, यात्रामे सभ ठाम। कागत-कलमक अतिरिक्त प्रयोजनीय सामग्रीमे ओ अनिवार्य रूपसँ सम्मिलित होअए लागल। कतेक वर्षक बाद ज्ञात भेल छल जे श्री गोविन्द बाबू महावैयाकरणजीक सुपुत्र छथि। हुनकासँ भावनात्मक लगाव बढ़ल आ ओ आओर प्रगाढ़ भए गेल जखन ज्ञात भेल जे चर्चित नाटककार अरविन्द अक्कूक ओ पिता छथि। साहित्यमे हुनक व्यक्तिगत अवदान की छनि (अनुवाद, सम्पादन आ नाटकलेखन मंचनक अतिरिक्त) तकर ज्ञान हमरा कतेक वर्ष धरि नहि भेल, ने जनबाक लेल हम कोनो विशेष प्रयास कएलहुँ। पटनाक साहित्यिक गतिविधिमे हुनक सक्रियताक जतबा पता पत्र-पत्रिकासँ लगैत छल, कोनो विशेष आकर्षण उत्पन्न करइमे अपर्याप्त।

पटना गेला पर मैथिली अकादमीमे हुनक दर्शन होअए। कार्यालयक पछिला भागमे कोनवला टेबुल-कुर्सी पर किछु लिखैत वा कोनो आलेखमे हेराएल। प्रणाम-पाती आ कुशल-समाचारक अतिरिक्त आओर किछु नहि। प्रत्येक बेर पोथी हेरइ आ कीनयमे जतबे अल्प समय लागय, ओहि मध्य किछु मित्र जमा भए जाथि आ प्रवेशद्वारवला बरण्डामे एकटा गोष्ठी जमि जाय। गोविन्द बाबू अपन काज छोड़ि कए कहियो ओहिमे सम्मिलित नहि भेलाह। विदा होयबासँ पूर्व पुनः प्रणाम करय जइयनि त' हुनका ओहिना व्यस्त देखियनि। हुनका देखि, विद्यार्थी जीवनमे देखल आचार्य श्री शिवपूजन सहाय बेर-बेर मोन पड़ैत छलाह। श्री नचिकेताक उद्योगें साहित्य अकादेमी 1994क अन्तमे (कलकत्तामे) सप्ताहव्यापी अनुवाद कार्यशालाक आयोजन कएलक। हमरा समेत नव कविताक अनेक कवि-लेखक आमंत्रित

छलाह। अनुवाद-कार्यकें गंभीरतासँ लैत ओहिमे सहयोगक लेल किछु विद्वान सेहो बजाओल गेलाह, जाहिमे पण्डित श्री गोविन्द झाक नाम सर्वप्रमुख छल।

ओ महाराष्ट्र-निवासमे ठहराओल गेलाह। पछाति हम अयलहुँ त' हमरा ओहि कक्षमे लए जाओल गेल, जाहिमे पहिनेसँ प्रो. रमेश चन्द्र झा रहथि। हम पुछलियनि–जीवकान्त आ केदार कानन अयलाह? ओ कहलनि जे जीवकान्त जीक पहिल गाड़ी छूटि गेल छनि। ओ दोसर गाड़ीसँ अओताह। केदार कानन यात्रासँ डेराइत छथि। ओ अपन असमर्थता व्यक्त कए देने छथिन। संगहि आन-आन साहित्यकारक आगमनक सूचना देलनि आ सुझाव देलनि जे अपने चाही त' गोविन्द बाबू वला रूममे रहि सकैत छी। ओ एखन एकसरे छथि। प्रत्येक रूममे दूटा सीट छैक। किन्तु, महाप्रकाश, सुभाष चन्द्र यादव एवं हरेकृष्ण झा तीनू एक्के रूममे रहि रहल छथि।

एहि प्रसंग चर्च भइए रहल छल की एतबेमे महाप्रकाश, सुभाष आ हरेकृष्ण कक्षमे प्रवेश करैत छथि। 'रूम-सर्विस'क अभाव आ आन-आन असुविधा पर चर्चा होइत अछि आ निश्चय होइत अछि जे संध्याकाल अकादेमीक अधिकारी लोकनिकें एकर सूचना दए कोनो नीक होटलमे रहल जाय।

संध्याकाल जखन कार्यशालाक उद्घाटन समाप्त भेल त' प्रो. इन्द्रनाथ चौधुरी, सचिव, साहित्य अकादेमी कुशल समाचार पूछैत छथि। एहि पर हमर प्रतिक्रिया होइछ–'गौशाला (महाराष्ट्र निवास)मे बासा भेटल अछि, भोजन कए प्रायः पयरे टैक्सी जोहैत-जोहैत एतय धरि पहुँचि गेल छी।' तत्काल डॉ. निर्मल कान्ति भट्टाचार्य, उप सचिव, साहित्य अकादेमी, डॉ. नचिकेता आ पं. गोविन्द झा साकांक्ष होइत छथि। कहल जाइत अछि जे असुविधाक स्थितिमे कोनो अन्य होटलमे ठहरि सकैत छी। दिनमे माछ-भातक व्यवस्था अकादेमीक ऑफिसेमे कए देल जाएत आ अकादेमीक अधिकारी अहाँलोकनिकें अनबा आ पहुँचयबाक व्यवस्था करताह।

बासा घूरि मित्रलोकनि तय करैत छथि जे जखन दिनुका भोजन आ यातायातक नीक व्यवस्था भए गेल, त' एही ठाम रहल जाए, कीर्त्तिनारायण जी हमरासभक संग एक-दू दिन रहि होटल जा सकैत छथि।

दोसर दिन स्नानादिसँ निवृत्त भए पण्डित गोविन्द झा जी हमरा कमरामे प्रवेश करैत छथि। साहित्य अकादेमी एवं मिथिला सांस्कृतिक परिषदक (कलकत्ता) संयुक्त प्रयाससँ कलकत्तामे 28-29 जनवरी, 95 कें आयोजित होअए बला मैथिली कविताक विकास पर सेमिनारक उल्लेख होइत अछि आ मुक्तक काव्य पर चर्चा शुरू भए जाइत अछि। उपस्थित मित्र वर्गमे किछु व्यक्ति ओहिमे आमंत्रितो

रहथि। चर्चा चलल। सभक अपन-अपन दृष्टिकोण, किन्तु एहि बात पर सभ एकमत जे प्राचीन आ नवीन समस्त स्फुट काव्य मुक्तक काव्य थिक। हमर विचार छल जे नव कविता मुक्तक काव्य होइतो पारम्परिक अर्थमे मुक्तक काव्यक परिसीमामे नहि अबैत अछि। गोविन्द बाबू हमर तर्क आ मान्यताकें स्वीकार करैत किछु एहन तथ्य दिस संकेतित कएल जाहि पर विचार करब लेखकें प्रामाणिक बनयबाक हेतु आवश्यक बुझना गेल छल। हम हुनक अध्ययन, विद्वता, तर्कशैली एवं कोनो विषय पर बिना कोनो पूर्वाग्रह, तटस्थ भए तथ्यक आधार पर सोचबाक शक्ति पर चकित छलहुँ।

पण्डित गोविन्द झा अनेक भाषा केर विद्वान छथि, भाषाशास्त्री मानल जाइत छथि, अनुवाद, नाटक, सम्पादन आदिक क्षेत्रमे यथेष्ट प्रतिष्ठा अर्जित कैने छथि, से त' ज्ञात छल, किन्तु पत्र-पत्रिकामे किछु कथा, लेख आ समालोचनाक अतिरिक्त मौलिक लेखनक क्षेत्रमे हुनक की उपलब्धि छनि, से जानएमे हमरा कतेक वर्ष लागि गेल।

गोविन्द बाबूक कथा-उपन्यास पढ़लाक बाद हुनक मौलिक रचनाकार आ श्रेष्ठ गद्यकारसँ हमर साक्षात्कार भेल। हमरा भेल जे गोविन्द बाबू कथा कम, आत्मकथा बेशी लिखैत छथि। आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल गेल अपन कथा सभमे ओ पात्र आ ओकर परिस्थितिकें अपनामे समाहित कए ओहिसँ कथा-सूत्र बाहर करैत छथि आ ओकरा विस्तार दैत छथि। कतहु ई दुनू हुनका संचालित करैत बुझाइत छनि अथवा आत्मविस्तार दैत छनि। कतहु पात्र आ घटनामे ओ स्वयंकें भ्रमित बुझाइत छथि। हुनकर कथासभ हुनके कथा कहैत बुझाइछ।

मराठीमे आत्मकथा शैलीमे कथालेखन बहुत पहिनेसँ भए रहल अछि आ आत्मकथाकें एकटा कथा-विधाक रूपमे स्वीकृति भेटल छैक। हिन्दीओमे ई विधा विकसित भए रहल अछि। मैथिलीमे गोविन्द बाबू एहि विधाकें प्रारम्भ करय वला मानल जा सकैत छथि। एहि विधा-शिशुमे आने विधा जकाँ अनन्त संभावना छैक। किन्तु, ओकर भविष्य एहि बात पर निर्भर करैत छैक जे अपन विकास-विस्तारमे मानवीय संघर्ष आ संवेदनाकें कतेक दूर आयात क' सकैत अछि, पूर्व अथवा प्रचलित विकल्पसँ कतेक बेशी प्रभावी सिद्ध भए सकैत अछि।

कथा-विधाक क्षेत्रमे सामाक पौतीक माध्यमसँ ओ अपन उपस्थिति दर्ज करा चुकल छलाह। 'नखदर्पण' हुनक अग्रिम पदक्षेप मानल जा सकैत अछि।

हुनक ऐतिहासिक उपन्यास विद्यापतिक आत्मकथा सेहो एही आत्मकथात्मक शैलीमे अछि। विद्यापति कथानायक आ कथावाचक दुनू छथि। साधारण मैथिल

जकाँ हुनको जन्म, शिक्षा-दीक्षा आ विकास पारम्परिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक परिवेशमे भेल छलनि। काव्यप्रतिभा छात्र जीवनेसँ परिलक्षित होअए लागल छलनि आ राजनीतिक जागरूकता प्रारंभिके उठानमे आबि गेल रहनि। ओ एकटा भावुक तथा रसिक कविक रूपमे प्रकट होइत छथि आ मानवीय संवेदनाक उद्गाता बनि जाइत छथि। अन्ततः महान् भक्त कविक रूपमे अध्यात्म चिन्तनसँ भक्तिक धार बहबैत छथि। शुरूसँ अन्त धरि भावावेग, अन्तर्द्वन्द्व, वैचारिक संघर्ष एवं आत्मचिन्तन हुनका आन्दोलित कएने रहैत छनि। ओहिना जेना कोनो साधारण मनुक्ख एहन अवस्थामे उद्वेलित होइत रहैत अछि। तीव्र राजनीतिक चेतनाक कारणे ओ समाज तथा दरबारमे परमादरणीय भए गेल छलाह, अध्यात्म-चिन्ता हुनका महान भक्तक कोटिमे लए अनने रहनि एवं राष्ट्रीय भावनासँ देशभक्त कविक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। कविकोकिल आ अभिनव जयदेवक नामसँ सम्बोधित भारतक ई महान कवि मिथिलामे किंवदन्तीक रूपमे सेहो विख्यात छथि।

मणिपद्म जीक प्रसिद्ध औपन्यासिक कृति 'विद्यापति' विद्यापतिक जीवनी थिक। ओ अपन अथक प्रयाससँ जुटाओल सामग्रीकें यथातथ्य राखि दितथि त' सेहो बड़का काज होइतए। किन्तु तथ्यमे कथात्मक सरसता आ रोचकता अनबाक लेल ओ हुनका अपन उपन्यासक नायक बना कए प्रस्तुत कएल। कालान्तरमे जखन शरच्चन्द्रक जीवन पर आधारित विष्णु प्रभाकरक 'आवारा मसीहा' बहराएल त' मैथिली भाषीकें लागल छलनि जे मणिपद्म जी विद्यापति पर बड़का काज कए रहल छथि।

मणिपद्म जी अथवा गोविन्द बाबू चाहितथि त' डॉ. रामविलास शर्मा जेना निराला पर विशाल ग्रन्थ लिखलनि (निराला की साहित्य साधना–3 भागमे) तहिना विद्यापति पर लिखि सकैत छलाह, किन्तु ओकर पाठकक संख्या सीमित रहितनि।

हमरा जनैत गोविन्द बाबूक समक्ष मणिपद्म, रामविलास शर्मा, विष्णु प्रभाकरक संगसंग विभिन्न भाषाक अनेकानेक जीवनीलेखक छलथिन। ओ एहन दायित्वपूर्ण काजक लेल अपेक्षित तथ्य संकलन, ओकर प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण आ ताहि लेल आवश्यक समय आ साधन जुटयबाक संकटसँ परिचित रहथि, तें ओ ई सहज आ सरल मार्ग अपनाओल। विद्यापतियेकें कथावाचक बना ओ आत्मकथाक नाम पर हुनकासँ ओ सभ बात वा तथ्य कहबा देल जकर संकलन अपन अध्ययन, महाकविक रचना आ जनश्रुतिक आधार पर कएने रहथि। कथामे मुख्य बात रोचकता आ कहबाक शैली होइत छैक, तथ्यात्मकता नहि। ओहिमे कल्पना एवं अतिरंजनाक लेल गुंजाइश रहिते छैक, ई आवश्यक नहि होइत छैक जे कथ्य

प्रामाणिक होअए। ओ एहि सभ पक्षकें ध्यानमे राखि पूर्ण सजगता आ चतुरतासँ मिथिलाक परम्परा, संस्कृति, चिन्तन, दर्शन सभकें तटस्थ आ वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ देखैत ओहि विद्यापतिसँ अपन कथा कहबाओल अछि, जनिक साहित्य मिथिलाक जनकंठमे पाँच सए वर्षसँ बास करैत छल आ जनिक जीवन आ जनिक वास्तविकता एवं किंवदन्ती दुनू एकात्म भए प्रत्येक व्यक्तिक हृदयमे अपन-अपन विद्यापतिक प्रतिमा ठाढ़ कए देने छल।

ओ विद्यापतिक कोनो आदर्श प्रतिमा नहि गढ़ि, हुनका समस्त मानवीय दुर्बलताक संग प्रस्तुत कएल अछि। शिशु, किशोर, युवा, वृद्ध विद्यापतिक जीवनमे अनेक अभाव, संघर्ष, तनाव आ द्वन्द्व छलनि। पुत्र, पति, पिता, प्रेमी आ मित्रक रूपमे प्रतिभाशाली छात्र आ रसिक कविक रूपमे, सौन्दर्य प्रेमी रचनाकार आ प्रकाण्ड शास्त्रवेत्ताक रूपमे, सामान्य जन आ राजदरबारक कविक रूपमे, सौन्दर्य प्रेमी आ भाव-विह्वल भक्तक रूपमे ओ कोना द्वन्द्व आ संघर्षमे जिबैत छलाह। कोना काव्यदृष्टि आ अध्यात्मचिन्तन विह्वल बनौने रहैत छलनि, कोना सामाजिक सरोकार एवं राजनीतिक दायित्वक प्रति सजग तथा सक्रिय रहैत छलाह—सभ आत्मकथाक रूपमे ओ प्रस्तुत कए दैत छथि। गोविन्द बाबूकें एहि जीवन्त प्रस्तुतीकरणमे अद्‌भुत सफलता भेटैत छनि।

रचनाकाल : 1996

राष्ट्रकवि दिनकर, हम आ हमर जनपद

हम किछु एहन भाग्यशालीमे छी जे राष्ट्रकवि दिनकरक माटि पर जन्म लेलक आ जकरा हुनका देख'-सुन'-पढ़' केर अनगिनत अवसर भेटलैक। हुनक भौगोलिक आ साहित्यिक सन्निकटता हमरा लेल गौरवक विषय रहल।

मिथिलाक एहि दक्षिणी भू-भागकें गंगा नदी अभिसिंचित कैलकैक, ओकरा निर्मलता एवं शीतलता प्रदान कैलकैक तँ दिनकर सूर्य जकाँ अपन सर्जनात्मक प्रखर तेजसँ ओकरा ऊर्जस्वल-उर्वर बनौलनि। पहिनहुँ हुनक जन्मभूमि सिमरिया मात्र कोनो गाम विशेषक नाम नहि छलैक। ओ सम्पूर्ण मिथिलाक आस्था, निष्ठा तथा धार्मिक भावनाक श्रद्धा-केन्द्र छलैक। अंतिम शरण-स्थली आ दैहिक मुक्तिक धामक रूपमे मान्य छलैक। भारतीय अस्मिताक प्रतीक-पुरुष एवं मानवीय गरिमाक उद्‌गाताक रूपमे दिनकरक अवतरण एहि तीर्थराजकें साहित्यिको तीर्थमे परिणत क' दैलकैक।

हमर जन्म जहिया भेल छल, एहि जनपद पर द्वितीय विश्व युद्धक तोप आ दिनकरक गर्जन व्याप्त छलैक—'सुनूँ क्या सिन्धु! मैं गर्जन तुम्हारा/स्वयं युगधर्म का हुंकार हूँ मैं/कठिन निर्घोष हूँ भीषण अशनिका/प्रलय गांडीव की टंकार हूँ मैं।'

विश्वयुद्धकें समाप्त होयबाक छलैक, भ' गेलैकै मुदा दिनकरजीक दिगन्त-व्यापी गर्जन सँ कवि सभक जे फौज तैयार भेलैक ओकर संख्या उत्तरोत्तर बढ़ले गेलैक। हमहुँ ओहि फौजमे बाल्यावस्थामे शामिल भ' गेल छलहुँ।

हमर जन्म दिनकर जीक प्रभावसँ तैयार आ हुनकहिसँ प्राणवायु प्राप्त कर' वला साहित्यिक परिवेशमे भेल छल। लालन-पालन जाहि परिवारमे भेल ओकर मनोविनोद शास्त्र आ साहित्यचर्चासँ होइत छलैक। साहित्यकार आ विद्वान सभक आगमनसँ ओकर वातावरण काव्यमय एवं पाण्डित्यपूर्ण रहैत छलैक।

बाल्यावस्थामे दिनकरजीकें देखबाक लेल लालायित रहैत छलहुँ। ओ जहिया कहियो बाहरसँ अपन गाम सिमरिया जयबाक लेल आबथि, हुनका बरौनी स्टेशन पर

घटही गाड़ी पकड़' लेल किछु काल प्रतीक्षा कर' पड़ैत छलनि। आर. के. सी. एच. स्कूलक किछु शिक्षक 'मुकुर' जीक संग स्टेशन जा हुनक स्वागत-सत्कार करैत छलथिन। क्षेत्रक अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा साहित्य-प्रेमी प्लेटफार्म पर पहुँचि जाइत छलाह। हमरासन किछु विद्यार्थी सेहो। सभ दिससँ हुनका लोक घेरने रहैत छलनि। हम सभ हुनक एक झलकी पयबाक लेल आपसमे धक्का-मुक्की करैत रही।

हम जहिया जी. डी. कॉलेज, बेगूसरायमे इंटरक छात्र रही, एक बेर दिनकरजी बेगूसराय आयल रहथि। श्रद्धेय प्रो. आनन्दनारायण शर्मा हुनका कॉलेज ल' आनलथिन एवं छात्र सभ कें कविता सुनाब' लेल आग्रह कैलथिन। ओ अनुरोध स्वीकार करैत हमर क्लास-रूम, तहिया ओ 'लेक्चर हॉल' सेहो कहबैत छल, मे आबि शिक्षकवला टेबुल पर बैसि पूर्ण तन्मयतासँ अपन प्रसिद्ध कविता–'झूमे जहर चरण के नीचे, मैं उमंग में गाऊँ। तान-बान फण व्याल कि तुझ पर मैं बाँसुरी बजाऊँ।' सुनौलनि।

हमरा सभकें हुनक बहुत रास कविता कंठस्थ रहैत छल। कोनो-कोनो विद्यार्थीकें सम्पूर्ण 'कुरुक्षेत्र' कंठस्थ रहैक, किछु विद्यार्थी हुनक अन्य संकलन सभक अधिकांश कविता सुना दैत छल, सेहो हुनके ओजस्वी स्वर आ भंगिमामे।

दिनकर जी कहैत छलथिन–'मैं कविता पढ़ता नहीं, दहाड़ता हूँ।' दहाड़ सुनबाक लेल बरौनीक जनपद हुनक पुनरागमन प्रतीक्षा करैत रहैत छल।

हम पटनामे ग्रेजुएशन/पोस्ट ग्रेजुएशन करैत छलहुँ तँ बेर-बेर हुनका देखबाक आ सुनबाक अवसर भेटैत छल। कहियो अशोक राजपथ पर रिक्शासँ अबैत-जाइत, कहियो पटना कॉलेजक सामने त्रिवेदीजी स्टूडियोक मालिकक संग बैसल-बतिआइत, कहियो जनता होटलक आंगनमे स्थानीय तथा बाहरसँ आयल साहित्यकार सभक संग गप्प करैत, कहियो कोनो साहित्यिक/सांस्कृतिक समारोहमे भाषण दैत आ काव्य-पाठ करैत, कहियो आर्यकुमार रोड बला अपन मकानक कमरा अथवा बरंडामे लिखैत-पढ़ैत अथवा मित्रसभक संग बतिआइत। हिन्दी विभागक किछु विद्यार्थी प्रायः हुनका ओतय जाइत रहथि। हम अर्थशास्त्रक विद्यार्थी रही तथापि प्रायः रविदिन जाइत रही आ हुनक स्नेह आ आभामण्डलसँ अनुप्राणित भए, श्रद्धेय फणीश्वरनाथ रेणुसँ भेंट कर' हुनक राजेन्द्र नगर आवास पर चलि जाइत रही।

कवि सम्मेलनमे एक बेर हमरो दिनकर जीक संग मंच पर बैसबाक अवसर भेटल। चेतना समिति, पटना द्वारा 'ह्वीलर सीनेट हॉल'मे 01.11.1960 कें विद्यापति स्मृति पर्वक आयोजन भेल रहैक। उद्घाटनकर्त्ता छलाह दिनकरजी। ओहि दिनक कवि-सम्मेलनमे प्रो. हरिमोहन झा दिनकरजीक प्रशस्तिमे लिखल अपन दीर्घ

कविता सुनौने रहथि। हमरा सन कविक लेल ओहि ऐतिहासिक कवि-सम्मेलनमे भाग लेबाक लेल आमंत्रित होयब आ दिनकरजीक उपस्थितिमे काव्य-पाठ करब एकटा अविस्मरणीय अवसर छल।

एकटा विद्यार्थी एवं नवोदित कविक रूपमे दिनकर जी हमरा चिन्हैत तँ छलाह मुदा हुनका ई ज्ञात नहि छलनि जे हम सिमरियाक पड़ोसी गाम शोकहराक निवासी, हुनक प्रतिवेसी पण्डित दिनेश मिश्रक पुत्र एवं हुनक बालसखा पण्डित बनारसी झाक सम्बन्धी छी। हमर हिन्दी कविताक संकलन–'शिखर पर सांझ' 1970मे प्रकाशित भेल। ओकर प्रति हम हुनका दिल्ली पठौलियनि। लगले हुनक पत्र आयल–

रामधारी सिंह दिनकर
5, सफदरजंग लेन
नई दिल्ली–11
मार्च 4, 1971

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,

'शिखर पर सांझ' की प्रति मिली। अनेक धन्यवाद! कविताएँ विचार को उत्तेजित करती हैं, उनमें जान है।

आप शोकहरा के हैं, यह जानकर भौगोलिक सामीप्य का बोध हुआ।

आपका
दिनकर

हम अपन कविता पर हुनक प्रतिक्रिया पाबि कृतज्ञता-ज्ञापन लेल पत्र लिखलियनि। ओ उत्तर देलनि–

रामधारी सिंह दिनकर
5, सफदरजंग लेन
नई दिल्ली–11
मार्च 23, 1971

प्रियवर,

आपका पत्र मिला। धन्यवाद!

साहित्यिक पत्र से आनन्दित होना स्वाभाविक है। भगवान आपको आगे बढ़ायें।

आपका
दिनकर
(रामधारी सिंह दिनकर)

दिनकर जी अखण्ड भारतीयाक राष्ट्रीय कवि रहथि। सम्पूर्ण राष्ट्रीय चेतनासँ

एकात्म। ओ राष्ट्रक अन्तश्चेतनाकें आन्दोलित कैलनि, जनमानसकें उत्प्रेरित कए ओकरा साम्राज्यवादक विरुद्ध ठाढ़ कैलनि, राष्ट्रीय अस्मिताक बोध करौलनि।

हुनक व्यक्तित्व एवं कवित्वप्रतिभा कतेक विविधवर्णी आ बहुआयामी छलनि तकर अनुमान हुनक 'विजय संदेश' सँ ल'कए 'हारे को हरिनाम' धरि पढ़ि कए लगाओल जा सकैत अछि।

ओ शुद्ध कविताक खोज कैलनि तँ संस्कृतिक चारि अध्यायो लिखलनि, युद्धकाव्य 'कुरुक्षेत्र' लिखलनि एवं अंध युयुत्सा प्रतिरोधी 'रश्मिरथी', तँ कामाध्यात्म पर 'उर्वशी' सन महाकाव्यो। सम्पूर्ण भारतीय साहित्यमे एहन स्पृहणीय स्थान बनाब' वला साहित्यकार विरल छथि।

हुनक मातृभाषाक मैथिली छलनि। मिथिलाक एहि दक्षिणी भाग पर मगही, भोजपुरी आ अंग्रेजीक प्रभाव छैक। अशिक्षा/शिक्षाक प्रभावक कारण निम्नवर्ग, निम्नमध्यवर्ग एवं मध्यवर्गक बीच बाजल जाइत मैथिलीमे भिन्नता छैक, जेना मध्य मिथिलोक गाम/शहर, मजदूर वर्ग आ शिक्षित वर्गक मैथिलीमे एकरूपता नहि छैक। साहित्यक भाषा एहू क्षेत्रक शुद्ध मैथिली छैक। अपन क्षेत्रक लोकसँ दिनकर जी प्रचलित मैथिलीयेमे बाजैत छलाह किन्तु कट्टरतावादी मैथिलक बीच ओ जानि-बूझि कए हिन्दीक प्रयोग करैत छलाह। एकर अतिरिक्त एक कारण आओर छल। अपनाकें खांटी मैथिल मान' वला वर्ग, मिथिलाक भौगोलिक सीमाक उल्लेख कर' काल, बेगूसरायक तत्कालीन जिला मुंगेरक नाम तँ गनबैत छलाह, किन्तु ओहि जिलाक लोक द्वारा प्रयुक्त मैथिलीकें मैथिली नहि मानैत रहथि अथवा ओकरा हेय दृष्टिसँ देखैत रहथि। मैथिलीक ओकालति अथवा राजनीत कर'वाला वर्गक ई दोरंगा चालि हुनका पसिन्न नहि रहनि।

जतयधरि हम अध्ययन कैलियनि, हुनका अपन मातृभाषासँ अशेष लगाओ आ प्रेम रहनि। स्वतंत्रता-पूर्वक जाहि समयमे ओ लिखब शुरू कैलनि, ओहि समय धरि उत्तर भारतक समस्त क्षेत्रीय बोली/उपभाषा/भाषा केर हिन्दीमे विलय भ' चुकल रहैक। जायसी, विद्यापति, सूर, तुलसी, मीरा आदि हिन्दीक कवि मानि लेल गेल रहथि। बादमे हिन्दी साहित्यक भागलपुर अधिवेशनमे एक प्रस्ताव पारित कराओल गेल छल जे बिहार प्रान्तक मातृभाषा, सर्भक सहमतिसँ, हिन्दी मानल गेल अछि तें प्राथमिक शिक्षाक माध्यम सेहो हिन्दी हो। एहि प्रस्तावक समर्थन मैथिलीक पक्षधरो कैने रहथि। ओहि समय सभक लक्ष्य रहनि जे कोना हिन्दीकें समृद्ध कैल जाइ जाहिसँ ओ राष्ट्रभाषाक पद पर आसीन भ' सकय। सभ केओ त्यागक लेल प्रस्तुत रहथि। मैथिलीक 'तिरहुता' लिपिकें त्यागि कए 'देवनागरी'

अपनाओल गेल। ई ओ समय छल जखन सभ समस्त मतभेद/पार्थक्य बिसरि एकात्म होअए चाहैत छलाह, देशकें स्वतंत्र आ समृद्ध करबाक लेल एकताक सूत्रमे बन्हय चाहैत छलाह आ सम्पूर्ण देशक लेल सर्वस्वीकार्य भाषाक रूपमे हिन्दीकें विकसित कर' चाहैत छलाह।

दिनकरजी मैथिलीक भाषा-वैशिष्ट्य, समृद्ध साहित्य आ ओकर आठ सए वर्षक इतिहाससँ पूर्ण परिचित छलाह। जनक, याज्ञवल्क्य, विद्यापति, मिथिलाक ऋषिमुनि, पण्डित-दार्शनिक सभक ओ गहन अध्ययन कैने छलाह। तपोभूमि मिथिलाक प्रशस्तिमे ओ अनेक कविता लिखलनि आ मिथिलाक सांस्कृतिक वैशिष्ट्यक अनेक लेखमे उल्लेख कैलनि।

ओ हिन्दीक विकास चाहैत छलाह। ई नहि चाहैत छलाह जे हिन्दी अपन धौंस अथवा श्रेष्ठताबोधसँ मैथिलीसन समृद्ध भाषाकें रुष्ट क' दिअए अथवा मैथिली अपन धौंससँ उपभाषा/बोली आ आन क्षेत्रीय भाषासँ सम्बन्ध तोड़ि लिअए आ ओ सभ एकरा विरुद्ध ठाढ़ भ' जाइ। किन्तु, भेलैक वैह जे ओ नहि चाहैत छलाह। ने हिन्दीकें अपन क्षेत्रीय भाषाक प्रति उदारता रहलैक, ने क्षेत्रीय भाषामे सहिष्णुता। बादमे मैथिली समेत अनेक क्षेत्रीय भाषाकें अष्टम् अनुसूचीमे स्थान भेटलैक, भाषाधार पर राज्यक पुनर्गठनक बादो अनेक राज्य बनलैक आ भाषा सभमे आपसी सम्मान-भावक बदलामे द्वेष/ईर्ष्याक भावो बढलैक।

भारतीय संस्कृति तथा चिन्तन धारा समग्र रूपसँ महाकवि जयशंकर प्रसादक बाद महाकवि रामधारी सिंह दिनकरक साहित्यमे मूर्तिमान् भेल अछि। इतिहास एवं पुराण, अतीत एवं वर्तमान तथा सनातन एवं समकालीन जीवन-यथार्थ एहि दुनू महाकविक साहित्यमे जीवन्त रूपमे प्रस्तुत भए विश्व साहित्यकें समृद्ध तथा मूल्यवान बनौलकैक अछि।

दिनकर जी रामायण, महाभारत, वेद-पुराण-वेदान्त, भारतीय दर्शनक संग-संग बर्टेंड रसेल, कार्ल मार्क्स, नीत्से, रिल्के, रूसो, फ्रायड, सार्त्र, टी.एस. इलियटकें आत्मसात् कैने रहथि। हुनका पर रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, रमण महर्षि, तिलक, गाँधी, पटेल, सुभाष आ नेहरूक प्रभाव रहनि त' इकबाल एवं नजरूल इस्लाम हुनक प्रेरणास्रोत छलथिन। ओ समस्त पश्चिम एवं भारतीय सिद्धान्त एवं विचारधाराकें अपन निकष पर कसि कए 'संस्कृति के चार अध्याय' सन ग्रन्थ भारतीय वाङ्मयकें देलनि।

दिनकरजी अखण्ड भारतीयताक पक्षधर छलाह। भौगोलिक आ सामाजिक भिन्नता रहितहुँ, भावनात्मक एकताक पक्षपाती। साम्राज्यवाद-सामंतवादक प्रति

आक्रोश हुनकामे प्रारंभहिसँ देखल जा सकैछ। दलित-वंचित-बुभुक्षु-विषण्ण मानवक प्रति करुणा आ सामाजिक न्यायकें ओ राष्ट्रधर्म मानैत रहथि। ओ गांधीवादी विचारधाराक राष्ट्रीय जागरणमे महत्वपूर्ण योगदानकें स्वीकार करितहुँ, गांधीक अहिंसावादी सिद्धान्तसँ असहमति राखैत रहथि आ मार्क्सक क्रान्तिकारी विचारधाराक समर्थक रहथि। युद्धकालीन तथा शान्तिकालीन राष्ट्रीयताक विभेद आ जरूरतिकें ध्यानमे राखि ओ अपन पात्रक चयन करैत रहथि। 'रश्मिरथी'क 'कर्ण' आ 'परशुराम की प्रतीक्षा'क परशुरामक माध्यमसँ भारतीय पौरुष एवं शौर्यकें ललकारा दैत ओ राष्ट्रीयता वा राष्ट्रीय भावनाक युयुत्सु स्वरूप गढ़लनि। युद्ध आ युद्धोत्तर विभीषिका पर लिखल 'प्रण-भंग', 'कलिंग-विजय', कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' आ 'परशुरामक प्रतीक्षा' हुनक क्रान्तिधर्मी राष्ट्रीय भावनाक परिचायक थिक। एक दिस दिनकर विचार-प्रधान युद्धकाव्य 'कुरुक्षेत्र'मे धर्मयुद्धसँ बेशी भयंकर युद्ध आ अन्ध युयुत्साकें वर्णित कैलनि अछि तँ दोसर दिस 'रश्मिरथी'क माध्यमसँ शान्ति-स्थापनाक संदेश देलनि।

दिनकर जीक सुदर्शन आकृति, सुलम्ब देहयष्टि आ ओजस्वी स्वर हुनक गरिमाकें बढ़बैत छलनि। काव्यमंचसँ सामान्यो श्रोतावर्गकें ओ अपन लयमे बान्हि लैत रहथि। प्रशंसक-प्रतिस्पर्धी, मित्र आ आलोचक सभ पर हुनक जादू चलैत छलनि।

एहि जनपदमे गंगा अवस्थित-पूजित छथि, प्रत्येक घरमे रामचरितमानसक माध्यमसँ तुलसीदासक वास छनि, प्रत्येक शुभकर्म विद्यापतिकें स्मरण करैत हुनक गोसाउनिक गीत आ पदावलीक गायनसँ शुरू होइत अछि। आब एहि तीनूक बाद चारिम आराध्य-स्तम्भ दिनकर भ' गेल छथि। जन्मतिथि आ पुण्यतिथिये पर नहि, कोनो समारोह हो वा गोष्ठी, सांस्कृतिक आयोजन हो वा जनसभा सभ दिनकरजीकें स्मरण करैत तथा हुनक अवदानक उल्लेखक संग आरम्भ होइत अछि। गीत-संगीत, नृत्य-नाटक धरिमे ओ समाहित रहैत छथि। नटुओ-नचनियाँ हुनक गीत गाबैत अछि, भजनियाँ-कीर्त्तनियाँकें झालि बजाकें 'रेणुका'क पांति सभ सुनबैत देखल जा सकैछ। जन-मजूर, हरवाह-चरवाह, अशिक्षित-शिक्षित, उद्यमी-व्यापारी, दलितवर्ग-उच्चवर्ग सभक जिह्वा पर हुनक कोनो-ने-कोनो काव्यांश भेटि जायत। हुनक ई सर्वजन स्वीकार्यता विस्मयकारी अछि। जनमानसमे एहन राष्ट्रव्यापी मान्यता कोनो साहित्यकारक लेल अकल्पनीय लगैत अछि—'विस्तीर्यते यशोलोके तैलविन्दुरिवाम्भसि'। हमर अहोभाग्य जे हमरा हुनक माटि पर जन्म लेबाक आ हुनक सान्निध्य प्राप्त करबाक संयोग भेटल।

रचनाकाल : 17.08.2008

हमर गुरु, प्रेरक एवं मित्र
प्रो. आनन्दनारायण शर्मा

पछिला प्रायः पचास वर्षसँ जाहि व्यक्तिक हमरा पर निर्निमेष दृष्टि, भावनात्मक लगाव एवं अभिभावकीय/अनुशासकीय चिन्तातुरता रहलनि ओ छथि श्रद्धेय प्रोफेसर डॉ. आनन्द नारायण शर्मा।

सदैव किछु नीक करबाक मनोयोग, आदर्शोन्मुखता, अपनासँ बड़काक प्रति सम्मानभाव, माता-पिताक प्रति श्रद्धा, अपन गुरु एवं वरेण्यसँ किछु सिखबाक/हुनक अनुसरण करबाक प्रवृत्ति, ताहि समयमे सभ बच्चामे होइत रहैक। हमहुँ ओही श्रेणीक विद्यार्थी रही।

परिवारक पाण्डित्य/कवित्वपूर्ण वातावरण, विद्यालयमे निपनियाँ निवासी श्री शत्रुघ्न सिंह सन प्रधानाध्यापक आ कविवर 'मुकुर' सन अध्यापक, देशक शीर्षस्थ साहित्यकारक सहज सुलभ सान्निध्य—एतेक रास संयोग, कोनो बालककें पढ़ाइसँ बेसी कविताक दिस प्रवृत्त करबाक लेल पर्याप्त छलैक। एहि संग एकटा विडम्बना सेहो छलैक। लोक-मानसमे साहित्य आ साहित्यकारक प्रति सम्मान-भाव त' छलैक किन्तु केओ नहि चाहैत छल जे ओकर सन्तान 'कविता'कए अपन 'कैरियर' चौपट क' लिए, पढ़बा-लिखबामे पछुआ जाइ। सभ पर कठोर अनुशासन रहैत छलैक। तथापि किछु किशोरवय बच्चा चोरा-नुका कए कविता लिखैत छल। ओ कविता नहि 'तुकबन्दी' होइत छलैक। हम ओही 'तुकबन्दी'क दौड़मे प्रो. डॉ. आनन्द नारायण शर्माजीक नाम सुनने रही।

श्रद्धेय श्री आनन्द नारायण शर्मा जी 1951मे जी.डी. कॉलेज, बेगूसरायमे व्याख्याताक पद पर नियुक्त भेल रहथि। 1952मे हमर अग्रज श्री हरिनारायण मिश्र 'इंटरमीडियेट'मे एहि कॉलेजमे नामांकन करौने रहथि। 1953मे श्री मुरली मनोहर प्रसाद सिंह एवं श्री उमाकान्त राय 'प्रलयंकर' सेहो नामांकन करौलनि।

मुरली जी प्रायः रोज आओर प्रलयंकर जी यदा-कदा भैयाक संग हमर घर आबि जाइत रहथि। प्रो. शर्माक चर्च होइत रहैत छलनि। प्रलयंकर जी आनन्द बाबूक प्रशंसामे कम, अदगोइ-बदगोइमे बेशी रुचि लैत छलाह। विद्यालयमे मुकुर जी एवं निपनियाँमे भागवत जी सँ सेहो हुनका मादे सुनैत रही। ईर्ष्याभावसँ युक्त आलोचना।

एक दिन अपन पितृव्य आचार्य दिवाकर मिश्रसँ ज्ञात भेल जे कोनो आयोजनमे आनन्द बाबू बरौनी आयल रहथि। ओ हुनक वक्तृता एवं काव्यपाठक प्रशंसा मुक्तकंठसँ कैने रहथि। हमरा विस्मय भेल छल जे जाहि व्यक्तिक सभ आलोचना करैत छथि, ओ काकाक दृष्टिमे एतेक प्रशंसनीय कोना छथि?

हम 1955मे मैट्रिकुलेशन कैलहुँ। माता-पिता हमर नामांकन पटना कॉलेजमे कराब' चाहैत छलाह कि पितामहक इच्छा छलनि हम जी.डी कॉलेजसँ इंटर कए बी.ए.मे पटना कॉलेजमे नाम लिखाबी। हमर नाम जी.डी. कॉलेजमे लिखा गेल।

हमर क्लास शुरू होयबासँ पहिनहि कॉलेजमे तुलसी जयन्तीक आयोजन होयबाक सूचना सूचनापट्ट पर टांगल गेलैक। पुरस्कारक लेल विभिन्न प्रतियोगिताक आयोजनक सूचना सेहो। सूचना पढ़ि हमर मित्र वासुदेव दास जोर देलनि जे हम प्रतियोगितामे भाग ली। ओ महाकवि तुलसीदास पर हमरासँ कविता लिखबा कए दोसर दिन कॉलेजमे जमा क' देलथिन। तुलसी जयन्तीक दिन जखन हम, हमर मित्र वासुदेव जी, मार्कण्डेय जी एवं रामचरित्र जी कॉलेज पहुँचैत छी तँ बोर्ड पर अपन नाम प्रथम स्थान पर चयनित देखि आश्चर्यमे पड़ि जाइत छी। बी.ए.मे पढ़' वला 'प्रलयंकर' जीक नाम दोसर स्थान पर छलनि। हम सोचमे पड़ि गेलहुँ जे ओतेक विद्वान, प्रोफेसर एवं छात्रक समक्ष मंच पर जा कए कविता कोना सुनायब?

हमरा बजाओल जाइत अछि। हम सकुचाइत मंच पर जाइत छी आ तुलसीदास पर लिखल अपन दीर्घ कविता सुना दैत छी। समारोहक अध्यक्ष प्रो. शिवबालक राय बजा कए पीठ ठोकैत छथि। हुनका बगलमे बैसल जे व्यक्ति रहथि हमरा पुछैत छथि–'आप दिवाकर जी के भतीजे हैं', ओ प्रोफेसर आनन्द नारायण शर्मा रहथि आ जे व्यक्ति मंचसँ उतरलाक बाद पुनः दोसर पुरस्कार लेबाक लेल कहने रहथि ओ छलाह बेगूसरायक प्रसिद्ध वकील आ साहित्यानुरागी श्री झाड़खण्डी प्रसाद जी। ई पुरस्कार ओ हमर कविता सुनि तत्काल घोषित कैने रहथि। आनन्द बाबू जखन मंचसँ उतरलाह त' कहलनि–'घर पर आकर मिलिये।'

सत्र शुरू होयबाक पहिले दिन आनन्द बाबूक मुंगेरीगंज स्थित आवास पर हम जाइत छी। ओ हमरा किछु पुछबासँ पहिने आवाज दैत छथि–'अजी सुनती हो, दिवाकर जी के भतीजे कीर्त्तिनारायण आये हैं।'

हमरा ठाढ देखि ओ सोझमे राखल कुर्सी पर बैस'क संकेत करैत छथि। गुरुक समक्ष कुर्सी पर बैसबाक धृष्टता हम कोना क' सकैत छलहुँ। हुनका हमर संकोचक अनुभव होइत छनि। ओ कहैत छथि–यह आपका घर है, बैठिये। हम ससंकोच बैस'क उपक्रम करैते छी कि एक गरिमामयी गौरवर्ण महिला हमरा सोझमे आबि, कुर्सी पर बैसा, हाथमे प्लेट पकड़ा दैत छथि आ माथ पर हाथ फेरि दैत छथि। जुलाइ 1955क ओ दृश्य हमर हृदय-पटल आ मनमस्तिष्क पर एखनहुँ अंकित अछि।

सोझमे चौकी पर दुग्धधवल ओछाओन पर आनन्द बाबू विराजमान! ऊपर देबार पर एक 'साहज'क फ्रेम कैल फोटोमे सूर, तुलसी, कबीर, विद्यापति, प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवीसँ ल' कए बच्चन, दिनकर, आरसी प्रसाद सिंह टांगल। कोठली केर सभ आलमारी, रैक, वाल-सेल्फ, कुर्सी, स्टूल सभ पर किताब-पत्रिकाक थाक, चौकीक दुनू कात देशक विभिन्न भागसँ बहरायल स्तरीय साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिका, पीरियोडिक्ल्स एवं अखबार। हम सोच' लगैत छी–प्रोफेसर साहबक 'बैसक' एहन त' अध्ययन कक्ष केहन हेतनि? हम सविस्मय सभ किछु देखि रहल छलहुँ। कैशोर्यक हमर निश्छलता अनायास श्रद्धावनत भेल जा रहल छल। हम मौन रहि आनन्द बाबूक मुँहसँ बहराइत वात्सल्ययुक्त शब्दक अमृत-पान करैत रहलहुँ।

ओहि पहिल आ आजुक दिनमे अड़तालीस वर्षक अन्तराल आबि गेल अछि मुदा गुरु-शिष्यक ओ मुद्रा, आइयो जहिया कहियो भेंट होइत अछि, बनल रहैत अछि।

व्याख्याताक रूपमे प्रथम दर्शन दिअ' वला गुरु प्रधानाचार्य भए कतेक वर्ष पहिने अवकाशग्रहण क' चुकल छथि आ वयसक अमृत-वर्षक दिस अग्रसर भ' रहल छथि। इंटरक ओ शिष्य हुनक आशीर्वाद एवं विश्वासक लाज राखबाक लेल आगाँक पढ़ाइक लेल बाहर जयबाकाल हुनका मुँहसँ बहराइत शब्द 'चरैवेति-चरैवेति' करैत वयसक पैंसठक सीढ़ी पार करैत गठियाग्रस्त भ' जीवनक शेष सीढ़ी पार क' रहल अछि।

गुरु-शिष्यक वयसमे मात्र आठ-नौ वर्षक अन्तराल अछि किन्तु आत्मीयता एवं घनिष्ठताक कारण हम पिता-पुत्र जकाँ भ' गेलहुँ। हुनक सन्तान सभ हमर भाइ-बहिन, बाहर रहैत जेना अपन माता-पिता-परिवारक सदस्य केर स्मरण, तहिना हुनको परिवारक प्रत्येक सदस्य सभ स्मृतिमे बसल।

प्रोफेसर साहेबक वाणी जतबे मीठ, हुनक दृष्टिमे ओहने तीक्ष्णता। ओ अभिभावकीय गंभीरताक संग पढ़ाइ-लिखाइ, लेखन तथा लेखकीय

गतिविधि-साहित्यिक आयोजनमे देल गेल समयक 'लेखा-जोखा' माँगैत रहथि। उत्तर सुनैत-सुनैत ओ एकाएक गंभीर भ' जाइत रहथि। थोड़ेक रुष्ट होइत अध्ययनेत्तर काजमे बीतैत समयक प्रति सावधान करैत रहथि। ई क्रमजे जी.डी. कॉलेजक हमर छात्र-जीवनमे शुरू कैने रहथि, आइ धरि बनौने छथि। हम आ हमर पत्नी आशा हुनक स्नेह-भाजन छीहे, हमर तीनू सन्तानोक प्रति ओ ओतबे सदय छथि।

हमरा स्मरण नहि अछि जे, 1955क बाद हमरा घर पर कोनो आयोजन भेल हो (हमर विवाहसँ ल' कए परिवारमे भेल कोनो यज्ञमे) आ ओ सपत्नीक उपस्थित नहि भेल होथि। जखन ओ प्रधानाचार्य भए जी.डी. कॉलेज बेगूसरायसँ ए.पी.एस. एम. कॉलेज, बरौनी आबि गेलाह तँ अयनाय-जयनायक ई क्रम आओर बढ़ि गेलनि।

हमर पिता जखन गाम आबथि (आ 1983सँ जखन ओ गामेमे रह' लगलाह) तँ ओ बेशी आबथि।

श्रद्धेय आनन्द बाबू हमरा प्रभावित कैलनि, शिक्षक रूपमे। 1955मे हमरा क्लासमे पहिले दिनसँ ओ निरालाक 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' सँ पढ़ाइ शुरु कैलनि आ अगिला तीन दिन धरि ओ एहि छोट सन कविताक व्याख्या करैत रहलाह। एहि कविताक एक-एक शब्द पर नहि जानि ओ कतेक अध्ययन-मनन-चिन्तन कैने रहथि, ओकर गूढ़ार्थ आ अन्तर्निहित भाव पर पहुँच'क लेल कतय-कतयसँ संदर्भ जुटौने रहथि, कतेक विद्वानक विश्लेषणकें आत्मसात कैने हैताह जे ओ एहि कविताक तह-तह खोलिकें अपन छात्रकें बुझाबैत रहथि।

ओहि एक कविताक अन्तर्प्रदेशमे छात्रकें प्रवेश करा ओ अपन ज्ञान-गांभीर्यक परिचय सौंसे क्लासकें द' देलनि। सभकें एहन सम्मोहित कैलनि जे हुनक क्लासमे उपस्थित शत-प्रतिशत छात्र दत्तचित्त भए भाषण सुनि एक-एक शब्दकें नोट करैत रहए।

हुनक गंभीर अध्ययन, पढ़यबाक शैली आ वक्तृताक सम्मोहकता एहन रहनि जे आइ.ए. सँ ल' कए बी.ए. ऑनर्स धरिक विद्यार्थी हुनक एकोटा क्लास मिस नहि करैत रहय।

देश भरिक हिन्दीक विद्वान साहित्यकारसँ हुनका सम्पर्क रहनि। परिणामतः कॉलेजक सभ आयोजनमे बड़कासँ बड़का कवि/लेखक/विद्वान आबि अपन संबोधनसँ एहि कॉलेजक गौरव बढ़बैत रहथि।

ओहि समयमे प्रो. आनन्द नारायण शर्माक कविता, कथा, आलोचना, निबन्ध हिन्दीक स्तरीय पत्र-पत्रिकामे छपैत रहनि। साहित्य जगतमे हुनक प्रतिष्ठासँ बेगूसराय चर्चामे रहैत छल।

दिनकर जी जाहि बेगूसरायकें (तत्कालीन मुंगेर जिला) अपन कृतित्वसँ राष्ट्रीय/अन्तर राष्ट्रीय प्रसिद्धि दिऔलनि, ओहि बेगूसरायकें साहित्यिक-सांस्कृतिक रूपसँ जागृत करबामे प्रो. आनन्द नारायण शर्माक महती भूमिका रहनि। जनपदक साहित्यप्रेमी/सांस्कृतिक समारोहक आयोजक/रंगप्रेमी सभकें प्रेरित/प्रोत्साहित कए तथा अपन विद्यार्थीक साहित्यिक प्रतिभाकें विकसित कए जे काज ओ कैलनि ओ सभक लेल चिरस्मरणीय भ' गेलनि। मुदा ई काज ओ कोनो मिशन अथवा योजना बना कए नहि कैलनि, हुनक सम्पर्कमे स्वतः होइत गेलनि। हुनका पतो नहि हैतनि जे जे काज ओ क' रहल छथि ओकरा एहन सुफल भेटतैक आ ओ एतेक व्यापक भ' जयतैक जे हुनका सुयश तथा सम्मानक शिखर पर पहुँचा देतनि।

विद्वता, कवित्व प्रतिभा, अध्ययनशीलता, दूरदर्शिता, एहि जनपदक प्रति दायित्वबोध, मिलनसारिता सभक समाहार हुनक व्यक्तित्वकें आकर्षक बनौलकनि। सभकें हुनका प्रति कृतज्ञता बोध छैक। जनसामान्यसँ ल' कए हुनका द्वारा प्रशिक्षित-दीक्षित राजनेता, प्रशासक एवं हुनक काव्य-पाठसँ रस-विभोर होइ बला श्रोता, सभक हृदयमे आनन्दबाबू विराजमान छथि।

ओ मगही भाषी छथि, परिवारक भाषा मगहीयेमे छनि, अभिव्यक्तिक भाषा हिन्दी किन्तु ओ दक्षिण मिथिलाक बेगूसरायमे रहैत छथि जकर मातृभाषा मैथिली छैक। आ आगन्तुक सभसँ मैथिलीयेमे बतिअबइत छथि। मैथिलीक मधुरिमा, शब्द-शक्ति आ समृद्ध साहित्यसँ छात्रकें परिचित कराबैत छथि।

हमरा हिन्दीक संग-संग मैथिली लेखन दिस प्रवृत्त देखि ओ आह्लादित होइत छथि। हमर मैथिली कविता, गद्य-रचना, संस्मरण आदिक संकलन पर हुनक विस्तृत प्रतिक्रिया छनि। कस्तूरी झा कोकिल, फजलुर रहमान हाशमी एवं प्रदीप बिहारी सन मैथिली लेखक हुनक प्रिय-पात्र छथिन।

विद्यापति साहित्यक प्रकाण्ड विद्वानक रूपमे ओ विख्यात छथि।

हुनका संग अपन सान्निध्यकें हम अपन सौभाग्य बुझैत छी।

रचनाकाल : 18.09.2003

कविवर भागवत प्रसाद सिंहकें काव्यांजलि

(वयोवृद्ध कविक समक्ष सत्तर-साला काव्यशिशु)

एक बच्चा ठेहुनियाँ मारैत
ठाढ़ होयबाक चेष्टा करैत अछि
बेर-बेर गिरैत अछि
बेर-बेर उठैत अछि
लोक 'थाइ-थाइ' कहैत छथि
थपड़ी पाड़ैत छथि
आंगुर पकड़ि ओकरा चलब' सिखबैत छथि
दिअ' लेल नीक संस्कार
'बालोऽहं जगदानन्द ...... रखैत छथि

किछु अन्तरालक बाद
कविगुरु द्वय (मुकुरजी/भागवत जी)
अबैत छथि
कहैत छथि
ई बच्चा, सामान्य बच्चा नहि
'काव्य-शिशु' अछि
एकरा हम अपन पाठशाला ल' जयबैक
कविता करब सिखयबैक

ई सुनि घर'क लोकसभ हतप्रभ भए
कहैत छथि
जेठ भाइ जकाँ
की एकरो नालाएक बनयबैक

बच्चा जिद पकड़ि लैत अछि
आ काव्यगुरुक पाछू लागि जाइत अछि
पाठशाला पहुँचि
ओ ककहरा छोड़ि
तुकबंदी सीख' लगैत अछि
आ पाठशालाक अन्य विद्यार्थी जकाँ
कविता लिख' लगैत अछि
एक दिन सरिपहुँ ओ
नालाएक कवि बनि जाइत अछि

कविवर भागवत प्रसाद सिंह
अपन सत्तरसाला काव्य शिशुकें देखि
आह्लादित होइत छथि
अपन शिष्यक माथ पर
आशीर्वादी हाथ फेरि
कहैत छथि—
'एहिना आजीवन साहित्य-साधनामे लागल रहू।'

रचनाकाल : 18.06.2007

हमर आदर्श शिक्षागुरु 'मुकुर' जी

अपन शैशवमे हम श्रद्धेय 'मुकुर' जीकें कहिया देखने छलियनि से मोन नहि किन्तु प्राइमरी स्कूलक प्रारंभिक दिनक स्मरण करैत छी तँ लागैत अछि प्रायः हम अपन पितृव्य (डॉ. दिवाकर मिश्र शास्त्री)क मित्र-मंडलीमे जाहिमे हुनका अतिरिक्त कविवर भागवत प्रसाद सिंह, बाबू शिवगोविन्द सिंह, पण्डित शुभकान्त मिश्र, डॉ. भगवान पोद्दार, कुशेश्वर पोद्दार, गणेश प्रसाद सिंह, जगदीश गुप्त आदि रहथि। संभवतः शिवगोविन्द सिंह एवं डॉ. भगवान पोद्दारक अतिरिक्त सभ कॉलेजमे पढ़ि रहल छलाह।

पछाति काका आयुर्वेदाचार्य भ' फुलबड़िया बाजारमे औषधालय (विश्वबन्धु आयुर्वेद भवन) फोलि प्रैक्टिस कर' लगलाह। ओतय दवाइ बनैत रहैक, रोगी आबैत रहैक, काका 'कॉल' पर जाइत छलाह। हम स्कूलमे बिताओल समयक बाद प्रायः ओतहि रहैत रही। रातियोमे। वयस मोसकिलसँ 9/10 वर्ष रहल हैत। रोगी अथवा दोसर लोक आबथि तँ काकाकें नहि देखि घुरि जाइथ, मुदा मुकुर जी एवं भागवत जी आबथि त' कीर्त्तिनारायण जी कहि भीतर प्रवेश करथि आ कुर्सी पर बैसि जाइथ। 'रे' एवं 'अरे' सुन' वला हम, 'आप' सुनि धन्य भ' जाइ। ओ बड़ी काल धरि बैसथि। ओही मध्य काका आबि जाइथ। अन्य मित्र सभ सेहो जमा होथि। चाय-पान चलय आ कविता सुनायब शुरु भ' जाइ। हमर 'सेवकाइ' त' चलिते रहय।

एहि काव्यमय वातावरणक हमरा पर बड़ संक्रामक प्रभाव पड़ल। हम तुकबन्दी लिख' लगलहुँ किन्तु ओहि समयमे तुकबन्दी लिख' वला छौंड़ा सभकें भुसकौल बूझल जाइ।

हमर पिता राजस्थानक बीकानेरमे रहैत रहथि जकर रेगिस्तानी प्रभावमे हुनक काव्यरसिकता कतेक बचल होइतनि, तकर अनुमान सहजहि लगाओल जा सकैछ। घरक सर्वेसर्वा हमर पितामह छलाह जे क्रोधी स्वभावक छलाह। 'पिटाइ' क' बच्चाकें रस्ता पर आनब जानैत छलाह। दिनभरि 'मुकुर' जीसँ 'जी' आओर 'आप' सुन' वला बालक घ'र अयलापर बाबा सँ डँटाइत आ मारि खाइत रहैत छल। ओहनो अल्प वयसमे अपमान बोध करैत छल।

हमर दिन फिरल जखन हमर नाम चमड़िया हाई स्कूलमे छठम् वर्गमे लिखाओल गेल। ओतय पहिनेसँ 'मुकुर' जी अध्यापकक रूपमे विराजमान छलाह। छओ फीटसँ बेशी 'लम्बाइ', पहलमानी देहयष्टि आ साइकिल पर सवारी कर' वला सौम्य, शान्त एवं मृदुभाषी मुकुरजी रस्तोमे कतहु भेटि जाइत रहथि त' बिना टोकने नहि रहैत रहथि। संगी-साथीक मध्य हमर रोब बढ़ि जाइत छल।

हमर बालमनकें मुकुर जी सदैव आच्छादित कैने रहैत रहथि। आब बुझाइत अछि, हुनका बालमनोविज्ञानक नीक अध्ययन होइतनि। शिष्यसँ मित्रता स्थापित क' ओकरा रस्ता पर आनबाक गुर हुनका ज्ञात छलनि। हम हुनका नजरिमे ऊपर उठ'क लेल मोन लगा कए पढ़' लगलहुँ। हिन्दी समेत अन्य विषयमे खूब नीक अंक आब' लागल मुदा गणितमे पछुआ जाय। ओ हमर मनोदशा बूझि कहथि—घबरैबाक कोनो बात नहि। 'जादवचन्द्र चक्रवर्ती' (जिनक अंकगणितक पोथी हमरा कोर्समे छल) आठ बेर मैट्रिकमे फेल भेल रहथि, सेहो अंकगणितमे किन्तु अन्ततः ओ पास भ' गेलाह। ई बात हमर पितामह, पितृव्य, पिता एवं अग्रजकें कहितथिन त' नीक होइतय। हमरा सन दुब्बर-पातर ढाँचा वला छौंड़ाकें मारिक डरसँ पहिले बेरमे कहुना गणितोमे पास कर' पड़ल। एहि तरहें मुकुर जीक उदाहरण सुनियोकें हम जादवचन्द्र चक्रवर्ती नहि बनि सकलहुँ।

हमर आदर्श छलाह मुकुर जी आ मुकुर जीक आदर्श छलथिन कविवर आरसी प्रसाद सिंह जिनका ओ वर्डसवर्थ, कीट्स, शैली, वायरन आदिसँ नम्हर मानैत छलथिन। ओहि समयमे आरसी बाबू प्रायः बरौनी आबैत रहथि। ठहरथि मुकुर जी/भागवत जीक निपनियाँ आवास पर मुदा बैसक जमैत रहनि फुलबड़ियाक विश्वबन्धु आयुर्वेद भवनमे हमर काकाक ओतय। वाल्मीकि प्रसाद विकट, रामावतार यादव 'शक्र', डॉ. भगवान पोद्दार आदि काव्यरसिक/कवि तत्काल उपस्थित भ' जाथि। यदा-कदा प्रो. राम संजीवन सिंह सेहो पहुँचि जाथि।

आरसी बाबू गाबि कए कविता सुनबैत रहथि जे हमरा नीक लागैत छल। छोट अवस्थाक कारण बूझ'मे नहि आबैत छल। हुनक वेशभूषा कवि वला छलनि, हेयर-स्टाइल सेहो कविये वला। ताहि समयमे कवि वेशभूषासँ चीन्हल जाइत रहथि। हम आरसी बाबूकें बड़का कवि मानैत रहियनि कियैक तँ हुनक कविता कोर्समे छल। हम एहि प्रसंगक खुलासा हुनका पर लिखल अपन संस्मरणमे कैने

रहियैक, जकरा संभवतः केदार कानन भारती मंडनमे छापने रहथि। हमर संस्मरण वला पोथी सेहो केदार कानने छापने रहथि। 1997मे आरसी बाबू विदा भ' गेलाह।

हम अपन शिक्षागुरु 'मुकुर' जी पर लिखैत-लिखैत आरसी बाबू पर लिख' लगलहुँ। ई रोगो हमरा गुरुदेव 'मुकुर' जीयेसँ भेटल। ओ दिनकर जीक कविता पढ़बैत-पढ़बैत किशोरी दास वाजपेयी पर पहुँचि जाइत रहथि। हुनक व्याकरण प्रेम हमरा लोकनिकें त्रस्त कैने रहैत छल। ओ जहिया कोनो किताब पढ़ाएब शुरु करथि, हुनक दृष्टि कोनो-ने-कोनो व्याकरणक अशुद्धि पर पड़ि जाइन। ओ अशुद्धि लेख वा कविताक साममे अथवा शीर्षकमे हुनका दृष्टिगत होइन (भने ओ प्रूफक गलती हो अथवा टाइप टूटला कारण)। आब भ' गेल पढ़ाइ। सौंसे पीरियड ओहि भूल अथवा ओहि भूलक कारण अन्य भूलक संभावना अथवा ओहि तरहक भूल कोन-कोन लेखक कैलनि, ताहि पर केन्द्रित भ' जाइत छल। हम विद्यार्थी सभ त' भूले करैत रही तें चुपचाप सुनैत रहबामे कुशल छल।

हमरा सभक लिखल एक-एक वाक्यकें ओ ध्यानपूर्वक पढ़ैत छलाह आ गलतीकें शुद्ध कए दश-दश बेर लिखि कए आन' कहैत छलाह। गलतीसँ जँ केओ दश बेरक स्थान पर नौ बेर अथवा एगारह लिखि दैक त' कहथिन 10 बेर लिखू जे आब लिख'/गन'मे गलती नहि करब। किन्तु गलती बिना होइने नहि रहैक आ मुकुर जी रहथि जे बिनु सुधरबैने छात्रक जान नहि छोड़थिन।

ओ व्याकरणक नियम लिखथि आ हमरा सभसँ ओकर अपवाद निकाल' कहथि। दू पांतिक नियमक लेल दू पृष्ठक अपवाद तैयार भ' जाय आ ओ अपवादक आधार पर दोसर नियम बना देथि।

'कर्त्ता'क 'ने' चिह्न पर ओ बड़ ध्यान देथि किन्तु अचिन्त्य प्रेम रहनि 'चिन्त्य'-प्रयोग सँ। हुनक एहि प्रेमक कारण सौंसे स्कूलमे हड़कम्प मचल रहैत छल। इलाकाक पढ़ल लिखल लोको आतंकित। एहि सभसँ अनजान मुकुर जी कवितामे लागल रहथि आ दोसर दिन भागवत जीक संग काकाक औषधालय पहुँचि जाइत रहथि।

हमरा पर एहि संगतिक प्रभाव एहन पड़ल जे गुल्ली-डण्डा खेल' वला वयसमे 'तुकबन्दी' लिख' लगलहुँ। नुका कए 'होमवर्क' वला कॉपीमे। ई सत्कर्म कर' वला मात्र हमहीं नहि रही। छठमसँ एगारहम धरिक अधिकांश विद्यार्थी गणितमे फेल भ' जादवचन्द्र चक्रवर्तीक रेकार्ड तोड़ि रहल छलाह।

कॉपी सभ पर विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक फोटो रहैत छलैक मुदा सम्पूर्ण क्षेत्रमे भासमान रहथि दिनकर जी। शक्र, कुमुद विद्यालंकार, दिवाकर, मुकुर, भागवत, हरिनारायण नवल, प्रलयंकर सभ दिनकर जीक राष्ट्रकवित्वक मर्यादामे बन्हल रहथि। ककरोमे रवीन्द्रनाथ बनबाक बेगरता नहि। ओतेक कविगणक रहितो ई जनपद 'नोबेल प्राइज' विनर नहि उत्पन्न क' सकल।

हम बारहम बसन्तमे जे सैकड़ो पांतिक तुकबन्दी लिखने रही ओ मुकुरे जी पर छल किन्तु कवितामे कर्ताक 'ने' चिह्न संग नहि देलक आ कविता फाड़िकए फेंकि देलहुँ। एहि तरहें महाकाव्यक दीर्घतामे पहुँचय वला 'तुकबन्दी' केर अन्त भ' गेल। हम तय कैलहुँ जे आब कविता नहि लिखब।

कालान्तरमे काकासँ भेंट कर' यात्री–नागार्जुन आबि गेलाह। हमर भीतरक दबल कवि उछल' लागल। नागार्जुने जीकें संबोधित एक टा कविता–महाकवि नागार्जुन के प्रति (एकरा हम अपन पहिल हिन्दी कविता मानैत छी) तैयार भ' गेल। नागार्जुन कवि पर व्याकरणक डंडा नहि चलबैत छलाह। ओ कविताकें पास क' देलनि आ हमर नामक आगाँ सँ किशोर हटा देलनि। कविता 'मुंगेर' पत्रिका (1954)क प्रथम पृष्ठ पर छपि गेल। ओ कविता 'मुकुर' जी पढ़लनि। कहलनि–कविता बिना शुद्ध करबौने पत्रिकामे नहि पठैबाक छल।

हुनक प्रसिद्ध कविता-पुस्तक 'चुम्बन' साहित्यिक जगतमे कतेक वर्ष धरि चर्चामे रहल। मण्डन मिश्र–शंकराचार्यमे भेल शास्त्रार्थ पर केन्द्रित हुनक 'शंकर-विजय' नामक खण्डकाव्य हुनका काव्य-जगतमे प्रतिष्ठित क' देलकनि एवं दार्शनिक कवि सिद्ध कैलकनि।

हुनक बालोपयोगी कविताक संकलन (बिलाड़ और चूहा) बच्चा सभक प्रति हुनक प्रेम आ उपदेशात्मकताक प्रतीकक रूपमे विख्यात भेल। ओ बहुत रास छात्रोपयोगी नोट/पुस्तको लिखलनि।

मुकुर जी सहृदय कवि, शब्द साधक–गंभीर चिन्तक रहथि। हुनक लेखकीय जीवनक उत्तरार्द्ध सम्पूर्ण रूपसँ 'व्याकरण' कें समर्पित रहनि। ओ रामचन्द्र वर्मा, किशोरी दास वाजपेयी समेत अन्य 'महावैयाकरण' सभक शल्यक्रिया कए आ स्वयं दोषमुक्त व्याकरण (हुनका नजरिमे) लिखि देलनि। हुनका विद्यावाचस्पतिक उपाधि भेटलनि। ओ स्वतंत्रता सेनानियो छलाह।

अपन सादगी, विनम्रता एवं विद्वताक कारण ओ सभक लेल श्रद्धेय भ' गेलाह।

रचनाकाल : अगस्त 2007

मिथिला-मैथिलीक महान विभूति :
प्रो. राधाकृष्ण चौधरी

अपन पिता, मधेपुरा कोर्टक मोख्तार श्री राजकिशोर चौधरीक छओ गोट सन्तानमे दोसर अथवा तेसर प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक जन्म 15 फरवरी 1924 कें भेल छलनि। हिनक पितामह श्री श्यामलाल चौधरी रामपट्टी, दरभंगा केर मूल निवासी छलाह जे मधेपुरा केर विद्यापुरी मोहल्लामे आबि कए बसि गेल रहथि।

श्री राधाकृष्ण चौधरी केर प्रारम्भिक शिक्षा मधेपुरा केर कोनो सामान्य विद्यालयमे भेल रहनि। मैट्रिकुलेशन ओ सुपौलसँ कैने रहथि। पटना विश्वविद्यालयसँ इतिहासमे 'ऑनर्स'क संग ग्रेजुएशन 1943मे आ एम.ए. 1946मे कैने रहथि।

ओ 1946मे, जी.डी. कॉलेज, बेगूसरायमे, इतिहास विभागमे लेक्चररक पद पर नियुक्त भेल छलाह आ जनवरी 1955मे इतिहास एवं प्राचीन इतिहास तथा संस्कृति विभागक अध्यक्ष भ' गेल छलाह। ओहि पद पर ओ 1970क जनवरी धरि रहलाह। 1959 सँ 1970 धरि ओ कॉलेजक वाइस प्रिंसिपल सेहो रहथि। पछाति ओ प्राचार्य भए एस.एस.बी कॉलेज, कहलगाँव, भागलपुर चलि गेलाह। किन्तु बेगूसरायक मोह पुनः हुनका 1973मे घुरा कए जी.डी. कॉलेज ल' आनलकनि। ता धरि बेगूसराय आ जी.डी. कॉलेज–दुनू राजनीतिक दाव-पेंचक आओर पैघ अखराहा भ' गेल छल। राधाबाबू एहि परिवर्तित वातावरणकें एक्को वर्ष सहन नहि क' सकलाह। एहि मध्य 1974मे रीडर भए ओ टी.एन.बी. कॉलेज, भागलपुर चलि गेलाह जतयसँ ओ पुनः एस.एस.बी. कॉलेजक प्रिंसिपलक पद 1978मे स्वीकार कैने छलाह आ फेर अप्रैल 1981मे घुरि कए भागलपुर आबि गेल छलाह। 1982मे भागलपुर विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर इतिहास विभागाध्यक्षक पदकें सेहो सुशोभित कैने रहथि।

गणेशदत्त कॉलेज, बेगूसरायमे 1955मे तुलसी जयन्ती मनाओल जा रहल छल। हम जयन्ती समारोहसँ किछुए दिन पहिने आइ.ए.क प्रथम वर्षमे नामांकन करौने छलहुँ। हमर बालसखा आ वर्ग मित्र श्री वासुदेव दास बरौनी आबि कए सूचित कैलनि जे कॉलेजमे तुलसी जयन्तीक अवसर पर कविता प्रतियोगिता आयोजित कैल गेल छैक। ओ हमर कविता ल' कए विदा भ' गेलाह। तेसर दिन समारोहमे महाविद्यालयक साहित्य परिषद आ समारोहक मुख्य अतिथि डॉ. शिवबालक रायक अभिमतसँ हमर कविताकें प्रथम पुरस्कार भेटलैक।

कविता पाठ आ पुरस्कार प्राप्तिक बाद श्रद्धेय राधाबाबू हमरा बजाकें प्रोत्साहित कैलनि आ कहलनि जे अहाँ आवश्यकता पड़ने निस्संकोच वाइस प्रिंसिपल चेम्बर अथवा बासा पर आबि कए हमरासँ भेंट क' सकैत छी।

राधाबाबू अपन छोट कद-काठी, साधारण वेश-भूषा, चिन्तनशील मुखमुद्रा आ निश्छल हँसीसँ सभकें प्रभावित-अनुप्राणित करैत रहैत छलाह। अपन विद्वता, मिलनसारिता आ अनुशासनप्रियताक लेल ओ विख्यात छलाह। सभ बुझैत छल जे देश-विदेशमे अपन अनेकानेक प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थक लेल प्रसिद्ध आ सम्मानित ई साधारण सन लाग' वला व्यक्ति केहन असाधारण आ महान छथि।

हमर आइ.ए.क रिजल्ट देखि हुनका अपार प्रसन्नता भेलनि। ओ अपन आशीर्वाद दैत पटना कॉलेजसँ अर्थशास्त्रमे ऑनर्स लए ग्रेजुएशन करबाक परामर्श देलनि। नाम लिखयलाक बाद पटना जाइत-अबइत ओ हमरासँ भेंट करब नहि बिसरथि। हुनकहि स्नेहक प्रभाव छल जे बरौनी निवासी एवं पटना विश्वविद्यालयक इतिहास-विभागाध्यक्ष, प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ. रामशरण शर्माक हम कृपा-पात्र बनि गेलहुँ।

श्रद्धेय यात्री जी हमर पारिवारिक मित्र छलाह। पितामह, पिता, पितृव्य, अग्रजसँ ल' कए घरक प्रत्येक सदस्य, छोट-छोट नेना-भुटकोसँ हुनका मैत्री छलनि। तहिना हुनक मैत्री छलनि राधाबाबू आ हुनक परिवारक प्रत्येक सदस्यसँ। जहिया बिहार आबथि, बरौनी आ बेगूसराय जायब नहि बिसरथि। बेर-कुबेर, कखन ककरा ओतय पहुँचि जयताह तकरो कोनो ठेकान नहि। किन्तु, जखन आ जकरा ओतय ओ पहुँचि जाइत छलाह, लोकक भीड़ लागिये जाइत छल। बूढ़-बच्चा सभ यात्री जीक कविता प्रेमी। बुढ़िया पुरनियाँ अपन काज-धाज छोड़ि, हुनक कविता सुन' बैसि जाइत छलीह त' नवकी-पुरनकी कनियों सभ भानस-भात छोड़ि, दरबाजाक अ'ढ़ भए ठाढ़ि भ' जाइत छलीह। यात्री जीकें ककरो कोनो 'फरमाइस' अथवा आग्रहसँ कोनो आपत्ति नहि होइत छलनि।

एक दिन ओ तन्मय भए अपन कविता 'नान्हि-नान्हि टा फूल' सुना रहल छलाह। हमरा लक्ष्य क' कें ओ बाजलाह, ई कविता आइये भिनसर राधाबाबूक डेरा पर लिखने छी।

राधा बाबू जा धरि बेगूसरायमे रहलाह, मैथिली साहित्य केर समस्त गतिविधि केर केन्द्र बिन्दु बनल रहलाह। हुनक डेरा पर साहित्यकारक जमघट लागैत छल। यात्री जीकें बेर-बेर आब' पड़ैत छलनि।

राधा बाबूक प्रयासें बेगूसरायमे विद्यापति-जयन्ती मनाओल जाय लागल, कॉलेज, टाउनशिप एवं अन्यान्य स्थान पर सांस्कृतिक आयोजन एवं कवि-सम्मेलन होब' लागल। मैथिलीक प्रतिष्ठित साहित्यकार सभकें दूर-दूरसँ बजाओल जाय लागल। सभक स्वागत-सत्कार, यात्रा-व्यय एवं सम्मान-राशिक व्यवस्थाक सम्पूर्ण दायित्व राधा बाबू पर।

बेगूसराय, जे पहिने मुंगेर जिलाक एकटा सबडिवीजन छल, 1973मे स्वतन्त्र जिला बनाओल गेल। पहिल जिलाधीश भ' कए अयलाह श्री मन्त्रेश्वर झा। मन्त्रेश्वर जी छात्रावस्थे सँ खूब लिखैत छलाह आ एक गोट प्रतिभावान लेखक, विशेष कए व्यंग्य-लेखन क्षेत्रमे, अपन कृतित्वक आधार पर यशस्वी भ' चुकल छलाह। पछाति प्रशासनिक सेवामे आयल छलाह। हुनका अयने बेगूसरायक साहित्यिक गतिविधिमे आओर तेजी आबि गेल। राधाबाबू केर व्यवस्था आ मन्त्रेश्वर जीक सहयोगसँ कतेक अविस्मरणीय आयोजन भेल। एहि दुनू सज्जन केर हमरा प्रति तेहन अनुराग जे एतेक दूरसँ बजा लैत छलाह। एहन संयोग जे प्रायः एकहि अवधिमे राधाबाबू आ मन्त्रेश्वर जी दुनू बेगूसरायसँ बाहर चलि गेलाह आ शहर फेर सनातन निष्क्रियताकें ओढ़ि लेलक।

संभवतः 1974-75मे साहित्य अकादेमी दिल्ली द्वारा अंग्रेजीमे 'मैथिली साहित्यक इतिहास' लिखयबाक योजना बनाओल गेल। ओकरा एहि काजक लेल राधाबाबूसँ बेशी उपयुक्त के भेटितैक? मैथिलीमे हुनक-मैथिली साहित्यिक निबन्धावली 1956, मिथिलाक राजनीतिक इतिहास 1960, मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास 1963, शारान्तिधा 1969 आदि प्रकाशित भ' चुकल छलनि। एकर अतिरिक्त हिनक 'मिथिला इन द एज ऑफ विद्यापति', 'हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत' सेहो प्रकाशित भ' गेल रहनि।

इतिहास लेखकक रूपमे ओ सम्पूर्ण भारतमे विख्यात भ' गेल छलाह तथापि,

ई आवश्यक नहि छलैक जे कोनो पैघ इतिहास लेखक साहित्यिक इतिहासो ओहिना अधिकारपूर्वक लिखि सकैत अछि। साहित्य अकादेमी हुनक साहित्यिक अवदान, लेखकीय क्षमता आ इतिहास-दृष्टि तीनूकें ध्यानमे राखि एहि महान काजक लेल हुनका सर्वाधिक उपयुक्त पौलक आ इतिहास-लेखन लेल अनुबन्धित क' लेलक।

अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधि लोकनिकें ई कोना सह्य होइतनि? मैथिली साहित्य आ शिक्षा पर ब्राह्मण समुदायक एकाधिपत्य रहैत छैक। ताहूमे लाभ आ प्रतिष्ठा वला काज पयबाक लेल 'सोति' होयब आवश्यक। जाहि भाषामे कोनो पोथीकें साहित्यिक मूल्य आ श्रेष्ठताक आधार पर पुरस्कारो नहि देल जाइत छैक अथवा पुरस्कारक निर्णय कर' काल जतय जाति-वर्ग-क्षेत्र विशेषकें ध्यानमे राखल जाइत छैक, ओतय साहित्यक इतिहास-लेखन सन दायित्वपूर्ण आ लाभकारी काज कर'क लेल कोनो 'अब्राह्मण-अ-श्रोत्रिय' सँ अनुबन्ध कोना स्वीकार होइतैक।

एहन चक्र चलाओल गेल, जे अकादेमीकें राधाबाबूक संग कैल गेल अनुबन्धकें आपस लिअ' पड़लैक।

ई घटना राधाबाबूकें मर्माहत क' देलकनि। ओ पोथीक अधिकांश भाग तैयार क' चुकल छलाह किन्तु, साहित्य अकादेमीसँ नहि छपलनि आ ने 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर'क नामसँ। ओ व्यक्तिगत प्रयाससँ पटनासँ ओकरा 'ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर'क नामसँ छपौलनि। ओ अपन एहि प्रयाससँ साहित्य अकादेमी एवं मैथिलीक मठाधीश सभक संकीर्ण राजनीतिकें उद्घाटित कैने छलाह।

ई कुचक्र सम्पूर्ण मैथिली जगत लेल कलंकक विषय छल। एकटा मातृभाषा प्रेमी, सहृदय साहित्य सेवी, अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिक प्रकाण्ड विद्वान आ सिद्धहस्त लेखक मात्र जातीय आधार पर कोनो राष्ट्रीय संस्था द्वारा अस्वीकृत करबा देल गेल छल। पछाति, किछु षड्यंत्र-निष्णात मैथिलीक तथाकथित हितैषी द्वारा अनेकानेक कल्पित कारण लोक सभकें सुनाओल गेल छलैक।

राधाबाबूक आक्रोश आ विरोधोमे रचनात्मकता रहैत छलनि। ओ एहि कुचक्रक प्रति बिना कोनो प्रतिक्रिया व्यक्त कैने पोथीकें घोर परिश्रम कए पूर्ण कयलनि। हुनक ई पोथी इतिहास दृष्टिक एकटा प्रामाणिक 'दस्तावेज' अछि जकर दर्शन अन्य साहित्यिक इतिहास-ग्रन्थमे दुर्लभ।

हर अभिन्न मित्र आ मैथिलीक वरिष्ठ कथाकार राजमोहन झा जी अपन 'गल्तीनामा'मे हुनक इतिहासमे अनेकानेक दोषक उल्लेख कयने रहथि किन्तु,

राधाबाबूक लेखकीय भावनात्मक सहयता-आन्तरिकता आ निष्पक्ष इतिहास-दृष्टि पर ओ दृष्टिपात नहि क' सकल छलाह।

द्वितीय विश्वयुद्धक अवधि (1934 सँ 1945 इस्वी धरि) राधाबाबूक विलक्षण छात्र जीवनक कथा कहैत अछि।

ओ अपन अद्भुत प्रतिभा आ अध्यवसायक बल पर प्रथम श्रेणीक छात्रक रूपमे प्रशंसा आ पुरस्कारक पात्र छलाह, अपन राजनीतिक जागरूकता आ साम्यवादी सिद्धान्तक प्रति अटूट प्रतिबद्धताक लेल सेहो विख्यात छलाह।

एहि अवधिमे ओ ऑल इण्डिया स्टुडेण्ट्स फेडरेशन, कम्युनिस्ट-कांग्रेस संयुक्त फोरम केर प्रॉविन्सियल पार्टी कोरक सक्रिय सदस्य छलाह। हुनका भागलपुर जिला ए.आइ.एस.एफ. केर सेक्रेटरी बनाओल गेलनि। ओहि अवधिमे ओ महान क्रान्तिकारी सुभाषचन्द्र बोसकें जिला सम्मेलनमे आमन्त्रित कैने रहथि।

1943मे, बिहारमे बनल 'बंगाल फेमिन रिलीफ कमिटी', जकरासँ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. श्रीकृष्ण सिंह, डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह आदि सन महान स्वतंत्रता सेनानी सम्बद्ध रहथि, केर जेनरल सेक्रेटरीक रूपमे बंगालक ऐतिहासिक अकालक अवधिमे अपन सेवा आ रिलीफ कार्य संचालनक क्षमताक लेल सर्वत्र चर्चित छलाह।

सुनील मुखर्जी, जगन्नाथ सरकार आदिक सम्पर्कमे आबि हुनक राजनीतिक चेतना आ साम्यवादी विचारधारा तीक्ष्णसँ तीक्ष्णतर होइत गेलनि। हुनक परवर्ती जीवन पर एहि वैचारिक न्योंक प्रभाव सभ दिन बनल रहल।

राधाबाबू कट्टर कम्युनिस्ट छलाह। चिन्तन, लेखन आ व्यवहार तीनूमे, मात्र सामाजिके स्तर पर नहि, पारिवारिको जीवनमे। देश-विदेशक पैघ सँ पैघ साम्यवादी नेतासँ हुनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध आ मैत्री छलनि। सुनील मुखर्जी, जगन्नाथ सरकार, भूपेश गुप्त, राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन आदिसँ हुनका अन्तरंगता साम्यवादी विचार सूत्रसँ आबद्ध छलनि। अपन सिद्धान्तक मूल्य पर ओ कोनो तरहक समझौता नहि क' सकैत छलाह। तहिना दोसरक सिद्धान्तक ओ आदरो करैत छलाह, भले ओ हुनक अपनहि सन्तान कियैक नहि हो।

पिताक रूपमे हुनक सिद्धान्त आ व्यवहारक एकरूपताक एकटा एहन आदर्श प्रस्तुत करैत अछि जे नितान्त दुर्लभ।

सामान्यतः लोक अपन सन्तानक 'केरियर' बनयबाक चिन्तामे लागल रहैत अछि। ओहि लेल ओ सभ किछु कर'क लेल, सभ त्यागक लेल तैयार रहैत अछि।

अपन सिद्धान्त कें बिसरि जाइत अछि। किन्तु, राधाबाबू एहि कोटिक पिता नहि छलाह। ओ प्रत्येक सन्तानकें स्वतंत्र विकासक लेल प्रारम्भहिसँ स्वतंत्र छोड़ि देब आवश्यक बुझैत छलाह।

हुनक पाँचो सन्तान प्रतिभा, परिश्रम, संघर्ष-प्रियताक संग-संग हुनकासँ कट्टर साम्यवादी विचारधारा सेहो ग्रहण कैलथिन। सभकें कट्टर सिद्धान्त-प्रियता आ उग्र साम्यवादी क्रियाकलाप आकृष्ट कैलकनि।

ताधरि बिहारमे नक्सलवादी आन्दोलन जोर पकड़ि नेने छल। सी.पी.आइ. सँ सी.पी.एम. एवं सी.पी.एम. सँ सी.पी.आइ. (एम.एल.)क जन्म भ' चुकल छलैक। हुनक पहिल दुनू बालक इन्जीनियरिंग आ एम.बी.बी.एस.क अन्तिम वर्षमे छलथिन। किन्तु दुनू नक्सली आन्दोलनक सरगना। कोनो पिताक लेल ई घोर चिन्ताक विषय भ' सकैत छलैक किन्तु, राधाबाबू एहि सभसँ एकदम अविचलित। हुनक व्यक्तित्वक दृढ़ता पर विचार कर'क लेल हुनक पाँचो सन्तानक विकास आ क्रियाकलाप पर एक बेर दृष्टिपात करब आवश्यक।

पहिल सन्तान : श्री प्रभात कुमार चौधरी। बी.आइ.टी., सिन्द्रीमे इन्जीनियरिंगक अन्तिम वर्षमे राजनीतिक प्रतिबद्धताक कारण अध्ययनसँ विरत। 1969 सँ सी.पी.आइ. (एम.एल.) सँ सम्बद्ध। कार्यक्षेत्र बिहार।

दोसर सन्तान : श्री प्रशान्त कुमार चौधरी। एम.बी.बी.एस.क अन्तिम वर्षमे सी.पी.आइ. (एम.एल.) सँ राजनीतिक प्रतिबद्धताक कारण अध्ययनसँ विरत। 1970क मइमे पहिल बेर गिरफ्तार। दोसर बेर अगस्त 1970मे। 1974मे बांकीपुर जेलसँ 17 गोट संगीक संग फरार। 1975मे आपातकालीन घोषणाक बाद बाढ़ स्टेशन पर गिरफ्तार आ भागलपुर जेलक स्पेशल सेलमे बन्न। सी.पी.आइ. (एम.एल.) क राज्य कमिटीक मृत्युपर्यन्त सक्रिय सदस्य। 1975मे भागलपुर जेलमे मृत्यु।

तेसर सन्तान : श्रीमती प्रणति लाभ। भागलपुर विश्वविद्यालयसँ मैथिलीमे बी.ए. ऑनर्स। पटना विश्वविद्यालयसँ एम.ए.।

चारिम सन्तान : श्री प्रसन्न कुमार चौधरी। सी.पी.आइ. (एम.एल.)क सिद्धान्तक प्रति प्रतिबद्ध। नक्सली आन्दोलनसँ सम्बद्ध। प्री. युनिवर्सिटीमे पढ़बाकाल अध्ययनसँ विरत। 1970 मइ अथवा जूनमे पहिल बेर पटनामे गिरफ्तार। परीक्षा देब'क लेल (कम अवस्थाक कारण) बेल पर रिहा। सितम्बर 1970 सँ पार्टीक 'होल टाइमर'। 1971क मइमे मुजफ्फरपुरमे गिरफ्तार। 1974मे मुजफ्फरपुर जेलसँ फरार। 'सूट एट साइट'क निर्देश। सर्वत्र खोज। 24 घंटाक अन्दर पुनः गिरफ्तार। डंडा-बेरी।

टार्चर। जेलक डंडा-बेरी सेल (सेपेरेट)मे सोलिटरी कन्फाइनमेन्ट। साढ़े छओ साल धरि बन्न। जनता पार्टीक शासनकालमे 1979मे रिहा। पार्टी सेन्ट्रल कमिटीक पोलित-ब्यूरोक सदस्य। कॉलेजक शिक्षाकें अपूर्ण छोड़ियो कए राजनीति, समाजशास्त्र आ किसान-मजदूरक सामाजिक-आर्थिक समस्या केर विशद अध्ययन आ ओकर समाधानक लेल अपन सक्रियता आ विचार-दृष्टिक अद्भुत विकास। रक्तक्रान्ति द्वारा सामाजिक सुधारक लेल सत्ताक अधिग्रहणक पार्टीक सिद्धान्तमे विश्वास राखितो, पार्टीक भीतर पसरैत सुविधाभोगी दृष्टिक प्रबल विरोधी। अपन उग्र क्रान्तिकारिता आ राजनीतिक सिद्धान्तमे मौलिकताक लेल राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात।

पाँचम सन्तान : श्री प्रणव कुमार चौधरी। भागलपुर विश्वविद्यालयसँ इतिहासमे एम.ए., जे.एन.यू. दिल्लीसँ एम.फिल.। पत्रकारिताक क्षेत्रमे अपन मौलिक विचारधाराक लेल विख्यात। 1986 सँ पटनामे 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' केर स्टाफ रिपोर्टर।

जखन इन्जीनियरिंग आ मेडिकलमे पढ़' वला दुनू पुत्र (प्रभात कुमार आ प्रशान्त कुमार) गिरफ्तार भए जहलमे रहथिन, राधाबाबूक मित्र, शुभचिन्तक आ सम्बन्धी लोकनि चिन्ताकुल भए हुनकासँ रेहाइक लेल प्रयास करबाक आग्रह कैलथिन। राधाबाबूक प्रतिक्रिया छलनि—'सरकार आन्दोलनकें अपराध बूझि ओहिसँ सम्बन्धित व्यक्ति सभक गिरफ्तारी करा रहल छैक। दुनू भाइ पार्टीक कार्यकर्त्ता छथि आ पार्टी सुविचारित-सुनियोजित ढंगसँ भूमि आ किसान-मजदूरकें शोषणमुक्त कराब' लेल ई आन्दोलन (तथाकथित अतिवादी) चला रहल छैक। सामाजिक चेतना जगाब' आ सर्वहारा वर्गकें अधिकार दिआब'क लेल ई आन्दोलन अतिवादी आ रक्तरंजित होइतहुँ परमावश्यक छैक। हम स्वयं एहि सामाजिक क्रान्तिक पक्षपाती छी। ककरो-ने-ककरो एकर संचालन कर' पड़बे करतैक। लोक एहिना जहल जायत आ जहलमे ओकरा 'टार्चर' कैल जयतैक, लोक एहिना मारल जाइत रहत। ओहो सभ व्यक्ति त' ककरो सन्तान, पति अथवा पिता अवश्ये हेतैक। तखन हमरालोकनि जँ एहि तरहें कमजोर पड़ि जायब त' आन्दोलन कोना चलतैक? ई आन्दोलन थिकैक, आपराधिक कर्म नहि। किन्तु, रेहाइ कराब'क लेल एकरा अपराध मानि ओहिसँ विरत रहबाक वचन दिअ' पड़तैक। हम आन्दोलनक सिद्धान्तसँ सहमत रहि, रेहाइक प्रयास लेल कोना स्वीकृति द' सकैत छी। जंगलक आगि जकाँ पसर' वला एहि आन्दोलनकें त' हजार-हजार बलिदान चाही। सरकार द्वारा चलाओ ल जा रहल दमन, गिरफ्तारी आ टार्चर त' एकटा सामान्य प्रक्रिया थिकैक। हमरा सभकें प्रभात आ प्रशान्तक रेहाइक बात नहि, आन्दोलनक संचालनक

रचनात्मक पक्ष पर विचार करबाक चाही, आ एहि सर्वहारा वर्गक हथिआरकें राष्ट्रीय स्तर पर चलैबामे सहयोग देबाक चाही।'

हुनक विचार आ उत्तर सुनि सभ स्तब्ध रहि गेल रहथि।

हम निवेदन कैने छलियनि जे कमसँ कम परीक्षा देब'क लेल दुनूकें 'पेरोल' पर छोड़यबाक प्रयास करब आवश्यक। ओहुना जेलमे रहि ओ पार्टीक कोन काज क' सकैत छथि। हुनक उत्तर छलनि—'ओ लोकनि सिद्धान्तक लेल जीवनोक त्याग कर'क लेल तैयार छथि, परीक्षा आ केरियर त' अतिसामान्य बात थिकैक। हम पिता भ' हुनकालोकनिकें अपन संकल्प आ निर्णयसँ अल्पकालिको विरतिक लेल कोना कहि सकैत छियनि?'

हमरा वियतनामक गोरिल्ला युद्ध (जे ओहि समयमे चलि रहल छल) आ 'होचीमिन्ह' मोन पड़' लागल छलाह। हम श्रद्धावेगमे बिना किछु बाजने हुनक चरण-स्पर्श कए विदा भ' गेल छलहुँ।

1975मे भागलपुर (जेलमे प्रशान्त बाबूक मृत्यु अथवा हत्या)क समाचारसँ विचलित भए राधाबाबूक दर्शन कर' गेल रही त' हुनक अविचलित मुख-मुद्रा हमरा आश्चर्यसँ भरि देने छल। हमर मुँह फूजए ओहिसँ पहिनहि ओ हमर स्वास्थ्य आ परिवारक समाचार पूछि, साहित्य पर चर्चा आरम्भ क' देने रहथि। हम पुत्र-शोकक लेल सम्वेदना त' फराक, जहलमे बन्न ज्येष्ठ पुत्र प्रभात बाबूक समाचारो नहि पूछि सकलियनि।

हुनक व्यक्तित्व कोनो अद्भुत ठोस धातुसँ बनल छलनि। पैघ-सँ-पैघ विपत्ति आ आघातोमे ओ विचलित नहि होइत छलाह। कम्यूनिज्मक प्रति तेहन प्रतिबद्धता छलनि, जे अपनहि नहि अपन सम्पूर्ण परिवारक होम कर'क लेल सदैव तत्पर रहि (एक गोट सन्तानक त' होम भ' चुकल छलनि शेष बचल सन्तानो जेलक यातना भोगि रहल छलथिन अथवा जेलसँ पड़ा कए सम्पूर्ण व्यवस्थाकें चुनौती दैत, अण्डरग्राउण्ड रहि आन्दोलनकें संचालित क' रहल छलथिन। तेसर पुत्र प्रसन्न कुमार, सोलिटरी सेलमे डण्डा-बेरीक यातना भोगि रहल छलथिन।) त्यागक एकटा आदर्श प्रस्तुत कर' चाहैत छलाह। ओ अपन अत्यन्त व्यस्त दिनचर्योमे प्रतिदिन साढ़े सात घंटा पढ़'-लिख'क लेल समय बहार क' लैत छलाह आ उपर सँ पार्टीक काजक लेल सदैव तत्पर।

राधाबाबूसँ हमर गुरु-शिष्यक सम्बन्ध छल, सेहो प्रत्यक्ष नहि। इतिहास हमर कहियो विषय नहि रहल, आ ने इण्टरमीडिएटक बाद बेगूसराय कॉलेजसँ हमर

सम्बन्ध किन्तु, हमर मानसपटल पर हुनक व्यक्तित्व, चरित्र, विद्वता, सहृदयता आ लेखकीय क्षमता केर जे चित्र अंकित अछि, कहियो धूमिल नहि हैत।

हुनक देहावसान 15 मार्च 1985 कें देवघरमे भेलनि। प्रायः साल भरि पहिने हमरा ओ भेंट कर'क लेल देवघर बजौने रहथि। जून 1984मे हम बरौनी जाइत छी, आ ओतयसँ देवघर पहुँचैत छी। परिवारक सदस्यसँ भरल जीप बम्पास टाउनक शान्ति-निवास (राधाबाबू अवकाश-प्राप्तिक बाद अपन शेष जीवन एतहि बितौने रहथि आ एखनहुँ हुनक धर्मपत्नी एवं परिवारक किछु सदस्य ओतय रहैत छथिन) पहुँचैत छी। 'रेड ऑक्साइड' सँ रंगल बड़का लौह कपाट पर ताला लागल देखैत छी। जीप आगाँ बढ़ैत अछि आ 'बाजोरिया हाउस'क मेन गेट पर जाकें ठाढ़ होइत अछि। गेस्ट हाउसक दरबान बतबैत अछि जे मैनेजर श्री बजरंगलाल जी दू दिनसँ अहाँ लोकनिक प्रतीक्षा क' रहल छथि।

हमरालोकनि गेस्ट हाउसमे प्रवेश करैत छी कि एक व्यक्ति आबि कए पूछैत अछि–'की अपने कीर्त्तिनारायण मिश्र छी? प्रोफेसर साहब (प्रो. राधाकृष्ण चौधरी) अपने लोकनिकें बजा रहल छथि।' हम ओकरा किछु कहितियैक, ओहिसँ पूर्वहि श्रद्धेय श्री राधाबाबू ल'गमे आबि कए ठाढ़ भ' गेलाह। आनन्दातिरेकमे हम आ ओ दुनू, बड़ी काल धरि निर्वाक ठाढ़ रहलहुँ। ओ घ'रक सभ सदस्य दिस देखैत कहैत छथि–'हम त' अहाँ लोकनिक रह'क लेल अपना ओतय व्यवस्था कैने छी किन्तु, अहाँ त' एहि विशाल बंगलामे पहुँचि गेल छी। ओना बजरंगलाल जी हमरा कहने छलाह जे हुनका कलकत्तासँ आदेश भेटल छनि जे अहाँ लोकनिक रह'क व्यवस्था 'बाजोरिया हाउस' (अथवा बिजली हाउस)मे कैल जाय। आब निर्णय अहाँ लोकनि पर अछि।'

हम कहैत छियनि–'अपने ल'ग रहबाक लेल हम एतय आएल छी। परिवारक सदस्य सभक एहिठाम रहने अपनेक बासा पर अपना लोकनिक वार्त्ता निर्बाध चलत।'

ओ अपन स्वीकृति द' विदा भ' जाइत छथि।

दोसर दिन ब्रह्ममुहूर्त्तमे शान्ति-निवास पहुँचैत छी। श्रद्धेय राधाबाबू प्रतीक्षामे 'मेनगेट' ल'ग ठाढ़ भेटैत छथि। कहैत छथि–'देखू बड़का गेटमे ताला लागल छैक मुदा, छोटका गेट नौक्सी पर अटकल छैक। अहाँ ओकरा फोलि कए भीतर आबि सकैत छलहुँ मुदा कोना अबितहुँ? अहाँक सौभद्र-निवासमे त' बड़का-छोटका, दुनू गेटमे ताला लागल रहैत छैक। लोककें प्रवेश पयबाक लेल पछिला गेटक पता लगब' पड़ैत छैक।'

एतबेमे भीतरसँ बजाहटि अबैत अछि चाहक लेल।

राधाबाबू सभ दिन लीकर आ नेबो वला चाह पीबैत छलाह। हम पहिल बेर एहन चाह यात्री जीक संग हुनके डेरा पर, बेगूसरायमे पीने छलहुँ।

बड़ी काल धरि साहित्य, साहित्यिक गतिविधि आओर प्रकाशन पर गप्प होइत रहल। दोसर खेप पुनः आबि विस्तारसँ बतिएबाक निर्णय होइत अछि। किन्तु, आठ-नौ मासक अभ्यन्तरे ओ एहि संसारसँ विदा भ' जाइत छथि।

हमरा प्रति हुनक कृपा-भाव सभ दिन बनल रहलनि। एकरा हम मात्र हुनक उदारता आ आन्तरिक विशालता बुझैत छी। हमर ई सौभाग्य छल जे मिथिला-मैथिलीक एहि महान विभूतिसँ एतेक निकटक सम्बन्ध रहल।

स्व. राधाबाबूक व्यक्तिगत जीवन, परिवार, प्रकाशन तथा हुनका सम्बन्धमे किछु अन्य महत्वपूर्ण सूचना संकलनक लेल हम 1989मे पुनः शान्ति निवास पहुँचैत छी। ओतय एकटा तरुणसँ हमर भेंट होइत अछि। ओ राधाबाबूक तेसर पुत्र श्री प्रसन्न कुमार चौधरी छलाह, जिनक उल्लेख एहि लेखमे पहिनहि क' चुकल छी।

हम हुनका अपन अयबाक उद्देश्य बतबैत छियनि। ओ हमरा हुनक शयन-कक्ष, अध्ययन-कक्ष आ उपरका तल्लामे लाइब्रेरी जकाँ लगैत एकगोट कोठलीमे ल' जाइत छथि। निश्शंक भए एक-एकटा छपल लेख, एक-एकटा पोथी आ शोधप्रबन्ध आ सभ महत्वपूर्ण कागत-पत्र देखबैत छथि। किन्तु, राधाबाबूक लिखल प्रकाशित सामग्रीक बहुत बड़का अंश देख' लेल नहि भेटल। ओ सभ ओ स्वयं विभिन्न पुस्तकालय आ संग्रहालयकें द' चुकल छलथिन।

प्राप्त सूचनाक आधार पर हुनक प्रकाशित पोथीक सूची नीचाँमे द' रहल छी।

मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बद्ध

शारान्तिधा, कलकत्ता, 1969, मैथिली साहित्यिक निबन्धावली, पटना 1956, मिथिला का राजनीतिक इतिहास, दरभंगा, 1960, मिथिला का सांस्कृतिक इतिहास, दरभंगा, 1968, धम्मपदक मैथिली अनुवाद, कलकत्ता, 1973, लालदास, पटना, 1981, प्रसंग विद्यापतिक, कस्मे देवाय हविषा विधेयम् (निबन्ध संकलन), हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत, बनारस, 1971, मिथिला इन द' एज ऑफ विद्यापति, बनारस, 1976, ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर, पटना, 1982।

इतिहास, पुरातत्व, राजनीति, अर्थशास्त्र, बौद्ध दर्शन, संस्कृति, विधि एवं न्याय, शिलालेख आदिसँ सम्बद्ध अनेकानेक पुस्तकमे उपलब्ध सूचनाक अनुसार निम्नलिखित पोथी अंग्रेजीमे प्रकाशित छनि–

The Vratyas in Ancient India, Banaras, 1964, Kautilya's Political Ideas & Institution, 1971, History of Bihar, Patna, 1958, Select Inscriptions of Bihar, Patna 1958, Bihar, the Homeland of Buddhism, Patna, 1956, Studies in Ancient Indian Laws & Justice, The University of Vikramshila, Patna, 1976, Economic History of Ancient India, Patna, 1982, A speech on Socio-economic History of India, Political and cultural heritage of Mithila, Delhi, Important Inscriptions of Ancient India.

हिन्दीमे–सिद्धार्थ, पटना, 1956, प्राचीन भारत का राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास, विश्व इतिहास की रूपरेखा, पटना, 1955, भारतीय इतिहास की रूपरेखा, प्राचीन भारतीय राजनीति और शासन-व्यवस्था, बिहार की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परम्परा, पटना, 1972।

एकर अतिरिक्त विभिन्न विषय पर 200 सँ बेशी हुनक प्रकाशित लेखक सूची उपलब्ध अछि। ओकर उल्लेख स्थानाभावक कारण एतय सम्भव नहि। ओ 'मैथिली एज ए सोर्स ऑफ हिस्ट्री' लिखने रहथि जे छपलनि आ कि नहि, तकर सूचना नहि प्राप्त भ' सकल। विभिन्न रिसर्च जर्नल, बुलेटिन, स्मारिका, पत्र-पत्रिका, संकलन, शोधग्रन्थ आदि सभमे प्रकाशित ओहि सभ लेखकें 10-12 वोल्यूममे छापल जा सकैछ। तहिना देश-विदेशक अनेकानेक विद्वान द्वारा विभिन्न ग्रन्थमे हुनक अनुसंधान आ पुरातत्वक क्षेत्रमे कैल गेल कार्य आ उपलब्धिक विशद वर्णन भेल अछि, तकरो उल्लेख स्वतंत्र लेख अथवा ग्रन्थमे कैल जा सकैछ।

प्रकाशित–कर्णामृत : जनवरी-मार्च 1992

अनधिकृत राजकमलक अधिकार क्षेत्रमे

संभवतः 1958मे राजकमल जीसँ पहिल भेंट पटनामे भेल छल आ 1959मे श्रद्धेय यात्री जीक माध्यमसँ 'स्वरगन्धा'क प्रति प्राप्त भेल छल।

1960क जनवरी। हम आ हमर बालसखा श्री मार्कण्डेय मिश्र, चारि नम्बर बससँ टालीगंज, कलकत्ताक अन्तिम 'बस स्टॉप' पर उतरि पूर्व पुतिआरी, प्यारा बगान (जतय ओहि समय राजकमल जी रहैत छलाह)क पता लगबैत छी। एकटा पैघ नाला पर बनल, सड़ल काठक पुलकें पार करैत छी आ बौआइत-बौआइत हुनक निवास स्थानक निकट पहुँचि जाइत छी।

ग्रामीण परिवेश आ बंगाली मोहल्ला। एकटा बंगाली 'मोशाय' कें हिन्दीमे किछु पूछैत छियनि मुदा, ओ बिना कोनो उत्तर देने आगू बढ़ि जाइत छथि।

कनेक आओर ससरैत छी। एकटा दरबज्जा ल'ग किछु महिला बतिआइत छलीह 'बंगला'मे। हमर दृष्टि आश्रम जकाँ लगैत एक गोट घर पर पड़ैत अछि। फेर खिड़कीक फूजल फाँकसँ भितरिया भाग पर नजरि गेल। सीमेन्ट आ काठसँ बनाओल पैघ पलंग पर चौंकल बहुतरास पोथी-पत्रिकाकें देखि लागल जे ई राजकमल जी केर डेरा भ' सकैत अछि।

मुदा, पुछियै कोना? बंगला अबैत नहि अछि आ जिनकासँ किछु पुछबनि ओ सभ महिला! सभ दिन सह-शिक्षामे पढ़ने रही किन्तु, एतय त' बुद्धिये हेरा गेल। मार्कण्डेय जी राजकमल जीसँ भेंट करबाक लेल उत्साहसँ भरल रहितहुँ, एहि भीषण यात्रा लेल तैयार नहि रहथि। हुनक खौंझाएब स्वाभाविक छलनि किन्तु, हम मन्दिर केर अन्तिम सीढ़ी पर आबि, घुरि जयबाक बात कोना सोचितहुँ?

दू गोट नवागन्तुककें एहि तरहें ठाढ़ आ हुलकैत देखि, ओहि महिला वर्गक मध्य एकटा नवयुवती साकांक्ष भेलीह। ओ आगू बढ़ि पूछैत छथि–'आपका नाम?' आ हमर नाम सुनितहि ओ स्नेहपूर्ण दृष्टिसँ देखि घर चलि गेलीह। लगले ओ बहराइत छथि आ अन्तःपुरमे प्रवेश करबाक संकेत करैत छथि।

हम पहिनहि बुझि गेल रही जे ई भौजी (शशि जी) थिकीह।

ओ हमरा दुनूकें नेने शयनकक्षमे प्रवेश करैत छथि आ दिवानिद्रामे मग्न भाइ साहेब (राजकमल जी) कें झमोड़' लगैत छथि।

राजकमल जी हॉफी लैत उठैत छथि आ हमरा देखि प्रसन्न होइत छथि। कहलनि–'बड़ नीक भेल जे तों आबि गेलह। एकगोट महत्वपूर्ण निर्णय लेबाक अछि आ ओहि लेल तोहर परामर्श ओ सहयोग अपेक्षित।'

हमरा ठकविदोर लागल देखि ओ कहैत छथि–'हम पिता बनयसँ पहिनहि नोकरी छोड़' चाहैत छी।' (ओ तहिया भारतीय ज्ञानपीठमे नोकरी करैत छलाह आ शशिजी गर्भवती छलीह। किछुए मासक बाद सितम्बर 1960मे दिव्याक जन्म भेल छलैक।)

'मैं नहीं चाहता, जन्म के बाद मेरे बच्चे की नजर गुलाम बाप पर पड़े'–हुनक एहि वाक्य पर शशि जी मुस्काइत छथि आ सराइत चाह दिस संकेत करैत छथि। राजकमल जी अगिला योजना बताब' लगैत छथि। 'रागरंग' हिन्दी मासिकक माध्यमसँ वाणी राय तथा किछु अन्य बंगालिन अभिनेत्रीकें 'लाइम लाइट'मे आन' केर अपन योजनाकें सविस्तार बुझौलनि। हम प्रकाशन-व्ययक सम्बन्धमे पुछलियनि त' ओ कहलनि जे–'एक 'सेठ-शावक' (अभय कुमार जैन) पाइ लगाओत। ओना एखने एक गोट अभिनेत्री दू हजार टाका ल' कें आब' वाली अछि। तीन-चारि दिनमे, तोरा पटना घुर' सँ पहिनहि, 15 हजार टाका आओर आबि जायत।'

हमरा ई बूझल छल जे राजकमल जी भारतीय ज्ञानपीठक नोकरीसँ सन्तुष्ट नहि छथि। कलकत्ता प्रवासमे हम प्रायः हुनक ऑफिस 18 बी, ब्रेबोर्न रोड जाइत छलियनि। वैह श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन आ शरद देवड़ासँ हमर परिचय करौने छलाह। लक्ष्मीचन्द्र जैन भारतीय ज्ञानपीठक सर्वेसर्वा आ शरद देवड़ा 'ज्ञानोदय'क सम्पादक। राजकमल जी ओहि ऑफिसमे काज त' करैत छलाह किन्तु, सम्पादन-विभागसँ कोनो प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहि छलनि। एकटा सामान्य अधिकारीक रूपमे रहितहुँ, अपन लेखन क्षमता आ लेखकीय ख्यातिसँ सम्पूर्ण परिवेशकें आच्छादित कयने रहैत छलाह। अपन स्वच्छन्दता-प्रेमी संस्कार आ स्वाभिमानक कारण ओ आनक बनाओल नियम-अनुशासन (भलें ओ ओहि संस्था अथवा कार्यालयक हो, जतय जीविकोपार्जन लेल हुनक कार्य करब आवश्यक होनि)मे बान्हिकें रहक लेल कोनो परिस्थितिमे तैयार नहि रहथि। ओहिसँ पहिनहुँ ओ पटना सचिवालयक सरकारी नोकरी छोड़ि चुकल छलाह। तें हमरा समक्ष हुनक निर्णयक प्रति सहमति प्रकट कर'क अतिरिक्त आओर कोनो विकल्प नहि छल। ताधरि हम स्वयं विद्यार्थी छलहुँ। नोकरीक विवशता, परिवारक दायित्व आ अनियमित आयसँ होम' वला

कष्ट एवं असुविधाक अनुभव नहि छल। एकटा कल्पनालोकमे विचरण कर' वला भावुक तथा व्यवहार-ज्ञान-शून्य व्यक्तिक लेल अग्रजक ई निर्णय, मात्र सूचना भ' सकैत छल। मुदा, शशि जी त' हमर वला स्थितिमे नहि रहथि। ओ त' बीसे-बाइस वर्षक वयसमे पारिवारिक जीवन, महानगरक रहन-सहन, अनियमित एवं अल्प आयसँ होम' वला कष्ट तथा पतिक स्वच्छन्द प्रकृतिसँ उत्पन्न होइ वला अनेकानेक समस्यासँ परिचित भ' चुकल छलीह। किन्तु ओहो हमरे जकाँ विस्मय-विमुग्ध रहि, अपन इच्छा-अनिच्छा बिना व्यक्त कयने, हरदम मुसकाइत रहैत छलीह।

शशि जीसँ 15 टाका ल' राजकमल जी हमरा सभकें नेने घरसँ विदा भेलाह। धोबी ओतय गेलाह, बुश्शर्ट बदललनि आ चारि नम्बर बस पकड़ि 'चौरंगी' पहुँचि गेलाह।

रातिमे एगारह बाजि गेलैक। टालीगंज जयबाक लेल अन्तिम बस कनिको देरी भेने छूटि जयबाक संभावना छलैक। हमरालोकनि बस स्टैण्ड पर आबि जाइत छी। भाइसाहेबक जेबीक पाइ खर्च भ' गेल रहनि, से हमरा ज्ञात छल। हमरा किछु कह' सँ पहिनहि ओ चौअन्नी बहार क' देखा दैत छथि आ बस पर चढ़ि जाइत छथि।

ओहि कलकत्ता प्रवासमे प्रायः रोज साँझमे 'केफे डिमो बिको' अथवा 'मेट्रो' सिनेमाक कातमे हमरालोकनिक भेंट होइत छल। तहिया ओतय रोज हिन्दी आ बंगला साहित्यकारक भीड़ लगैत छल। पृथ्वीनाथ शास्त्री, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, शरद देवड़ा, ललित कुमार शर्मा 'ललित', मुद्राराक्षस, छेदी लाल गुप्त, हर्षनाथ, छविनाथ मिश्र 'पागल', शलभ श्रीराम सिंह, चन्द्रदेव सिंह, भगवान सिंह, सकलदीप सिंह, अवध नारायण सिंह, वीरेन्द्र मल्लिक, आलोक शर्मा, विमल वर्मा, इसराइल, मृत्युंजय उपाध्याय आदि प्रायः रोज आब' वला व्यक्तिमे छलाह। कॉफी हाउसमे बंगलाक साहित्यकार सुनील गांगुली, संदीपन चट्टोपाध्याय, सुविमल वसाक आदि सेहो हमरा सभक भीड़मे सम्मिलित भ' जाइत छलाह। बड़ी राति धरि हमरा सभक बैसार आ बौआएब चलैत रहैत छल। विदा होमयसँ पहिनहि दोसर दिनक भेंटक लेल स्थान आ समय निश्चित भ' जाइत छल। बेशी काल राजकमल जी हमर डेरा 147, कॉटन स्ट्रीट आबि जाइत छलाह आ दुनू संगे-संग विदा होइत छलहुँ।

राजकमल जी अपन असामान्य (नीक शब्द हैत अद्वितीय) व्यक्तित्व, प्रगाढ़ अध्ययन आओर विलक्षण लेखन-क्षमताक कारण, ताधरि सम्पूर्ण हिन्दी-मैथिली-बंगला क्षेत्रमे पर्याप्त ख्याति अर्जित क' चुकल छलाह। हुनका साहित्य-जगतमे एकटा

पैघ चुनौतीक रूपमे देखल जाइ लागल छलनि।

हिन्दीमे ओ प्रतिष्ठित भ' चुकल छलाह, मैथिलीयोमे अपन अद्भुत लेखन आ व्यक्तित्वक कारण कविता आ कथाक क्षेत्रमे प्रचुर आदर-सम्मान पाब' लागल छलाह। नवतुरिया वर्ग हुनका नव लेखन एवं आधुनिक बोधक अग्रदूतक रूपमे चर्चित-विश्लेषित कर' लागल छलनि।

दुर्भाग्यक विषय जे ताधरि ओ मैथिली लेखनसँ प्रायः विरत रह' लागल छलाह। हिन्दी एवं बंगलाकें ओ अधिकांश समय दैत रहथि। एहिसँ पूर्व कलकत्ते प्रवासमे रहि 'आन्दोलन', 'आदिकथा' आ 'स्वरगन्धा' लिखने रहथि। आदिकथा आ स्वरगन्धा कलकत्तेसँ प्रकाशितो करौने छलाह (संयोगवश हुनक तेसर पोथी 'आन्दोलन' सेहो मरणोपरान्त कलकत्तेसँ प्रकाशित भेलनि)। अधिकांश महत्वपूर्ण लेखन ओ कलकत्तेसँ कयलनि। मैथिली समाजसँ थोड़ बहुत हुनका स्नेह-सहयोगो भेटैत छलनि। अपन मातृभाषा आ मैथिलीमे नव दिशामूलक लेखनक प्रति ओ पूर्ण सचेतन आ प्रयत्नशील छलाह, तथापि ओ बेर-बेर कहैत छलाह—'हम मैथिलीसँ सम्बन्ध विच्छेद क' चुकल छी।'

एहि वाक्यमे हुनक अनास्था अथवा विरक्ति नहि, मनोव्यथा छलनि। से जँ नहि रहितनि त' हमरा हिन्दीक संग-संग मैथिलीयोमे लिखबाक लेल प्रेरित-उत्साहित नहि करितथि आ स्वयं विरोधक बादो लेखक आ संस्था सभसँ ओहि तरहें सम्पर्क बनौने नहि रहितथि। ओना ओ हंसराज तथा किछु अन्य लेखक मित्रकें मैथिली छोड़ि हिन्दीमे लिखबाक लेल कहि—लिखि चुकल छलाह, जकर अर्थ ओहि लेखक मित्र सभक प्रतिभाक हिन्दीमे विस्तार भ' सकैत छल, मैथिलीक अहित नहि।

हम पटना आपस आबि राजकमल जीकें पत्र लिखलियनि। हुनक उत्तर आयल—

प्रिय कीर्त्ति भाई, कलकत्ता, 16.02.1960

पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। उस दिन इच्छा रहने पर भी आप से अधिक बातें न हो सकीं। मैथिली उपन्यासों के सन्दर्भ में 'आदिकथा' की चर्चा वाला लेख आप बाबूसाहेब चौधरी, मिथिला दर्शन, बामनपाड़ा लेन, कलकत्ता—19 को भेज दीजिए। 'ज्ञानोदय' वाली कविताओं का निर्णय शीघ्र ही आपके पास पहुँच जायगी।

आशा है, सानन्द हैं। पत्र लिखा कीजिए। हमलोग कुशल हैं।

राजकमल चौधरी

नोकरी छोड़लाक बाद राजकमल जी अपन पहिल योजनाकें कार्यान्वित कयलनि। 'रागरंग'क सम्पादकक रूपमे पहिल अंकक लेल ओ कविता मंगलनि। थोड़बे दिनक बाद प्रवेशांक प्राप्त भेल आ लगले हुनक तीन गोट कार्ड—

रागरंग
7, स्वेलो लेन, कलकत्ता—1

कीर्त्ति भाई, 11.11.1960

'रागरंग' में तुम्हारी कविता तुम्हें कैसी लगी? अच्छी लगी हो तो दो-तीन नये गीत और अपने मित्रों की रचनाएँ तत्काल भिजवाओ।

पटने का हालचाल?

मैं बीमार-बीमार हूँ, इसलिए, प्यारे, लम्बा नहीं लिख रहा हूँ।

उत्तर और रचनाएँ तुरत...

राजकमल चौधरी

16.11.1960 केर हुनक दोसर पत्र—

कीर्त्ति भाई,

पत्र मिला। कहानी और गीत भेज रहे हो, शतशः धन्यवाद। पटने के और भी मित्रों-सहयोगियों से रचनाएँ भिजवाओ न। आशा थी कि तुम सविस्तर पत्र लिखोगे। अब लिखो। रचनाएँ शीघ्र भेजोगे ही क्योंकि दूसरे अंक में अब देर नहीं है। मैं बीमार हूँ। अक्सर बीमार रहता हूँ। आज नागार्जुन जी यहाँ आये थे। दिव्या (हमारी बिटिया) और शशि सकुशल हैं। हमलोग तीन दिसम्बर को दरभंगा जाएँगे। मैं तुरत लौट आऊँगा। पटने में तुमसे भेंट होगी। और?

राजकमल चौधरी

आओर 25.11.1960 केर ई तेसर कार्ड—

प्रिय कीर्त्ति,

तुम्हारा पत्र मिला है, कहानी हो सका तो 'रागरंग' में दूँगा, नहीं तो 'विनोद' में। कविता इस अंक में न जाकर अगले अंक में जायगी, क्योंकि दिसम्बर में तुम्हारी कविता गयी ही है। बुरा नहीं मानोगे तो?

तुम पटना में 'रागरंग' के एकमात्र प्रतिनिधि हो। इसलिए अपने इस पत्र के लिए वहाँ तुम्हें कुछ करना है। सबसे पहले यह कि नर्मदेश्वर प्रसाद, श्रीमती शान्ता सिन्हा, नलिन विलोचन शर्मा आदि की रचनाएँ भिजवाओ, इन लोगों के

एड्रेस मुझे भेज दो, ताकि इन्हें अंक भेज सकूँ। अपने मित्रों से भी अच्छी रचनाएँ भिजवाओ, आशा है, स्वस्थ-सानन्द हो।

तुम्हारा, कमल

हम वयस आ लेखन-क्षमता एवं अनुभव-सभ दृष्टिमे हुनका लग छोट छलियनि। वयसमे ओ हमरासँ आठ वर्ष पैघ छलाह! देशक प्रायः समस्त नगर-महानगरकें ओ धांगि चुकल छलाह। एकर विपरीत हम नितान्त अनुभव-शून्य। ओना तत्कालीन समस्त साहित्यिक पत्र-पत्रिकामे हमर हिन्दी रचना नियमित रूपसँ छपैत छल। 'नयी कविता'क कविक रूपमे थोड़ बहुत स्वीकृति सेहो भेटि गेल छल किन्तु, लेखनमे हुनका समक्ष हमर कोनो गिनती नहि छल (आ ने आइ अछि)। ई हुनक उदारता छलनि, जे हमर लघुताकें बिसरि हमरा प्रति ओ मित्र-भाव रखैत छलाह आ प्रकाशित रचना सभ पर अपन प्रतिक्रिया पठबैत रहैत छलाह। एतय हुनक एकटा आओर पत्र—

प्रिय कीर्त्ति, कलकत्ता, 22.02.1961

तुम्हारे पिछले पत्र का उत्तर मैंने अवश्य ही लिखा था। शशि दरभंगा गयी है, तब से मैं अव्यवस्थित अवश्य हो गया हूँ। 'रागरंग' फरवरी अंक तुम्हें भेजा है, मिला ही होगा। 'नयी कविता' वाली तुम्हारी नयी कविता बहुत प्यारी लगी। हमें भी एक-दो नयी कविता भेजोगे? और?

कमल

ऊपर हम लिखने छी जे राजकमल जीकें कलकत्ताक प्रवासी मैथिल वर्ग आ मैथिल संस्था सभसँ स्नेह-सहयोग भेटैत छलनि आ हुनको स्वजन-आत्मीय तथा मैथिल समाजक मध्य अन्तरंगताक अनुभव होइत छलनि मुदा, संगहि एकटा दोसरो स्थिति छल, जाहिमे ने तथाकथित मैथिल समाज हुनका पसिन्न करैत छलनि आ ने ओ ओकरा देख'-बर्दास्त कर' चाहैत छलाह।

ओना त', सौंसे देशमे सिद्धान्त-व्यवहार अथवा 'कथनी-करनी'मे कतहु साम्य नहि भेटल किन्तु, मैथिल समाजमे एकर स्थिति कनेक भिन्न छैक। एत' एहि वैषम्य पर आदर्श, सच्चरित्रता, उदारता, कृपा आदिक तहगर लेप चढ़ल रहैत छैक। खैनी, बीड़ी, सिकरेट, भांग, गांजा प्रायः अधिकांश लोक खाइत-पिबैत छथि। छोट-पैघक बीचसँ कनेक मर्यादाक झालड़ि कें हटा देल जाय त' एहि सामाजिक स्वीकृति प्राप्त निशांक प्रति कतहु विरोध-भाव नहि भेटत। मुदा, दारू आ सेक्स!

दारू आ सेक्समे राति भरि आकंठ डूबल रह' वला व्यक्तियोकें जँ भिनसरमे कहि देनि जे राजकमल रतुका बैसारमे पीबिकें आयल छलाह त' आ 'राम-राम' कहि तामसें लाल भ' जाइत छलाह।

राजकमल ओहि 'अन्तः शाक्ताः बहिः शैव्याः सभामध्ये च वैष्णवाः' वर्गकें नीक जकाँ चिन्हैत छलाह आ ओकरा देखार कर'मे आनन्दक अनुभव करैत छलाह। ओकर छद्म रूप पर चढ़ल मर्यादाक लेपकें अपन असाध्य व्यवहारक 'पेट्रोल' सँ साफ क', असली रूपसँ लोककें परिचित कराब' चाहैत छलाह।

एतय दू-एकटा प्रसंगक उल्लेख आवश्यक।

कलकत्ताक कोनो मैथिल संस्था द्वारा दिगम्बर जैन विद्यालयक सभागारमे 'विद्यापति पर्व' मनाओल जा रहल छल। बाहरसँ मायानन्द मिश्र आ प्रवासीकें बजाओल गेल छलनि। हमरो बजाओल गेल किन्तु, राजकमलकें बजाओल जाय अथवा नहि, एहि पर घमर्थन चलि रहल छल। हम निमंत्रण-पत्र आन' वला स्वागत समितिक ओहि सदस्यकें राजकमल जी कें बजयबामे असौकर्यक कारण पुछलियनि। ओ कहलनि—'जे राजकमल जी स्थानीय कवि भइयोकें पाइ मंगैत छथिन। संगहि मंच पर कोन रूपमे उपस्थित होयताह से नहि क्यो कहि सकैत अछि।' हम कहलियनि—'पाइ त' हमहुँ बिना नेने नहि जायब आ राजकमल जी औताह तखनहि जायब। नीक हो जे निमंत्रण-पत्र घुराकें नेने जाउ।' ओ कनेक काल दुविधामे पड़ल रहि, पत्र हाथमे ल', 'साँझ फेर आयब' कहि विदा भ' गेलाह।

साँझखन ओ दू-तीन आओर मैथिल बन्धुक संग डेरा पर उपस्थित भेलाह। कहलनि—'राजकमल जीकें हकार पठा देल गेल छनि आ ओ काल्हि सम्मेलनमे अयबा केर स्वीकृतियो द' देने छथि एवं अहाँक लेल ई पुरजी देने छथि।

दोसर दिन नियत समय पर हम सभागार पहुँचैत छी। ज्ञात होइत अछि, राजकमल जी आबि चुकल छथि एवं बगल वला कोठरीमे मंच पर पढ़क लेल कविता लिखि रहल छथि।

हम ओहि कोठरीमे प्रवेश करैत छी, ओ गंजी पहिरने, कान्ह पर 'तौलिया' रखने सिकरेट पीबि रहल छलाह। हम चरण-स्पर्श क' पुछलियनि—'भाइ साहेब, भोजन क' कें आयल छी?' कहलनि—'भोजन परसँ उठिकें हाथ पोछैत सोझे एतहि आयल छी।'

हम सोच' लगलहुँ—ई गंजी पहिरने, तौलिया रखने 8/10 मीलक यात्रा क' कें एतय ओहिना आबि गेल छथि, जेना क्यो अचानके आंगनसँ दरबज्जा पर आबि जाइत अछि। सुनने रही जे किछु वर्ष पूर्व निराला जीकें सम्मानित कर'क लेल कलकत्ता बजाओल गेल छलनि। ओ ओहि समयमे अल्पकालिक विक्षिप्तताक अवस्थामे छलाह। जखन-तखन 'दौरा' पड़ि जाइत छलनि। लुंगी पहिरने उघारे देह

'मंच' पर आसीन छलाह आ सभाक बिच्चेसँ उठिकें सड़क पर आबि दहाड़' लागल छलाह। राजकमल महान 'जीनियस' छथि से त' बुझल छल किन्तु, निराला जकाँ कखनहुँ विक्षिप्त वला आचरण कर' लगैत छथिथ्से ओहि दिन बुझल।

मंच पर साहित्यकार आ अतिथि आबि चुकल छलाह। श्रोता सभ मायानन्द एवं प्रवासीक गीत सुनबाक लेल उताहुल होम' लागल छल।

राजकमल जी कोठरीसँ बहराइत छथि। सभ ज्येष्ठ-श्रेष्ठकें हाथ जोड़ैत एक कातमे बैसि जाइत छथि। 'माइक' पर हुनक नाम लेल जाइत छनि। ओ ओहिना गंजी पहिरने आ तौलिया कान्ह पर नेने माइक ल'ग जाइत छथि, किछु बजैत छथि आ लगले आबिकें बैसि जाइत छथि। ओ सभापति आ श्रोताकें सम्बोधित कयलनि आ कि कविता सुनौलनि–केओ नहि बूझि सकल। हमहूँ नहि। कहलियनि–'भाइसाहेब, अपनेसँ कविता सुनयबाक अनुरोध कयल गेल छल।' ओ कहलनि–'जे बजलियैक ओ कविता नहि रहैक त' की छलैक!' आ लगले बसक टिकट पर लिखल चारि पाँति देखा देलनि।

ओ मंच परसँ हमरा नेने विदा होइत छथि। हमरा डेरा परसँ होइत राजेन्द्र छात्र-निवास (जतय ओहि समयमे डॉ. सूर्यदेव शास्त्री रहैत छलाह) पहुँचैत छथि। संयोगवश सूर्यदेव शास्त्रीक चौकी खाली रहनि। टेबुल पर एक लोटा पानि राखल रहनि। हम कहलियनि–'सूचनार्थ एकटा पुरजी लिखिकें एतय छोड़ि देल जाय।' ओ कहलनि–'लोटा वला पानि चौकी पर गिरा दहक। भीजल ओछाओन देखि शास्त्री अपनहि बुझि जायत।'

ओहि दिन भाइसाहेबक संग हम दुपहरसँ 8-9 बजे राति धरि रही। हुनका बसमे चढ़ाकें डेरा घुरल रही। ने ओ पीने रहथि आने कोनो अन्य कारणे असामान्य छलाह।

दोसर दिन गत दिवसक आयोजनक वर्णन करैत किछु मैथिल बन्धुकें कहैत सुनलियनि–'समारोह आओर भव्य होइतए जँ राजकमल पीबिकें नहि अबितथि। एतबे नहि, सुन'मे आयल, लोक सभ बतिआइत छलाह, राजकमल निशांमे ततेक ने निभेर छलाह जे एक्को पांति बाजि नहि भेलनि। श्रोताकें बसक टिकट देखाकें बैसि गेलाह। एतेक बेसम्हार छलाह जे कीर्त्तिनारायण अपन डेरा पर, पिताक डरें नहि गेलथिन। राजकमल राजेन्द्र छात्र-निवास जाक' सूर्यदेव शास्त्रीक ओछाओन पर रद्द कयलनि आ सौंसे कमराक हालति खराब भ' गेलैक।'

हम ने एहि कथाक (जे बादमे दन्त कथा भ' गेलैक) प्रतिवाद कयलिऐक आ ने करब आवश्यक बुझलिऐक। राजकमलक सम्बन्धमे एहन सैकड़ो-हजारो

कपोल-कल्पना आ अफवाहकें हुनक जीवन-चर्या मानि लेल गेल छलनि। राजकमल जी कहियो एहि तरहक अदगोइ-बदगोइक परबाहि नहि करैत छलाह। स्वयं ओहि सभक रस ल', अपन स्वीकृतिक मोहर लगा दैत छलाह, ओकरा सभकें सत्य घटना कहिकें अपन चरित्रमे जोड़बा लैत छलाह।

राजकमल जीक अपन व्यक्तित्व आ चरित्रक प्रति ई उदारता आजन्म बनल रहलनि। एहि घटना केर निराधारात्वक हम स्वयं साक्षी रही। हम कोना मानि ली जे हुनक स्वीकृति प्राप्त सभ लांछन सत्ये रहय।

तेसर दिन भेंट भेला पर राजकमल जीसँ हुनक ओहि दिनक अनपेक्षित व्यवहारक मादे कहलियनि। ओ हँस' लगलाह–'यही तो मैं चाहता था। इन बुद्धिहीनों को कुछ बोलने-बतिआने का मसाला चाहिये। मैं उन्हें परोस कर जीवित रखता हूँ–यह क्या मेरी कम मैथिली-सेवा है!' एहि प्रसंगक एतय उल्लेखक हमर मंशा ई सिद्ध करब नहि, जे राजकमलक सम्बन्धमे सभ उड़न्ती (अफवाह) निराधार अथवा कपोल-कल्पित छल। ओ की खाइत छलाह, कतेक पीबैत छलाह, कोना अस्वाभाविक आचरण कर' लागथि, कतेक फूसि बाजैत छलाह, ककरा अपमानित क' देलथिन–हुनक समसामयिक, सामाजिक आओर साहित्यिक मित्र एहि सभ चर्चामे बेशी लीन रहैत छलाह। अधिकांश हुनक प्रतिभा, लेखन-क्षमता आ साहित्यिक उपलब्धिक प्रति ईर्ष्यालु छलाह, तें प्रायः बिनु देखने हुनका चरित्रसँ एकटा 'तिल' ल' कें ठाम-ठाम पहाड़ ('ताड़' नहि) ठाढ़ क' दैत छलाह। राजकमलकें एहि सभक लेल एक्को रत्ती शिकाइत नहि छलनि। उनटे ओ प्रसन्न होइत छलाह, जे देश-कोसक सूतल लोक हमरो नाम पर सुगबुगाइत त' रहैत अछि।

दोसर प्रसंग हमरा संग हुनक व्यक्तिगत सम्बन्धक अछि आ हुनका प्रति हमर पूज्य पिता केर धारणा पर आधारित अछि।

1957-58मे कलकत्ताक अखिल भारतीय मिथिला संघक अध्यक्ष छलाह पंडित श्री महावीर झा आ प्रधान मंत्री छलाह हमर पिता पण्डित दिनेश मिश्र। ओहि वर्ष हावड़ासँ बरौनी जाइ वला 'नौर्थ बिहार एक्सप्रेस'क नाम हिनकालोकनिक अथक प्रयाससँ 'मिथिला एक्सप्रेस' राखल गेल छलैक। एहि खुशीमे विद्यापति पर्व आओर समारोहपूर्वक मनाओल गेल छल। 'मिथिला दर्शन' नियमित रूपसँ बहराइत छल। ओकर कर्त्ता-धर्त्ता श्री बाबूसाहेब चौधरी छलाह। व्यय-भार संभवतः मिथिला संघ वहन करैत छल। सम्पादकमे आन व्यक्तिक नाम रहितहुँ, राजकमल जी केर पूर्ण सहयोग ओकरा प्राप्त छलैक। एहि सभ क्रममे ओ हमर पिता केर सम्पर्कमे अयलाह। ओ हुनक हिन्दी मैथिली रचना केर पाठक-प्रशंसक होइतहुँ

हुनका प्रति अप्रसन्न रह' लगलाह। हमरासँ हुनक साहित्यिक मैत्री (व्यक्तिगत साक्षात्कार होम' सँ पूर्वक) अज्ञात नहि छलनि किन्तु, हमरासँ ओ आओर क्षुब्ध रहैत छलाह।

संयोगवश हमरो ओहि शहर (कलकत्ता)मे आबिकें नोकरी कर' पड़ल, जतय पहिनहि सँ राजकमल जी विराजमान छलाह। करैल केर नीम पर चढ़ब हमर पिताकें आओर सशंकित क' देलकनि।

पिता जीक उपस्थितिमे राजकमल जी जहिया कहियो हमरा डेरा पर अबैत छलाह, श्रद्धापूर्वक हुनक चरण-स्पर्श करैत छलथिन आ बेशी काल हुनकेसँ बतिआइत रहैत छलाह मुदा, एहन कोनो दिन नहि होइत छल जहिया हमर राजकमल जीक संग बहराइत देखि ओ अस्त-व्यस्त नहि भ' जाइत छलाह। हुनका मुँहसँ एक्को टा शब्द नहि बहराइत छलनि किन्तु, हुनक परिवर्तित भंगिमा सभ किछु कहि दैत छल।

राजकमल जीकें ई बात नीक जकाँ बुझल छलनि तथापि हुनका हमरा ओतय बेर-बेर अयबामे कष्ट नहि होइत छलनि। उनटे ओ हमरा बुझबैत छलाह, 'जहाँ तक हो उन्हें प्रसन्न रखने की कोशिश करो। बड़े पहुँचे हुए विद्वान और सहृदय व्यक्ति हैं। तुम से अधिक आधुनिक विचार के हैं लेकिन, उनका अभिजात्य और पाण्डित्य नयी पीढ़ी के तेवर को बर्दाश्त नहीं कर पाता है। मैं उन्हें तुमसे अधिक जानता हूँ, इसलिए उन्हें बर्दाश्त करने की आदत सी हो गयी है।'

हमर पिताक प्रति ई सहनशीलता ओहि राजकमलकें छलनि जे अपन पिताकें कहियो बर्दाश्त नहि क' सकलाह।

राजकमल जी प्रायः अस्वस्थ रह' लागल छलाह। ओ पटना चलि गेलाह। बीच-बीचमे कलकत्ता आबथि। हम प्रारम्भक दू-अढ़ाइ वर्षमे अपन पिताक संग 147, कॉटन स्ट्रीटमे रहैत रही। नहि-नहि करितहुँ हप्तामे एकाध दिन ओतय साहित्यकारक भीड़ जुटिये जाइत छल।

हिन्दीक लघु पत्रिका—'परिवेश'क योजना बनल। चारि अंक बहरा गेल किन्तु, राजकमल जीक कोनो रचना नहि प्राप्त भेल।

एक दिन डॉ. नामवर सिंहक अध्यक्षतामे हमरा डेरा पर एकटा गोष्ठीक आयोजन भेल। हिन्दीक पहिल लघु पत्रिका 'परिवेश'मे छपल कुमारेन्द्र पारसनाथ सिंहक कविता केर भूरि-भूरि प्रशंसा कयने छलाह। दुर्भाग्यवश प्रकाशन-व्यय आ अपेक्षित सहयोग नहि जुटा सकबाक कारणे 'परिवेश' बन्न होइ पर छल। ओहि क्रममे ककरो मुँहसँ राजकमल जीक नाम बहरायल आ तखनहि बाबूजी पहुँचि

गेलाह। सामान्य शिष्टाचारक बाद नामवर जी गोष्ठीक प्रसंग बदलि हुनका लग कालिदासक साहित्यक सम्बन्धमे अपन किछु जिज्ञासा रखलथिन। बाबूजी बड़ी काल धरि कालिदास पर बाजलाक बाद, राजकमल आ हुनक सद्यः प्रकाशित कोनो हिन्दी रचनाक मादे चर्चा उठा देलनि। हमरा नहि ज्ञात छल जे राजकमल जीक नाम लितहि भड़कि उठ' वला बाबू जी हुनक रचना सभकें एतेक गम्भीरतासँ पढ़ैत छथि आ एहन नीक धारणा रखैत छथि।

19 जून 1967 कें राजकमल जीक मृत्यु भ' गेलनि। हम कलकत्तामे छलहुँ, हमर पिता गाममे छलाह। माय आ पत्नी सेहो ओतहि छलीह। सुन'मे आयल जे आकाशवाणी पटनाक स्थानीय समाचारमे हुनक मृत्युक सूचना देल गेल छल। समाचार सुनितहि बाबूजी अचेत भ' गेल छलाह। जाहि बेटाकें ओ 'आबारा' कहि डँटैत रहैत छलाह (आ ओ आँखि झुकौने हँसैत रहैत छलनि) ओकरा लेल आइ कनैत-नोर बहबैत, हमरासँ सम्पर्क कर'क लेल छटपटाइत छलाह।

राजकमल जीक अव्यवस्थित जीवन, स्वेच्छाचारिता, निशाँ-सेवन, स्वास्थ्यक उपेक्षा, रोगाक्रान्त भ' गेलाक बादो अवसर भेटितहि कुसंयममे स्वास्थ्य जोहबाक प्रवृत्ति आदिक प्रति, अत्यन्त क्षुब्ध-क्रूर रहितहुँ, बाबूजी अपन एहि 'आत्महंता' (हुनकहि शब्दमे) युवकक विलक्षण प्रतिभा आ लेखन-क्षमतासँ परिचित छलाह किन्तु, हुनका अभावमे स्त्री आ छोट-छोट धीआपुताक समक्ष उत्पन्न समस्या कारण कहियो हुनका ओ क्षमा नहि कयलनि।

रोगसँ मुक्तिक लेल संयम आवश्यक होइत छैक। राजकमल जीकें कोनो संयम-नियम स्वीकार नहि छलनि। अपन दिनचर्या आ आदतिकें यथावत राखि ओ स्वस्थ होम' चाहैत छलाह। तन्त्र, दैवीशक्ति एवं उग्रताराक प्रति आस्था ओही अस्वस्थ शरीर तथा मनोदशामे जागल छलनि। ओ जिअ' चाहैत छलाह मुदा, अपना शर्त्त पर। जाधरि जीबैत रहलाह, जागल रहलाह। निशांमे मातल, सूतल, दर्दसँ कराहैत एवं शरीरक कष्टक प्रति सचेत व्यक्ति 'मुक्ति प्रसंग' नहि लिखि सकैत छल। ओ रोग आ आसन्न मृत्युक अन्तिम परिणामसँ नीक जकाँ परिचित छलाह। आजीवन दुनू केर दोहन करैत रहलाह। अस्पताल, चिकित्सा आओर ऑपरेशनकें निर्मम तटस्थतासँ देखैत, शासन, व्यवस्था, देहगति, रोग एवं मृत्युक केहन शल्य-चिकित्सा 'मुक्ति प्रसंग'मे कयलनि—ई सर्वज्ञात अछि।

'मुक्तिप्रसंग' ओ अपनहि छपौने छलाह। ओकरा ओ विज्ञापन आ प्रशस्ति नहि भेटलैक जे भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा 'मुक्तिबोध'क मरणोपरान्त प्रकाशित पहिल काव्य-संकलन 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' कें भेटलैक। तथापि निराला, मुक्तिबोध,

राजकमल आ धूमिल समान परिस्थिति आ मनोदशा केर महान कविक रूपमे सम्पूर्ण हिन्दी जगतमे प्रतिष्ठित छथि।

नागार्जुन, फणीश्वर नाथ रेणु आदि किछु अपवादकें छोड़िकें बिहारक साहित्यकारक प्रति हिन्दी जगत तथा अपन राज्यमे उपेक्षा भाव रहैत छैक। प्रकाशन, प्रोत्साहन, सम्मान आ पुरस्कारक कथे कोन, जखन बिहारमे छपल हिनकालोकनिक पोथी बाहरमे पढ़ल-पढ़ैलो कम्मे जाइत अछि। चर्चा-विश्लेषण तथा समीक्षा-आलोचनाक बेरमे सभकें विस्मृत क' देल जाइत छनि।

सेठ एवं प्रकाशक बिहारकें पोथी बेच'क लेल एकटा नीक बाजारसँ बेशी महत्व नहि दैत छथि—एतय नीक-अधलाह सभ तरहक पोथी बिका जाइत छैक। पाठक, विद्यार्थी वर्ग, शिक्षण संस्था, पुस्तकालय, सरकार सभ हुनक ग्राहकक श्रेणीमे अबैत छथि। से हुनका सभ लग पहुँचि ओलोकनि व्यावसायिक लाभ कमा लैत छथि किन्तु, लेखक जोह'क लेल दिल्ली, उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश चलि जाइत छथि। भारतक प्रकाशन मंच पर बिहारक लेखककें नायक रूपमे नहि, सिपाही बनाकें ठाढ़ राखल जाइत छनि।

राजकमल जी एहि विडम्बनाकें नीक जकाँ बुझैत छलाह। ओ अपन जीवन आ लेखनक अल्प अवधिमे अपना सोझाँ ठाढ़ ओहि देवारकें तोड़'क आप्राण चेष्टा करैत रहलाह। सफलता कतेक भेटलनि, ई हुनका ज्ञात छलनि तथापि प्रत्येक ब्यूह पर आक्रमण करैत रहलाह।

ओ सभ कुचक्रक अन्त नहि क' सकलाह किन्तु, ओहि मध्यसँ एकटा चतुर योद्धा जकाँ बहार भ' राष्ट्रीय स्तर पर साहित्यिक प्रतिष्ठा प्राप्त क' लेलनि। राजकमल बिहारक छलाह, ई बहुत लोककें हुनक मृत्युक बाद ज्ञात भेलैक। मृत्युसँ किछु वर्ष पहिनहिसँ हुनक रचना आ पत्रमे पटनाक पता रहैत छलनि।

ओ अपन रोग आ अस्वस्थताकें विज्ञापित कयलनि आ करबौलनि। हुनक किछु अन्तरंग एवं तथाकथित मित्र, एकरा हुनक धूर्त्तता केर संज्ञा दैत छलाह। हुनक आरोप छलनि, राजकमल रोग आ चिकित्साक नाम पर पीअ' आ पाइ जमा कर'क लेल हिन्दी पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ अपन पाठक एवं शुभचिन्तकक संवेदना भजा रहल छथि। किन्तु, पाठक-शुभचिन्तकक वर्ग 'मुक्तिबोध'क प्रति मध्यप्रदेश सरकार आ तत्कालीन प्रधानमंत्रीक संवेदना आ उदारता देखि चुकल छल। ओकरा लेल राजकमलक उपेक्षा असह्य भ' गेलैक। व्यक्तिगत स्तर पर सभ चिन्तातुर भ' सहयोग राशि पठब' लागल। साहित्यिक संस्था सभ सेहो सहयोग कर' लागल।

हुनक ओ मित्र-वर्ग, जे हुनका नांगट-उघाड़ आ ताड़ी-दारू पीबैत देखने छल, ईर्ष्यासँ भरि उठल। हुनका लेल राजकमल बनगाँव-महिषीवासी, सचिवालयक किरानी, 'पूरब' (कलकत्ता) जाय, कमाइ वला एकटा व्यक्ति आ एकटा समकालीन कवि-कथाकारसँ बेशी नहि छलाह।

किछु मित्र एहनो छलथिन जे हुनका ठक (फ्रॉड) कहैत-मानैत रहथिन। पत्र-पत्रिकामे हुनक चिकित्साक लेल निरन्तर बहराइत 'आर्थिक सहयोगक अपील' केर ओ लोकनि खंडन-विरोध प्रकाशित करबैत रहथिन।

बेरामीक नाम पर जमा भेल राशिसँ अस्पतालसँ बहरयलाक बाद, गाममे रहक लेल ओ एकटा टाट-खढ़क घर ठाढ़ करबा लेने छलाह। तथाकथित मित्र सभ हुनक एहि 'फरेब' कें कोना सहन करितथि—हुनका 'कठघरा'मे ठाढ़ क' देल गेलनि। मृतप्राय राजकमलकें जून 1967मे महिषीसँ पटना ल' जायब सभक लेल असह्य भ' गेलनि। जँ जीबितथि त' 'मुक्तिप्रसंग'क कवि 'मित्रप्रसंग' अवश्य लिखितथि।

राजकमल जीक विशाल मित्रमंडलीमे किछुए एहन व्यक्ति रहथि, प्रायः सभ बिहारक। देशक आन भागक साहित्यिक मंडलीमे हुनक आर्थिक दशा सुधार' आ चिकित्सा कराब' लेल अप्रत्याशित सक्रियता छल। डॉ. रामकिशोर द्विवेदी, कमलेश्वर, मनमोहिनी, चन्द्रमौलि उपाध्याय, हंसराज आदि द्वारा कयल गेल सेवासँ राजकमल जीक सभ शुभचिन्तक परिचित छथि। किन्तु, आनो अनगिनती मित्रक सहयोग-सहानुभूति हुनका भेटलनि।

राजकमल जीक हिन्दी-मैथिली लेखन पर प्रश्नचिह्न लगयबाक साहस किनको नहि भेलनि। आइयो नहि छनि। ओ 'स्वीकृत भ' सकैत छलाह 'अधिकृत' नहि। ई हुनक अहंकार छलनि। ओ आगाँ लिखने रहथि—

'मृत्यु राजकमल चौधरीकें प्रभावित नहि करैछ, किएक त' मृत्युक आतंक एतेक दयनीय होइछ, भयानकता एतेक स्वाभाविक आ रहस्यहीन होइछ जे देहगतिक एक साधारण औपचारिकतासँ अधिक मानबाक कहियो इच्छा नहि होइछ।'

(राजकमल स्मृति अंक, आखर, पृष्ठ 118)
प्रकाशित—मिथिला मिहिर : अगस्त 1988

हमर अग्रज आ सहयात्री सोमदेव

ओहि समयमे श्री (पछाति प्रो.) मायानन्द मिश्र पटना आकाशवाणीक चौपालमे काज करैत छलाह आ हम पटना कॉलेजमे पढ़ैत छलहुँ। हुनक 'बिहाड़ि पात पाथर' छपले छलनि आ ओहिसँ किछुए मास पूर्व राजकमलक 'आदिकथा' प्रकाशित भेल छल।

ताधरि हम प्रायः मैथिलीमे नहिए जकाँ लिखैत छलहुँ। दू-चारिटा कविता संभवतः छपल हैत। तथापि कलकत्ताक 'मिथिला दर्शन'क लेल ओहि दुनू पुस्तक पर समीक्षात्मक निबन्ध लिखबाक दायित्व देल गेल। आग्रह कर' वला छलाह पितातुल्य श्री बाबूसाहेब चौधरी एवं किछु अन्य स्थानीय साहित्यिक अग्रज।

लेख 'मिथिला दर्शन'मे छपल, मुदा ओकर अस्थि आ पाँजर बहार क' देल गेल छल। एहि दुनू उपन्यासक अतिरिक्त आन-आन उपन्यास सभक प्रसंगवश जे थोड़-बहुत उल्लेख भेल छल, तकरा काटि देल गेल छल। भेंट भेला पर, पत्रक सम्पादक प्रो. प्रबोध नारायण सिंह कहलनि जे–'स्थानाभावक कारण किछु अंश काट' पड़ल।'

राजकमल आ मायानन्द मिश्रकें लेख खूब नीक लगलनि (भ' सकैत अछि प्रथम गद्य-प्रयास बूझि प्रोत्साहित कर'क लेल प्रशंसा क' देने होथि) मुदा, सोमदेव जी क्रुद्ध भ' गेलाह। हुनक 'चानोदाय'क मात्र उल्लेख छलनि लेखमे।

हमर अग्रज प्रो. (डॉ.) हरिनारायण मिश्रसँ हुनक मैत्री छलनि। रचनाक माध्यमसँ हमहुँ हुनका चिन्हैत छलियनि, किन्तु व्यक्तिगत परिचय नहि छल। माया बाबूक माध्यमसँ हुनक आक्रोशक मादे जानलहुँ तँ अपराध-बोध भेल। पछाति चौपालक कोनो सम्मेलनमे भेंट भेल त' अपन अज्ञान, समीक्षाक सीमित क्षेत्र आ लेखक संग कैल गेल सम्पादकीय अत्याचारक मादे कहलियनि त' ओ स्नेह आ अपनत्वसँ भरि क' 'कोनो बात नहि' कहि प्रसंग बदलि देलनि। ई संयोग आकि हमर दुर्भाग्य जे अपन दीर्घ परिचयक अवधिमे लेखन, वक्तव्य आ व्यवहारसँ हुनका बेर-बेर आहत आ क्रुद्ध करैत रहल छियनि आ ओ आइधरि 'कोनो बात नहि' कहि प्रसंग बदलैत रहलाह अछि।

यद्यपि 'कालध्वनि'क अधिकांश कविता 'स्वरगन्धा'क कवितासँ पहिने लिखल गेल छल आ सोमदेव जी राजकमल जीसँ पहिने कविताक क्षेत्रमे चर्चित-प्रतिष्ठित भ' चुकल छलाह, मुदा संकलनक रूपमे 'स्वरगन्धा' 1958मे आ 'कालध्वनि' 1965मे छपल। प्रयोगधर्मिता आ आधुनिक बोधक दृष्टिसँ सेहो 'स्वरगन्धा' कें पर्याप्त मान्यता भेटलैक। आधुनिक कविताक विकासक क्रममे 'चित्रा'क बाद 'स्वरगन्धा' कीर्त्तिमान स्थापित कयलक आ राजकमलकें नव कविता केर सूत्रधारक रूपमे चर्चित-विश्लेषित कैल जाय लागल। सोमदेव जी एकरा ऐतिहासिक भूल मानैत रहलाह।

'कालध्वनि'क प्रस्तावनामे ओ सहजतावादक स्थापना कैलनि, जकर उल्लेख हम 'सीमान्त' (1967)क भूमिकामे कैने रहियनि। हुनका आपत्ति भेलनि जे नवकवितामे हुनक क्रान्तिकारिता आ योगदानकें हम न्यून क' क' देखलियनि। रचनाक प्रकाशन कालकें ध्यानमे राखि हुनक वरिष्ठता स्थापित नहि क' सकलियनि। हमर बहुतरास मान्यतासँ ओ असहमत भेलाह, जे नितान्त स्वाभाविक छल। भूमिकाकें फड़िछाब' आ अपन घनिष्ठ मित्र सोमदेव, हंसराज, गंगेश गुंजन आदिक किछु आपत्तिकें ध्यानमे राखि हम 'नव लेखन, अकविता आ रचनादायित्व' लिखने छलहुँ जे 'आखर'क दिसम्बर 1968 अंकक सम्पादकीयमे छपल छल।

सैद्धान्तिक मतभेद रहितो हुनक व्यवहार आ पत्राचारमे कनियो अन्तर नहि आयल। हमरा आ 'आखर' कें ओ अकुण्ठ स्नेह-सहयोग दैत रहलाह। 'आखर'क प्रत्येक अंकक प्रकाश्य सामग्री, प्रचार, विक्रय, विज्ञापन-व्यवस्था सभक चिन्ता हुनका रहैत छलनि। मित्र सभकें सहयोग देब'क लेल ओ बाध्य करैत रहैत छलाह।

'आखर'क 'राजकमल स्मृति अंक' बहार कर' काल हम किसुन जी, सोमदेव आ जीवकान्तसँ परामर्श मंगलियनि। घुरती डाकसँ सोमदेव जी एकटा प्रारूप बनाक' पठा देलनि। मैथिली पत्र-पत्रिकाक लेल नीक रचना भेटबे कठिन, ताहूमे कोनो योजनानुसार रचना लिखायब तँ प्रायः असंभव। प्रस्तावित लेखक आ राजकमलक मित्र सभकें आग्रह कैल गेलनि आ राजकमलक सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्वकें ध्यानमे राखि प्रारूपकें संशोधित-परिवर्त्तित क' 'आखर'मे छापि देल गेल।

दिन-सप्ताह-पक्ष-मास बीत' लागल। पत्र आ टेलीग्राम पठबैत-पठबैत थाकि गेलहुँ। जून बीत गेल। राजकमलक पहिल पुण्यतिथि पर स्मृति-अंक बहार कर' केर हमर संकल्प आ स्वप्न पूर्ण नहि भ' सकल।

सोमदेव जीकें लिखलियनि। ओ लिखलनि 'निराश नहि होउ, रचना लिखाब' आ आन'क लेल दरभंगा-पटना दौड़ू।'

दू मासमे तीन-चारि बेरक यात्राक बाद किछु लेख, संस्मरण आ राजकमलक किछु अप्रकाशित रचना (हुनक अनुज श्री सुधीर कुमार चौधरीक सौजन्यसँ) प्राप्त भेल। जून 1968मे प्रकाशित होम' वला स्मृति-अंक सितम्बर 1968मे प्रकाशित भेल। सम्पूर्ण आयोजन आ कार्य-सम्पादनमे लगैत रहल, किसुनजी, सोमदेवजी आ जीवकान्त जी कतेक सय कोस दूर रहितो हमरा ल'गेमे छथि आ वीरेन्द्र मल्लिक कलकत्तामे रहितो, हजारो कोस दूर विदेश चलि गेल छथि।

सोमदेवजी वयस आ लेखनमे ज्येष्ठ-श्रेष्ठ होइतो सम्पर्कमे आब' वला नवतुरियेकें नहि, नवसिखुओकें अनुभव करा दैत छथि जे ओ कतेक महत्वपूर्ण अछि आ मैथिलीकें ओकर लेखन आ सक्रिय सहयोग केर कतेक प्रयोजन छैक। ओकर कविता, कथा, लेखकें सुधारब अथवा फेरसँ लिखब, छपायब आ छपि गेलाक बाद अपन मित्र सभकें पत्र लिखि क' प्रतिक्रिया व्यक्त कर'क लेल बाध्य करब ओ अपन दायित्व बुझैत छथि। नवसँ नव रचनाकारक रचनामे कनियो रचनात्मक विशिष्टता देखि ओ ओकरा चर्चाक विषय बना दैत छथि। हुनक ई विलक्षण गुण आ सहृदयता हमरा शुरूसँ प्रभावित करैत रहल अछि।

ओ नित नवीन प्रयोग करैत छथि। व्यक्तिगत जीवन, व्यवहार आ लेखन तीनूमे अपन अद्यावधिक साहित्यिक जीवनमे ओ बहुतरास पत्र-पत्रिका बहार कैलनि, अनेक विधामे लिखलनि आ अनेकानेक कवि-लेखककें तैयार कैलनि।

तहिया फजलुर रहमान हाशमी मैथिलीमे लिखब शुरुए कैने छलाह। दू-एकटा रचना छपल छलनि। कोन पत्रिकामे कोन रचना छपल छनि, एकर बिना उल्लेख कैने सोमदेव जी हमरासँ हुनक रचनाक सम्बन्धमे प्रतिक्रिया मांगलनि। हम दुविधामे पड़ि गेलहुँ। कलकत्तामे कोनो एहन स्थान वा मित्र नहि छल जत' सभ नव-पुरान पत्र-पत्रिका एक ठाम भेटि जाय। वीरेन्द्र मल्लिक, पीताम्बर पाठक आ राजनन्दन लाल दासकें पुछलियनि, किन्तु कोनो थाह-ठेकान नहि भेटल। संयोगवश ओहि मध्य 'मिथिल मिहिर'क नवका अंक आबि गेल, जाहिमे हाशमीक एकगोट कविता छपल छलनि। हम तत्काल ओहि पर अपन प्रतिक्रिया लिखि सोमदेव जीकें पठा देलियनि। किन्तु, ओ हमर होशिआरी बूझि गेलाह आ हमरा डाँटैत लिखलनि जे 'हमर अभिप्राय हाशमीक अमुक कवितासँ छल। लगैत अछि नवका लेखकक पता लगायब आ ओकर रचना देख'-पढ़' दिस तोहर ध्यान नहि रहैत छह।'

अनुभव, साहस, कौशल आ क्षमताक धनी सोमदेव जी आनक बनैल रस्ता पर नहि चलैत छथि। रस्ता बनबैत चलैत छथि अथवा हिनका चललासँ रस्ता बनि जाइत अछि। नेपालसँ आसाम धरिक यात्रा कर' वला व्यक्तिकें कतेक ठाम हिनक बनाओल साहित्यक रस्ता भेटि जाइत छैक। पशुपतिनाथसँ कामरूप-कामाख्या धरि हिनक बनाओल तन्त्र-मार्गी पर चल' पड़ैत छैक। ओ सोमदेवी सिद्धि-यात्रा क' सकैत अछि। यात्रीकें मुट्ठीवला कागत धुर-धुराह लगैत छैक, जँ ओ रोगी अछि त' ओकर अजोह घावसँ बिनु ऑपरेशने पीब बह' लगैत छैक। खैनी-भांग-गाँजासँ ल' क' सुन्नरि स्त्री धरि ओकरा सहजे भेटि जाइत छैक। ओ जँ कवि अछि त' कविता लिखब छोड़ि, किताब बेच' लगैत अछि आ जँ पोथीक विक्रेता अछि त' ओ ओकरा गोदाममे बन्न क' भोजनालय फोलि दैत अछि।

सोमदेव जीक व्यक्तित्व बहुधंधी आ बहुआयामी छनि, दुर्दांत कल्पनाशील। ओ किछु कालमे अहाँकें केरियर आरम्भ कर', बिजनेस शुरू कर', कल-कारखाना खोल', पत्र-पत्रिका बहार कर', वितण्डा ठाढ़ कर', कॉलेज-युनिवर्सिटी खोल', सभा-समारोहक ओरिआओन कर' सभक लेल 'स्कीम' बनाक' द' देताह। खाली 'स्कीमे' नहि, अहाँक संग हप्ता-मास धरि बौअयताह आ अपन जेबोसँ सभ खर्च देताह, कतहु बाहर छी त' कर्जक व्यवस्था क' देताह, सरकारी ऑफिस जाक' कार्य-सम्पादन करा देताह आ कोनो सरकारी कर्मचारी अथवा अधिकारी घूस-पेंचक लेल अहाँक काज अटकौने अछि, त' कोनो-ने-कोनो वितण्डा ठाढ़ क' ओकरा धमकी द' अहाँक कागत पर दस्तखत करा हाथमे थम्हा देताह। हिनक मन्त्रणासँ जँ अहाँ यूनिवर्सिटी फोलि दी तँ बिना सरकारी मान्यताक परबाहि कैने डिग्री बाँटि सकैत छी। जेल-जुर्माना भेला पर ओहिसँ मुक्तिक रस्तो देखा देताह। पत्र-पत्रिका बहार कर' चाहब त' निबन्धन, विज्ञापन, गँहिकी, लेखक, रचना सभक व्यवस्था क' देताह।

अहाँकें होइत हैत, आजुक युगमे एहन परोपकारी जीव कोना भ' सकैत अछि? अपन घ'र-दुआरि, बाल-बच्चा, नोकरी-चाकरी, रोग-व्याधि सभकें बिसरि क' एना रने-बने दोसराक लेल के बौआ सकैत अछि? मुदा हमर बातक सत्यता पर लहेरियासरायसँ पटना-दिल्ली धरि पसरल सोमदेव जीक विशाल मित्र वर्गकें कनियों अविश्वास नहि होयतनि।

लेखन आ प्रकाशनक लेल पैतृक सम्पत्ति बेच' वला साहित्यकारमे श्रद्धेय आरसी प्रसाद सिंहक बाद ओ दोसर स्थान रखैत छथि। अभावक संग हिनक केहन मैत्री छनि, तकर पता वर्षक-वर्ष हिनका सम्पर्कमे रहलो सन्ताँ अहाँकें नहि लागत।

हमरा जनैत सोमदेव जी एकटा काज छोड़िक' सभ काज कैने छथि। ओ संभवतः कोनो चुनावमे नहि ठाढ़ भेल छथि। अपन सभ योजना आ सिद्धान्तक पहिल प्रयोग ओ अपने पर करैत छथि। ताधरि ओहिमे पूर्ण मनोयोग आ सम्पूर्ण शक्तिक संग लागल रहैत छथि, जा धरि कोनो दोसर योजना ओहिसँ बेशी दमगर-आकर्षक नहि बुझाइत छनि। ओहिना जेना कोनो कलाकार बिनु खयने-पीने भिनसरसँ साँझ धरि, एकान्त स्थानमे बैसि कोनो चित्र बनबैत रहैत अछि आ फिनिसिंग टच देब'क बेरमे, ठाढ़ भ' देह सोझ करैत पुनः बनैल चित्र पर 'ब्रश' नहि चला क' दोसर 'कैनवास' हाथमे ल' लैत अछि। दुर्दांत रचनात्मकताक ई लक्षण थिकैक। सफलता-विफलताक व्यावहारिक पक्ष पर सृजनरत रचनाकारक ध्यान प्रायः नहियें रहैत छैक। जँ कल्पना, विचार आ लेखनक तारतम्य नहि टूटैत, तँ एक रचना लिपिबद्ध होइत-होइत दोसरकें, दोसर तेसरकें जन्म द' दैत छैक। ई क्रम चलैत रहैत छैक—भलें भाषा आ विधा बदलैत जाय।

ई रचनात्मक ऊर्जा आ प्रयोगशीलता एक दिस सोमदेव जीक जीवनकें अनिश्चित, अभावपूर्ण आ कष्टमय बनौने रहैत छनि तँ दोसर दिस साहित्यमे हुनका लेल नवसँ नव क्षितिज फोलैत रहैत छनि।

एकहि उत्सुकता आ तल्लीनतासँ ओ मुसहर-पासीक टोलमे एकसरे जा क' ओकर नाचब-गायब (लोकगीत) देखि-सुनि सकैत छथि आ सम्भ्रान्त मित्र-वर्गक संग 'पंचसितारा' होटलमे बैसि, पश्चिमी धुन आ नृत्यक आनन्द ल' सकैत छथि। ओ मैथिलीमे उर्दू शैलीक गजल एवं पश्चिमी धुनक गीत लिखि गाबि सकैत छथि। बीजमंत्र वला कविता हुनकासँ सुनि सकैत छी (पढ़ि क' ओकरा बूझब कठिन हैत)। कोनो लोकगीत सुनयबा काल ओ अहाँकें तेहन ने मुग्ध क' देताह जे अहाँ ओकर धुनक मौलिकता धरि पहुँच'क लेल 'जनपद' जोह' चाहब आ से बिना सोमदेव जीक सहयोगें नहि प्राप्त हैत। ओना अहाँ चेष्टा क' सकैत छी, मुदा हमरा जनैत बहुतरास लोकगीत आ ओकर धुनक संग-संग ओकर जनपदो, मात्र सोमदेव जीक कल्पना अछि।

सोमदेव जी स्वयं ठकैबाक आनन्द लैत छथि, दोसरकें ठकैत नहि छथि। ओ लोककें 'हिप्नोटाइज' करैत छथि—व्यवहार आँ साहित्य दुनूसँ। 'हिप्नोटाइज' करब ठकब नहि थिकैक। हुनक व्यक्तित्वक सम्मोहन आ चुम्बकीयतासँ आकृष्ट भ' लोक हुनकासँ सटल रहैत अछि, तँ एहिमे हुनक कोन दोष?

'कालध्वनि'क माध्यमसँ सोमदेव जी अपन पाठककें 'सहजतावाद'क सात गोट सूत्र देने छलाह। पाठक सूत्रकें बिसरि 'कालध्वनि' केर कविताक आनन्द

लैत रहल, ओकर विवेचन-विश्लेषण करैत रहल आ ओहि सभमे प्रच्छन्न विराट प्रतिभासँ आश्वस्त भ' हुनक आगामी रचनाक साकांक्ष प्रतीक्षा करैत रहल।

हुनक 'लाल एशिया' (1954, हिन्दी कविता संकलन) सँ 'चरैवेति' (1983, संगीत नाट्य काव्य)धरिक हुनक काव्य-यात्रा केर अपन विशिष्टता रहल छैक।

श्रद्धेय यात्री जीकें 'लाल एशिया' पढ़ि, सोमदेवक कविकर्ममे नवदिशा केर संकेत भेटल छलनि।

तहिया सोमदेव जी हिन्दीमे लिंखैत छलाह। आइ मैथिली केर प्रथम कोटिक कवि, कथाकार, उपन्यासकार, पत्रकारक रूपमे सम्मानित छथि। संभवतः हिन्दीसँ निराश भ' आ ओहिमे बड़ बेशी प्रतियोगिता एवं साहित्यिक गोलैसी देखि ओ अपन सम्पूर्ण मनोयोग तथा लेखकीय क्षमता मैथिलीमे लगा देलनि।

एत' इहो प्रश्न उठैत अछि, जे सोमदेव जी मैथिलीयेमे लिखब किएक शुरू कैलनि, भोजपुरीमे किएक नहि?

भोजपुरी हुनक सम्बन्ध-सम्पर्क, परिवार-कुटुम्ब एवं रुचि-संस्कारक निकट रहनि। ताधरि ओहिमे सुसम्बद्ध लेखनो आरम्भ नहि भेल रहैक। सोमदेव जी बड़ थोड़ परिश्रमसँ अपनाकें सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित क' सकैत रहथि।

कोटि-कोटि भोजपुरी भाषी केर एकमात्र साहित्यक आधार छलाह, लोक कवि भिखारी ठाकुर।

ओ घ'र-घ'र, गाम-गाम, नगर-नगर अपन कीर्त्तन-मंडली (लोक ओकरा नाटक मंडली, नौटंकी मंडली सेहो कहैत छलैक)क संग जाइत छलाह आ अपन गीत, भजन, कीर्त्तन, नाच सँ गरीब-गुरबाक मनोरंजन करैत छलाह। अन्नेकें ब्रह्म बूझ' वला गरीब वर्गक बीच रहनिहार भिखारी ठाकुरकें ई ज्ञात नहि छलनि जे साहित्य की थिकैक, लिखल कोना जाइत छैक आ ओ जे आइ गाबि रहल छथि, ओ भोजपुरीक सिमानकें नाँघि कालान्तरमे श्रेष्ठतम लोक महाकाव्य सिद्ध हैतैक। नहि बूझल छलनि हुनका—ओ जे गाबि रहल छथि सैह भक्ति, प्रेम आ कविताक मूल आधार थिकैक। ओ त' मेला जमा क' राख'क लेल रात्रि-शेषमे पैंजनी बान्हि नचनियाँक रूप धारण क' मंच पर ठाढ़ होइत छलाह। तकर बाद!

तकर बाद ने भिखारी ठाकुर रहैत रहथि, ने देखनिहार-सुननिहार, ने गान-बजान। सभ बेसुधि, सुन्न, हेरायल। प्रेम आ भक्ति शरीर धारण क' भिखारी ठाकुरक रूपमे नाचैत परिवर्तित भ' जाइत छल—आनन्द आ अश्रुक अथाह समुद्रमे, कविताक असंख्य मोतीमे।

सोमदेव जी भिखारी ठाकुर आ भोजपुरीक विशेष निकट छलाह तथापि ओ

प्रभावित भेलाह विद्यापति ठाकुर आ हुनक मैथिलीसँ। की एकर कारण मात्र मिथिलामे हुनक मातृक होयब थिक, मैथिल परिवेश थिक, मिथिलांचलमे हुनक काज करब थिक? एहन अवसर त' बहुतो लेखककें भेटैत छनि। अज्ञेय, मुक्तिबोध सन दू-चारिटा अपवादकें छोड़ि क' दोसर भाषामे प्रवेश कर'क खतरा के मोल लैत छथि?

कोनो भाषाकें सीखब आ ओहिमे निष्णात होयब, प्रतिभा आ परिश्रमक बल पर संभव छैक किन्तु, ओकरा सहज अभिव्यक्तिक माध्यमक रूपमे चुनि, ओहिमे अपन प्रतिभाक परीक्षाक लेल छोड़ि देब, कोनो आन्तरिक विवशता, कोनो अदम्य प्रेरणा आ कोनो भावनात्मक प्रतिबद्धतेक कारण भ' सकैत अछि। एहि प्रश्नक उत्तर तँ स्वयं सोमदेव जी द' सकैत छथि।

मैथिलीमे सोमदेव जीक पहिल पोथी 'चानोदाय' (सामाजिक उपन्यास) छनि। पछाति 'ब्रह्मपिशाच' 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक छपलनि, जे जासूसी उपन्यास छल।

मैथिलीक पाठक हिन्दीक जासूसी उपन्यास पर ललचायल रहैत छल। ओ तहिया एक टाकामे, 'पॉकेट बुक्स'मे उपलब्ध भ' जाइत छलैक। मातृभाषाभिमानी सोमदेव जीकें पाठकक रुचिकें देखैत आन्तरिक छटपटाहटि भेलनि। हुनके प्रेरणासँ डॉ. बी. झा मैथिलीमे 'पॉकेट बुक्स'क प्रकाशन प्रारम्भ कैलनि। मैथिलीक प्रथम जासूसी उपन्यास 'ब्रह्मपिशाच' 'होटल अनारकली'क नामसँ प्रकाशित भेल।

सस्त लोकप्रियताक लेल हमरा हुनक ई प्रयास नहि नीक लागल छल। हम पूछने छलियनि—'हिन्दीमे जासूसी उपन्यासे नहि, अश्लील साहित्यो प्रकाशित होइत छैक। की अपने ओहू दिशामे प्रयासरत छी?' ओ कहने छलाह—'हमरा अपन पाठककें छेकि क' रखबाक अछि। जँ सभ किछु मैथिलीमे भेटि जयतैक, तँ ओ हिन्दी पोथी किएक कीनत? मैथिलीमे किछुओ छपय, किन्तु छपबाक चाही।'

हम हुनक तर्क, विचार, योजना सभसँ असहमत छलियनि, किन्तु ओ जे काज सूरमे शुरू क' दैत छथि, करिते रहैत छथि। ओना मैथिलीक अधिकांश प्रकाशित पोथी 'पॉकेट बुक्स' जकाँ छुछुनगर होइत छल किन्तु, पहिल बेर योजनाबद्ध रूपें 'पॉकेट बुक्स' तँ हुनके प्रेरणा-सहयोगसँ बहरायल। पहिल जासूसी उपन्यासो संभवतः हुनक 'होटल अनारकली' छल।

मैथिली कविताक तत्कालीन धाराकें 'सहजतावाद'मे बान्ह'वला 'कालध्वनि' केर कवि वैदिक-पौराणिक हरिश्चन्द्रोपाख्यानक कथाधार पर 'चरैवेति' लिखलनि

जे मैथिलीक पहिल संगीत नाट्य काव्य थिक। समालोचना आ पत्रकारितोक क्षेत्रमे हिनक प्रयासकें प्रथम कोटिक मानल जाइत छनि।

सभ क्षेत्रमे प्रथम स्नातक 'दावेदार' सोमदेवजी अपन साहित्यिक ऊर्जा आ लेखन क्षमताक कारण सरिपहुँ मैथिली साहित्यक सर्वोच्च शिखर पर पहुँचि गेल छथि।

सोमदेव जीसँ जहियासँ परिचय भेल, पटनामे बिताओल प्रारंभिक किछु वर्षकें छोड़ि क', हम बिहारसँ बाहर छी। आब त' कलकत्तो छोड़नाइ सतरह वर्ष भ' गेल। एहि 27/28 वर्षक अवधिमे हुनका प्रतापें कहियो नहि बूझि पड़ल जे हम मिथिलासँ बाहर छी। ओ प्रत्येक साहित्यिक गतिविधि, गोष्ठी, सभा, पत्र-पत्रिका आ ओहि सभसँ सम्बद्ध योजनामे हमरा साधिकार सम्मिलित क' लैत छथि। ई बात दोसर थिक जे भौगोलिक दूरी आ चाकरीगत व्यस्तताक कारण हम हुनक आदेशक पालनमे प्रायः विफल होइत रहलहुँ अछि। समय पर कहियो रचनो नहि पठा सकलियनि। पहिने गाम गेला पर एक बेर लहेरियासराय जाक' सोमदेव जीसँ बिना भेंट कैने चैन नहि भेटैत छल। अपन छोट-छोट धीआपुता आ सोमदेव जीक पचीसो पोसल-न्योतल गणक लेल जलखइ-चाहसँ ल' क' भोजन धरिक व्यवस्थामे व्यस्त रह' वाली भौजी (कंचनाजी) केर व्यस्तताकें हम आर बढ़ा दैत छलियनि। जहिया बैसकी ढहल नहि छलनि, तहियो हमरा अयला पर बैसकी हुनक शयन-कक्षमे जमैत छल। कोनो-कोनो बेर बैसकी गोष्ठीक रूप ध' लैत छल। तखन आगन्तुकक सुविधाक लेल बाहर वला कोठरीमे आबि जाइत छलहुँ। कोनो काज ल' कतबो समयक लेल ओत' गेल होइ, परिवारक सदस्य जकाँ भोजन, जलपान आ रात्रि-विश्रामक लेल ओत' आबइए पड़ैत छल। आब भौजी पुतोहु-जमाय वाली भ' गेलि छथि। व्यस्तता आ दायित्व सहजे बढ़ि गेल छनि किन्तु, एहि देओरक लेल हुनक स्नेह आ आतुरता ओहिना छनि।

1971-72मे सोमदेव जी 'वैदेही'क सौजन्य सम्पादक छलाह। रचना पठयबाक आदेश देलनि। लिखलनि—'कथा पठाबह।' कथा लिख' दिस ने हमर प्रवृत्ति रहय, आ ने ओकरा लेल अपेक्षित समय बहार करब संभव छल। शुरू-शुरूमे कलकत्तामे 'मिथिला दर्शन'क लेल श्री पीताम्बर पाठक जी जोर द' क' हमरासँ कथा (मोसकिलसँ 3-4 गोट) लिखबौने छलाह—से सोमदेव जीकें ज्ञात छलनि। एकर अतिरिक्त, 'चतुर्थीक राति', 'मसीहा' 'छाहरि' ओ पढ़ने छलाह।

हुनके आदेशें आ ड'रें 'समुद्र कन्या' लिख' पड़ल छल। हड़बड़ीमे ओकरा जतेक विस्तार देबाक चाही, नहि देने रहिऐक। किन्तु, सोमदेव जी ओकरा छापिक' प्रशंसाक पुल बान्हि देने रहथि। हुनके प्रेरणासँ किछु आर कथा लिखने रही, जे समय-समय पर 'मिथिला मिहिर'मे छपल।

सोमदेव जी नव लेखक-कवि तैयार करिते छथि, पुरानो रचनाकारकें दोसर विधामे लिख'क लेल बाध्य करैत छथि। 'मिथिला भूमि' समाचार-विज्ञापन-प्रधान, दल विशेषक पत्रिका छल, किन्तु ओहू माध्यमसँ ओ कतेक नवतुरियाकें लेखक बना देलनि।

ओ 1987मे बिहार राज्य जनवादी लेखक संघ आ बिहार राज्य जनवादी सांस्कृतिक मोर्चाक संयुक्त राज्य अधिवेशनक आयोजन कैने छलाह। उदीयमान रचनाकारक लेल 'चिनगी' मंच द्वारा 'कविता रचना कर्म शिविर'क स्थापना हुनके अद्भुत कल्पनाशीलता, कार्यक्षमता एवं सभकें संगठित क' आगू बढ़ैत रहबाक लेल अवसर देबाक सोच-विचारक परिचायक थिक।

आन-आन भाषामे 'कविता वर्कशॉप' आयोजित होइत छलैक किन्तु, मैथिलीमे एहि सम्बन्धमे क्यो सोचियो नहि सकल छल।

मात्र साहित्यिक क्षेत्रमे नहि, सामाजिको क्षेत्रमे हुनक सक्रियता-संलग्नता कम नहि छनि।

दरभंगामे बिजली-पानिक अभाव, सड़क-नालाक दुर्दशा, बाढ़िक समयमे शहरमे पानिक जमाव, बीमार अस्पताल, भ्रष्टाचाररत विश्वविद्यालय, छात्र संगठन पर अत्याचार, मैथिलीक उपेक्षा करैत मिथिलांचलक आकाशवाणी, राजनीतिज्ञ द्वारा मिथिलांचलक 'वोट बैंक'क रूपमे इस्तेमाल, किसान-मजदूरक समस्या-सभ सोमदेव जीकें उद्वेलित-आन्दोलित करैत रहैत छनि।

सामाजिक समस्याक ओ निरपेक्ष तटस्थद्रष्टा बनल नहि रहि सकैत छथि। सहभोक्ता वला दर्दक संग प्रतिकारक प्रत्येक संभव चेष्टा बिना कैने हुनका चैन नहि। प्रत्येक समस्याक संग हुनक मात्र सैद्धान्तिक संलग्नता नहि, व्यावहारिक सक्रियता रहैत छनि। ओ संगठन तैयार करैत छँथि, संघर्ष समिति बनबैत छथि। आन्दोलन, जुलूस, प्रदर्शन, धरना, भूख हड़तालक नेतृत्व करैत छथि, गिरफ्तारी दैत छथि। विश्वविद्यालय आ नगर बन्नक आयोजन-आह्वाने नहि, मुख्यमंत्रीक पुतरो जरयबा काल सभसँ आगू-आगू रहैत छथि। ओ मात्र विरोध-पत्र जारी नहि करैत छथि, ओकरा पत्र-पत्रिकामे नीक जकाँ 'कवरेज' भेटलैक कि नहि, ताहू ओरिआओन-चिन्तामे ओ दिन राति एक क' दैत छथि।

हमरा जनैत साहित्य बाहरी समस्याक मध्य अन्तर्मुखी साधनाक अपेक्षा रखैत छैक। बाह्य समस्यामे व्यस्त-ओझरायल व्यक्तिक लेल साहित्य-सृजनक अपेक्षित एकाग्रता-एकात्मकता असंभव भ' जाइत छैक। ने कोनो बाहरी सुख-सुविधा, सफलता, यश, प्रस्तुति-स्तुति ओकरा रचनाकालक निरीक्षणमे मदति क' सकैत छैक, आ ने आँखिक देखल, अनुभव कैल आ घटित सत्यकें कागत पर उतारि ओ रचनात्मक सन्तोष प्राप्त क' सकैत अछि। तात्कालिकता स्थायित्व नहि दैत छैक—ने व्यक्तिकें, ने रचनाकें, यैह कारण थिक जे साहित्यकार एहि सभसँ बच' चाहैत छथि।

सोमदेव जी एतेक व्यवधान, व्यस्तता आ समस्याक मध्य रहियो क' लिख' केर समय बहार क' लैत छथि—ई आश्चर्यक विषय। वाह्य आ आन्तरिक संघर्षसँ आर गतिवान होम' वला एहन उत्कट चेतना केर जाग्रत रचनाकार भेटब कठिन।

हम अपन चाकरीगत व्यस्तताक कारण पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वसँ भागिते नहि रहैत छी, समयक अभावक घओनो पसारने रहैत छी। एतबे नहि, ठहक पारि क' लोक कें सुनबैतो रहैत छिऐक, जे ई सोलहन्नी परिस्थितिक दोष थिक जे हम नहि लिखि पबैत छी (जेना कि हमरा लिखने संसार नेहाल भ' जैतैक)। ओ कहियो नोर पोछ' नहि आबि, पनरह पैसहिया कार्डसँ हँसी-ठहक्का पठा दैत छथि आ हम आनन्दस्नात भ' कलम जोह' लगैत छी। ओ मात्र हमरे नहि, बहुतोक जड़ता पर प्रहार करैत छथि, फोंफ काटैत समानधर्मा सभकें 'कालध्वनि' सुनबैत छथि आ नवका पीढ़ीकें पौराणिक साहित्य-भण्डारसँ 'चरैवेति'क सूत्र सुना जीवन्त-ज्वलन्त-गतिशील रहक लेल प्रेरित-प्रोत्साहित करैत छथि।

प्रकाशित—वैदेही : मइ 1989

कवि-मित्र रमानन्द रेणु आ हुनक रचना

हमर वर्ग-मित्र वासुदेव जी (श्री वासुदेव दास) इण्टरमीडिएट करितहि दूरभाष विभागमे नोकरी पाबि गेल रहथि। ओ दरभंगामे कार्यरत रहथि। हम जहिया गाम आबी, ओ उपेत कए बरौनी आबि भेंट करथि आ प्रत्येक भेंटमे आर.एन. दास (श्री रमानन्द रेणु)क बारेमे भाव-विभोर भए चर्चा करैत, हमर बहुतरास समय ल' लैत रहथि। ताधरि मैथिलीमे हमर रुचि बड़ कम छल। मातृभाषाक प्रति अनुराग, संस्कार आ साहित्यिक उत्सुकतावश मैथिलीक पत्र-पत्रिकामे रमानन्द रेणुक रचना पढ़ि ई धारणा बनि गेल छल, जे ई मंचीय लोकप्रियताक लेल पारम्परिक गीत लिख' वला गीतकार छथि। आश्चर्य होइत छल जे जन्मजात 'बोलसेविक' वासुदेव जीकें आर.एन. दासमे कोन वैचारिक प्रगतिशीलता भेटलनि? कतहु विभागीय सम्पर्क त' नहि मैत्रीमे बदलि गेलनि। हम एकर रहस्य त' नहि बूझि सकलहुँ किन्तु, ओ रेणु जीकें हमर मित्र बना कए छोड़लनि।

हुनकासँ हमर सम्पर्क बढ़ल आ बढ़िते गेल। पहिल भेंट कहिया आ कतय भेल से त' स्मरण नहि किन्तु, पहिले भेंटमे हुनक आत्मीय व्यवहार, शालीनता, सुदर्शन व्यक्तित्व आ साहित्यक प्रति अभिरुचिसँ ततेक प्रभावित भेलहुँ, जे जहिया कहियो दरभंगा जाइ हुनका सँ भेंट करब, हुनका संग ल' कए घंटाक-घंटा घूमैत रहब आ बतिआइत रहब—पहिल कार्यक्रम होइत छल।

लहेरियासरायमे राय साहेबक पोखरिक ल'ग भाड़ाक मकानमे ओ रहैत छलाह। दिन भरि कतहु बौआइ किन्तु, साँझ अथवा राति धरि हमरा नेने ओ अपन बासा पर पहुँचिये जाइत छलाह। हुनक पहिल बालक पवन जीक जन्म भ' गेल रहनि। श्रीमती चन्द्रकला रेणुक हाथक बनाओल भोजन आ तीमन-तरकारीक स्वाद लैत घंटाक-घंटा बीति जाइत छल।

विशाखापतनम आबि गेलाक बाद दरभंगा जयबाक पहिला वला क्रम नहि रहल तथापि, बीच-बीचमे ओतय जायब आ सोमदेव जी एवं रेणु जीसँ भेंट करब हमर आन्तरिक विवशता बनल अछि। हमरा दुनूमे विचार, सिद्धान्त आ जीवन-शैलीक अनेकशः भिन्नता अछि। ओ हमरासँ वयसमे पैघ छथि, सात-आठ वर्ष पहिनेसँ लिखि रहल छथि। किन्तु, ई भिन्नता आपसमे कहियो कोनो विरोध नहि ठाढ़ कैलक, ने एक-दोसर केर आलोचक बनौलक। ओ बहुतरास लिखि चुकल रहथि, पत्र-पत्रिका आ कवि-सम्मेलनक माध्यमसँ पर्याप्त यश अर्जित क' चुकल रहथि, तखन हम मैथिलीमे प्रवेश कैलहुँ आ हुनकासँ सम्पर्क भेल। ओ हमरासँ बेशी सुविधाजनक स्थितिमे रहथि। मिथिलाक हृदय प्रदेश दरभंगामे रहैत रहथि आ मैथिलीमे सोचब एवं लिखब हुनका लेल सहज छलनि। हमर भावनात्मक उद्रेक हिन्दीमे होइत छल। हिन्दीमे जे लिखैत रही, ओकर पत्र-पत्रिकामे खूब स्वागत होइत छल। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकामे विद्यार्थिये जीवनसँ छपैत रही आ साहित्यिक वर्गमे चर्चा होइत छल किन्तु, मैथिलीमे त' जीवन आ क्रमबद्ध लेखनो नहि आरम्भ कैने छलहुँ तें चर्चाक प्रश्ने नहि छल। ई स्थिति बेशी काल धरि नहि रहल। मित्र वर्गक आग्रह आ दबावक कारण कविता, कथा आ आलोचना तीनू लिख' पड़ैत छल। हमर रुचिक विधा छल कविता। दोसर बात, अपन व्यस्त दिनचर्यामे कथा-आलोचनाक लेल अपेक्षित समय बहार करब कठिन छल। तें कविता बेशी लिखायल। वीरेन्द्र मल्लिक कविता जमा कैलनि, सकलदीप सिंह एवं अवधनारायण सिंह प्रूफ देख' केर भार लेलनि (यद्यपि पोथी पढ़ि कए ककरो विश्वास नहि भेल हैतैक, जे एकर प्रूफो देखल गेल होइतैक) आ अजन्ता फाइन आर्ट्स प्रेसक मालिक एवं साहित्यिक मानिक बच्छावत छाप' केर दायित्व आ 1967मे 'सीमान्त' छपि गेल। एकरा हम महज एकटा संयोग मानैत छी अन्यथा, पहिनहि लिखल जा चुकल रेणु जीक उपन्यास 'दूधफूल' ओहिसँ पहिनहि छपि जइतय। जे से। हम दुनू मित्र प्रसन्न रही जे दुनूक प्रथम पोथी एकहि वर्षमे प्रकाशित भेल। तकर बाद रेणु जीक पाँच गोट पोथी छपलनि—1969मे प्रथम कविता संकलन—अन्ततः एवं प्रथम कथा संकलन—कचोट, 1972मे दीर्घ कविता—ओकरे नाम, 1974मे दोसर कथा संकलन—त्रिकोण आ 1982मे तेसर कथा संकलन—अन्तहीन आकाश। यद्यपि अनेक पाण्डुलिपि तैयार छनि किन्तु, एम्हर बारह-तेरह वर्षसँ कोनो पोथी नहि छपौलनि।

प्रारम्भहिसँ रेणु जीक गीतकार आ कविसँ बेशी हुनक कथाकार आकृष्ट करैत रहल छल किन्तु, जखन हुनक उपन्यास 'दूधफूल' छपल त' हम चमत्कृत भ' उठलहुँ।

एहि उपन्यासक नायक 'सरना'क चरित्र आ व्यवहारमे लेखक द्वारा निरुपित चमत्कार आ आदर्श ततेक नाटकीय आ अविश्वसनीय लागल छल जे ओकरा

पर विस्तारसँ रेणु जी सँ बतिआएब आवश्यक बुझना गेल छल। स्मरण अछि–लहेरियासरायक 'मीरा' होटलमे कतेक घंटा धरि 'सरना' हमरा आ रेणु जीकें अपन बहुरुपिया चरित्रमे ओझरौने रहल छल। रेणु जी हमरा मिथिलांचलक निम्न मध्यवर्गीय, अशिक्षित, गरीबीक जाँत त'र पिसाइत, बेगारीक पेनासँ हँकाइत, अपन जिबैत माय-बहिन-बेटी समेत पुस्त-पुस्तानक लेल गाड़ि सुनैत, मालिकक प्रताड़नाकें अपन अभाग आ ओकर अधिकार बूझि खेत-खरिहान-बथान पर भूखल काज करैत लोकक मनोदशा आ जीवनसँ परिचित कराबैत रहल छलाह। ओ कहलनि–'जे निम्न वर्गक दमित आकांक्षाक विस्फोट सरनाक चरित्रमे देखायब हमर उद्देश्य छल। कोनो अदना चरवाहा ओ मजूर, संघर्ष कए कतेक आगाँ बढ़ि सकैत अछि आ कोनो महाजनी संस्कार वला लोकसभकें धूर चटा सकैत अछि–एकरा कथा-सूत्रमे बान्हब हमर उद्देश्य छल किन्तु, ओकर अन्त ठीके किछु नाटकीय, चमत्कारिक एवं अलौकिक भ' गेलैक।'

रेणु जीक 'दूधफूल' आ जीवकान्तक 'दू कुहेसक बाट' प्रायः एकहि समयमे सोमदेव जीक सहयोगसँ नवरंग प्रकाशन, पटना द्वारा प्रकाशित भेल छल आ दुनू उपन्यास पर हमर समीक्षा एकहि संग 'आखर'क पाँचम अंक (मार्च 1968)मे छपल छल।

तकर बाद उनहत्तरिमे हुनक पहिल कथा-संकलन 'कचोट' एवं पहिल कविता संकलन 'अन्ततः' छपलनि। एहि तरहें उपन्यास, कथा आ कविता तीनू विधामे ओ अपन रचनात्मक सक्रियताक परिचय देलनि। कालान्तरमे 'त्रिकोण' आ 'अन्तहीन आकाश' छपलनि। कवि आ गीतकार रेणु अपनाकें श्रेष्ठ कथाकारक रूपमे प्रतिष्ठित कैलनि।

अशिक्षा, अभाव, रोग, रूढ़ि, नानाविध कलह, वैमनस्य, पाखण्ड आदिसँ ग्रस्त निम्नवर्ग आ निम्नमध्यवर्गक जीवन तथा ओकर समस्या, संघर्ष एवं आकांक्षाकें शब्द देबाक लेल ओ एकटा अपन कथा-भाषाक विकास कैलनि। निठ्ठ गाम-देहातमे सोलकन वर्ग द्वारा बाजल जाइत भाषा हुनक कथा-भाषा बनि अपन भाषिक विलक्षणता सिद्ध कैलक। दलित वर्ग हिनक कथा-साहित्यक दर्पणमे जतेक स्पष्ट रूपसँ प्रतिविम्बित अछि ओ अन्यत्र दुर्लभ। हुनक कथाक प्राण-तत्व आर्थिक विपन्नता एवं सामाजिक विसंगतिमे जन्म लैत, जीबैत आ मरैत निम्नवर्गक संघर्षगाथामे छनि। दुख, यातना एवं वंचनामे अंकुरित होइत आ सूखैत जीवनकल्पसँ हुनक भावनात्मक एकात्मता हुनक कथामे अभिव्यक्त अनुभवकें विश्वसनीय बनबैत छैक।

'त्रिकोण'क आत्मकथ्यमे ओ लिखैत छथि–'जाहि वर्ग आ समाजसँ हमर साहचर्य एवं सम्पर्क रहल, ओही मध्य जीबैत व्यक्तिक क्रियात्मक स्वरूप हमर लेखनक आधार बनल। ...निठ्ठ देहातमे जन्म भेलाक कारण ओहि वातावरणमे हमर लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा एवं संस्कार-बोध भेल। हमर परिवार कोनो मशीनीकृत समाज वा वर्गसँ अनभिज्ञ छल, ओकर निश्छल व्यवहार, शहरी लोलुपता, चंचल प्रवृत्ति एवं प्रदर्शनक प्रति कनियों आकर्षणकें जन्म नहि देलक। परिणामतः हमहुँ संस्कारगत अपने गाम-समाजसँ जोड़ल रहलहुँ आ एखनो धरि हमर ई मोह-भंग नहि भेल अछि। ...एहि प्रकारक वातावरणमे जीबैत साहित्यकार अपन परिवेशक उपेक्षा नहि क' सकैत अछि।... हमर सम्पूर्ण कथा-साहित्य एहि परिसरक उपज अछि। समाजक वैह यथार्थता हमर कथाक सत्य अछि आ हमर प्रत्येक पात्र अपन समस्या आ वर्त्तमान ल' क' प्रस्तुत होइत अछि आ ओकर निदान प्रश्नसूचक बनिक' ठाढ़ भ' जाइत अछि।'

हमर मान्यता आ रेणु जीक एहि आत्म-स्वीकृतिमे रेणु जी केर समस्त कथाक यथार्थ आ जीवन्तताकें जोहल जा सकैत अछि। हुनक कथावस्तु, रचना-दृष्टि एवं शिल्प–तीनू कथाकारक रचना सामर्थ्यकें उद्घाटित करैत अछि आ हुनक कथाकें जीवनक दस्तावेज बना कए राखि दैत अछि।

रेणु जी लेखनक आरम्भ गीत-कवितासँ कैलनि किन्तु, अभिव्यक्तिक मुख्य विधाक रूपमे कथाकें चुनलनि। कथामे कथ्यक विस्तारक लेल अनन्त संभावना आ अवकाश छैक। ओ अपन लेखकीय क्षमताक दुनूमे उपयोग करैत रहलो सन्ताँ कथा-लेखन दिस विशेष ध्यान देलनि। ओहि क्रममे ओ उपन्यास लेखन सेहो कैलनि आ खूब सराहल गेलाह।

प्रारम्भसँ अपन हृदयोद्गार गीतक माध्यमसँ अभिव्यक्त कर'वला आओर गीतक राग, लय, अनुप्रास एवं विम्बमे रमल रह' वला रेणु जी 'अन्ततः'क कविता सभक संग नव कवितामे प्रवेश करैत छथि आ ओहि प्रस्थान-विन्दुसँ ई वक्तव्य दैत छथि–

'हम मानैत छी जे गीत हमर त्रस्त जीवन पद्धतिक मध्य किछु क्षणक हेतु विश्राम एवं तल्लीनताक काज करैत अछि किन्तु, पेट जरैत हो, हृदय चित्कारि रहल हो, मस्तिष्क फाटल जाइत हो त' ओहन विश्राम-तल्लीनता हमरा कतेक तोख द' सकत? ओहिसँ हम कतेक स्वस्थ भ' सकब? तें ई आवश्यक भ' गेल जे अपन वर्त्तमान स्थितिकें, अनुभूतिकें नव विन्यासक माध्यमे समाजक समक्ष राखी।'

अपन एहि उद्देश्यक प्राप्ति ओ अपन काव्य-दृष्टिक विस्तार कए एवं आधुनिक भावबोधक कविता लिखि कैलनि–'परिस्थितिक नुक्कड़ पर/बैसल हम/पीबि रहलहुँ अछि अनुभूतिक गरम-गरम चाह'–लिख' वला रेणु जी अन्ततः अपनाकें कठघरामे ठाढ़ पाबैत छथि–'हमर साक्षात्कार/एकाधिकारिक विलियन आ/भरमक कुहेसकें फाड़ैत किरिन समूह अछि/आकस्मिक परिणाममे शुद्ध/भाव-राशिक सर्जनात्मक उन्मेषसँ/सम्पूर्ण ज्ञान आ कला कें/उन्मुक्त करैत अछि/लोकापवाद हमरा भरमा नहि सकैत अछि/अर्थहीनताक आक्रोशसँ अभियोजित युग-दर्शन/बौद्धिक धारा-उपधाराकें निष्क्रिय नहि क' सकैत छैक/हम निश्चिन्त छी/आ कठघरामे ठाढ़ एकटा हम/हमरासँ अस्तित्वक आस्था आ व्याख्या/फेर-फेर देख' आ सून' चाहैत अछि/तें सँ।' (अन्ततः–कठघरामे ठाढ़ एकटा हम)।

रचनाकार जँ अपनाकें कठघरामे ठाढ़ अनुभव करैत अछि त' एकर अर्थ जे ओ साहित्यक सामाजिक भूमिकाक प्रति सजग अछि आ ओ अपनहि रचनाक सार्थकता पर, प्रयोजनीयता पर, भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगा क' ओकर 'सच' अथवा सार्थककें रेखांकित कर' चाहैत अछि। जाहि लेखकक संवेदनाक प्रयोगशालासँ एतेक सूक्ष्म परीक्षणक बाद कोनो रचना बहार हेतैक, ओकर भावात्मक आवेग भलें न्यून भ' जाइ, अर्थवत्ता अवश्य सिद्ध हेतैक।

'अन्ततः'मे हुनक 1963क बादक कविता संकलित छनि। ओहिसँ पहिने ओ शताधिक गीत लिखने-छपौने रहथि। किन्तु, ओकरा सभकें कविताक परिवर्त्तित संस्कार अथवा नव कविताक प्रकृतिक प्रतिकूल बूझि ओहिमे संकलित नहि कैलनि। ई बात दोसर थिक जे ओकर बहुतरास कविता गीतात्मकता आ रोमांटिकतासँ ततेक आविष्ट अछि जे ई कहब मोसकिल जे ओ गीत अछि अथवा नव कविता। इएह कारण अछि जे आलोचक गीतकें हुनक सहज काव्यवृति मानैत अछि आ हुनका मूलतः गीतकार।

1979मे हुनक शोक-काव्य (दीर्घ कविता) 'ओकरे नाम' प्रकाशित भेलनि। अर्थात बालकक आकस्मिक मृत्युसँ मर्माहत कवि दार्शनिक मुद्रा अपना कए मृत्युक अनिवार्यता, जीवनक क्षण-भंगुरता आ नियतिक खेल पर अपन शोकोद्गार नहि व्यक्त कए, सम्पूर्ण कालचक्र पर विचार कैरैत छथि–'आजुक वर्त्तमान मनुक्खक नैतिकताक अवमूल्यन कैलक अछि। दिन-प्रतिदिन नव-नव वैज्ञानिक अनुसंधान होइतो जीवन जीअब असाध्य भ' गेल अछि। युग सत्य अछि किन्तु जीवन असत्य। मनुक्खक क्षुद्र वैयक्तिकता मृत्युक यथार्थकें वरण करबासँ सदिखन डेराइत रहल। हम जीवन जीअब जतेक सहज बुझैत छी, मृत्युक स्वीकार हमरा हेतु ओतबे

कठिनाह बनि क' सोझाँ अबैत अछि आ हमर आशा-आकांक्षा धराउ वस्त्र जकाँ चौपेतले रहि जाइत अछि।'

मनुक्ख जीअ' चाहैत अछि, मर' नहि किन्तु, ओकरा मर' पड़ैत छैक। मृत्युकें भाग्य-विधान नहिओ मान' वलाकें कालचक्रमे जन्म-विकास-मृत्युकें प्रकृतिक नियमक रूपमे स्वीकार कर' पड़ैत छैक। जन्म आ मृत्युक मध्यक कालावधि जिअ'क लेल आ जीवन कें सार्थक बनयबाक लेल कैल गेल संघर्षमे बीतैत छैक। कविक अनुसार अन्ततः समस्त 'आहत-आकांक्षा' चौपेतल रहि जाइत छैक आ मृत्युक स्वीकार एकरा लेल अपरिहार्य विवशता भ' जाइत छैक। शोकाकुलतामे कवि सभतरि चित्कार सुनैत छथि, सभ स्त्री बन्ध्या बुझाइत छनि, सभ कोखिसँ आगि बहराइत देखैत छथि। किन्तु कविताक आदि वाक्य–'प्रतिदिन भिनसरे एकटा प्रतिमा बनाउ आ साँझमे तोड़ि दिऔ'–एकटा आत्मिक जिज्ञासामे बदलि जाइत छनि–'हमर स्वत्व किए हेरायल जा रहल अछि/हमर व्यक्ति आइ किए अबूह अछि/हमर लोक मकड़ाक जालसँ/किए आइ एना मुँह बान्हि नेने अछि... आ हम एकटा माटिक मुरुत जकाँ/कोनो ठाम स्थापित भेल एकटा धक्काक प्रतीक्षामे जीबि रहल छी जे टूटैत आकृति धुआँ/समस्त वातावरणकें अपस्याँत करैत/मूल स्थितिकें छेकि लिअए।'

किन्तु, अन्ततः कवि मृत्युक अदंकसँ निष्प्राण भ' जयबाक बदलामे जीवनक उत्साह सँ भरि उठैत छथि–'हम जीअब उत्साहक संग आ महत्वाकांक्षाक पोषण करब/आ सेबैत रहब/मोनकें/शरीरकें/गामकें/... हमरा आश्वस्तिक स्वर चीन्ह' दिअ'/हमरा अपन निजी परिस्थितिमे जीब' दिअ', बन्धु!'

कवि निराशा-अनास्थासँ मुक्त भए जीवनक प्रति विश्वाससँ भरि उठैत छथि, आश्वस्तिक स्वर चीन्ह' चाहैत छथि आ परिस्थिति, खाहे जेहन हो, ओकरासँ संघर्ष करैत जीअ' चाहैत छथि।

कविता मुक्त करैत छैक, पलायन नहि सिखबैत छैक। 'ओकरे नाम'क माध्यमसँ रेणु जी विछोहकें जीवनक प्रगाढ़ संलग्नतामे बदलि देने छथि।

रस आ रागक कवि रेणु जीमे जेना-जेना सामाजिक चेतनाक विकास भेलनि, ओ तकर अभिव्यक्तिक लेल अनुकूल माध्यम अपनाबैत गेलाह। कविता, कथा, उपन्यास सभ हुनक लेखकीय चिन्तन आ व्यक्तित्वसँ समृद्ध भेल। आइ अन्त्यज, दलित, पिछड़ा वर्ग, छोट जाति, पैघ जाति, ब्राह्मणवाद आदिकें राजनीतिक नारा बना कए ओकर तोप जकाँ प्रयोग कैल जा रहल अछि। व्यक्ति-व्यक्ति, जाति-जाति, क्षेत्र-क्षेत्रकें घृणित रूपमे बाँटि वैमनस्य उत्पन्न कैल जा रहल अछि। राजनीति

तोड़'मे विश्वास राखैत अछि किन्तु, साहित्यकें त' जोड़' छोडि आओर किछु अबिते नहि छैक। ने हजारो वर्ष पहिने आबैत रहै, ने आइ। एतय हम ओहि राजनीति अथवा पार्टीसँ प्रेरित साहित्यक बात नहि करैत छी, जे जन आ साहित्य दुनूकें राजनीति आ नेताक भक्ष्य अथवा उपयोगक वस्तु बुझैत रहल अछि।

मैथिलीक अधिकांश कथा-उपन्यासमे दलित, शोषित, पीड़ित, प्रताड़ितक चित्रण भेटैत अछि। ओहिमे शोषण आ अन्यायक विरुद्ध संघर्ष रचनाकारक मुख्य लक्ष्य रहल छैक। अपन रचना-संघर्षमे सामाजिक यथार्थसँ ओ सचक अन्वेषण-सृजन करैत रहल अछि। रमानन्द रेणुक रचनामे जीवन आ यर्थाथक प्रति एकान्त समर्पण भेटैत अछि। हुनक रचना-दृष्टि आ शिल्पबोध दुनूमे विलक्षण तादात्म्य छैक। यैह गुणक कारण ओ अत्यन्त महत्वपूर्ण आ प्रासंगिक भ' जाइत छथि।

रचनाकाल : 20 जून 1994

अनेरे ढाही लैत हमर मित्र जीवकान्त

जीवकान्त मैथिलीक प्रख्यात कवि, कथाकार, उपन्यासकार एवं चिन्तक छथि। ई एकटा सुखद संयोग अछि जे हम दुनू समकालीन छी, मैथिलीमे नियमित लेखन दिस दुनू प्रायः एक्के समयमे अग्रसर भेलहुँ आ दुनू एक-दोसरसँ प्रेम करैत, लड़ैत-झगड़ैत एखनहुँ अनवरत लिखि रहल छी आ आजन्म लिखैत रहबाक लेल संकल्प-बद्ध छी।

ओ आजीविका लेल विद्यालयमे काज करैत छथि। कतेक वर्ष धरि खजौलीमे रहथि, आब घोघरडीहामे छथि। दुनू निठ्ठ देहात किन्तु, हिनका कारण साहित्य जगतक लेल सुपरिचित नाम ओहिना जेना मधुपजीक कारण कोर्थु आ आरसी बाबूक कारण एरौत। ओ जाहि गाममे रहैत छथि ओ बरिसातक समय आ ओकर बादो पानिसँ घेरायल रहलाक कारण टप्पू बनल रहैत अछि। ओ प्रकृति, सरकार, व्यवस्था, गाम सभसँ रुष्ट आ सभक प्रति आक्रोशसँ भरल अपन खोंजाहटिमे लिखैत चल जाइत छथि। एहि लेल रीमक-रीम कागत हुनका बाढ़ियोमे भेटि जाइत छनि। पोस्ट ऑफिस नाओ पर लादि कए हुनक रचना आ पत्र शहर ल' जाइत अछि आ ओम्हरसँ गेंटक-गेंट चिट्ठी लादने हुनक घर धरि पहुँचि जाइत अछि। पहिने ओ मोसिक मात्रा देखि लिखब शुरू करैत छलाह। बेसी रहल तँ उपन्यास छानि लैत छलाह, कम रहल तँ कथा एवं नहि रहल तँ सूखल मोसिआनिमे कदुआह पानि मिला 'वाटर कलर' बनाक' कविता।

सन साठिक लगीच बहुत रास व्यक्ति मैथिलीमे लेखन शुरू कयलनि जेना राजमोहन, हंसराज, रामदेव झा, रमानन्द रेणु, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, वीरेन्द्र मल्लिक, गंगेश गुंजन आदि किन्तु, जीवकान्त अपन पहलमानी व्यक्तित्वक कारण सभसँ फराक। ताल ठोकि अखड़ाहामे सभकें ललकारबाक काज पहिने ओ स्वयं करैत छलाह, आब ई काज हुनक अनगिनत शिष्य करैत छथिन।

कोनो गोष्ठी, सेमिनार, सभा, कवि-सम्मेलनमे ओ कतबो आदरपूर्वक बजाओल जाथि, जँ ओकर व्यवस्था आ संचालन हुनक रुचिक अनुकूल नहि हो तँ किछु

काल धरि आयोजनक व्यर्थता पर सोचैत रहि, कात-करौटसँ बाहर भ' जयताह। थोड़ेक कालक प्रतीक्षाक बाद जखन हुनका जोहब आरम्भ हैत तँ केओ सूचित करत जे ओ एखने हुनका बस-स्टैण्ड अथवा टीसन दिस जाइत देखने रहनि।

ओ प्रायः दुखी रहैत छथि। दुखक कारण अनन्त छनि, जेना कि दरभंगा, पटना, कलकत्ता, बाढ़ि, सरकार, रचना, उपेक्षा, पत्रिका आदि-आदि। दुख आ तनावकें ओ जोहैत रहैत छथि। दुनूसँ बड़ आत्मीयता छनि। एहि दुनूक संयोगसँ आक्रोश उत्पन्न होइत छनि जे हुनक रचनात्मक ऊर्जा छनि। आवेश, क्रोध, कुंठा, पराजय आदि हिनक मनोभूमिक लेल खादक काज करैत छनि। देखैत-देखैत ओ अपन चारूभर जंगल उठा लैत छथि। ओहि पर चिड़ै, टिटही, परबा, कठखोधबा सभकें बैसा लैत छथि। लगले अकच्छ भए जंगलकें सराप' लगैत छथि। ओ सूखिकें रेगिस्तानमे बदलि जाइत अछि। यत्र-तत्र बबूर-कटैया उगि जाइत छैक। हुनका होइत छनि–हुनका संग षड्यंत्र कैल गेल अछि। कलमकें सुखा कए कटैया आ 'पीयर गुलाब' कें कैक्टश बना देबाक दुरभिसंधि। ओ तरंगि उठैत छथि आ सभकें उजाड़ि ध्वस्त क' देबाक बात सोचय लगैत छथि।

ठीक हुनके जकाँ सोचयवला हमर एकटा आओर मित्र छथि–हिन्दीक प्रसिद्ध कवि-आलोचक सकलदीप सिंह। ई दुनू सभकें ध्वस्त करैत-करैत किलोक किलो कागज 'कंज्यूम' कर' लगैत छथि।

उपरका लक्षण सभ जकरामे पाओल जाइत छैक, ओकरा जीनियस मानल जाइत छैक अर्थात अप्रतिम सृजन-क्षमतावला सनकी। जीवकान्तक यैह सृजन-क्षमता हमरा लेल हुनक ढेपाओज आ असामान्यताकें सेहो प्रिय बना देलक।

ओ लेखन विलम्बसँ शुरू कयलनि किन्तु, अपन आरम्भिके रचनासँ हमरा पर वशीकरण चला देलनि। 1965मे हुनक एकटा कविता छपल रहनि–'रौद, पछबा आ ग्रीष्म।' ओहिमे ओ पृथ्वीकें सूर्यक नर्त्तकी कहि, दुनूकें चुम्बन-आलिंगनरत देखबैत छथि। परिणामतः ग्रीष्म 'महाकार ब्लास्ट फर्नेस'मे परिणत भ' जाइत अछि।

हमर कोनो लेखमे ओकर चर्चा देखि सम्भवतः ओ हमरा पहिल बेर पत्र लिखने रहथि, भेंट पहिल बेर सुपौलमे, 1967मे भेल छल।

दुनूक प्रकृति, रुचि, सिद्धान्त आदिमे अद्भुत साम्य छल। पार्थक्यक कोनो बिन्दु छल तँ मात्र ई जे ओ देहातमे आ हम महानगरमे रहैत छलहुँ। ओ एकटा स्कूलमे शिक्षक छलाह, हम एकटा पैघ औद्योगिक प्रतिष्ठानमे अफसर। किन्तु हम दुनू समान रूपसँ नौकरीकें रोटीक लेल कैल गेल अपरिहार्य अपराध मानैत रही आ जिअ'-लिख'क लेल ई अपराध क' रहल छलहुँ।

एकटा आओर वैषम्य छल। पिताक मृत्युक कारण हुनका आइ.एस-सी. कयलाक बादे नोकरी पकड़य पड़ल रहनि, हम एम.ए.क पढ़ाइ पूरा कए कलकत्ता गेल रही–नियुक्ति-पत्र हाथमे ल' कए। हुनकामे शिक्षा पूरा नहि क' सकबाक कचोट छलनि, शहरसँ दूर आ साहित्यिक परिवेशसँ कटल रहबाक मानसिक कष्ट छलनि, सुविधा-सम्पन्नताक प्रति संदेह तथा घृणाक भावना जड़िया रहल छलनि। ओ ई मान' लेल तैयार नहि होइत रहथि जे परिश्रम एवं इमानदार प्रयाससँ अर्जित योग्यता एवं सफलता ओहिना सुख-संतोष दैत छैक जेना, कठिन परिश्रमसँ उपजाओल फसिल।

एक-दोसरक प्रति आत्मीयता एवं स्नेह-भाव, लगैत अछि, आरम्भेसँ व्यक्तिगत दुर्बलतामे परिणत भ' गेल छल। एकर अर्थ ई नहि जे हम लड़ैत-झगड़ैत नहि छी। आक्रमण बेसी खेप हुनके दिससँ होइत अछि। हम ने उत्तर दैत छियनि आ ने अपनाकें 'डिफेण्ड' करैत छी। किछु दिन धरि औनाइत रहि जाहि घटना अथवा रचनाक ओ विरोध क' चुकल रहथि, तकरे प्रशंसामे ओ पत्र एवं लेख लिख' लगैत छथि।

'हम स्तवन नहि लिखब' केर विक्रय-वितरण केर समस्या छल। जीवकांत लिखलनि, दरभंगा आउ। नियत तिथि आ स्थान पर ओ हमरासँ पहिनेसँ पहुँचल रहैत छथि। एकटा पुरान झोरामे पोथी भरि हमरा लोकनि श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर'क ओतय पहुँचैत छी आ गप्प-सप्प तथा चाह-पानक बाद विदा भ' जाइत छी। रिक्शा बड़ी दूर धरि निकलि जाइत अछि तँ जीवकान्त चौंकैत छथि–'कीर्त्ति, पोथी खाली कए झोरा आनब बिसरि गेलह। रिक्शा घुराब'।' हम कहलियनि–'नीके भेल। पोथी बिकाइत तँ नहिए, घुरा क' ल' जयबामे वागीशकें सुविधा हेतनि। ओहुना झोरा बड़ पुरान अछि आ गाड़ीक टैम सेहो भ' गेल अछि।'

हमर बात हुनका पसिन्न नहि पड़लनि आ एहनो छोट प्रसंगमे हमर अभिजात-संस्कारक गंध हुनका बुझयलनि। ओ खजौली पहुँचि, ओहि प्रसंगकें आधार बना एकटा कथा लिखलनि। छपला पर ओकरा पढ़ि कए किशोरवय केदान कानन क्षुब्ध। हमरा दुनूक प्रति ओ श्रद्धा राखैत छलाह आ पिता-तुल्य बुझैत छलाह, संगहि दुनूक मैत्रीसँ सेहो परिचित। हुनका अपन एक आदरणीय द्वारा दोसर आदरणीयक प्रति ईर्ष्या-अपमानयुक्त भावना एवं शब्दक प्रयोग आहत कैलकनि। क्षुब्ध भए ओ पत्र लिखलनि। हम बुझौलियनि जे जीवकान्त हमर घनिष्ठ मित्र छथि। कोनो क्षण-विशेषमे उठल भावनाक आवेगमे ओ किछु लिखि गेल हेताह। एकरा अन्यथा नहि लए, ओहि कथा-विशेषमे कथा तत्व केहन छैक–एहि पर विचार होयबाक चाही।

हमर एकटा कविता–'जादूक खेल' मिथिला मिहिरक 2 अगस्त 1981क अंकमे छपल छल। ओहिमे एक दिस एकटा गरीब जादूगर, गाम-गाम जाकें खतरनाक खेल देखा, लोक सभमे संवेदना-आश्चर्य उत्पन्न करैत अछि आ अपन पेटक आगि मिझाबक लेल पाइ वोसूलैत अछि आ दोसर दिस मानवीय सम्वेदनाक बेपार करयवला वर्ग द्वारा 'केसेट'मे बन्न कर'क लेल लोकक अभाव आ भूखमे सांगीतिक लय जोहल जाइत अछि, जाहिसँ देश-विदेशमे ओकरा बेचल जा सकय। ई वर्ग अपन बुद्धि आ पूँजीक विनियोग मुरदाकें नूआ देब'मे, लहासक लेल 'ममी' बनाब'मे आ अस्पताल एवं श्मशान घाटक दूरी मेटाब'मे करैत अछि। ई वर्ग लोकक दारिद्रय, भूख, नग्नता आ हाड़-पाँजरकें मार्केटेबुल अथवा पण्य बनबैत अछि, मानवीय संवेदनाकें अपना लेल लाभदायक बनबैत अछि। एहि कवितामे ने कतहु क्षेत्रीयता, ने व्यक्तिगत आक्षेप रहैक किन्तु, प्रतीकात्मक अर्थमे चारि गोट गाम-रहिका, महिसी, घोघरडीहा आ शोकहराक उल्लेख भेल रहैक, जे चारि गोट साहित्यकारसँ सम्बन्ध राखैत छल। जीवकान्तजीमे भावनात्मक तरंग उत्पन्न करबाक लेल एतबा पर्याप्त छल।

लगले मिहिरक 30 अगस्त 81क अंकमे हुनक प्रतिक्रिया छपलनि–...'शिल्पक दृष्टिसँ कविता श्रेष्ठ छनिहें, एहि दृष्टिसँ ई कविता बहुत दिन पर नीक सुतरलनि अछि। कीर्त्तिनारायण मैथिलीक चारि गोट कविकें खूब गरिऔलनि अछि। ई कवि थिकाह–राजकमल, कीर्त्तिनारायण, जीवकान्त आ उदयचन्द्र झा विनोद। प्रतीकात्मक रूपें कवितामे चारि गोट स्थान-विशेष आयल अछि। ...ओ कहैत छथि जे एहि चारू कविये जकाँ मैथिलीमे सभ कविलोकनि एक्के रंग बाजीगर आ अपन पेट भरबा लेल बोनिहार-भिखारि छथि।'

ओ पहिने कविता पर मुग्ध भए प्रशंसाक पुल बन्हैत छथि आ फेर कवितामे चर्चित गामक मादे सोचैत छथि आ भड़कि उठैत छथि।

विरोध हुनक संस्कारमे नहि छनि आ सदाशयता संग नहि छोड़ैत छनि तथापि ओ ललकारा पर लाठी भाँज' लगैत छथि। हमरा हुनक लिखब आ लाठी भाँजब दुनू नीक लगैत अछि।

हमर एकटा आओर कविता सम्पूर्णतः हुनके पर अछि–'अनेरे ढाही लैत', जे 1985मे 'भाखा'मे प्रकाशित भेल छल। (दुनू कविता 'ध्वस्त होइत शांति स्तूप'मे संकलित अछि)। किन्तु हुनका एहि मादे लिखलियनि, कहलियनि नहि। कविता छपलाक बाद ओ गद्गद् भए पत्र लिखने रहथि। ओहि कवितोमे एकठाम हुनक नामो आयल रहय किन्तु, हम जानि कए हटा देने रहियैक।

हम कोनो पत्रमे हुनका लिखलियनि–'अगिला बिहार-यात्रामे हम तोहर खजौली देख' चाहैत छी। ओ प्रसन्नता व्यक्त करैत प्रस्ताव स्वीकार कैलनि आ लिखलनि जे 'हम तोहरा दरभंगामे अमुक स्थान पर अमुक तिथिकें प्रतीक्षारत भेटबह।' हम पहुँचैत छी। ताधरि ओ साकेतानन्दसँ सम्पर्क कए रमेश्वरलता संस्कृत कॉलेजमे एक गोष्ठीक आयोजन करबा नेने छलाह आ सोमदेव, रमानन्द रेणु, केदार कानन समेत पचासो साहित्यकारकें नियत समय पर उपस्थित रहबाक आग्रह क' चुकल छलाह। हमरासँ डेढ़ घंटा धरि अकविता आ कविता पर भुतबकारा करबाओल गेल–कॉलेजक प्रधानाचार्य डॉ. उपेन्द्र झा 'विमल'क उपस्थितिमे। पछाति ओकरा तीन हिस्सामे बाँटि, तीन सप्ताह धरि प्रसारित करयबाक ओरिआओनो वैह कैलनि।

खजौली जयबाक हमर आग्रहकें ओ बिसरल नहि रहथि। कहलनि–'भाइ, आब बड़ विलम्ब भ' गेलह आ काल्हिये बरौनीसँ तोहरा विदा होयबाक छह। आब खजौली दोसर खेप।'

ओहि दिन खजौली हम नहि जा सकलहुँ किन्तु, 1990मे ड्योढ़ जयबाक अवसर भेटि गेल। ओहि वर्ष अप्रैलक अंतिम सप्ताहमे गाम जयबाक हमर पूर्व निश्चित छल। ड्योढ़क कथा रैलीक तिथि 29 अप्रैल पड़लैक। ड्योढ़ पहुँचिते प्रभास जी एवं किछु अन्य मित्र सभक संग गामक परिभ्रमणक लेल बहरौलहुँ, नबका पोखरिक भीर पर बैसि सरस जी एवं प्रदीप जीक गीत सुनलहुँ। कथा-रैलीमे भाग लेबाक लाथें, जीवकान्तक जन्मभूमि एवं कथांचल देखबाक अवसर भेटि गेल। घुरती बेर प्रभास जी, रमण जी आदि झंझारपुर आ दरभंगाक मध्यक गाम सभकें चिन्हबैत अयलाह। पैटघाटमे चाह पीअ'क लेल गाड़ी रोकल गेल तँ रमण जी लोहना जाकें धीरेन्द्र जीकें बजा आनलनि आ चाहक दोकाने पर एकटा साहित्यिक गोष्ठी भ' गेल।

जीवकान्त शहरसँ दूर रहियो कए व्यक्तिसँ संस्था भ' गेल छथि। कोनो पत्र-पत्रिका कतहुसँ बहराय, ओकरा लेल हुनक राय आ सहयोग आवश्यक भ' जाइत छैक। मैथिलीयेक नहि, आनो-आन भाषाक कवि-लेखकसँ ओ सम्पर्क बनौने रहैत छथि आ सभक अता-पता राखैत छथि। हुनका सर्वसुलभता, सहयोग-भावना, नवतूरकें प्रेरित-प्रोत्साहित करबाक प्रवृत्ति, रचनात्मक प्रतिभाक प्रति आदर-भाव आदि मैथिलीक शलाका-पुरुष स्वर्गीय भुवन जी जकाँ हुनका महत्वपूर्ण बना दैत छनि। मैथिलीक स्थिति आइसँ पचास-साठि वर्ष पहिने भुवन जीक समयमे जेहन छल, ओहिसँ बहुत भिन्न आइयो नहि अछि।

ओ विद्यालयेमे नहि, साहित्यो जगतमे गुरुजीक काज करैत छथि—गुरुजीये जकाँ। भौंहु तानि, मुखाकृतिकें कठोर बना, वाणीमे गंभीरता आ संक्षिप्तता आनि एवं हाथमे छड़ी लए। अपन ई छवि आश्चर्यजनक रूपसँ ओ पत्र पर उतारि दैत छथि आ काव्यार्थीक नाम पोस्ट क' दैत छथि। जकरा हुनक पत्र भेटैत छैक ओ प्रसन्न भए अपन मित्रकें देखबैत अछि तँ ओ मित्र सेहो अपन जेबीसँ हुनक पत्र बहार कए देखा दैत छैक। दुनू पढ़ि-पढ़ि लिखैत अछि आ लिखि-लिखि फाड़ैत रहैत अछि। कतबो 'होमवर्क' कए ओ 'टास्क' पूरा करैत अछि किन्तु, अपन गुरुजीकें संतुष्ट नहि क' पबैत अछि। गुरुजी ओकर रचनामे जे देखय चाहैत छलथिन से नहि भेटैत छनि। ओ अपन निर्देश पठाबैत छथि—एकरा फेरसँ लिखू आ एना लिखू। ओ लिखैत-लिखैत अपनाकें लेखक मान' लगैत अछि किन्तु, गुरुजीकें एहिसँ सन्तोष कतय?... 'नवतुरिया सभक रचना पढ़ैत छी। कथामे कोनो नवीनता नहि भेटैत अछि। मुद्राक उग्रता नीक होइतो, कोनो पैघ मूल्य नहि थिक। एहन कोनो कृति नवतूरक नहि मोन पड़ैत अछि जे अपना रचनासँ अपन व्यक्तित्वकें, भीड़सँ बेरा सकल हो।' (लाल धुआँ, नवम्बर 1977)

जीवकान्तक जीवन-दृष्टि आ काव्य-दृष्टि अपन छनि। ककरो कोनो कर्ज हुनका पर नहि। ओ दुर्वासा जकाँ ककरो सम्बन्धमे किछुओ बाजि-लिखि सकैत छथि—एकदम निर्धोख भए। हुनका सम्बन्धमे डॉ. रमानन्द झा 'रमण'क ई शब्दचित्र उद्धरणीय लगैत अछि—'जीवकान्तक कविता आ समय-समय पर प्रकाशित लेख वा टिप्पणीसँ पहिल तथ्य ई प्रकट होइत अछि, जे हुनका ने तँ पूर्ववर्त्ती वा पुरान पीढ़ीक कविलोकनि पर विश्वास छनि आ ने ओ अपन परवर्त्ती कविगणक क्षमताक प्रति आस्थावान छथि। जीवकान्तकें देश आ समाजक व्यवस्थो पर विश्वास नहि छनि। एही मानसिकताक स्थितिमे जीवकान्त यात्रीकें मार्क्सवादक ढोलिया कहलनि तथा मधुप जी आ सुमन जीकें पुरान परम्पराक भरिया मानल अछि।' (परम्परा आ आधुनिक कविता)। अपनासँ ठीक पूर्वक पीढ़ीक कवि राजकमल, सोमदेव, किसुन, मायानन्द आ धीरेन्द्रक कवितामे व्यवस्थासँ हाथमे टिनही बाटी लेने उदारताक भीख माँगैत देखैत छथि। ओहिना नवका पीढ़ीक क्षमता पर शंका करैत जीवकान्त बकरीसँ तुलना करैत लिखल अछि—'बकरीकें केहनो गरदामी दियौक, ओकरा हरमे जोतल नहि जा सकैत अछि।' (मैथिली नव कविता, पृष्ठ 159)।

ऊपरसँ जीवकान्त केहनो उखड़ाह अथवा अगिलकाठ अथवा मणिपद्मक शब्दमे 'तुरूच्छ तुरुक' लागथि आ कतबो अगिलेसू शब्दक प्रयोग कए सभकें

रूष्ट-क्षुब्ध कैने रहथि, अपन सृजनसँ सभकें विस्मित विमुग्ध कैने रहैत छथि, सभकें अपन अकल्प विचारक प्रति साकांक्ष बनौने रहैत छथि। हुनका लेल कोनो विषय, स्थिति, घटना, परिवर्त्तन खाहे ओ राष्ट्रीय हो अथवा अन्तर्राष्ट्रीय—अछोप नहि छनि। विश्वक प्रत्येक गतिविधि पर ओ संजय-दृष्टि गड़ौने रहैत छथि, संगहि स्वार्थान्ध धृतराष्ट्रक चाक्षुष अन्धत्वक छद्मसँ सभकें सावधान करैत रहैत छथि।

आजुक धृतराष्ट्र आन्हर नहि होइत अछि। ओ स्वयं देखय नहि चाहैत अछि। स्वयं देखयमे अनेक खतरा छैक—सत्यसँ साक्षात्कार भ' जयबाक खतरा, अवांछितसँ अहेतक प्रत्यक्षीकरण होयबाक खतरा, अपनहि बनाओल चक्रव्यूहमे अपनाकें फँसैत देखबाक खतरा। ओ देखय लेल पहिने संजयकें नियुक्त करैत छल, आब कम्प्यूटर कीनैत अछि। आब ओ सुनब सेहो छोड़ि देलक अछि। ई काज ओ 'टेप' सँ कराबैत अछि। संवेदनशील मशीनक माध्यमसँ वर्गीकृत एवं यंत्र-विश्लेषित मानवीय सम्वेदनाक ओतबे अंशसँ ओ सम्बन्ध राखैत अछि, जे ओकर लाभ-विस्तारक लेल अपेक्षित छैक।

सम्पूर्ण मानव-समाज आ मानवीय व्यवस्थापक एहि धृतराष्ट्रीकरणक पाछाँ जाहि वर्गक 'की रोल' अथवा भूमिका छैक, आइ वैह वर्ग सभक आदर्श बनि गेल छैक। गाम हो अथवा महानगर—सभतरि ओकरे यशोगान भ' रहल छैक। एहि वर्गमे अकूत सामर्थ्य छैक। ओ सामाजिक-आर्थिक क्रांति आनि सकैत अछि, समृद्धिक झरना बहा सकैत अछि, भूखल-निहंगक आँखिमे भविष्यक सपना सजा सकैत अछि, राष्ट्रीय चरित्र आ संस्कृतिक नव प्रतिरूप ठाढ़ क' सकैत अछि। ओकरा लेल किछुओ असंभव नहि छैक।

जीवकान्त सन सजग रचनाकार एहि संपूर्ण स्थिति केर द्रष्टा आ भोक्ता—दुनू होइत अछि। ओ ने परिवर्त्तन केर प्रवाहमे काठक सिल्ली जकाँ बहि सकैत अछि आ ने पाथर बनि ओकरा रोकि सकैत अछि। ओ अनुभव करैत अछि आ आवांछितक विरुद्ध अपनाकें तैयार करैत अछि। एहिठामसँ ओकर आत्मसंघर्ष शुरू होइत छैक। संपूर्ण विद्रूपक मोकाबिला आत्मिक स्तर पर ओ एकसरे करैत अछि आ अपन रचनाक माध्यमसँ जनमानसकें प्रतिकारक लेल तैयार करैत छथि।

जीवकान्त विचारक कवि छथि। विचारमे उद्वेलन, अशांति, मृत्यु-भय सभ छैक, जे ने स्वस्थ काव्यक लक्षण थिकैक आ ने काव्य-धर्म, किन्तु कविताक सामाजिक दायित्वक निर्वाहमे ओकर सर्वोपरि भूमिका छैक। ओ विचार-प्रधान कविताक खतरासँ सेहो परिचित छथि तथापि कल्पना-भावनाक सारथी-चालित रथ पर नहि, चिन्तन-मनन-विचारक अश्व पर सवार भए कविता करैत छथि।

अद्यावधि प्रकाशित हुनक दूनू काव्य-संकलन—'नाचू हे पृथ्वी' एवं 'धार नहि होइछ मुक्त'मे अधिकांश कविता हुनक वैचारिक संघर्ष दिस संकेत करैत अछि। एकदिस सत्ता आ सत्ताक पाछाँ दौगैत भीड़ पर व्यंग्य करैत ओ लिखैत छथि—'लोक जूताक छाहरिमे दौड़बा लेल आ सुतबा लेल अपस्याँत रहैत अछि'—तँ दोसर दिस 'छुतहरी' संविधानसँ परिचय कराबैत कहैत छथि—'संविधान भ' गेल अछि माउग/आ सोलहो सिंगार कयने सन्हिया गेल अछि/मठमे, मीनारमे, रेफ्रिजरेटरक टिनमे/संविधान भ' गेल अछि बुढ़वा सभक धोरबी/आ चोरबा सभक भाउज।' तेसर दिस देखैत छथि तँ बुझाइत छनि—'हमर देश/हमरा सभक देश एक पुरान शामियाना थिक/हमरा सभ शामियानाक छोट-छोट खंड करब/अपन-अपन चेथड़ाकें कपार पर साटि लेब।' लगले चारिम दिशा पर दृष्टि पड़ैत छनि तँ देखैत छथि—'गणतंत्र दिवस' मनाओल जा रहल अछि। ओ प्रश्न पूछैत छथि—'आइ कोन चान अनलह अछि?/वैह ने जे अनकर इजोतसँ चमकैत अछि/ जे अनके इजोतसँ पूर्णता पबैछ/जे अनकर कृपा बिनु कटि कए शून्य होइछ.../आशा छल जे अजुका दिन उगत नव चान/आत्मबलसँ लड़त अमासँ/आ अपने प्रकाशसँ सनाथ होयत।'

चारू दिससँ निराश कविकें ऋतुचकसँ बन्हायल सूर्य कोल्हुआ बड़द जकाँ जोतायल बुझाइत छनि। ओकर आगाँ-पाछाँ-ऊपर-नीचाँ सभतरि अन्हारक षड्यंत्र चलैत देखैत छथि। ओकरा बेदम आ म्रियमाण कए ठाढ़े-ठाढ़ मारि देबाक होइत उपाय देखि, हुनका होइत छनि जे मरणासन्न बड़दक चमौटी अथवा डोरि तँ खोलि देल जाइत छैक मुदा ई सूर्य तँ मरितो काल ऋतुचक्रसँ बन्हायले रहि जायत।

सृजनधर्मी जीवकान्तकें मनुक्खक आजुक रूप अपन जड़ीभूत अवस्थामे पाथर-खंड बुझाइत छनि, जकरा रूपाकार देबाक बेगरताक ओ अनुभव करैत छथि, किन्तु रूपाकार पाबि जखन ओ सजीव भ' उठैत अछि तँ हुनका होइत छनि जे किछु आओर छल जे अप्रकट रहि गेल—'मुदा पाथरक खंड। अंतिम रूपसँ आकार पयबा लेल व्यग्र बड़ थोड़ होइत अछि।' (छेनी)

हुनक 'धार नहि होइछ मुक्त' पर हमर प्रतिक्रिया छल—'जीवकान्त निराशा, पराजय आ वैराग्यक नहि, मानवीय संवेदना, करुणा आ मनुक्खक गरिमाक कवि छथि। ओ गामसँ अथाह प्रेम राखैत छथि। गामक समस्या आ लोकक अकर्मण्यता तथा निरूपायता हुनका उद्वेलित-आन्दोलित कैने रहैत छनि, संगहि शहर अथवा नगर-उपनगर-महानगर आक्रोशसँ भरने रहैत छनि। ओ गामक आदिम रूपकें बनौने राखि ओतय नगर-महानगरक सुविधा-सम्पन्नता, उद्योग-व्यवसाय चाहैत छथि, जंगल-पहाड़-पोखरि-नदी, बाड़ी-खेत सभकें अक्षुण्ण राखि बड़का-बड़का

कल-कारखाना एवं कंकरीटक जंगल ठाढ़ करय चाहैत छथि। हुनक ई कामना विरोधाभाससँ भरल रहितो, मानव एवं प्रकृतिक प्रति हुनक आन्तरिकता कें प्रकट करैत छनि।'

(किसुन संकल्प लोकमे फुलाइत मैथिली कविता)

पहिने जीवकान्त कविताकें अपन अभिव्यक्तिक मुख्य विधा नहि मानैत रहथि। कथा-उपन्याससँ पलखति भेटैत छलनि तँ रुचि-परिवर्त्तनक लेल कविता लिख' लागैत छलाह। एम्हर किछु वर्षसँ गद्य कम, कविता बेसी लिखैत छथि आ अपन वैचारिक संवेग सम्प्रेषित करैत रहैत छथि।

जीवकान्तक लेल कथा लिखब हुनकहि शब्दमे—'कविता आ निबंधसँ बेसी 'सुखदायक काज' छनि। 'विचार कखनो आक्रामकता संग कथा-लेखनमे प्रेरणा नहि दैत छनि'। हुनक मान्यता छनि, 'कथा लिखबामे अपन समकालीन जीवनकें सभसँ नीक जकाँ अंकित कैल जा सकैत अछि।'

कथाकार जीवकान्त निस्संदेह कवि जीवकान्तसँ इमानदार, प्रशस्त आ श्रेष्ठ छथि। लिखब भलें ओ कवितासँ शुरू कयलनि किन्तु अपन कथ्य, विचार, परिवेश, परिस्थिति आ पात्रक लेल जतेक स्वतंत्रता आ विस्तारक जरूरति रहनि ओ हुनका कथा-विधामे भेटलनि, उपन्यासकें ओ कथेक विस्तार मानैत छथि।

अद्यावधि हुनक पाँच गोट उपन्यास—पनिपत, दू कुहेसक बाट, अगिनबान, नहि कतहु नहि आ पीयर गुलाब छल प्रकाशित भेल अछि।

हमरा दृष्टियें हिनक सभ उपन्यासमे सर्वाधिक सफल, सर्वप्रथम प्रकाशित किन्तु रचनाक्रममे दोसर 'पनिपत' छनि। जहिया ओ धारावाही 'मिथिला मिहिर'मे छपि रहल छल, ओहि अवधिमे हमरालोकनि प्रत्येक शनिकें कॉफी हाउस, कलकत्तामे जमा होइ, मिहिरक नवका अंक कीनल जाय आ 'पनिपत'क वाचन-श्रवणक संग कॉफीक आनन्द लेल जाय, टीका-टिप्पणी होइ आ ओकर तुलना आन-आन भाषाक नवका पीढ़ीक उपन्याससँ कैल जाय। हमर समस्त हिन्दी आ बंगलाभाषी मित्रकें लागनि जेना उपन्यासक नायक 'अरविन्द'क रूपमे जीवकान्त स्वयं हमरा सभक मध्य उपस्थित छथि आ मिथिलाक समस्या, रूद्ध प्रगति, अन्धविश्वास, अर्थाभावमे स्नेह शून्य पारिवारिक जीवन आ दिग्भ्रमित युवा वर्गक वृतान्त सुना रहल छथि।

हुनक 'दू कुहेसक बाट' एक गोट एहन छात्रक जीवन पर आधारित उपन्यास छल, जकर जन्म तँ भेल रहैक निम्न मध्यवर्गीय परिवारमे, किन्तु महत्वाकांक्षा पोसलक मध्यवर्गीय परिवारक। स्वाभिमानक विरुद्ध कोनो काज करब ओकर

संस्कारक 'जाठि' कें हिला दैत छलैक। उपन्यासक नायक 'जितेन्द्र'क रूपमे जीवकान्त मिथिलाक अधिकांश साधनहीन एवं आत्मबलरहित छात्रक चरित्र एवं मनोविज्ञानक विश्लेषण कैने रहथि। ओ उपन्यास नवतुरिया वर्ग द्वारा खूब पसिन्न कैल गेल छल।

'अगिनबान'मे गामक तथाकथित साधन-सम्पन्न तथा साधनहीन–दुनू वर्गकें अपन-अपन पाखण्ड अथवा मिथ्याडम्बरक बेरीमे छटपटाइत देखौने रहथि। ईर्ष्या-द्वेष-कलह केर आगिमे पजरैत गाममे जीवन एवं सम्बन्धक सहजताकें भस्म होइत देखा ओ सभकें अपन-अपन जहलक निर्माता आ बंदी सिद्ध कैने रहथि। तहिना 'नहि कतहु नहि'मे जन्मजात संस्कार आ पुरानक प्रति मोहान्धता पर प्रहार करैत सामाजिक मनोभावक सुन्दर चित्र उपस्थित कैने छलाह। जखन मैथिलीमे पॉकेट बुक्सक प्रकाशन डॉ. बी. झा शुरू कयलनि तँ ओ सोमदेव जीक आग्रह पर एक 'मिनी' उपन्यास 'पीयर गुलाब छल' सेहो लिखने रहथि।

कथाक क्षेत्रमे हिनक बहुतरास कथा खूब चर्चित भेल रहनि, किन्तु ताधरि लिखल कथामे सर्वाधिक चर्चित भेलनि–'टिल्हाक धुकधुकी'।

'आखर'मे एकटा स्तम्भ छलैक, जकर अन्तर्गत कोनो विशिष्ट कथाकारक कथा पर वक्तव्य एवं नवीनतम कथा छापल जाइत छलैक। ओहि स्तम्भ 'कथा-परिचर्चा'क लेल ओ अपन वक्तव्य एवं 'टिल्हाक धुकधुकी' पठौने रहथि। ओहि कथामे टिल्हाक रूपमे असहाय नारीकें पुरुषक बर्बरताक प्रतीक भालुसँ बेर-बेर मर्दित होइत आ ढाहल जाइत देखाओल गेल छलैक।

ई कथा 'आखर'क फरवरी '68क अंकमे छपलैक। ओकर छपिते हमरा किछु पत्र भेटल, जाहिमे कथाकार पर अश्लीलताक आरोप छलैक आ हमर बुद्धि-विवेक पर संदेह। एतबे नहि, किछु व्यक्ति लिखलनि–'अहाँ मात्र मैत्री-निर्वाहक लेल ओहन भ्रष्ट कथाकें छापि 'आखर'क स्तरकें गिरा देलहुँ।'

जाहि भाषामे रचनाकारक प्रति व्यक्तिगत धारणाक आधार पर बिनु पढ़ने रचना पर प्रतिक्रिया व्यक्त कैल जाइत छलैक, ओहिमे जँ कथाकें पढ़ि केओ आरोपो लगाब' वला भेटि गेल तँ हमरा लेल प्रसन्नताक बात छल। हम उत्साहमे आबि ओहि पर परिचर्चा आयोजित कैल आ सभ मित्र, परिचित एवं किछु पाठक-ग्राहककें व्यक्तिगत पत्र लिखि ओहिमे भाग लेबक लेल आमंत्रित कैलियनि किन्तु, कोम्हरोसँ कोनो उत्तर नहि। उत्साह पर सय घैल पानि ढरि गेल।

श्रद्धेय मणिपद्म जीकें अपन मनोव्यथा व्यक्त करैत लिखलियनि जे हम चाही तँ अपन सम्पादकीयमे आरोपक खण्डन क' सकैत छी, किन्तु तकरो मैत्रीक निर्वाह

मानल-कहल जायत आ जँ नहि करी तँ ककरो अज्ञान आ झूठ पर अपन स्वीकृतिक मोहर लगा देब हैत।

हुनका पर हमर पत्रक तीव्र प्रतिक्रिया भेलनि आ ओ लगले एकटा लेख 'टिल्हाक धुकधुकी : आलोचना-दृष्टि'–लिखि कए पठा देलनि जे अक्तूबर '68 (आखरक बारहम आ अंतिम अंक)मे छपल छल।

हुनक किछु आओर सशक्त कथाक नाम अछि–गहुमन, अठनियाँ पट्टी, एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे, फँसरी, सीड़क, फनिगा, वस्तु, नानी, इनकिलाब, शहर आदि जे हुनक तीन गोट कथा-संकलन–'एकसरि ठाढ़ि कदम तर रे, सूर्य गलि रहल अछि', एवं 'वस्तु'मे संकलित कथा सभक मध्य अछि।

जीवकान्त कथा-वस्तु, कथा-वातावरण एवं कथा भाषा–तीनू केर सृजनमे प्रवीण छथि। ओ घटना-विशेषसँ कथा-सूत्र बहार करैत छथि आ अपन अनुभूत विस्तार दैत छथि। परिवेश, वातावरण आ भाषा लगैत अछि, स्वतः हुनका लेल संयोजित भ' जाइत छनि।

ओ मात्र कथा लिखैत छथि। मनुक्खक कथा। ओकर दुख दैन्यक कथा। ओकरासँ सम्बद्ध संघर्ष आ जय-पराजयक कथा। हमरा कहबाक तात्पर्य ओ दक्षिण, बाम, दलित, शोषित, जाति, धर्म, बुर्जुआ, सर्वहारा, शहर, गाम आदिक 'पंथ' अथवा 'वाद'मे अपन कथाकारकें विभाजित नहि होअए दैत छथि आ ने मनुक्खकें विभाजित करैत छथि। ओ अवर्गीकृत, अविभाजित मनुक्खक कथाकार छथि। ओ अपन देसकोस, माटिपानि, घर-आँगन आ लोक-वेदमे ओझरायल रहैत छथि आ अपन ओही ओझराहटिमे सभकें समेटि लैत छथि। जमीन्दारी, सामन्तवाद, जातिवादसँ ल' कए निम्न मध्यवर्ग, भोग-भाग्य-भगवानवादी विचारधारा, शोषण, चरित्र-हनन, राजनीति-भ्रष्टाचार, सांस्कृतिक विघटन सभ हुनक चिन्ताक कारण बनल रहैत छनि।

ओ मैथिली लेल चलि रहल आन्दोलनमे अपन सक्रिय सहयोग दैत रहलाह अछि। समय-समय पर लिखल हुनक लेख आ व्यक्त विचार लोकक सुप्त चेतनाकें जगाबक काज करैत रहल अछि। संगहि ओ आन्दोलनक नाम पर खाय-कमायवला वर्ग, फोंक संकल्प, डपोरशंखी घोषणा, नपुंसक नेतृत्व, साहित्य अकादमी तथा मैथिली अकादेमीकें लूटयमे लागल महंथ-मठाधीशकें देखारो कर'मे संकोच नहि कैलनि अछि।

मैथिली अकादमीक जहिया गठन भेल, ओ बड़ उत्फुल्ल भ' पत्र लिखने रहथि। किन्तु, लगले जखन ओकर प्रकाशन-तंत्र पर किछु व्यक्तिक आधिपत्य भ'

गेलनि आ ओ हेरि-हेरि कए अपन सर-कुटुम्बसँ पोथी लिखबा कए छाप' लगलाह आ अपन दिशा-निर्देशसँ लेखक तैयार कर' लगलाह तँ जीवकान्त जीक मोहभंग भेलनि।

तहिना साहित्य अकादेमीमे मैथिली प्रतिनिधि केर क्रिया-कलापसँ ओ आहत होइत रहलाह अछि। यात्री जी, मणिपद्म जी तथा दू-एक आओर अपवादकें छोड़ि देल जाय तँ एक्को टा साहित्यकार एहन नहि भेटताह, जिनका निष्पक्ष रूपसँ हुनक पोथीक श्रेष्ठताक आधार पर पुरस्कार भेटलनि। पहिने पोथी केर श्रेष्ठ होयब नहि, लेखक केर आओर किछु होयब पुरस्कारक लेल आवश्यक होइत छलैक। पछाति मानदण्ड बदलैक तँ वयोवृद्धताक नाम पर, अपन इष्ट-अपेक्षितक पोथी छपबा कए पुरस्कार बाँट' जाय लागल। तत्पश्चात प्रतिनिधि अपन कार्यकालक निर्धारित सीमाक प्रत्येक वर्षक लेल, अपन मित्र तथा चेला-चाटीक सूची तैयार कए, पुरस्कार दिआब' लगलाह। पंजाबी तथा किछु आन भाषामे सेहो एहने जरद्गव सभक प्रवेश भ' गेल छल आ किछु पुरस्कार पोथीकें बिना पढ़ने दिआ देल गेलैक। जखन देशव्यापी हल्ला भेलैक तँ अकादमीक आँखि फुजलैक। नियममे संशोधन कैल गेल आ समिति सभक पुनर्गठन भेल। दृश्य बदललैक किन्तु, नाटक वैह चलैत रहल। जीवकान्त एहन-एहन रहस्यपूर्ण गतिविधि परसँ परदा उठाब'मे लागल रहैत छथि।

ओ निबन्ध, आलोचना, समीक्षा, भूमिका, टिप्पणी, पत्र-प्रतिक्रिया आदि जे लिखलनि अथवा लिखि रहल छथि—सभ पर हुनक स्वतन्त्र चिन्तन आ अद्वितीय व्यक्तित्वक छाप छनि।

ओ कृतार्थ होअ' अथवा करब'मे विश्वास नहि राखैत छथि तें मैथिलीक भाग्य-विधाता सभक लेल स्वीकार्य नहि छथि।

प्रकाशित —संकल्प-5 : जून 1995

जीवकान्त हमर संवादकें एकालापमे बदलि देलनि

एगारह सितम्बर 2013क अपराह्नक प्रायः अढ़ाइ बजे प्रदीप बिहारी जीक फोन अबैत अछि। हम हालचाल पूछैत छियनि तँ ओ अत्यन्त करुणार्द्र स्वरमे कहैत छथि—'हम एकटा बड़का दुःखद समाचार देबाक लेल फोन कैने छी—मास्टर साहेब (जीवकान्त जी) नहि रहलाह।' ई सूचना हमरा छाती पर वज्राघात छल। ओहि अवस्थासँ अपनाकें किछु सम्हारी कि मोबाइल पर जीवकान्त जीक जेठ बालक (अरुण जी जे किछुए मास पूर्व एतय आबि भेंट कैने रहथि) रमानन्द झा रमण, राजनन्दन लाल दास, वीरेन्द्र मल्लिक, रामलोचन ठाकुर आदिसँ मोबाइल पर गप होइत अछि।

पटनासँ हुनक लहास ड्योढ़ ल' जयबाक ओरिआओन होइत छलनि। दाह-संस्कार दोसर दिन होअएवला छलनि। हम प्रदीप बिहारीकें ड्योढ़ चलबाक बात कहलियनि। ओ थोड़ेक कठोर भ' कहलनि जे कारसँ गेलासँ अपने यात्राक कष्ट नहि उठा सकबैक आ हमरा सभक सामने दोसर समस्या ठाढ़ क' देबैक। हमरा निरुपाय छोड़ि प्रदीप जी ड्योढ़क लेल विदा भ' गेलाह।

जीवकान्त आ हम 45-46 वर्षसँ सहयात्री रही। 1965मे प्रकाशित हुनक कविता 'रौद, पछवा आ बसात' पहिल दृष्टिमे हमरा अभिभूत क' देने छल जकर चर्चा हम अपन एक लेखमे कैने रहियनि। हुनक पहिल पत्र ओही संदर्भमे आयल छल, भेंट 1967मे सुपौलमे भेल छल।

एहि अन्तरालमे हुनक छओ टा छोट-पैघ कविता-संकलन, चारि टा बालकविता संकलन, चारिटा कथा संकलन, पाँच टा उपन्यास आ दू टा पोथी आत्मकथाक प्रकाशित भेलनि। एकर अतिरिक्त बहुत रास निबन्ध, आलोचना, समीक्षा, भूमिका, टिप्पणी, पत्र आदि असंकलित छनि। ओ वैदेही सम्मान, किरण सम्मान,

साहित्य अकादेमी पुरस्कार आ प्रबोध साहित्यसम्मानसँ सम्मानित भेलाह। हुनक किछु रचना देशक अन्य भाषामे अनुवादितो भेल छनि। 'तकैत अछि चिड़ै'क हिन्दी अनुवाद साहित्य अकादेमी करबौने छनि।

जीवनक अंतिम 12-15 वर्षमे हुनक सोच, चिन्तन एवं सृजन-दिशामे अद्भुत परिवर्तन लक्षित होइछ। अपन नकारात्मक दृष्टि आ नैराश्यसँ उबर'क लेल ओ आत्मकथा एवं बाल-कविता लिख' दिस प्रवृत्त होइत छथि। ओ अपन अभावग्रस्त जीवन, परिस्थितिक परिदृश्य, समस्याक्रान्त संघर्षपूर्ण अतीत पर दृष्टिपात करैत छथि। ओहि सभसँ ओ नव सृजन-सूत्र अन्वेषित करैत छथि। अपन शिक्षकीय जीवन, शिक्षा एवं शिक्षाजगतक स्थिति एवं दौड़धूप, आन्दोलन, नारा सभसँ ओझराएल रहबाक बादो लेखनसँ अपन पहिचान बनयबाक लालसा आत्मावलोकनमे हुनक मानस-पटल पर अवतरित होइते 'पंजरि प्रेम प्रकाशिया' लिखा जाइत अछि। एहि पीठिका पर 'एकहि पच्छ इजोर'क नेओं पड़ैत अछि।

आत्मकथाक एहि भाग (एकहि पच्छ इजोर)मे लेखनसँ प्राप्त सुयश-संतोष, अपन प्रारंभिक संघर्ष जाहिमे पहिने पिताक मृत्यु, पछाति माताक मृत्यु, सुविधा-साधन विहीन परिवार, नगदीक संकट, शिक्षाक प्रति परिवार एवं गामक लोकक उदासीनता, गाय-महींस, खेतक आड़ि-धूरिमे समटल लोकक क्रियाकलापक, जेठ होयबाक कारण भाइ-बहिनक पालन-पोषणक समस्या आ ओहू अवस्थामे पढ़बा-लिखबाक उत्कट लालसा सभ पर ओ निष्कपट भावसँ लिखलनि अछि तथा अपन दुर्बल एवं महत्वाकांक्षी पक्षकें उद्घाटित कैलनि अछि। ने कतहु आत्मदया, ने आत्मप्रशंसा, आत्महीनता आ ने आत्मगोपनता।

मेधावी जीवकान्तकें शिक्षक सभक सहयोग आ प्रोत्साहन भेटैत रहल छलनि। स्कॉलरशिप, स्टाइपेंड आ फीस माफीक बल पर ओ प्राथमिकसँ ल' कए उच्च माध्यमिक धरिक पढ़ाइमे नीक अंकसँ उत्तीर्ण होइत रहलाह। कॉलेजक पढ़ाइक लेल शहर जाकें पढ़ब अर्थाभावक कारण असंभव छलनि मुदा बी.एन. कॉलेजक तत्कालीन प्रिंसिपल डॉ. डी.पी. विद्यार्थीक अनुकम्पासँ हुनका फ्री-एटेंडेंटशिप, मंगनीमे होस्टलमे रहबाक सुविधा एवं निःशुल्क भोजनक सुविधाक बाद ओ बी. एन कॉलेजमे एडमीशन ल' लेलनि किन्तु लगले लागल 1955मे भेल गोलीकाण्डमे छात्र दीनानाथ पाण्डेयक मृत्युक बाद होस्टल बन्न क' देल गेलैक आ जीवकान्तकें घर धर' पड़लनि। एतय फेर हुनका दंगावला शहर पटना नहि घुर' देलकनि।

आर्थिक विपन्नताक कारण किछु कए पाइ कमयबाक लेल अगिला पढ़ाइक बात सोचब छोड़ि मास्टरीक रस्ता सुलभ आ नीक बुझयलनि। एहिमे ट्यूशन कए किछु

अतिरिक्त कमयबाक संभावना सेहो छलैक। जीवकान्त शहरसँ दूर बाढ़िक दंश झेलैत, अन्धकारमे डूबल गमैया परिवेशमे रहिओकें एकटा संस्था बनि गेल रहथि। ओ सम्पर्क साध'क लेल पत्र-लेखनकें माध्यम बनौलनि। समकालीन पत्र-पत्रिकामे लिखैत रहथि। नव पत्रिका बहार करक लेल लोककें प्रोत्साहित करैत रहथि। ओकरा लेल नीक रचनाक जोगारक लेल अपन मित्र-वर्गकें बेर-बेर लिखैत रहथि।

मैथिलीमे नहि आनो-आन भाषाक कवि-लेखकसँ ओ सम्पर्क बनौने रहथि, सभक अता-पता रखिते रहथि। हुनक सर्व-सुलभता, सहयोगक भावना, नवतूरकें प्रेरित-प्रोत्साहित करबाक प्रवृत्ति, रचनात्मक प्रतिभाक प्रति आदरभाव लोकप्रियताक वृद्धि कैलकनि। हुनक जीवन दृष्टि एवं रचना-दृष्टि अपन रहनि। ओ दुर्वासा जकाँ सभकें सरापैत रहथि, निर्धोख भए ककरो किछु कहि रुष्ट क' दैत रहथि। हमरा दृष्टियें ऊपरसँ ओ कतबो उखड़ाह अथवा अगिलकंठ अथवा मणिपद्मक शब्दमे 'तुरुच्छ तुरुक' लागथि आ अगिलेस शब्दक प्रयोगसँ लोककें नाराज क' देथि, अपन सृजनसँ विरोधियोकें चकित-विस्मित कैने रहैत रहथि। सभकें अपन अकल्प विचारक प्रति साकांक्ष बनौने रहैत रहथि। हुनका लेल कोनो विषय आओर राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय हलचल अछोप नहि छलनि। विश्वक प्रत्येक गतिविधि पर ओ संजय-दृष्टि गड़ौने रहैत छलाह। आजुक धृतराष्ट्रक चाक्षुस अन्धत्वक छद्मसँ सभकें सावधान करैत रहथि। हुनक सजगता काल-प्रवाह आ परिवर्तन-चक्रमे चकरघिन्नी खाइत मानवीयताक अवशेष जोहैत रहैत छल।

जीवकान्त जी आ हमर मैत्री एवं आत्मीय निकटताक अवधि 1965 सँ 6 सितम्बर 2013 धरि रहल। मृत्युसँ 5 दिन पूर्व 6 सितम्बर 2013 कें ओ हमर अग्रज डॉ. हरिनारायण मिश्रक पोथी 'साक्षात्कार, संस्मरण आ स्मरण' पर अपन दीर्घ प्रतिक्रिया देने रहथि। डॉ. रामविलास शर्मासँ लेल गेल साक्षात्कार, निराला, पन्त, अज्ञेय, अमृतलाल नागर एवं राजकमल पर लिखल संस्मरण तथा भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' पर लिखल शोधपूर्ण निबन्धकें ओ खूब प्रशंसा केलनि।

हमरा दुनूक आत्मीयता, प्रेम-भाव व्यक्तिगत दुर्बलतामे परिणत भ' गेल छल। दुनूक मध्य पत्राचारक संख्या सहस्राधिक हैत। ओहिमे साहित्यिक मूल्यक सैकड़ो पत्र। हुनका जखन हमर हिन्दीक किताब 'पत्रों के दर्पण में' भेटलनि तँ ओ प्रसन्न होइत कहलनि जे मैथिलीमे साहित्यकारक पत्र सभकें एहिना छपबाउ। अपनो लिखल पत्रक लेल किनकहु संकलन-सम्पादनक भार दिअनु। चन्द्रेश एवं अजित आजाद एहि दायित्वकें लेबाक बात कहलनि। मुदा एखन धरि कोनो प्रगति नहि देखाइत अछि।

हमरा दुनूक आत्मीयता तथा प्रेम-भाव आरम्भसँ व्यक्तिगत दुर्बलतामे परिणत भ' गेल छल। एकर अर्थ ई नहि जे हम दुनू लड़ैत-झगड़ैत नहि रही अथवा एक-दोसरक विरोध नहि करैत रही। आक्रमण बेसी हुनके दिससँ होइत छल। हम ने उत्तर दैत छलियनि आ ने अपनाकें डिफेंडे करैत रही। जाहि किछु पर ओ हमरासँ असहमत होइत रहथि, कालान्तरमे ओकर प्रशंसाक पुल ओ बान्ह' लगैत छलाह। अपन एकान्त मे (1995) हुनका पर लिखल संस्मरण, किछु कविता आ हुनक पोथी सभ पर प्रकाशित प्रतिक्रिया हमर व्यक्तिगत एवं वैचारिक सन्निकटताक परिचायक थिक।

हुनक मृत्युक संगहि दुनूक मध्यक संवाद हमर एकालापमे बदलि गेल अछि। एहि सँ दुःखद आओर की भ' सकैत अछि।

रचनाकाल : 20.09.2013

ड्योढ़क माछ (जीवकान्तक गाम)

भाइ,
एखन रातिक तीन बाजल अछि
अर्थात् जंड़कालमे
एखन भिनसर होयबामे
तीन घंटा बाकी अछि

उठि कए बैसि गेल छी कुर्सी पर
आ टेबुल पर हाथ राखि
कर' चाहैत छी अपन ध्यानकें केन्द्रित
किछु लिख'क लेल
मुदा ओ चलि जाइत अछि अहाँ पर
बहुत दिनसँ अहाँकें नहि लिखि सकलहुँ अछि
सोचैत छी
बैसाड़ीमे कियैक नहि काटि ली कतिका
लिखि दी पत्र
मांगि ली विलम्बक लेल क्षमा

नजरि पड़ैत अछि
कतेक दिनसँ पड़ल अहाँक नाम-पता लिखल
तड़फड़ाइत पोस्टकार्ड पर
चाहैत छी पठा दी एही प्रतीक्षारत समदियाकें ड्योढ़
लागि आब' अहाँ सभकें गोड़
कहि आब' अहाँक पोखरिक माछक स्वाद
क' आब' रोहुक जोगाड़

मुदा होइत अछि
की कहतीह मित्र-पत्नी
सोचतीह दिनभरि त' लिखते रहैत छथि झूठ-साँच
ब्रह्मवेलोमे मोन पड़ैत छनि माछ

भाइ
एहि पोस्टकार्डक कपारे छैक टेढ़
एहु बेर बिन लिखले रहि गेल।

रचनाकाल : 14 जनवरी 2004

अनेरे ढाही लैत

अनेरे ढाही लैत
एक जजाति कें धांगि कए दोसर पर लपकैत
एक गोट छुट्टा साँढक सम्मुख
पड़ि गेल छलहुँ ओहि दिन अकस्मात्

ओ सींग पर उठा कए दिअ' लागल पटकनियाँ
आ हम ओकर मूड़ पर छटपटाइत
अपन दिवंगत होइत आत्माक लेल
कर' लगलहुँ
शान्ति-कामना

किछु कालक बाद
पटकि कए नीचाँ ओ बैसि गेल सटि क'
आ हँसोथ' लागल थूथून सँ सौंसे देह
अपरिचित किन्तु करुणामय स्पर्श पाबि
भयाक्रान्त रहितहुँ
हम भ' गेलहुँ विचारमग्न
ई साँढ़ थिक, की नन्दी, की महादेव

अहुना केओ लाठी आ ढेप चलबैत अछि
बाजल ओ साँढ़
हाँफि आ हूलि कए
दू गाल खेत महक हरिअरी
आ कि टाट परक लत्ती कें नोचि कए,

हम अहाँ कें कैलहुँ सावधान
किन्तु अहाँ हमरा शासनमे आन'क लेल
जोह' लगलहुँ संवैधानिक प्रावधान
हम त' छी दागलाक बादो सन्तुष्ट
अहाँ किएक भ' गेलहुँ
दू-चारिये पटकनिया सँ रुष्ट

टिड्ढ़ी, कीट, मूसक विरुद्ध
अहाँ करबा चुकल छी प्रस्ताव पारित
आब क' सकैत छी हमरो कृत्य
विधानसभा वा संसदमे उद्घाटित
जारी करबा सकैत छी
साँढ-नियंत्रण अध्यादेश
गिरफ्तारीक लेल
राष्ट्र-व्यापी आदेश
मुदा पंचायत सँ पार्लियामेंट धरि
चलत नहि हमरा बिना काज
सभतरि हमरे अछि राज

पहिने छलहुँ आतंकित
आब छी चिन्ता मे
सुरक्षाक लेल शासन कें गोहारी
आ कि साँढ ल'ग रही
पड़ल छी छगुन्ता मे

भाखा : जुलाइ-अगस्त, 1989

मैथिल-समाजसेवी पण्डित जगदानन्द झा

हम दक्षिण भारत (चितावालसा जूट मिल्स लि., विशाखापटनम)मे कार्यरत रही। हमर एकमात्र बेटी मनीषा कलकत्तामे एम.बी.ए. क' रहल छलीह। चिन्ता छल हुनका लेल योग्य घर-वरक अन्वेषण कोना होअए। दीर्घ प्रवासक कारण अपन देस-कोस, माटि-पानि आ समाजसँ ओतबे सम्बन्ध छल, जतेक दूर देशमे रहनिहार कोनो लेखक केर होइत छैक। पिता केर प्रभा-मण्डल, हुनक ख्याति एवं सम्पर्कसँ ततेक आश्वस्त छलहुँ जे होइत छल जहिया जेहन सम्बन्ध कर' चाहब, भ' जायत। मुदा पिता अस्वस्थ रह' लगलाह, विकट समस्या आबि तुलाएल। नौकरी छोड़ि पिताक सेवा लेल गाम (जे आब शहर भ' गेल छल) पहुँचब अपना हाथमे छल। कन्याक विवाहक समस्या लागले रहल।

एहने चिन्ताकुल मनःस्थितिमे एकटा लिफाफ भेटैत अछि। ओहिमे एकटा पत्र तथा नाम-पता मुद्रित एकटा अर्न्देशीय छल। अन्तर्देशीयक शीर्ष भागमे वर-कन्याक नामक कॉलमक बाद दिल्लीमे सीनियर रजीडेंसी करैत हमर ज्येष्ठ बालक डॉ. संजय कुमार मिश्रक नाम।

हमरा एकटा आधार भेटि जाइत अछि। बालक विवाहसँ पहिने कन्याक विवाह कर' चाहैत छलहुँ। 'कथा-कोश' नामसँ विवाह हेतु मैथिल वर-कन्याक सूचनालय अछि–से हमरा विदित नहि छल, मुदा पण्डित जगदानन्द झा हमर पिता आ परिवारसँ तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्रक संग अबइत-जाइत रहलाक कारण घनिष्ठ रूपसँ जुड़ल छथि से ज्ञात छल।

हम बालकक विवरण पठबैत अपन कन्याक विवरण सेहो पठा देलियनि। ओ मनीषाक बायोडाटा एवं फोटोग्राफ देखि प्रभावित भेलाह। किछुए दिन बीतल हैत कि हुनक पत्र भेटैत अछि–'अहाँक कन्याक प्रति किछु वरक पिता विशेष रुचि देखौलनि अछि। निकट भविष्यमे विस्तृत सूचना पठायब।

उपर्युक्त प्रसंगक प्रासंगिकता एहिठाम एतबे अछि जे हमरा सन सहस्राधिक प्रवासी मैथिल आ हुनक प्रवासी सन्तान जे जीविकोपार्जनक लेल देश-विदेशमे

रहियो कए वैवाहिक सम्बन्ध मिथिलेमे कर' चाहैत छथि किन्तु आजुक मैथिल समाजक बदलल मानसिकतासँ अपरिचित छथि। ओ एहु स्थितिमे नहि छथि जे मासक-मास मिथिलामे रहि वर-कन्याक लेल घटकैती क' सकथि। एहि वर्गक व्यक्तिक लेल जगदा बाबूक 'कथाकोश' एकटा आश्वस्तिकर आधार सिद्ध होइत अछि, सम्पर्क साध'क लेल विश्वसनीय सूत्र, मैथिलक लेल सुलभ सूचना-केन्द्र, गोत्रानुसार विवाहयोग्य वर-कन्याक पूर्ण विवरणक 'डायरेक्टरी'।

आदरणीय जगदा बाबूकें जखन ज्ञात भेलनि जे हम अपन डाक्टर एवं इंजीनियर बेटाक विवाहमे काटर आ उपहार स्वीकार नहि करब आ वर-पक्षसँ होइ वला आयोजन, उपहार आ बरियात पर होइ वला समस्त खर्च स्वयं वहन करब, ओ ततेक उत्साहित भेलाह जे मनीषाक लेल स्वयं योग्य वरक चुनाव कर' लगलाह। दोसर दिस हमर 'हाइटेक' अन्वेषणक क्रम चलैत रहल।

मिथिलाक एक प्रतिष्ठित भदुआरवासी श्रोत्रिय परिवारक बालक जे हॉलैंडसँ पोर्ट मैनेजमेंट एवं बिजनेस मैनेजमेंट क' सिंगापुर पोर्ट ज्वाइन कैने रहथि, हुनका मादे ज्ञात भेल तँ जगदा बाबूकें कहलियनि। ओ ओहि परिवारक गौरवमय इतिहास सुना देलनि। बालकक पिता श्री रमेश मिश्र जे 'देना बैंक'क सी.एम.डी. रहथि आ नवी मुम्बइमे समुद्रक सामने अपार्टमेंट ल' सपरिवार रहि रहल छथि।

बालक भारत आयल छथि से पता लगा पूर्व सूचना पर हम सब मुम्बइ जाइत छी। बालकक पिता श्री रमेश मिश्र जी स्वागत करैत अपन परिवारक सदस्यक मध्य हमरा सभकें ल' बैसि जाइत छथि। डाकसँ पठाओल कन्याक बायोडाटा ओ पहिनहि देखि चुकल छलाह, तत्काल ओ स्वीकृति द' देलनि। हमरा असमंजसमे पड़ल देखि ओ कहै छथि—'हम सोति छी, काटर (दान-दहेज) त' नहिये लेब, विदाइयोमे मात्र जनेऊ-सुपारी स्वीकार करब। हम पहिल बालकक विवाह दरभंगामे कैलहुँ। एहि बालकक विवाह मुम्बइयेमे करय चाहैत छी। अहाँक चिन्ता करबाक कोनो प्रयोजन नहि, सभ व्यवस्था हमरा दिससँ कैल जायत। हम कहलियनि—विवाहक समस्त व्यवस्था हमर दुनू पुत्र एतहि करताह। कन्याक लेल जे स्वप्न हुनक जन्महि कालसँ पालने, ओही अनुरूप हम विवाह करबनि। आशा अछि हमरो सभक भावनाक अपने आदर करबैक आ हमरा दिससँ जे कैल जाइत ओकरा अस्वीकार नहि करबैक।

जगदा बाबूकें जखन हम हुनक सम्बन्ध तय भ' जयबाक मादे कहलियनि तँ ओ हर्ष व्यक्त कयलनि।

कलकत्ताक साल्टलेकमे श्री पीताम्बर पाठक जी अपन पुत्रक आवास पर मुँहक कैंसरक इलाज करबा रहल छलाह। हम 24.10.2001कें कलकत्ता पहुँचैत

छी आ अपन मित्र श्री सकलदीप सिंह जीक (हिन्दीक प्रसिद्ध कवि एवं आलोचक) संग पाठक जीक आवास पर पहुँचैत छी। लगले श्री राजनन्दन लाल दास एवं श्री रामलोचन ठाकुर आबि जाइत छथि।

भेंट-घाँट एवं भोजनोपरान्त हम सभ विदा होइत छी। आसन्न मृत्युक स्वागतमे उत्सव बला उत्साहसँ ओ विदा करैत छथि। मृत्यु एकटा उत्सव अछि, से हमर लोकनि पाठक जीकें देखि बुझलहुँ।

ओतयसँ थोड़े दूर पर अवस्थित जगदा बाबूक सुपुत्र श्री विनोदानन्द झा जे इनकम टैक्स कमिश्नर रहथि, हुनक आवास पहुँचैत छी।

पण्डित जगदानन्द झाजीक बाइपास सर्जरी भेल रहनि। एतय हुनका स्वास्थ्य-लाभक लेल दीर्घ समय धरि विश्राम करबाक छलनि। हुनका विश्रामक संग-संग कोना रचनात्मक रूपसँ सक्रिय बनाओल जाय ई सोचि हुनक पुत्र सुझाव देलथिन जे अपने एहिठाम रहि संस्मरण लिखू। सभ दिन अपने सरकारी सेवा एवं मैथिल समाजक सेवामे लागल रहलियैक। अनेक प्रकारक अनुभव भेल हैत। सभ तरहक लोक एवं ओकर समस्याकें बूझ' केर अवसर भेटल हैत। अपने निःस्वार्थ भावें अपन खर्चसँ 'कथा-कोश' चला रहल छी आ हजारो मैथिल अपनेक सेवासँ उपकृत भेल छथि। अपने ओहि अनुभवकें लिपिबद्ध करबाक योजना बनाउ आ ओकरा पुस्तकाकार छपबा कए एहिठाम रहि मैथिली-सेवा करू।

जगदाबाबू 'हमरा कन्यादान अछि' (पुस्तक)क लेल अपनाकें मानसिक रूपें तैयार कर'मे लागि जाइत छथि। विभिन्न शीर्षकसँ लेख लिख' लगैत छथि। सामाजिक सरोकार सँ निश्छल निःस्वार्थ भावसँ जुड़ल, व्यक्तिगत एवं पारिवारिक दायित्वक निर्वहनक अतिरिक्त, अपन जीवनक सार्थकता समाजक प्रति कर्त्तव्यमे जोहब, पण्डित जगदानन्द झाजीक मोटो एवं मिशन (संकल्प तथा कर्त्तव्य) दुनू छनि।

नोबेल शान्ति पुरस्कार प्राप्त पादरी अलबर्ट स्वीजरक एकटा आदर्श वाक्य छलनि—'किछु काज एहन करू जाहि लेल अहाँकें पारिश्रमिक नहि भेटए किन्तु ओ अहाँकें गौरवान्वित कराबए।'

जगदाबाबू एहि आदर्श वाक्यसँ बहुत प्रभावित रहथि। ओ ई काज 'कथा-कोश'क माध्यमसँ कैलनि आ हुनका मैथिल समाजमे गौरवपूर्ण स्थान भेटलनि।

भारतीय समाजमे वर-कन्याक मनोनुकूल पैघ समस्या छैक। एहि सभक समाधानमे सहयोग देबाक नाम पर सौंसे देशमे व्यावसायिक स्तर पर अनगिनती

'मैरेज ब्यूरो' पर अनेक संस्था बनि गेल छैक। किन्तु मैथिल ब्राह्मण समाजमे ततेक खटरास, गुण-सूत्र मिलान, तिलक-काटर आ मोल-भाव छैक जे कोनो ब्यूरोक माध्यमसँ सम्बन्ध स्थापित करब कठिन।

जगदा बाबू अपना बल पर विवाह हेतु मैथिल वर-कन्याक सूचनालय 'कथा-कोश'क नामसँ खोलि कन्यादानक विकट समस्यासँ जूझैत मैथिल-समाजक निःस्वार्थ सेवा, अपन खर्च पर क' रहल छथि।

हुनक 'हमरा कन्यादान अछि' प्रायः 2000ईमे प्रकाशित भेल आ दोसर पुस्तक 'कथा आओर अछि' 2002 ई.मे।

28.10.2001कें जखन हमरालोकनि जगदा बाबूक आवास पहुँचल रही, हुनक पहिल प्रश्न रहनि—मनीषा विवाहोपरान्त कतय छथि? हम कहलियनि—सिंगापुरमे। ओ तत्काल 'हमरा कन्यादान अछि'क एक प्रति अनबा कए ओहि पर अपन आशीर्वाद एवं शुभकामना संग मनीषाक नाम लिखि हमरा देलनि आ कहलनि एकरा डाकसँ मनीषाकें पठबा दिऔन। पण्डित जगदानन्द झाजीक सहृदयतासँ आह्लादित एवं वरान्वेषणक अवधिमे हुनक प्रोत्साहनकें स्मरण करैत अपन भावनाकें अभिव्यक्त कर' लेल अनायास हमरा हाथमे कलम आबि जाइत अछि। हुनक कहल वाक्य—'ओ जनमि गेल छथि' कें शीर्षक बना एकटा कविता लिखा जाइत अछि—

ओ जनमि गेल छथि

जगदा बाबू कहलनि
अहाँ जिनका जोहि रहल छियनि
ओ जनमि गेल छथि

नीक कुल नीक परिवेश नीक ग्रह-नक्षत्रमे
भेल छनि हुनक जन्म
मुदा कतय, कोन गाम अथवा कोन देशमे
से हमरा नहि बूझल अछि
हम एतबा धरि कहि सकैत छी
ओ अहाँकें भेटताह अवश्य

हमरा भेल

ओ अथाहमे ठेलि सागर-मंथन कर' कहि रहल छथि

प्रकटतः कहलियनि
हम नोनछर समुद्रक कातमे रहैत छी
बहुत रास जीवजन्तु, मत्स्य, कूर्म, वराहसँ
प्रायः रोज होइत अछि साक्षात्कार
सभ बुझाइत छथि प्रबल प्रतापी
कोना बूझल जाय जे ओहिमे के छथि अवतारी

ओ कहलनि
नहि-नहि अहाँकें किछु बुझबाक नहि अछि
मात्र अन्वेषणमे लागल रहबाक अछि

हम माथक घाम पोछि
हुनका हाथ जोड़ैत छियनि
आ यात्रा पर बहरा जाइत छी

आगाँ छल जनसमुद्र उमड़ल
धक्कम-धक्कामे एम्हरसँ ओम्हर फेंकाइ लगैत छी
हमरा तलमलाइत देखि
केओ अपन हाथ पकड़ाबैत छथि
आ भीड़सँ बाहर ल' आनैत छथि
हमरा प्रकृतिस्थ होइत देखि
ओ आगू बढ़ि जाइत छथि

हम कृतज्ञता एवं विस्मयसँ भरि
सोच' लगैत छी
की ओ वैह त' नहि छलाह
जिनका हम जोहि रहल छलियनि
आ कि वैह
सात समुद्र पार कए

हमरा जोह' लेल
ओहि जन-समुद्रमे प्रवेश क' गेल रहथि

रचनाकाल : 5 सितम्बर 2003

मनीषा/शैलेशकें विवाहक दोसर वर्षगांठ पर शुभकामना/आशीर्वादक संग 'हमरा कन्यादान अछि'क प्रति प्राप्त भेलनि त' दुनू हर्षोत्फुल्ल भए हुनका प्रणाम निवेदित कैलथिन।

जगदाबाबू समाजसेवाक अतिरिक्त साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रममे सेहो भाग लैत छथि। चेतना समिति (पटना)क कतेक वर्षसँ पण्डित जगन्नाथ मिश्र, पण्डित विजय कुमार मिश्रक संग अध्यक्ष बनैत रहलाह अछि।

ऑपरेशनक बाद स्वास्थ्यमे शैथिल्यक बादो ओ पूर्ववत सक्रिय छथि। हुनक सेवासँ मैथिल समाज गौरवान्वित अछि।

रचनाकाल : 30.10.2003

हमर अंतरंग सखा हंसराज

12 अप्रैलक अपराह्नक एक बजे टेलीफोनक घंटी टुनटुनाइत अछि। फोन कर'वला दरभंगासँ डॉ. विश्वनाथ। कहैत छथि–'काल्हि (11.04.2005) नओ बजे रातिमे हृदयाघातसँ हंसराज जी विदा भ' गेलाह। हुनका डी.एम.सी.एच. ल' गेल छलनि। हम सूचना पाबि साढ़े आठ बजे रातिमे ओतय पहुँचैत छी, हुनका मृत्युसँ संघर्ष करैत देखैत छियनि आ थोड़बे कालक बाद ओ विदा भ' जाइत छथि।'

हमरा लेल ई दुःखद समाचार मर्मान्तक छल। भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय (नवम्बर 7 सँ 9, 2004) राष्ट्रीय सलाहकार समितिक बैसकमे ओ पटना आयल रहथि। कुशल-समाचारक बाद कहैत छथि–'भाइ, अहूँ छड़ी ध' लेलहुँ?' हम कहलियनि–'पहिने ठेहुनमे दर्द रहैत छल, आब मेरूदण्डमे सेहो कष्ट रहैत अछि।' हुनका सँ स्वास्थ्यक मादे पुछलियनि त' कहलनि–'ओहिना चलैत रहैत अछि, नीक भ' जायब।'

बैसक समाप्त होइतहि ओ दरभंगा आ हम बरौनीक लेल विदा भ' जाइत छी। बादक अवधिमे दुनूक मध्य ने कोनो पत्राचार, ने फोन पर बात।

प्रायः तीन माससँ रोग-शय्या पर पड़ल हम हंसराज जीक संग बिताओल अतीतक पैंतालीस वर्षकें स्मरण कर' लगैत छी।

हंसराज जीसँ हमर मैत्री पहिने भेल, परिचय प्रायः पाँच वर्षक बाद।

राजकमल कलकत्तामे कहने रहथि जे कोना 1954मे, उजानमे, नागदत्त जीक आवास पर हंसराज आ ललितजीसँ हुनक भेंट भेल छलनि आ कोना दुनूसँ घनिष्ठता बढ़ि गेल रहनि। ओ हंसराज जीक प्रतिभा, निष्कपट व्यवहार आ साहित्यिक अभिरूचिसँ प्रभावित रहथि।

हंसराज जीक किछु रचना हम पत्र-पत्रिकामे पढ़ने रहियनि छात्रावस्थेमे। प्रायः रोज संध्याकाल यात्री जीक भिखना पहाड़ी वला डेरा पर जाइत रही। हिन्दी-मैथिलीक पत्र-पत्रिका सभ हुनक चटाइ पर पसरल रहैत छलनि। प्रायः ओ ओही दिनक डाक होइत छल। एक दिन राजकमल आ हंसराज जीक रचना

संग-संग किछु आओर कविक रचना देखबैत ओ बाजल रहथि—'यह पीढ़ी मैथिली को शीर्ष पर पहुँचायेगी।'

शीर्ष पर पहुँचल मैथिलीक कथाकार-कवि हंसराज कटिहार, पटना, भागलपुर होइत दरभंगा पहुँचि गेलाह आ एतहि जीवनक अंतिम तीस वर्ष (1975 सँ 11 अप्रैल 2005 धरि) बितौलनि।

राजकमलक प्रति अपन निष्ठा, अंतरंगता, दुःख-विपत्ति-रोगक अवस्थामे अपन सम्पूर्ण शक्तिसँ सेवा-परिचर्या-सहयोगमे लागल रह' वला हंसराज हमरा हृदयमे आदरणीय स्थान बना नेने रहथि। हमर एकटा आओर साहित्यिक मित्र, चन्द्रमौलि उपाध्याय, ओहि अवधिमे पटनामे रहथि। 1963 सँ जून 1967 धरिक राजकमलक प्रत्येक गतिविधि, स्वास्थ्य एवं अस्वस्थतावस्थाक मानसिकताक साक्षी, पटनाक साहित्यिक वर्गमे राजकमलक प्रति चलैत दुष्प्रचार-षड्यंत्रकें निकटसँ अनुभव कर' वला रहथि ई दुनू। पटनासँ चक्रधरपुर चल गेलाक बादो चन्द्रमौलि बराबरि पटना आबि राजकमलक देखभाल करैत रहथि। हुनक दिन-राति सेवा कर'वला हंसराज 9 जून 1967 कें व्यक्तिगत काजें कटिहार गेल रहथि आ ओतहिसँ महिषी जा राजकमलसँ भेंट कर' वला रहथि किन्तु पुनः हालति बिगड़ि गेलाक बाद हुनका पटना आनि राजेन्द्र सर्जिकलमे भर्ती करा देल गेलनि जतय 19 जून '67 कें निधन भ' गेलनि। सभ दिन संग रह' वला हंसराज अंतिम घड़ीमे दूर रहि गेलाह।

राजकमलक प्रथम पुण्यतिथि पर 'आखर'क 'राजकमल-स्मृति अंक' बहार करबाक योजना बनल। हुनक सम्पूर्ण जीवनक शब्दचित्र, तथ्यात्मक वर्णन, अपन प्रामाणिकता संग हुनक मातृभाषामे बहरायल, जकरा आधार बना कए हुनका पर केन्द्रित हिन्दी-बंगलाक अनेक पत्र-पत्रिकाक विशेषांक बहरायल। हंसराज जीक 'कटिहारक चिट्ठी' राजकमलक जीवनक 'दस्तावेज'क काज कैलक।

हंसराज जीक जन्म संभवतः 1935 अथवा 1936मे भेल रहनि। डॉ. भीमनाथ झा 'परिचायिका'मे संभवतः हुनक स्कूल सर्टिफिकेटक आधार पर 24 अक्टूबर 1938 लिखने छथि। मैत्री भाव रहितहुँ, हम हुनका अग्रज वला सम्मान दैत छलियनि। हुनक प्रतिभा, लेखन-क्षमता, विनोद-प्रियता, प्रत्युत्पन्नमतित्व, व्यंग्यशैली आ रचना-दृष्टि सम्मोहित कैने रहैत छल। सामान्यतः लोक सुविधाक लेल समझौता करैत अछि आ अपन सिद्धांतकें बिसरि जाइत अछि अथवा परिस्थिति ओकरासँ सिद्धान्तक त्याग करबा लैत छैक। हंसराज जीमे अपन सिद्धान्तक प्रति सजगता एवं निष्ठा रहनि मुदा परिस्थिति हुनका नियंत्रणमे नहि रहनि। विपरीत परिस्थिति

आ परिवेश हुनका अवसन्न/अशान्त क' दैत रहनि। निराशाक भाव सेहो हुनक विचार-व्यवहार आ अभिव्यक्तिमे आबि जाइत रहनि। हुनक अनेक सार्थक रचना निरर्थकता-बोधक रचनात्मक प्रस्तुति अछि। ओ अपन संयत काव्य-भाषा आ अन्तर्वेधी भाव-धाराक कारण सशक्त हस्ताक्षर सिद्ध भेलाह।

'आखर'क अकविता-समवेतमे छपैत रहलाक बादो ओ हमर अकविता-सम्बन्धी स्थापनासँ सहमत नहि रहथि तथापि हमर, वीरेन्द्र मल्लिक आदिक अकविता 'मिथिला मिहिर'मे छपैत छल। मिहिर, मित्रवर्ग आ पाठक लोकनिक आरोप-प्रत्यारोपक प्रतिवाद-'आखर'क माध्यमसँ क' दैत छलियनि।

'मिहिर'मे प्रकाशनार्थ रचनाक लेल प्रायः हंसराज जी पत्र लिखैत छलाह आ रचना छापि ओहि पर व्यंग्यपूर्ण प्रतिक्रिया सेहो व्यक्त करैत छलाह। एक उदाहरण—हंसराज जीक आग्रह पर हम एकटा कविता, संभवतः होलिकांक लेल, 'अकविता कुलवधू' पठौलियनि, जे 'मिहिर'क 10 मार्च 1968 अंकक जाहि पृष्ठ पर छपल ओकर दहिन भागमे हंसराज जीक हास्य-व्यंग्य-मूलक प्रतिक्रिया—'कहबैक अवाच्य कथा' प्रकाशित भेल। पाठकवर्ग आ मित्रलोकनि हमरा दुनूक एहि साहित्यिक भिड़न्तकें व्यापक प्रचार देने रहथि। संयोगवश हमर ओ कविता अलक्षित रहि जयबाक कारण कोनो संकलनमे स्थान नहि पाबि सकल किन्तु हंसराज जी अपन ओहि कविताकें थोड़ेक संशोधनक संग 'अवाच्य' शीर्षकसँ 'अनेरे'मे संकलित कैलनि। हमरा दुनूक कविता वला ओ पृष्ठ भीमनाथजी एम्हरे उपलब्ध करौलनि अछि।

ओ 1975मे दरभंगा आबि गेलाह। हम जहिया कहियो गाम आबी आ दरभंगा जाइ हंसराज जीसँ भेंट प्राथमिकता रहैत छल। ओ गरमी छुट्टीमे प्रायः गाम चल जाइत छलाह। कोनो बेर हुनकासँ भेंट होअए कोनो बेर नहि भेंटथि। हम श्रद्धेय सुमन जी एवं अमरजीक दर्शन आ मित्रलोकनिसँ भेंट कए गाम घुरि आबी। एक दोसरकें सदैव स्मरण करितहुँ पत्राचार बड़ कम होअए।

1984 जनवरीमे ओ एकटा पत्रिका बहार कर' चाहैत छलाह। लिखलनि—

भाइ कीर्तिनारायण जी, सी.एम. कॉलेज, दरभंगा

25 जनवरी 1984

नव वर्षक शुभकामना हेतु शत-शत अभिनन्दन। अहाँकें हम एखनहुँ स्मरण छी, असीम प्रसन्नताक अनुभव भेल।

हम एकटा मासिक पत्रिकाक प्रकाशन आरम्भ कए रहलहुँ अछि। अपन नवीनतम कविता पठाउ। हमरा बड़ प्रसन्नता होएत। अंक बादमे पठाएब।

हमहूँ रोगा गेल छी। कहियो दरभंगा आबी तँ भेंट दी।

—हंसराज

हमर उत्तर नहि भेटला पर हुनक दोसर पत्र—

दरभंगा

मान्यवर बन्धु, 18 जून 1985

'बसात'क हेतु अपनेक रचनाक सहयोगक याचना-पत्र हम लिखने छी। पुनः इएह कहबाक अछि जे अपनेक सहयोगक अभावमे हमरा लोकनिक योजनामे गति नहि आबि रहल अछि।

अस्तु

हमरा विश्वास अछि जे अपनेक रचना शीघ्रे प्राप्त होएत।

—हंसराज

पुनश्च—

अहाँ एना भए कें उत्तर नहि देब, विश्वास नहि छल। की बात? अपन रचना पठाउ? की स्मरण छी ने? चिन्ता भए गेल अछि। उत्तर दिअ।

हंसराज

रचना भेटलाक बाद हुनक उत्तर—

बसात कार्यालय, कमरा नं.—1

विद्यापति निवास, राजकुमारगंज, दरभंगा

प्रिय बन्धु, 05.08.1985

अहाँक पत्रक संग कविता भेटल। बहुत दिनक बाद पत्र पाबि आनन्द भेल।

इच्छा छल जे अगस्तक अंक बहार करी। मुदा से नीक रचनाक अभावमे नहि भए सकल। आब सितम्बर अंक बहार भए जाए तकर यत्नमे छी।

सत्ते, बहुत दिन भेंट भेला भए गेल। देश दिस आबी तँ पहिनहि सूचना देब। ओना हम स्थायी रूपें रहैत छी।

एम्हर किछु लिखैत रहैत छी। किछु छपबो कएल। मुदा पटना छोड़लाक बाद प्रकाशन पर बड़ बाधा पड़ल। समय पाबि पठाए देब।

अहाँक कविता उपयुक्त समय पाबि हम उपयोग करब। ओहि हेतु गोटेक अपन फोटो पठाबी। प्रयास अछि जे लेखकक फोटो संग रचना छापल जाए।

विशेष कुशल, एतद्धि।

—हंसराज

'वैदेही'मे यदा-कदा लिखैत रही। जखन 'सोमदेव' जी ओकर सम्पादक भेलाह त' हमरासँ कविताक अतिरिक्त कथा सेहो लिखाब' लगलाह। ओना ई काज पहिनहुँ हमरासँ पीताम्बर पाठक 'मिथिला दर्शन'क लेल करबा लैत छलाह।

'वैदेही'क सम्पादनक दायित्व जखन डॉ. हंसराजकें देल गेलनि तँ हम हुनका पत्र लिखलियनि। हुनक उत्तर छल—

हंसराज

सकमापुल, मिरजापुर (दक्षिण)

दरभंगा (बिहार)

दिनांक 31.01.1993

प्रिय बन्धु,

कतेक दिनक बाद अहाँक हस्ताक्षर अपना नामे देखि प्रसन्नताक सीमा नहि रहल।

अहाँक कविता भेटल अछि। समय पाबि छापब, एम्हरे अहाँक एक पुरान कविता छापने छी।

हम यदा-कदा लिखैत आएल छी। किन्तु कोनो ठोस काज नहि कएलहुँ अछि। बड़ निराशामे छी। जीवनसँ, परिवारसँ, साहित्य ओ समाजसँ, अध्ययन ओ लेखनसँ पर्यन्त। अनुभव करैत छी जे बड़ भ्रममे जीबि रहल छी। स्वास्थ्य बड़ अधलाह भए गेल। मनःस्थिति बड़ अशान्त रहैत अछि। तथापि अहाँ कहैत छी जे लिखू। मुदा की लिखू, से नहि बुझैत छियैक।

अहाँक एम्हुरका दुनू कविता-संग्रह एम्हर कतए उपलब्ध भए सकैत अछि? तकर सूचना चाहैत छी।

पत्राचार बनओने रही। बड़ संबल भेटैत अछि। विशेष—

—हंसराज

1994क अप्रैलमे हम दरभंगा गेल रही। व्यस्ततावश हंसराज जीसँ भेंट नहि क' सकलियनि। ओ कोना बर्दास्त करितथि। हुनक उपालम्भ—

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी, 16.04.1994

सुनल अहाँ दभंगा आएल छलहुँ। सोचल अहाँ कुशल छी, प्रसन्न छी, मुदा, हमरासँ अहाँ भ्रमवश अप्रसन्न छी।

समकालीन कविताक सन्दर्भमे अहाँक लेख देखबाक अवसर भेल अछि।

आरसीबाबूक विषयमे सेहो पढ़लहुँ अछि।

'वैदेही'क हेतु रचना पठाउ। 'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' देखल तँ अछि मुदा ऊपर करबाक यत्नमे छी। तखने किछु कहब। इति–

–हंसराज

सेवाकालमे गद्य-लेखनक लेल अपेक्षित समयक कमी रहितहुँ हम ओहि दिस प्रवृत्त भेल छलहुँ। ओही क्रममे यथासुविधा हम आलोचना आ संस्मरण लिख' लगलहुँ। जीवकान्त पर संस्मरण लिख' सँ पहिने मैथिलीक अनेक वरेण्य साहित्यकार एवं मित्र पर हमर संस्मरण छपि चुकल छल। बादक कड़ीमे जीवकान्त पर लिखलियनि आ हंसराज जीकें 'वैदेही'क लेल पठा देलियनि।

ओ आलेख एवं कविता पाबि पत्र पठौलनि–

हंसराज, मिरजापुर (दक्षिण)
दरभंगा

भाइ कीर्त्तिनारायण जी, 04.08.1994

अहाँक पठाओल पोथी-पत्र भेटल। कविता वैदेहीक जुलाइ अंकमे रहत।

जीवकान्त एखन नव छथि। अपन वरिष्ठ साहित्यकार पर लिखू ओ उपादेय होएत।

'ध्वस्त होइत शान्ति-स्तूप' पहिनहुँ देखल छल। देखू की होइत छैक। रचना पठाउ। कविता पठाएब नहि छोड़ू।

एकटा 'अनेरे' कविता-संग्रह छपल अछि। शीघ्रहि डाकसँ पठबैत छी। लिखित प्रतिक्रियाक अपेक्षा हम राखब। इति।

–हंसराज

हुनक एहि पत्रक प्रतिक्रियामे हम हुनका 17.08.1994 कें लिखलियनि–

'भावनात्मक एवं वैचारिक नैकट्यक आधार पर हम संस्मरण लिखब शुरू कैने छलहुँ। यात्री, आरसी, राधाकृष्ण चौधरी, किसुन, राजकमल, सोमदेव आ रमानन्द रेणु पर लिखलाक बाद ओहिक्रममे जीवकान्त आबि गेलाह। हुनक अवस्था अथवा नवता हमरा लेल महत्वपूर्ण नहि छल, महत्वपूर्ण छल हुनक समकालीनता आ प्रासंगिकता। एहि क्रममे किछु आओर वरेण्य साहित्यकार आ साहित्यिक मित्र पर लिखबाक अछि। अपन व्यस्ततामे समय बहार करब कठिन होइत अछि तथापि चाहैत छी जे योजना पूर्ण भ' जाय आ ओकर सभक संकलन एहि वर्षक अंत धरि छपि जाय।

अहाँ आलेखकें घुरयबामे संकोच नहि करब। संकल्प आ कर्णामृत दुनूक आग्रह छैक। छपयबामे कोनो असुविधा नहि हैत।

बादमे हुनकासँ भेंट भेल त' हम संस्मरण-साहित्यक सम्बन्धमे अपन अवधारणा आ मानसिकतासँ हुनका परिचित करौलियनि। जखन 'अपन एकान्तमे' छपल आ ओ पढ़लनि, प्रशंसात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त कैलनि। हम कहने रहियनि जे अहाँक एहि प्रशंसाकें हम की कही–औपचारिकता, श्रद्धांजलि अथवा प्रत्यक्ष रूपसँ आहत नहि करबाक विनम्रता। ओ हमर कथनक मर्मकें बूझैत मुस्काइत कहलनि, नहि हमर स्वतः स्फूर्त्त उद्‌गार।

हंसराज जी जतेक पैघ साहित्यकार रहथि ओहिसँ बेशी पैघ मनुष्य। हुनक निष्कपट व्यवहार, उदारता आ प्रत्येक क्षण सहयोगक लेल तत्पर रह' वला स्वभाव हुनका प्रति हमरा नतशिर कैने रहैत छल। मतवैभिन्न्य, असहमति, भिन्न मूल्य-दृष्टि, सभक अछैत हुनक अन्तर्प्रदेश निष्कलुष मैत्रीक शीतलताक अनुभव हमरा करा दैत छल। हुनक ईषत् हास्य, बाल-सुलभ चंचलतासँ भरल आँखि आ अन्तर्स्पर्शी दृष्टि सभ दिन सम्मोहित करैत रहल।

हुनका पर संस्मरण हम बहुत पहिने लिख' चाहैत रही। हमर ई दुर्भाग्य छल जे भावनात्मक रूपसँ निकट रहितहुँ हुनका संग किछुओ दिन रहबाक अवसर हमरा नहि भेटल छल, यद्यपि अल्पकालिक भेंट प्रत्येक वर्ष होइत छल। किछु लिख' सँ पहिने स्मृति-पटल पर पड़ल धुँधकें, हुनका लग बैसि, फड़िछायब आवश्यक छल। मुदा तकर अवसर नहि भेटल। आब जखन कि ओ विदा भ' गेल छथि अपुष्ट प्रसंग सभकें अचर्चिते छोड़ि देब उचित बुझाइत अछि।

कथा, लघुकथा, कविता, भेंट-वार्ता, संस्मरण आदि अनेक विधामे लिखनिहार हंसराजकें कविता-विधा सर्वाधिक प्रिय छलनि। प्रारम्भमे पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित हुनक कथा आकृष्ट करैत छल, मुदा जहिया (संभवतः 1965मे) हम हुनक दीर्घ कविता–'निद्रारूपेण-संस्थिता', पढ़लियनि, हुनक कवित्व-प्रतिभा बेशी प्रभावोत्पादक लागल।

विडम्बनापूर्ण समकालीन सामाजिक परिदृश्यक प्रति हुनक सोच, पौराणिक पात्र एवं इतिहासक गर्भसँ बहार कैल घटना-प्रतीकक काव्य-प्रयोजनक अनुरूप विन्यास-कौशल एवं मिथकीय चेतना हुनका काव्य-दृष्टि सम्पन्न आधुनिक कविक रूपमे प्रतिष्ठित कैलकनि।

मिथकक प्रयोगमे निष्णात हंसराज जी अपन आद्या-चेतनाकें काव्यानुभवसँ पुनर्सृजित करैत वर्तमानकें जाहि समग्रता-संश्लिष्टताक संग प्रस्तुत कैलनि अछि, ओ सामाजिक-सांस्कृतिक संकट उत्पन्न कर' वला अनुकरणमूलक विकृत मानसिकताक प्रच्छन्न स्रोतकें उद्‌घाटित करैत अछि–

मात्र वाह्याडम्बरक धर्मंमे मिथ्या जीवन-दर्शन
केन्द्रित नहि रहल तें आस्था कतहु एक ठाम
आ व्यक्त नहि भेल कहिओ भावना अन्तरंग
सतत संदिग्ध-मन आ अपनासँ असन्तोष
भ्रमण आ अध्ययनमे जिज्ञासु रहल चिन्तन
महत्वाकांक्षाकें प्रभावित नहि कएलक कोनो व्यक्तित्व
आदरपूर्वक निरादर कएल सभक विचारधारा
बान्हि नहि सकल मुदा कोनो 'ईज्म' अथवा 'वेद-वाक्य'?
मृगतृष्णामे बौआइत रहि गेल पिआसल चिन्तन
गुरुजनक शब्दमे रहि गेलहुँ 'दि लार्ड ऑफ दि थाउजण्ड एण्ड्स'।
'दि ट्रबुल्ड मिड् नाइट'मे निन्न नहि होइत अछि
मिथ्या लगैत अछि 'निद्रारूपेण संस्थिता'।।

कोनो प्रतिबद्धता, प्रतिश्रुति आ बद्धमूल विचार-धारासँ अपनाकें असम्पृक्त राख' वला हंसराज एक दिस लिखैत छथि—आदरपूर्वक निरादर कएल सभक विचारधारा'—त' लगले स्वीकार करैत छथि—'मृगतृष्णामे बौआइत रहि गेल पिआसल चिन्तन'-आ अपन विफलताक सन्दर्भमे गुरुजनक शब्द—'दि लार्ड ऑफ दि थाउजेण्ड एण्डस' कें सहज भावसँ लैत अपन सहस्र-स्रोती सृजन-सामर्थ्यक परिचय विभिन्न विधामे दैत छथि।

अपन चारियो कथा-संग्रह-सतज्जा, जे किने से, चितकोबरा एवं प्रेमकथा; कविता-संग्रह-सन्धान एवं अनेरे; संस्मरण-संग्रह-बिसरल-बिसरल; भेंटवार्ता-ओ जे कहलनि, सभमे हिनक सूक्ष्म रचना-दृष्टि, विषयवस्तुक चयन आ ओकर उत्थापनमे सामाजिक पीड़ा (खाहे ओ आर्थिक, जातिगत, दलगत, साम्प्रदायिक अथवा दलित-सवर्ण-निम्नवर्ग-शोषित-पीड़ितक नाम पर राजनैतिक) कें केन्द्रमे राखि ओ विशाल रचनात्मक परिसरसँ पाठककें परिचित करौलनि। ओ वैश्विकताकें क्षेत्रीय शब्द-माध्यमसँ अपन जनपद धरि आनि अपन संघर्ष-प्रसूत जीवनानुभवकें आम-जनोन्मुख विस्तार देलनि। इएह कारण थिक जे हुनका सन संवेदनशील, सचेत एवं महत्वाकांक्षी रचनाकार शीर्षस्थता प्राप्त क' सकल।

रचनाकाल : 05.07.2005

पत्रक दर्पणमे कुलानन्द मिश्र

कुलानन्द जीसँ हमरा परिचयक अवसर 1964 अथवा 1965मे भेटल छल। हम कलकत्तासँ कोनो आयोजनमे भाग लिअ' हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन, पटना आयल रही। आयोजन समाप्त भेलाक बाद किछु साहित्यिक मित्र—रामनरेश पाठक, प्रभाशंकर मिश्र, नन्दकिशोर नवल, सीतेन्द्र देव नारायण, काशीनाथ पाण्डेय आदिक संग कदमकुआँक सड़क पर घूमि रहल छलहुँ। एक मित्र कहलनि अहाँ कुलानन्द मिश्रजीकें नहि चिन्हलियनि। ओ अहाँक दू बैच बादक 'कॉलेज-मेट' छथि। हम कहलियनि—कॉलेज वला बात त' हमरा ध्यानमे नहि अछि मुदा एक नव लेखकक रूपमे हुनक नामसँ परिचित छी। कुलानन्द जी मुस्का कए नमस्कार कैलनि आ किछु काल धरि बतिआइत रहलाह।

तकर बादक कोनो पटना-यात्रा बिना कुलानन्द जीकें सूचना देने नहि कैने हैब। खाहे राजकमल जीक अस्वस्थताक अवधि हो अथवा कोनो साहित्यिक/असाहित्यिक/वैयक्तिक कार्यक्रम। जाहि बेर सूचना देबाक अवसर नहि भेटैत छल, पटना उतरि सोझे वित्त-अंकेक्षण अथवा कृषि-विभाग वला ऑफिस जाइत छलियनि। कोनो-कोनो बेर भाया हंसराज जी, भीमनाथ जी, प्रभास जी, राजमोहन जी, अग्निपुष्प जी आदि। जा धरि हम विदा नहि भ' जाइ ओ संगे रहथि—आँखिसँ बाजैत/प्रश्न करैत/मर्मकें छूअइत। कहियनि—कुलानन्द जी अहाँक चयन त' खुफिया विभागमे होयबाक छल, वित्त-अंकेक्षण कोना ल' लेलक? ओ मुस्कुराबथि।

पटनाक पहिले भेंटमे कुलानन्द जी जाहि सहृदयता/आत्मीयता/सहजताक संग आदर देलनि ओ हमरा सन भावुक व्यक्तिकें अभिभूत कर'क लेल पर्याप्त छल। ओ हमरा अबोध शिशु जकाँ निश्छल ओ हठी लागैत छलाह। ओ आन्तरिक उदारतासँ हमरा अग्रजवला सम्मान दैत रहलाह आ आजीवन आज्ञाकारी अनुज बनल रहलाह। हमर दुर्बल पक्षसँ विद्यार्थिये जीवनसँ परिचित होयताह तथापि अपन आदरभावक लेल हमरा आधार बनौलनि। कोनो व्यक्तिकें ओकर दुर्बलताक

संग स्वीकार करब श्रेष्ठ मनुक्खक लक्षण होइत छैक। एहि अर्थमे ओ श्रेष्ठ मनुक्ख छलाह। ई बात दोसर जे अपन प्रतिभा, योग्यता, रचनाशक्ति आ चिन्तनसँ अपनाकें श्रेष्ठ साहित्यकारो सिद्ध क' देलनि।

35-36 वर्षक अपन सम्पर्कमे ओ हमरा शताधिक पत्र लिखने हैताह मुदा हमरा हुनक जतेक पत्र एखनधरि उपलब्ध भेल अछि ओ सभ 1970क बादक अछि। प्रत्येक पत्र हुनक निराडम्बर व्यक्तित्व, आन्तरिक निश्छलता आओर निरावरण आत्माक परिचय दैत अछि।

अपन दुर्बलता, अपन दैन्य, अपन कष्ट, अपन निराशा, अपन आकुलता आ छटपटाहटि सभक मध्य कोनो संघर्षशील तथा दृष्टि सम्पन्न रचनाकार कोना आत्मसंघर्ष करैत अछि–तकर प्रत्यक्ष अनुभव हुनक पत्र सभसँ कैल जा सकैछ–

प्रिय बन्धु,

अहाँक मैथिली कविता + डायरीक अंश + शिखर पर साँझ + पोस्टकार्ड क्रमशः प्राप्त भेल, तदर्थ हम अत्यन्त आभारी छी। मैथिली कविता वा डायरीक अंशक उपयोग हम सन्निपात-2मे करब। अवशिष्ट (कविता वा डायरीक अंश) रचनाक उपयोग अगिला अंकमे।

'शिखर पर साँझ'क सभ कविता पढ़ि गेलहुँ अछि। समीक्षा अथवा प्रतिक्रियाक रूपमे बहुत किछु कहबाक अछि, मुदा संकट ई जे एतय कोनो पत्रिका सुलभ नहि। कलकत्ता वा कोनो ठामसँ प्रकाश्य पत्रिका एहि लेल अहाँकें जँचय त' हमरा सूचित करी। हमर एकान्त इच्छा अछि जे 'शिखर पर साँझ'क माध्यमसँ अहाँक कवि-व्यक्तित्वक हम निरूपण करी। एहि संग्रहक प्रतिक 'सुकराती' हमरा लेल बहुत अर्थ नहि रखैछ।

सन्निपात-2क सम्प्रति प्रेस कॉपी तैयार क' रहल छी। विचार अछि जे अप्रैलक मध्य धरि पत्रिका छापि ली। किछु अर्थ सम्बन्धी बाधा अछि। तकरे समाधानक गौं तकैत छी अखन।

पारिवारिक व्यस्तता ल' क' एतेक दिन चुप्प छलहुँ। तें अन्यथा नहि बूझब। अहाँ सभ तरहें निकटस्थ लोक छी, अधिकारो तें अधिक बुझैत छी।

वीरेन्द्र मल्लिक मि.–3क की क' रहल छथि? अंकक आतुर प्रतीक्षा अछि।

आशा अछि, अहाँ स्वस्थ-प्रसन्न छी। अहाँक पत्र पाबि तदनुसार 'शिखर पर साँझ'क समीक्षा हम पठा सकब। ताबत एहि संग्रह विषयमे हम एतबे कहब जे–...modernism must always struggle but never quite truimph and then, after a time, must struggle in order not to truimph.

यात्री जी अखन पटनेमे छथि। दर्शन दैत छथि आ संगहि ई अनुभूतियो जे साहित्य-संसार सँ जुड़ल छी।

अहाँक पत्रक प्रतिपल प्रतीक्षा रहत।

अहींक

पटना 27.03.1971 कुलानन्द मिश्र

1962मे हिन्दीक पहिल लघु पत्रिका-परिवेशक प्रकाशन आरम्भ कैने रही जकर मात्र चारि अंक निकालि सकल छलहुँ। नवम्बर 1967 सँ अक्टूबर 1968 धरि 'आखर'क प्रकाशन भेल छल। दुनू पत्रिकाक प्रकाशनमे मित्र सभक उत्साह आ सहयोग छल जे बेशी दिन बनल नहि रहि सकल। तथापि, हम एहि तरहक प्रयासक पक्षपाती रही। रचनात्मक सक्रियता, साहित्यिक आन्दोलन तथा विचारोत्तेजकताक लेल एकरा आवश्यक बूझैत रही।

कुलानन्द जी 'सन्निपात'क योजना बनौलनि आ हमरा लिखलनि। प्रयोजनमे संग देलथिन मोहन भारद्वाज आ किछु आओर मित्र। पहिला अंकक सम्पादकीय आ रचना सभक माध्यमसँ सम्पादकक साहित्यिक सरोकार आ चयन-दृष्टिकें स्पष्ट कैलक आ ओकर स्वागत भेलैक। दोसर अंक पयलाक बादक हुनक पत्र छल–

प्रिय वरेषु,

जूनक अंत वा जुलाइमे सन्निपात-2क एक प्रति आ एकटा पत्र पठौने रही। सन्निपात-2क सम्बन्धमे अहाँक विचार अखन धरि हम नहि बूझि सकलहुँ अछि। अपना पत्रमे सन्निपात-3 (राजकमल + किसुन अंक)क लेल कोनो टिप्पणी वा छोट निबंध पठेबा लेल अनुरोध कयने रही। तकरो अखन धरि प्रतीक्षे क' रहल छी। की कोनो विशेष कारणसँ मौन सधने छी? सन्निपात-3क प्रकाशनमे आब शीघ्रे हाथ लगा देबैक, तें टिप्पणी वा लेख जल्दीसँ जल्दी पठाबी। प्रिय श्री वीरेन्द्र मल्लिको जीसँ भेंट भेला पर शीघ्रता करबा लेल हमर समाद कहबैन्ह। हम पत्र देने छियैन्ह।

बहुतो दिनसँ अहाँक गतिविधिक सम्बन्धमे कोनो खबरि नहि भेटल अछि। स्वस्थ छी ने? की क' रहल छी? लिखब-पढ़ब कोना चला रहल छी? पटना अयबाक कोनो अवसर नहि भेटैछ?

हम अपना पूर्व पत्रमे अहाँसँ आग्रह कयने रही जे संभव हो त' सहरसा आ राजकमलक मैथिली पर एकटा निबन्ध अपना अग्रज (आदरणीय डॉ. हरिनारायण

मिश्र जी) सँ उपरा कए हमरा दिअ। एहि सम्बन्धमे अहाँ हुनका सँ सम्पर्क स्थापित कयने रही वा नहि?

कृपा-भाव राखी। सन्निपातक प्रकाशनक सम्बन्धमे अपन परामर्श दी।

द्वारा-भालचन्द्र मिश्र — सस्नेह,
वित्त (अंकेक्षण) विभाग, — कुलानन्द मिश्र
5, मैंगल्स रोड, पटना-15 (बिहार) — 05.09.71

अपन प्रतिक्रियाकें अपना धरि सीमित राखि, गोपनीयता/रहस्यमयताक छद्म ओढ़ने गंभीर बनल रहब हुनक स्वभाव नहि छलनि। हुनक सोच, विचार आ अभिव्यक्तिमे एकरूपता छलनि। ठाँहि-पठाँहि उत्तरसँ साहित्यिक मित्र लोकनि कतेक रुष्ट हैथिन, तकर परवाहि नहि—

बन्धुवर, — भागलपुर

अहाँक अन्तर्देशीय पत्र पटनामे प्राप्त भेल छल। 24 सितम्बरकें पटना छोड़ने रही आ ताधरि अहाँक द्वारा सूचित रचना सभ भेटि नहि सकल छल। अखन धरि पठओने नहि होइ त' मोहन भारद्वाजक पता (एम राजेश्वरी भवन, बूढ़ानाथ रोड, भागलपुर)सँ शीघ्र पठा दी। हम अक्टूबर भरि अवकाशमे रहब, तें हमर कोनो निश्चित पता नहि रहत।

'वैदेही'मे 'नाचू हे पृथ्वी' पर मल्लिक जीक समीक्षा (?) देखने रही। राजकमलकें पढ़ि क' शराबक धनात्मक प्रभावक ज्ञान होइछ, ई समीक्षा आन तरहक संकेत करैछ। शराब लोककें ईमानदार बनबैत छैक (बहकाइयो क'), मल्लिकजी भसिया कोना गेलाह? शराबक एहन गंगाजली प्रभाव।

'कालध्वनि' पढ़ि क' सोमदेवक प्रति जे धारणा बनओने रही तकरा 'वैदेही'क एम्हुरका अंक सभ मिथ्या सिद्ध क' देलक अछि। हमरा सभ हुनकासँ एतबा आग्रह त' कइये सकैत छी जे ओ अगुलका पीढ़ीकें mislead नहि करथि।

अहाँक लेखक सम्बन्धमे जानबाक जिज्ञासा बरोबरि बनल रहैत अछि। समय-समय पर सूचना दैत रही।

सन्निपात-3क गाड़ी आगाँ बढ़य तकरा लेल बड़ थोड़ जोगाड़ भ' सकल अछि, मुदा आब अधिक विलम्ब नहि हेतैक। हम 17-18 तक एतय रहब।

सस्नेह
कुलानन्द मिश्र
07.10.1971

1972मे चितावालसा (विशाखापतनम) चल गेलाक अवकाशाभावक कारण पत्र लेखन कम होअए लागल। गद्य-लेखन—कथा, आलोचना, समीक्षा, निबन्ध—सेहो प्रभावित भेल। अपनाकें कविता धरि सीमित राखबाक लेल बाध्य भ' गेलहुँ। मित्रवर्गसँ सम्पर्क बनौने राखबाक लेल नववर्षक शुभकामना वला 'शोर्टकट' अपनाब' पड़ल आ ओ नहुँ-नहुँ 'स्टेनोग्राफर'क कृपासँ वार्षिक कृत्य भ' गेल। कुलानन्द जी प्रत्येक वर्ष एहि जड़ता दिस ध्यान दिआबथि—

प्रिय भाइ, — C/O भालचन्द्र मिश्र
वित्त (अंकेक्षण) विभाग,
नया सचिवालय, पटना—15

नव वर्षक अभिनन्दन आ शुभकामनाक लेल हृदयसँ आभारी छी। गतो वर्ष एहि Greetings क माध्यमे भेंट भेल रहय, अहू वर्ष भेल। तकराबाद बरख भरिक चुप्पी बड्ड अखरैत अछि। एना चुप्प किया भ' गेल छी। कहियोकाल अहाँक बाजब कानो पड़ैत अछि त' मिथिला मिहिरक माध्यमे। मिथिला मिहिरसँ पत्रक माध्यमे अहाँक बाजब निश्चित रूपसँ हमरा लेल अधिक स्पष्ट भ' अपनैती वला लागत। एहि चुप्पीक क्रमकें तोड़ी। जीवकांत जी, राजमोहन जी, वीरेन्द्र मल्लिक जकाँ अहूँ कहियो काल पत्रक द्वारा सान्निध्य देब, त' जीबाक अर्थ आर विशिष्ट हैत।

स्वस्थ्य-प्रसन्न हैब। हमरो शुभकामना स्वीकारी।

सस्नेह
कुलानन्द मिश्र
08.01.1975

'सन्निपात'क बाद 'फराक'क योजना बनौलनि त' एहू लेल हमरा स्मरण कैलनि—

प्रिय भाइ,

एत' हमरा सभ किछु गोटें पटनासँ समवेत आर्थिक सहयोगसँ मैथिलीमे एकटा मासिक पत्रिकाक प्रकाशनक योजना स्थिर कयल अछि। एकर नाम 'फराक' राखल गेल अछि। प्रकाशन तुरत आरंभ हो, एहिलेल हमसभ कृतसंकल्प छी। एहिमे अहाँक रचना सहयोग अपेक्षित अछि। हम अनुरोध करब जे अहाँ अपन इम्हरूक कोनो कविता हमरा शीघ्र पठाबी। रचनाक प्रतीक्षा सदिखन करब।

आशा अछि, स्वस्थ-प्रसन्न हैब। मोन राखी। एतय राजमोहन जी, प्रभास जी,

भीमभाइ, सुकांत आदि प्रसन्न छथि आ एहि आयोजनमे हमरा सभ संगे छी।

पत्र आ रचनाक प्रतीक्षामे–

पटना — स्नेहाधीन

10.09.1975 — कुलानंद मिश्र

ओ हमर साहित्यिक गतिविधिक प्रति साकांक्ष रहैत रहथि। पटनाक साहित्यिक गतिविधिक मादे लिखैत रहैत रहथि।

मैथिलीमे दीर्घ कविताक खगता बुझयलनि त' हमरा लिखलनि। अपन व्यस्तताक कारण छोटो-मोट भावाभिव्यक्तिक लेल हमरा समय नहि भेटैत छल। हमर समय, सामर्थ्य एवं सीमाकें नीक जकाँ बुझितो एहन कठिन आग्रह कैलनि। हम ई बूझैत छी जे दीर्घ कविताक प्रचलित परिभाषाक अन्तर्गत ओ परिगणित नहि हैत, हुनक आग्रहक रक्षाक लेल किछु कविता लिखलहुँ–

आदरणीय भाइ, — वित्त (अंकेक्षण) विभाग

अनेक प्रणाम! — पुराना सचिवालय कैम्पस

पटना–800015

नव वर्षक ग्रिटिंग कार्डक लेल आभारी छी। हमरा शुभकामना स्वीकार करी।

इम्हर अहाँक लेखकीय गतिविधिक कोनो ज्ञान नहि भ' रहल अछि। मैथिलीमे सही अर्थमे कोनो दीर्घ कविता अखन धरि प्रकाशमे नहि आयल अछि। अहाँमे ओ सस्टेनिंग पावर अछि जे अहाँ एहि भाषामे दीर्घ कविता लिखि सकी। एहि सम्बन्धमे सोचू आ हमरो लिखू।

एतय भाइ लोकनि प्रसन्न छथि। प्रभास जीक एकटा उपन्यास अगिला सप्ताह प्रकाशमे आओत।

विनोद जीक काव्य-संग्रह गतवर्ष अक्टूबरमे प्रकाशित भेल। हम सेहो एहिवर्ष एकटा कविता संग्रह छपाबय चाहैत छी। अखन पाण्डुलिपि तैयार क' रहल छी।

कृपा-दृष्टि राखी। पत्रक प्रतीक्षा रहत।

पटना — स्नेहाधीन

11.01.1979 — कुलानन्द मिश्र

ओ स्वयं दीर्घ कविताक अभावक पूर्त्तिमे लागल रहथि। बादक वर्षमे अनेक दीर्घ

कविता लिखलनि आ अपन रचनात्मक क्षमताकें प्रमाणित कैलनि।

भीमनाथ जीक उद्योगें 1979मे पटनासँ हमर 'हम स्तवन नहि लिखब' छपि रहल छल। हम पटना गेलहुँ मुदा ओहि खेप कुलानन्द जीसँ भेंट करबाक समय नहि बहार क' सकलहुँ। किताब छपि गेल त' ओ लिखलनि–

प्रिय भाइ,

सादर प्रणाम।

नव वर्षक शुभकामना लेल आभारी छी। हमरो मंगलकामना स्वीकार कय उपकृत करी।

भीमभाइसँ कविता संग्रहक प्रकाशनक खबरि भेटल अछि, प्रति देखि सकी–ई सौभाग्य नहि भेल अछि। एहि संग्रह पर मुक्त विचार कय अकविताक स्वरूप आ संरचना स्थिर करब नीक रहत।

निर्वाचन-फलसँ लोक अभिभूत आ विस्मित-दुनू भेल अछि।

एहिठाम मित्रवर्ग कुशल अछि। थोड़-बहुत लिखब-पढ़ब चलैछ। ओना मैथिलीक लेखककें पढ़ब सामान्यतया कलंकक बात लगैत छनि।

पटना — कृपा-दृष्टि राखी

08.01.1980 — स्नेहाधीन

कुलानन्द

आ किताब भेटलाक बाद अपन चुप्पीकें तोड़ैत–

प्रिय भाइ, — पटना

नमस्कार! — 08.03.1980

कविता-संग्रहक प्रति हेतु आभारी छी। संग्रह पढ़ि गेलहुँ अछि आ एतबा कहबाक स्थितिमे छी जे ई संग्रह काव्य-कौशलक दृष्टिसँ 'सीमान्त'क आगाँक रचना थिक। काव्य-कौशलक सम्बन्धमे हमरा किछु reservations अछि। एहिठाम कोनो गोष्ठी होइतैक त' हम अपन बात सरियाक' रखितहुँ।

मिथिला-मिहिर प्रायः हमर विचार नहि छापय चाहत। आशा अछि, अहाँ हमर स्थिति देखैत एहि संग्रह पर हमर चुप्पीकें अन्यथा नहि लेब।

कृपा-दृष्टि राखी।

स्नेहाधीन

कुलानन्द

उपर्युक्त पत्रक बादक तीन वर्षमे ओ किछु पत्र अवश्य लिखने हेताह किन्तु ओ उपलब्ध नहि भ' सकल।

1983क ग्रीटिंगक प्रति हुनक आभार आ उपराग–

आदरणीय भाइ,

अनेक प्रणाम। 18.01.1983

प्रतिवर्षक भाँति अहाँक नव-वर्षक शुभकामना अहूबेर प्राप्त भेल आ प्रति वर्ष जकाँ हम सेहो आभार प्रकट करैत ई पत्र द' रहल छी। बादमे हम दुनू गोटे वर्ष भरि चुप रहब। ई हमरा जकाँ अहूँकें प्रायः ठीक नहि लगैत हैत। हम कामना करब जे भाइ वर्षक अभ्यन्तर आनो-आनो लाथसँ स्मरण करताह। अपनासँ अहूँकें व्यस्त देखब कठिन बात नहि, तथापि ई प्रिय लागत जँ अहाँ धरि बेर-बेर पहुँची। आ बेर-बेर अहाँक आशीष प्राप्त हो। प्रायः हम भावुक भ' रहल छी, (नहि) सामान्य मनःस्थितिमे (प्रायः) ऐना लिखि रहल छी।

पटनामे भाइसभ ठीक-ठाक छथि, भीम भाइ दरभंगा वासी भेलाह। एहि बीच हुनक छोट भायक देहांतक क्लेश सेहो भोग' पड़लनि अछि। अपने स्वस्थ छथि।

हम अपने सपरिवार ठीके छी, किछु लिखियो-पढ़ि रहल छी।

अहाँक स्नेहाधीन

–कुलानन्द

मैथिल गोष्ठी, पटना द्वारा प्रायोजित यात्री–नागार्जुन अभिनन्दन ग्रन्थक लेल सम्पादक मण्डल दिससँ आलेखक लेल लिखल गेल हैत आ कुलानन्द जीकें हमरासँ रचना मंगयबाक भार द' देल गेल हेतनि। एहि सन्दर्भमे कुलानन्द जीक दू गोट पत्र–

प्रिय भाइ, 12.07.1985

यात्री-नागार्जुन अभिनन्दन ग्रंथ हेतु यात्री जीक कविताक शिल्प आ भाषा पर एकटा आलेख हेतु सम्पादक-मण्डल अपन पूर्वक पत्रमे अहाँसँ आग्रह कयने छल। आशा जे पत्र प्राप्त भेल अछि आ अहाँ आलेख-लेखनमे लागि गेल छी। नीक आ शुद्ध प्रकाशन हेतु ग्रंथक मुद्रण-कार्य अभिनन्दन समिति शीघ्रे आरंभ करय चाहैत अछि। तें पुनः आग्रह जे अपन आलेख जल्दी पठेबाक कृपा करी।

आशा जे सर्वथा स्वस्थ-प्रसन्न रहि लिखबा-पढ़बामे लागल छी। कोनो नव पोथी? कृपा दृष्टि राखी।

स्नेहाधीन

कुलानन्द मिश्र

पटना

प्रिय भाइ,

सादर प्रणाम।

आशा जे स्वस्थ-प्रसन्न हैब। यात्री-नागार्जुन अभिनन्दन ग्रंथ हेतु रचना-सहयोग लेल अहाँसँ आग्रह कयल गेल अछि। पत्र प्राप्त भेल हैत।

ग्रंथक प्रकाशनमे आब हाथ लगा देब आवश्यक लगैछ। अतएव पुनः अनुरोध जे अपन आलेख कृपया शीघ्र पठा दी।

जीविकाजन्य व्यस्ततासँ मुक्तिक बाद लेखन आदि कार्य चलैत हैत। हमरो सभकें गतिविधिक कृपया सूचना दी।

पटना स्नेहाधीन

19.10.1985 कुलानन्द मिश्र

तेसर रिमाइन्डर–

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम।

प्रति वर्ष जकाँ अहाँक शुभकामना अहू वर्ष प्राप्त भेल अछि आ प्रतिवर्ष जकाँ हम सेहो अपन आभार प्रकट करैत अहाँक लेल मंगल-कामना पठा रहल छी। कृपया स्वीकार करी।

आशा जे सर्वथा स्वस्थ-प्रसन्न छी एवं जीवन-व्यवसायक संग, लेखन-व्यापारमे लागल छी।

यात्री-नागार्जुन अभिनन्दन ग्रंथ लेल सम्पूर्ण सहयोग हेतु पत्र देल अछि। अभिनन्दन ग्रंथ समय पर समर्पित कयल जा सकय, एहि दृष्टिसँ ग्रंथक मुद्रण कार्य आरंभ क' देब आवश्यक प्रतीत होइछ। तें पुनः आग्रह जे अपन आलेख कृपया शीघ्र पठा देबाक कृपा करी।

श्री मोहन भारद्वाज आ सुकान्त सोम सभ स्वस्थ-प्रसन्न छथि।

कृपा-दृष्टि राखी। रचना आ पत्रक प्रतीक्षा रहत।

स्नेहाधीन

कुलानन्द मिश्र

2 जनवरी 1986

दू-तरफी चुप्पीमे पुनः एक साल बीतल आ जनवरी आबि गेल। कुलानन्द जीक

पत्र—

माननीय बन्धु, 10 जनवरी, 1987

सस्नेह प्रणाम। पटना

प्रत्येक वर्ष एक बेर अयनिहार पाहुन आ मीत जकाँ, अहाँक कृपापूर्वक पठाओल (बधाइ) पत्र प्राप्त भेल। आभार प्रकट करब बड़ औपचारिक लगैछ आ ई कहब जे बहुत खुशी भेल, ततबे अपर्याप्त लगैछ। तखन अहाँक आत्मीयता आ स्नेह लेल श्रद्धावनत भेल अहाँक सुखद-निरापद भविष्य लेल कामना करब हमरा अपना लेल बड़ स्वाभाविक लगैछ। अहाँ अपन जीविका-सम्बन्धी व्यस्ततासँ कमे काल मुक्त होइत हैब, से अनुमान हम क' पबैत छी, तथापि अहाँक रचनात्मक व्यापारक प्रति जिज्ञासा रहैत अछि। दोगो-दाग लेखन चलैत रहबाक चाही, जे अपनो लेल संतोषक आ आनो लेल हर्षक गप्प हैत।

आशा जे सर्वथा स्वस्थ-प्रसन्न छी। एम्हर पटना दिस अयबाक कोनो कार्यक्रम? मोहन भारद्वाज ठीक-ठाक छथि आ नौकरी पर दरभंगा-मधुबनी दिस ऑडिटमे छथि।

स्नेहाधीन

कुलानन्द मिश्र

1987 हमरा हुनक मध्य बेशी संवादपूर्ण छल—

हमर पत्रक उत्तरमे ओ 24.07.1987 कें लिखलनि—

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम। 24.07.1987

अहाँक कृपा-पत्र किछु पूर्वे प्राप्त भेल छल। एहि बीच मिथिला मिहिरमे प्रकाशित नव कविता सम्बन्धी टिप्पणी सेहो देखल। समयक झाँट ततेक बेसहाज रहैत अछि जे आब औपचारिकताक निर्वाहो कठिन होइछ। विलम्बसँ पत्र द' रहल छी आ क्षमा चाहैत छी।

मैथिली नव कविता आ एहिसँ लागल किछु नव कवि लोकनिक सम्बन्धमे अहाँक पाठकीय प्रतिक्रिया रुचिगर लागल। तखन एहि तरहक टिप्पणीमे रचनाकारक वैयक्तिकता आ निजताकें रेखांकित करबाक प्रयास हेबाक चाही आ किछु अग्रजक शुभाशंसा सेहो रहबाक चाही। आगाँ अपन कोनो टिप्पणीमे अहाँ एहि तरहें विचार करी कृपया।

जीवनक लड़ाइ प्रमुख बात होइछ, मुदा हमरा सभ लेल जीवनकें प्रभावित केनिहार आनो लड़ाइ लड़ब आवश्यक।

आशा अछि, स्वस्थ्य-प्रसन्न छी। पत्र दी आ कृपाभाव राखी।

स्नेहाधीन

कुलानन्द

कुलानन्द जी अपनाकें हमर बादक पीढ़ीक साहित्यकार मानैत छलाह। हम कहियनि-साहित्यक मंच पर सभ समान होइत छैक, जूनियर-सीनियर, छोट-पैघ, अग्रज-पीढ़ी-अनुज पीढ़ी नहि रहि जाइत छैक, रचना-दृष्टि, साहित्यिक सरोकार, स्तरीयता साहित्य आ साहित्यकारक श्रेणी निर्धारण करैत छैक। आ, इएह समभाव साहित्य एवं साहित्यकारकें आन क्षेत्रकर्मीसँ श्रेष्ठ सिद्ध करैत छैक। रचना-कर्मीकें भेद-दृष्टि नहि राखबाक चाही। हमर ई अवधारणा किनको नहि अखरैत रहनि। कुलानन्दो जीकें नहि। ओ पटनाक साहित्यिक माहौलसँ सन्तुष्ट नहि रहथि, हम अपन विचार लिखलियनि त' ओ उत्तर देलनि—बंगलाक्षरक बैक-ग्राउण्ड बनबैत—

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम।

अहाँक 09.04.1987क पत्र प्राप्त भेल अछि, आभारी छी। साहित्यक दुनियामे अग्रज लोकनि अपन अनुज वर्गक प्रति दायित्वक निर्वाह प्रायः यथोचित ढंगसँ नहि क' पबैत छथि। अहाँ दूरस्थ भैयो क' अपन ममत्वसँ लोक सभकें बन्हने रहैत छी, ई एकटा आश्चर्यक सुखद बात थीक।

मैथिलीक साहित्यकार लोकनिमे मुँहक आपकता ढाकी-ढाकी भेटत, मुदा आत्माक स्तर पर ओ बात नहि। तें सभ अपन-अपन सलीब अपने ऊघि रहल छथि। ने कोनो नव योजना बनि पबैछ आ ने कोनो पैघ उपलब्धिये संभव होइछ। पटनासँ इम्हर 'भाखा' बहरायलि अछि, 'लोकवेद' प्रायः थस ध' लेलक।

यात्री-नागार्जुन अभि. ग्रंथ आब शुरू हैत। पटनासँ बाहर रहबाक कारण ई काज लसकल पड़ल रहल।

प्रसन्न हैब। पत्र दी।

स्नेहाधीन

कुलानन्द मिश्र

27.04.1987

एहि मध्य 'हम स्तवन नहि लिखब'क बादक कविता सभक प्रकाशनक मादे कुलानन्द जी एवं अग्निपुष्प जीकें लिखलियनि। उत्तर नहि आयल त' 'ग्रीटिंग'

कार्डक संग पत्र लिखलियनि। हुनक उत्तर–

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम। 11.01.1988

सभ वर्ष जकाँ अहूबेर अहाँक स्नेहपूर्वक पठाओल ग्रीटिंग कार्ड प्राप्त भेल अछि आ हम आभार-भारसँ जँता गेल छी। अहाँक पठाओल शुभकामना लेल हमरा दिससँ कोनो प्रतिदान हमरा सामर्थ्यक बात नहि थीक। तें मौन भावसँ अहाँक कामनाक सुरक्षा-कवच धारण कय अहाँक प्रति कृतज्ञ रहबे टा उचित हैत।

ग्रीटिंग कार्ड संग प्राप्त अहाँक पत्रसँ संकेतित होइछ जे अहाँ किछु पूर्व कोनो पत्र हमरा लिखने रही आ जकर उत्तरक प्रतीक्षा अहाँ कयल। वास्तविकता ई थीक जे अहाँक कोनो पत्र हमरा इम्हर प्राप्त नहि भेल अछि। पत्रक उत्तर देबाक सामान्य शिष्टताक हम बरोबरि निर्वाह करय चाहैत छी।

नोकरी चलि रहल अछि। कखनो-कखनो साहित्यक संस्कार जगैत अछि आ तखन कोनो कविता की आलोचना लिखैत छी। अधिक काल एहि लेल क्षुब्ध रहैत छी जे कोनो निश्चित कार्यक्रम बना लेखनक प्रति गंभीर होइ से संभव नहि होइछ। चेतना समितिक भारती-मण्डन भाषणमालामे एहि मास बदलैत सौन्दर्यबोध आ मैथिली लेखन पर एकटा पेपर पढ़बाक अछि। तकरे चिन्ता अखन अधिक काल रहैछ।

श्री मोहन भारद्वाज ठीक-ठाक छथि। हालचालमे बाझल छथि। भाइ जीवकान्त सेहो समय-समय पर सुधि लैत रहैत छथि। विनोद जीसँ एम्हर कोनो भेंट नहि।

20 दिसम्बरकें (माननीय) मधुप जी दिवंगत भ' गेलाह, ई पेपर आदिसँ बुझवामे आयल हैत।

अहाँ की सभ इम्हर कयल अछि आ योजनानुसार आगाँ की क' रहल छी?

स्नेहाधीन

कुलानन्द

हम उत्तर पठौलियनि। लगले हुनक जवाब आयल–

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम। 04.02.1988

अहाँक अन्तर्देशीय पत्र प्राप्त भेल अछि। पत्रक लेल आभारी छी।

हम इम्हर कोनो कारणसँ मानसिक दुश्चिन्तामे छी। एहि स्थितिसँ मुक्ति लेल यत्नशील छी, मुदा चारूकात अन्हारे लगैछ। चेहरा साटि क' जीबाक गप्प आब घिनौन लगैत अछि।

अहाँ पोथीक (कविता-संकलनक) प्रकाशनक सम्बन्धमे पत्रमे चर्चा कयल अछि। एहि प्रसंगमे हम आवश्यक सहयोग हेतु तत्पर छी।

कृपा-दृष्टि राखी। सुचित मोनसँ पुनः पत्र लिखब।

स्नेहाधीन

कुलानन्द

हमर पूर्वोल्लिखित पत्रक उत्तर अग्निपुष्पो नहि पठौने रहथि। दू-चारि मासक बाद हुनक निन्न टुटलनि त' ओ कविता-संकलनक पाण्डुलिपि मंगा लेलनि। हम सूचना कुलानन्दन जीकें नहि द' सकलियनि। 1989क लेल शुभकामना पठबैत ओ ध्यान दिऔलनि–

सन्निपात

(अनियतकालीन मैथिली संकलन)

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम।

प्रतिवर्ष जकाँ, अहाँक बधाइ-कार्ड अहू वर्ष प्राप्त भेल अछि आ हम अहाँक प्रति आभार प्रकट करय चाहैत छी। नव वर्षक अवसर पर हमरो अभिवादन कृपया स्वीकार करी।

आशा जे सर्वथा प्रसन्न छी। चाकरी संग स्वाध्याय आ लेखनो दिस बरोबरि ध्यान दैत हैब। की सभ इम्हर लिखल अछि? अहाँ कहियो अपन कविता संग्रह प्रकाशित करबाक गप्प हमरा संग कयने रही आ तकर मुद्रण-सम्बन्धी ओरिआओनक भार हमरा देने रही। हम पाण्डुलिपिक प्रतीक्षा करैत रहलहुँ अछि आ अहाँ बाते बिसरि गेल-सन लगैत छी। अनठाबी नहि। हम योगय सेवा लेल प्रस्तुत छी।

हम गत शुद्धमे अपन दू टा (जौंआ) बेटीक बिआह कयल। एहि व्यापारमे गत मइसँ अक्तूबर (कोजागरा) धरि गाम, मिथिलाक देहात आ पटनाक बीच डोलैत रहलहुँ अछि। आर्थिक दुश्चिन्ता संग-संग भोगैत रहलहुँ अछि। ओना सामान्यतः सपरिवार प्रसन्न छी। मोहन भारद्वाज सेहो सबतरहें कुशल आ प्रसन्न छथि।

मोन राखी। पत्र दी।

स्नेहाधीन

कुलानन्द

10 जनवरी, 89

हुनक फरवरी' 89क किछु पत्र–

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम।

पत्रक लेल आभारी छी। ई अवसर बहुत दिनक बाद आयल अछि जे अहाँक ग्रीटिंग कार्डक अतिरिक्त अहाँक पत्रो प्राप्त भेल अछि। अहाँ इम्हर लेखन आ प्रकाशन दिस ध्यान देबाक समय बहार क' लैत छी, ई बहुत हर्षक गप्प थीक। सजग आ सचेष्ट लेखनक मैथिलीमे अत्यन्त अभाव। एहनामे अहाँक पुनः जागब हमरा बहुत सुखद लागि रहल अछि। अहाँ बिहार आबी त' प्रकाशनक काज अवस्से क' ली आ समय भेटय त' दर्शनो दी। हम प्रकाशनक खबरि आ भेंट लेल उत्सुक रहब। सेवा हेतु आज्ञा दी।

'भाखा'मे अहाँक रचना देखल अछि। मिथिला मिहिरक ओ अंक नहि देखि पाओल अछि। कविता (भाखा) नीक लागल मुदा सोचैत छी जे सरिपहुँ ओहि मायक बेटा लेल की घर घुरि आयब संभव हेतैक? की घर घुरला पर गामकें ओ सरिआ सकतै? आमीन। कृपा-दृष्टि राखी आ पत्र दी।

स्नेहाधीन

26 फरवरी, '89

कुलानन्द

'भाखा'मे प्रकाशित कविता (पंजाबक चिट्ठी) पर हुनक प्रतिक्रिया आ प्रश्नक प्रतिफल छल हमर मैथिली कथा–'प्रतीक्षा'। हुनक प्रतिक्रिया...

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम। 22.04.1989

अहाँक 10.04.1989क पत्र आ तकरा संग पठाओल कथा प्राप्त भेल अछि। पत्र लेल आभार आ कथा लेल बधाइ।

हमर पत्र अहाँसँ कथा लिखा लेलक, ई सूचना हमरा लेल आह्लादकारी आ विस्मयकारी दुनू थीक। कारण आनो निश्चिते रहल हेतैक, मुदा अहाँ अपन व्यस्त जीवनसँ समय बहार क' कोनो रचनात्मक लेखन क' पबैत छी, ई एकटा सुखद आ स्वागतयोग्य बात थीक।

'प्रतीक्षा'क लखना (पंजाबमे) बनि जायब आ फेर अपन देहात लौटि क' परोपट्टाकें हिला देब असंभव नहि मुदा प्रश्न ई थीक जे कतेक गोटे लखना बनि पाओत आ लखना रहि क' निबाहि सकत। अधिकांशक भाग्यमे पंजाबसँ घुरलाक बादक जिनगी आर कठिन भ' जाइत छैक। कारण स्पष्ट थीक जे पंजाबमे ओ स्थायी इन्तजामक सुख कमा नहि पबैत अछि।

कथा अहाँ एकटा कविक उद्वेग संग कहि गेल छी। एकरा पाछाँ कथाकारक सहृदयता नीक भूमिकाक निर्वाह कयलक अछि।

'प्रतीक्षा' प्रकाशन लेल 'भाखा' कें द' रहल छियैक। प्रकाशित भेला पर प्रति अवश्ये भेटि जायत। मोहन भारद्वाज गाम गेल छथि, तें निश्चित रूपसँ ई कहब कठिन थीक जे कथा कोन अंकमे छपत।

हम सामान्यतः (सपरिवार) ठीक-ठाक छी। लिखब-पढ़ब थोड़-बहुत चलाओल अछि। इम्हर किछु कविता आ दू-तीन निबन्ध लिखल अछि।

स्वस्थ-प्रसन्न हैब। लेखन जारी राखी कृपया आ बिसरी नहि। पत्र दी। योग्य सेवा हेतु यथासमय अवश्य लिखी।

स्नेहाधीन

कुलानन्द

हुनक किछु आओर पत्र–

माननीय भाइ, पटना

सादर प्रणाम। 06 जनवरी, 1990

सभ वर्ष जकाँ अहाँक ग्रीटिंग्स फेर अहू वर्ष प्राप्त भेल अछि आ हम सेहो सभ वर्ष जकाँ अपन आभार अहू वर्ष प्रकट क' रहल छी। एहिसँ हमरा सभक (रचनाकार सभक) बीच नहु-नहु जमल जाइत सम्वादहीनतासँ मुक्ति संभव नहि। एहि सम्वादहीनतासँ त्राण सभसँ पहिने जरूरी।

कतअ किजै न तअल्लुक मुझसे
कुछ नहीं है तो अदावत ही सही।

सम्वाद चलैत रहलासँ समय-समय पर काजोक बात होइत रहैत छैक।

अहाँ कहियो हमरा अपन कविता संग्रहक प्रकाशनक भार दैत रही। ई बात इम्हर अहाँ बिसरि गेल छी (प्रायः)।

इम्हर नियमित लेखन संभव नहि भ' रहल अछि। अहाँ की सभ क' रहल छी?

कृपाकांक्षी

कुलानन्द

माननीय भाइ,
पटना
सादर प्रणाम।
03 जनवरी 1991

अहाँक मनोहर ग्रीटिंग्स कार्ड आ मंगल-कामना भेटल अछि—आभारी छी। हमरो शुभकामना कृपया स्वीकार करी।

अहाँक कविता संग्रहक प्रकाशन लेल लोक कहिया धरि बाट तकैत रहत? एहि सम्बन्धमे इम्हर अहाँ की कयल अछि, कृपया सूचित करी।

परिवेश जाहि रूपें इम्हर विषाह आ असह्य भेल जाइछ, लगैत अछि, ओहन सभ किछु समाप्त भ' जायत, जकर कोनो नीक लोक कामना क' सकैत अछि।

कोई हाथ भी न बढ़ायेगा जो गले मिलोगे तपाक से।
ये नये मिजाज का शहर है जरा फासले से मिला करो।

आशा जे स्वस्थ-प्रसन्न छी आ लेखन संग अपनाकें जोड़ने छी। कृपा-दृष्टि राखी आ गतिविधिक सूचना दी।

बिहारक कोनो यात्रा कार्यक्रम?

स्नेहाधीन
कुलानन्द

माननीय भाइ,
पटना
सादर प्रणाम।
06 जनवरी 1992

अहाँक काव्य संकलन, पत्र आ ग्रीटिंग कार्ड प्राप्त भेल अछि—अत्यन्त आभारी छी हम।

हिन्दीक साम्प्रतिक लेखन संग हमर सम्पर्क इम्हर छुटि-सन गेल अछि। हिन्दीमे भेल विगत पन्द्रह-बीस बरखक लेखनसँ हमर बड़ थोड़ परिचय अछि आ एहि परिचयक आधार पर अहाँक काव्य-संकलनक सम्बन्धमे संतुलित विचार रखबामे असौकर्य भ' रहल अछि। ओना हम फुरसतिक घड़ीमे एहि संग्रहकें शान्तचित्तसँ कहियो फेर पढ़ब आ तखने अपन प्रतिक्रिया अहाँ धरि पठायब। तावत संकलनक प्रकाशन लेल अपन साधुवाद पठा रहल छी। हिन्दी कविताक साम्प्रतिक स्वर हमरा विचारें अकानल त' जा सकैत अछि, मुदा तकरा स्पष्ट रूपमे बूझब अत्यन्त कठिन थीक। हमरा लगैत अछि जे कवितामे रहस्यवादी छवि-छटा अखनुक हिन्दी कवितामे आन कोनो कालक कवितासँ अधिक देखार होइत छैक। एकटा मुक्तिबोधे आधुनिक हिन्दी कविता लेल भारी भ' गेल रहथिन, आब त' हिन्दी कविता पर ई भार बहुते बढ़ि गेलैक अछि।

अहाँक मैथिली काव्य-संकलनक प्रतीक्षा रहत। अग्निपुष्प संग हमरा इम्हर दू बरखसँ (प्रायः) भेंट नहि। हम त' बन्न लोक छी आ लोकक सम्पर्क बड़ थोड़ अछि। तथापि अग्निपुष्पकें रिमाइण्ड करबाक मौका हम ताकब।

हमर जीवन इम्हर अत्यन्त चिन्ताकुल भ' गेल अछि। बड़ अशान्त आ भीत रहैत छी। चिन्ता छोड़ि आन कोनो काज क' नहि पबैत छी। कन्यादानक समस्या थीक आ अर्थाभावक कारण एकर समाधान नहि भ' रहल अछि। लेखन एहनामे छूटि गेल अछि। ओना किछु आनो कारणसँ लेखन आब गर्हित काज लगैत अछि—लेखक सभक चरित्र आ मानसिकता नजदीकसँ देखला पर बड़ क्लेश होइछ। हृदयहीन सभ रचनाकार बनबाक स्वांगमे लागल अछि।

हमर पता इम्हर बदलि गेल अछि। हम आब कृषि विभागमे आबि गेल छी। कृपया नव पता नोट क' ली।

आशा जे सर्वथा स्वस्थ-प्रसन्न छी। कृपा-भाव राखी आ हमरा लेल शुभकामना करी। हमरा अखन शुभकामनाक बहुत प्रयोजन अछि।

स्नेहाधीन
कुलानन्द

माननीय भाइ,
पटना
सादर प्रणाम।
01 जनवरी 1993

नव वर्षक लेल हमर अशेष मंगल-कामना स्वीकार क' अनुगृहीत करी कृपया। आशा जे सर्वथा स्वस्थ-प्रसन्न छी आ पलखति भेटला पर साहित्य संग संवाद चलायब बिसरैत नहि छी। इम्हर की सभ लिखल अछि?

कृपाकांक्षी सभकें स्मरण करैत हमरो अहाँ बिसरी नहि, ई अनुरोध।

स्नेहाधीन
कुलानन्द

माननीय भाइ,
पटना, 10.02.1993
सादर प्रणाम।

पत्र आ ग्रीटिंग्सक लेल अत्यन्त आभारी छी। पता पुरना रहलाक कारण पत्र भेटबामे विलम्ब भेल। तें उत्तरो विलम्बसँ—क्षमा-प्रार्थी छी।

जीवन हमर आदियेसँ संकटापन्न रहल अछि—अखन भयावह जीवन जीबि रहल छी। कन्यादानक समस्या प्राण पर पड़ि गेल अछि। अर्थाभावक मारल पिताक

इयाह नियति होइत छैक।

साहित्य-लेखनमे रुचि रखनिहार लोकक कमी नहि थीक आ इहो सत्य जे साहित्य जीवन संग गराजोड़ी करैछ। तखन ई भिन्न बात थीक जे साहित्यकारमे अधिकांश जीवनक मोल नहि बुझैत छथि, बूझय चाहैत छथि। जकरा जीवनक प्रति आस्था आ मोह हेतैक ओ अनको जीवनक मोल बुझतै। जीवन भलें बहुमूल्य हो मुदा हमरा सभक नजरिमे आनक जीवनक कोनो मोल नहि। सभ दुःख पर सिद्धान्ततः कानयवला भैयो क' हम सभ आनक व्यथा नहि बुझैत छी।

'ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप' पर हम अपूर्ण समीक्षा गोष्ठीमे पढ़ने रही। तकरा बाद ओहि समीक्षाकें पूरा कयल। तहियासँ मैथिलीक कोनो पत्रिका नजरि नहि आयल, जकरा प्रकाशन हेतु अपन समीक्षा दी। अहाँकें पठा सकैत छी।

एकटा विशेष गप्प—हम राजकमल आ अहाँ पर दूटा छोट-छोट आलोचनात्मक पोथीक पेनी छानल अछि। चाहैत छी जे पाँच फर्माक छोट-मोट पोथी तैयार करी। एहि लेल हम एकटा प्रश्नावली अहाँकें पठाबय चाहैत छी। अहाँ स्वीकृति दी त' पठाबी। पोथी तैयार भेला पर छपयबाक समस्या हैत। से बादमे सोचब।

आशा जे सर्वथा स्वस्थ-प्रसन्न छी आ हमरो सन विपन्न अनुजकें बिसरैत नहि छी। ओना स्थिति त' ई थीक जे—

कोई हाथ भी न बढायेगा जो गले मिलोगे तपाक से
ये नये मिजाज का सफर है जरा फासले से मिला करो

स्नेहाधीन
कुलानन्द

संस्कृतक प्रकाण्ड पण्डित, संस्कृत नाटक सभक प्रख्यात टीकाकार एवं संस्कृतक मूर्धन्य कवि पण्डित रामचन्द्र मिश्र हुनक पिता छलथिन आ ओ हमर पिता पण्डित दिनेश मिश्र एवं पितृव्य पण्डित (डॉ.) दिवाकर मिश्र शास्त्रीसँ घनिष्ठ रूपें जुड़ल रहथि तथा हमर पिता एवं पितृव्य हुनका प्रति अपार श्रद्धा राखैत छलथिन।

हमर उपनयन 1945मे भेल छल। निमंत्रण-पत्रक श्लोक स्वयं पण्डित रामचन्द्र मिश्र लिखने रहथि। एकर अतिरिक्त हमरा घ'र मे हुनक पाण्डित्य, कवित्व-प्रतिभा आ शास्त्रीय ज्ञानक चर्चा बराबरि होइत रहनि।

जखन हमरा ज्ञात भेल जे हुनक मृत्यु भ' गेलनि त' हमरा माथमे पछिला पचास वर्ष घूम' लागल। हम संवेदना प्रकट करैत कुलानन्द जीकें लिखलियनि त' ओ लिखलनि—

माननीय भाइ, पटना, 12.03.1993

सादर प्रणाम।

अहाँक 23/02क पत्र हमरा सात-आठ दिन पूर्वे प्राप्त भेल छल। पत्र आ पत्रमे व्यक्त स्नेह-संवेदना लेल बहुत-बहुत आभारी छी। अपनाकें एतेक विशाल धरती पर नितान्त एकसर पाबि हतप्रभ भ' गेल छी, ओना कानब हमर प्रकृति नहि थीक। हमरा ईहो बूझल थीक़ जे दुनियाक विशालतामे एक व्यक्तिक कातरता कोनो अर्थ नहि रखैछ।

भीम भाइक साहित्य-अर्जित 'पुण्य' हुनका एहि वर्ष गंगा नहयबाक शुभ अवसर प्रदान कयल, ई ज्ञात भेले हैत। रामदेव बाबूसँ सेवाक गाछमे मेवा फड़बाक नीक क्रमक सूत्रपात भेल अछि। पूर्वो एकबेर अमर जीक सेवाक गाछमे मेवा फड़ल रहनि। आब देखा चाही जे आगाँ के एहन हनुमान अवतरित होइत छथि। जीवकान्त जी अहाँकें यदि हमर पूज्य पिताक देहावसानक सूचना देलनि अछि त' ओ असत्य थीक। वास्तवमे हमर ससुर आ श्री मोहन भारद्वाजक पिताक 28/12 कें देहावसान भेलनि। हमर पिता अखन जीबैत छथि आ हुनक एकटा संस्कृत-काव्यक पोथी हालेमे 'मरुकथा' नामसँ नाग प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेलनि अछि।

'ध्वस्त होत शांति-स्तूप' पर लिखल अपन समीक्षाकें अहाँक निदेशानुसार हम यथाशीघ्र समीक्षात्मक लेख बनाबय चाहैत छी, जाहिमे मैथिलीक कवि कीर्त्तिनारायण मिश्र पर विस्तारसँ गप्प करय चाहैत छी। लेख तैयार भेला पर एक प्रति अहाँक अवलोकनार्थ अवश्ये पठायब, मुदा हंसराज जीकें 'वैदेही' लेल हम ओना नहि पठा सकब। एहि लेल हंसराज जीकें एकटा अनुरोध-पत्र पठाबय पड़तनि। एकटा रचनाकारमे एतबा स्वाभिमान-बोध निश्चिते हेबाक चाही जे ओ रचना लेल सम्पादकसँ आग्रहक अपेक्षा करय।

कालिदास कहने छथि—

कस्यैकान्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततोवा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।

हमरा लगैत अछि जे हमरा मामलामे कालिदासक अनुभव-बोध फूसि भ' गेलनि अछि।

आशा अछि जे अहाँ सर्वथा स्वस्थ-प्रसन्न छी आ अपन व्यस्त जीवन-क्रममे लेखनो लेल अवकाश बनौने छी। रचनात्मक गतिविधिक सूचना अवश्य दी। हम एक संगे कतोक रचनामे अपनाकें बझा क' रखने छी। कोनो पूर्ण हैत

वा नहि, सोचि नहि पबैत छी। अशान्त चित्त कोनो निश्चयात्मक चिंतन कोना क' सकैछ।

गत वर्ष हमर एकटा बेटीकें सिजेरियन डेलिवरी द्वारा पुत्रक जन्म भेल रहैक। ओहि क्रममे अत्यन्त हरानीमे पड़ि गेल रही, तथापि नाति एक मासक भ' क' जाइत रहल। हमर ओही बेटीकें 5/3 कें पुनः सिजेरियन डेलिवरीमे बेटा भेलैक अछि। एहि बेर जच्चा-बच्चा ठीक अछि। अखने बेटी नाति संग नर्सिंग होमसँ डेरा आयलि अछि। आशीर्वाद चाही।

यदा-कदा पत्र दैत रहब त' उपकार मानब।

पुनश्चः—भीम भाइ साहित्य अकादेमी पुरस्कार हेतु सत्पात्र छथि एहिमे सन्देह नहि, मुदा 'विविधा' लेल ई पुरस्कार मनोरंजक प्रतीत होइछ।

स्नेहाधीन
कुलानन्द

अपुष्ट सूचना अथवा अपन अनवधानताक कारण व्यक्त संवेदनाक लेल क्लेशक अनुभव करिते छलहुँ कि हुनक पत्र भेटल—

794—शास्त्रीनगर/पटना—800023 (बिहार) 31.12.1994

नव वर्षक अवसर पर अभिवादन आ शुभकामना

माननीय भाइ,

सादर प्रणाम।

एकटा पैघ अन्तरालक बाद पत्र द' रहल छी। अहूँ एहि बीच मौने धारण कयने रहब पसिन्न कयल।

हमर पिता 05.10.1994क रातिमे हमरासभक बीचसँ विदा भ' गेलाह। हमर जन्मेकाल मायक मृत्युक बादसँ हमरा लेल हमर पिता माय सेहो भ' गेल रहथि। एहि तरहें पिताक मृत्युमे अपन मायकें हम दोसर बेर गमाओल अछि। एहि दुर्घटनासँ डेढ़ वर्षसँ अधिक अवधिसँ अस्वस्थ हमर देह आ मोन आर अधिक व्यथित-मथित भ' गेल अछि। तखन लोकसँ अधिक बिसराह आर कोन जीव होइछ?

लगभग छौ-सात मास पहिने साहित्य अकादेमी लेल अंग्रेजी मोनोग्राफ 'वल्लतोल'क मैथिलीमे रूपान्तर कयने रही। तकरा बादसँ लेखन-कार्य निड़ाहे बन्न रहल। इम्हर साहित्य अकादेमीसँ किरण जी पर मैथिलीमे मोनोग्राफ लेल पत्र आयल अछि। तकरे लेल सामग्री जुटा रहल छी।

श्री मोहन भारद्वाज चिकित्सा लेल दिल्ली गेलाह अछि। आशा अछि जे ओ शीघ्रे पूर्ण स्वस्थ भ' पटना घुरताह।

अहाँ इम्हर की सभ लिखल अछि? अपन रचनात्मक गतिविधिक सूचना कृपया दी। स्वस्थ-प्रसन्न होयब।

कुलानन्द

हम जहिना चितावालसा जूट मिल्स (विशाखापटनम) सँ अवकाश-ग्रहण कए गाम पहुँचैत छी तँ हुनक पत्र भेटल—

794—शास्त्रीनगर/पटना—800023 (बिहार) 17.09.1995

माननीय भाइ,

सादर प्रणाम।

ज्ञात भेल अछि जे अहाँ चाकरीक बन्धनसँ अपनाकें मुक्त क' आब सर्वतंत्र स्वतन्त्र भ' गेलहुँ अछि। खुशीक एहि अवसर पर हमर अभिवादन!

स्वैच्छिक सेवा-निवृत्ति लेल हम स्वयं बहुत आकुल छी, मुदा अपन दीनताकें देखैत हिम्मति नहि भ' रहल अछि।

आशा जे स्वस्थ-प्रसन्न होयब।

कृपाकांक्षी
कुलानन्द

परिस्थितिवश गाम छोड़ि पुनः नौकरीक आमंत्रण स्वीकार कर' पड़ल। कुलानन्द जीक पत्र—

माननीय भाइ,
पटना

सादर प्रणाम।
18.01.1996

वर्ष भरि पर प्राप्त भेनिहार हमर सनेश—ग्रीटिंग कार्ड आ अहाँक कृपा-पत्र प्राप्त भेल अछि, जाहि लेल हम प्रत्येक वर्षक भांति बहुत-बहुत आभार मानैत छी। एहन अवसर पर अहाँक स्मरण करब हमरा सन सभ तरहें हारल व्यक्तिकें बहुत बल प्रदान करैछ।

चितावालसासँ स्वैच्छिक सेवा-निवृत्ति ल' अहाँक गाम अयबाक बात कोनो सूत्रसँ हमरा ज्ञात भेल छल आ गामक पता पर हम पत्रो लिखने रही। अहाँ एहि बीच टीटागढ़ पहुँचि गेलहुँ अछि, ई खबरि अहींक पत्रसँ भेटल अछि। दूरीक हिसाबसँ लगैत अछि जेना विदेशसँ देशमे आबि गेल होइ। गाम सोहायब आब लोकक लेल क्रमशः कठिन भेल जाइत छैक। एहनामे चितावालसाक अपेक्षा टीटागढ़ सभ तरहें वरेण्य।

अहाँक 'अपन एकान्तमे' देखि नहि सकलहुँ अछि। बन्न लोक छी, लोक-सम्पर्क राखब सपरैत नहि अछि। आब मोहन भारद्वाजसँ पोथी उपरयबाक चेष्टा करब। पोथी प्राप्त भेला पर ओकरा पढ़ि अपन विचारसँ अहाँकें अवगत करायब।

लिखब-पढ़ब थोड़ेक मन्द पड़ि गेल अछि। प्रकाशनक दुनियामे पसरल अन्हार लिखबाक उत्साह घटा देलक अछि। किछु अनियमित पत्रिकासँ प्रकाशनक समस्याक कतेक समाधान होयत! स्वतंत्र पोथी छापनिहारक त' निङ्गाहे अभाव अछि। पाण्डुलिपि सभ पड़ल देखि मर्मान्तक शूल होइछ। तखन एकटा रचनाकार लेल संन्यासो लेब मुश्किल, ई आगि 'बुझाये ना बने'।

सभ मिला क' स्थिति एहन अछि जे—
हो चुकीं गालिब बलायें सब तमाम
एक मर्जेनांगहानी और है।'

हमरो सरकारी सेवासँ मोन उचटि गेल अछि। कतौ दोसर तरहक परिवेशमे पड़ा जाय चाहैत छी। कोनो रस्ता भेटि सकैछ हमरा? विचार करब कृपया।

आशा जे स्वस्थ-प्रसन्न छी। समय-समय पर अपन रचनात्मक गतिविधिक सूचना दैत रहबाक कृपा करी। नव वर्षक अवसर पर अथोड़ अभिवादन सहित पुनश्च-साहित्य अकादेमीक पुरस्कार आब मजाक बनि क' रहि गेल अछि। आब ई नहि भेटबे सम्मानक बात मानल जयबाक चाही।

स्नेहाधीन
कुलानन्द

प्रभास जीक इलाहाबादसँ स्थानान्तरण होइ वला रहनि। हमर आग्रह पर ओ कलकत्ताक लेल 'आप्ट' कैलनि। कलकत्ता 'युवामंच'क रजत-जयन्ती एवं सगर राति दीप जरयमे भाग लिअ' कुलानन्द जी सेहो आयल रहथि। घुरि कए लिखलनि—

पटना, 16 जनवरी 1997

माननीय भाइ,

सादर प्रणाम।

अंग्रेजी नव वर्षक अवसर पर पठाओल शुभकामना हमरा प्राप्त भेल अछि। बहुत-बहुत आभारी छी।

साहित्यिक आयोजन सभमे सम्मिलित होयबा लेल बाहर जायब हमरा पार नहि लगैछ, मुदा एहि बेर कलकत्ता जयबाक सुयोग भेटल आ ई यात्रा पर्याप्त सुखद रहल। अहाँ सभसँ भेंटक लाभ अतिरिक्त रूपसँ प्राप्त भेल।

अहाँ एहि भेंटमे किछु खिन्न आ चिंतित बुझा पड़लहुँ। संभव थिक जे जागतिक

कारण सँ ओहि अवधिमे अहाँ अन्यथा अशांत रहल होइ। कालिदास कहने छथि जे—

'नीचैर्गच्छत्यूपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण'

भास एही यथार्थकें एना कहने छथि—

'चक्रार पंक्तिरिव गच्छति भाग्य पंक्तिः'

हम यथार्थ गप्पसँ अनभिज्ञ रहलाक कारण ई सभ लिखि रहल छी। संभव जे हमर अनुमाने अलीक हो।

कृपा भाव राखी। नव वर्षक अवसर पर हमर अभिनन्दन स्वीकार करी। साहित्यिक गतिविधिक सूचना यदा-कदा दैत रही।

कृपाभाजन
कुलानन्द

जनवरी 1997 सँ दिसम्बर 1999 धरिक तीन वर्षक अवधिमे अपेक्षाकृत बेशी पत्राचार भेल, दू-तीन बेर भेंटो भेल। मुदा ओ पत्र सभ एखन उपलब्ध नहि भ' सकल। 2001क जनवरीमे पठाओल पत्र—शुभकामना सेहो नहि। तें हुनक अंतिम पत्रक रूपमे एखन 05.01.2000क पत्र—

नव वर्ष, नव शताब्दी आ नव सहस्त्राब्दिक अवसर पर अभिवादन

प्रसिद्ध भवन, सुमति पथ
रानीघाट, महेन्द्रू,
पटना—800006

माननीय भाइ, 05.01.2000

बधाइ पत्र लेल बहुत-बहुत आभारी छी।

चेतना समितिक विचार गोष्ठीमे दर्शन त' भेल मुदा गप्पक अवसर नहि भेटि सकल। गोष्ठी समाप्त होइते हम एकटा जरूरी काज ल' क' विद्यापति भवनसँ बहरा गेल रही। बाध्यताजन्य अवहेलना लेल खेद अछि।

हमर दोसर कविता संग्रह (आब आगाँ सुनू) इम्हर छपल अछि। शीघ्रे डाकसँ वा कोनो आने माध्यमसँ एक प्रति अवलोकनार्थ पठायब। प्रतिक्रियाक प्रतीक्षा रहत।

आशा जे स्वस्थ-प्रसन्न छी। सुनबामे आयल अछि जे कोनो पत्रिका हिन्दीमे बहार करबाक योजना अछि। मैथिलीमे अहाँक आवश्यकता अधिक छैक।

कृपाकांक्षी
कुलानन्द

एम्हर आबि कुलानन्द जी आओर खिन्न, आओर हताश, मित्रवर्गक उपदेशक दंशसँ आओर पीड़ित रह' लागल छलाह, जकर आभास मृत्युसँ तीन-चार वर्ष पूर्वसँ लिखल अपन समस्त पत्रमे सभकें दैत रहैत छलाह। आइ हमरा लोकनि हुनक तुलना अपार उपेक्षा/कष्टमे मुइल हिन्दीक मुक्तिबोधसँ करैत छियनि। काल्हि आओर ककरोसँ क' सकैत छियनि त' की हुनका मुक्तिबोध सिद्ध करबाक लेल हमरा लोकनि मुक्तिबोध वला मानसिक यातना/उपेक्षा हुनका दैत रहलियनि?

हम अपन व्यथाकें जीवकान्तकें लिखने छलियनि। ओ जे उत्तर देलनि सेहो हमरा लोकनिक हृदयहीनतेकें प्रकट करैत अछि–

ड्योढ़, घोघरडीहा–847402

प्रिय कीर्त्ति, 08.07.2001

अहाँक पत्र आयल अछि।

कुलानन्द मिश्रक देहान्त भेल अछि। प्रतिवर्ष हमरा सभक किछु इष्ट-मित्रक देहान्त भए जाइत अछि। से किछु सोचबा लेल बाध्य करैत अछि। एक बात ई जे समाज ओकरा की देलक आ हम ओकरा की दए सकलहुँ।

एहि अर्थमे हमरा सभक समाज बहुत हृदयहीन अछि। ओ जीवन आ मृत्यु सभ बात सँ उदासीन अछि। जे जिबैत छथि, से जिबैत अछि। किछु गोटे छल-प्रपंचसँ सेहो जिबैत अछि। कुलानन्द जी देखैत छलाह जे लेखकोक समाज वैह सभ प्रपंच करैत अछि, जे जनसाधारण डेग-डेग पर करैत अछि।

ओ ई प्रपंच नहि करैत छलाह। ओ एकरा भ्रष्ट आचरण बुझैत छलाह। एहिसँ कात रहए चाहैत छलाह। ओ अन्त धरि एहिसँ अलिप्त रहलाह। तकर एक अधलाह परिणाम भेज जे ओ आत्म-निर्वासनमे चल गेलाह।

लेखक किताब प्रकाशित करैत अछि, से एक पराभव। तकर बाद मुदा असली पराभव शुरू होइत छैक। पोथी बिकाइत नहि छैक, पोथी पढ़ल नहि जाइत छैक, ओहि पर चर्चा-परिचर्चा नहि होइत छैक।

कुलानन्द जी चाहैत छलाह हुनक लेखन पर चर्चा हो, से नहि भेल। से हुनका दुखी कयलक।

लेखकक मुइलाक बाद एक अवसर होइत छैक जे ओकर लेखन पर गंभीरतासँ गप होइक। मैथिलीमे कदाचित् एहू अवसरकें लोक गमा दैत अछि।

कुलानन्द जीक चर्चा एहू अवसर पर नहि होयत।

एहि तरहें समस्त रचनाशीलता अनालोचित आ अविश्लेषित रहि जाइत अछि।

ओ स्नेह चाहैत छलाह। जे हुनक पारिवारिक जीवनसँ परिचित अछि, से जनैत अछि हुनका माता-पिताक स्नेह नहि भेटलनि। ओ लेखक समाजमे आदर दैत छलाह, आशा रखैत छलाह जे प्रत्युत्तरमे ओ आदृत आ स्नेहभाजन होयताह।

से नहि भेल।

अन्तिम समय ओ अवसाद आ अन्धकारमे बितओलनि। जे समाज अपन स्वार्थमे आन्हर अछि आ अनका लेल जकरा हृदयमे स्नेह नहि छैक, से समाज अन्धकारमग्न समाज अछि। हमरा सभक समाज दुर्भाग्यवश एहने समाज अछि।

–जीवकान्त

हमरा सभक लेखनक लेल भावना-संवेदना-सामाजिक/राष्ट्रीय/वैश्विक चेतना/मानवीयता, 'कच्चा माल' अथवा 'रॉ मेटेरियल'क काज करैत अछि। कुलानन्द जी मुइलाक बाद एकटा प्रश्न छोड़ि गेल छथि जकर उत्तर ताकबाक लेल आत्मावलोकन आवश्यक अछि। ई पुछबाक अछि अपनेसँ जे हम सभ कतेक संवेदनशील आ सहृदय रहि गेल छी आ हमरा सभक कतेक सहभागिता अछि कुलानन्द जीक मृत्युमे।

रचनाकाल : 10 जुलाइ 2001

शान्त सौम्य क्रान्तिदर्शी पीताम्बर पाठक

हमरा लेल एक दिस कलकत्ताक अर्थ छल राजकमल चौधरी, मुद्राराक्षस, शरद देवड़ा, छेदी लाल गुप्त, ललित, विमल वर्मा, इसरायल, सकल दीप सिंह, अवधनारायण सिंह, सनीचर, ज्ञानोदय, धरातल त' दोसर दिस वीरेन्द्र मल्लिक, पीताम्बर पाठक, राजनन्दन लाल दास, मिथिला दर्शन।

उन्नैस सय तिरपन-चौबनसँ ल' कए साठि-एकसठि धरिक हमर स्कूल-कॉलेजक छात्रावस्थामे कलकत्ता हमरा लेल प्रेरणा आ प्रोत्साहनक मुख्य स्रोत रहल। कलकत्ताक पत्र-पत्रिकामे लिखब आ पारिश्रमिक पायब अद्‌भुत स्फुरण उत्पन्न करैत छल। तहिना पिता (स्व. पण्डित दिनेश मिश्र) आ हुनक मित्रवर्गक मैथिली आन्दोलनक लेल उत्साहपूर्ण सक्रियता, मैथिली भाषाक पुनर्प्रतिष्ठाक लेल कैल जा रहल संघर्ष तथा मिथिलांचलक दुर्दशा पर बिहार तथा केन्द्र सरकारकें घेरबाक नानाविध प्रयत्न एकटा जोश भरि दैत छल।

एक दिन पिता कलकत्तासँ गाम आब' वला रहथि। परिवारक वयस्क सदस्यक संग हम बरौनी स्टेशन पहुँचैत छी। गाड़ीसँ पिताक संग आठ-दस महानुभाव उतरैत छथि। हमरा संकेत भेटैत अछि सभक चरण-स्पर्श करबाक। पछाति ज्ञात भेल जे एहि समूहमे पण्डित उदित नारायण झा (बसौली), बाबू साहेब चौधरी, महावीर झा, विघ्नेश्वर झा, राजनन्दन लाल दास, नरेन्द्र झा, पीताम्बर पाठक प्रभृति छथि। गाम पर सभक स्वागत-सत्कार होइत छनि आ किछु घंटाक बाद सभ स्टेशन दिस विदा भ' जाइत छथि। ओही अवसर पर समवयसू पीताम्बर पाठक जी (हमरासँ डेढ़ दू वर्ष जेठ छलाह) कहलनि जे ओ तथा राजनन्दन जी कलकत्ता विश्वविद्यालयमे एम.ए.क छात्र छथि, मिथिला संघ तथा मैथिली आन्दोलनसँ जुड़ल रहबाक कारणे हमर पिताक निकट सम्पर्कमे रहैत छथि। हुनक विआह श्री महावीर झा जीक भतिजीसँ तय भ' गेल छनि–से कहने रहथि राजनन्दन लाल दासजी। एहि तरहें कलकत्ता पहुँच' सँ पहिनहि पाठक जी एवं दास जी हमर मित्र भ' गेल रहथि।

कलकत्ता पहुँचलाक बाद हिन्दीक समानधर्मा सभक प्रायः रोज कॉफी हाउस/चायखाना आ कि कोनो-ने-कोनो नुक्कड़ अथवा पार्कमे जमघट लगैत छल। ओहि समयमे पण्डित मदन चौधरी तथा वीरेन्द्र मल्लिक मदन चटर्जी लेनक एक्के मकानमे रहैत छलाह। कहियो काल बेलियाघट्टासँ पीताम्बर जी एवं काकुड़ गाछीसँ राजनन्दन जी पहुँचि जाथि। थोड़बे दूर पर रहैक गिरीश पार्क, तारा सुन्दरी पार्क, मिथिला निकेतन, राजेन्द्र छात्रनिवास (जतय श्री सत्यनारायण लाल रहैत रहथि) आ श्री बाबू साहेब चौधरी जीक खेलात घोष लेन स्थित प्रेस आ कॉटन स्ट्रीट स्थित हमर आवास। मैथिलीं, हिन्दीक अधिकांश मित्र वामपंथी विचार-धाराक रहथि, मार्क्स-लेनिन-त्रोटस्कीकें घोंटने। पाठकजी सभक आत्मीय।

श्री बाबू साहेब चौधरी जी एवं पाठक जी दुनू छात्रेजीवनसँ हिन्दीक संग-संग मैथिलीमे लिख' लेल प्रेरित करथि आ मिथिला दर्शनक लेल रचना मांगथि किन्तु जखन कलकत्ता आबि नौकरी कर' लगतहुँ त' ई दबाव आओर बढ़ि गेल।

कलकत्तामे हमर ऑफिसक पड़ोसेमे पाठकजी, राजनन्दन जी एवं सुन्दरकान्त झा जीक ऑफिस सेहो रहनि। प्रायः रोज भेंट होअए लागल। ओही अवधिमे हिन्दीक एक गोट पत्रिकामे 'नयी कविता' पर हमर धारावाहिक लेख छपि रहल छल। ओ पढ़ि पाठकजी कहलनि–'एहिना मैथिलीयोमे लिखल जयबाक चाही।' हमर उत्तर छल–'पहिने कविताकें ओहि स्तर धरि पहुँच' त' दिऔक।'

एक दिन पाठकजी भिनसरे-भिनसर हमर वासा पर पहुँचलाह आ फरमान जारी कैलनि–'अहाँकें एखन कथा लिखि कए दिअ' पड़त दू-तीन घंटाक अभ्यंतर। हम नीचाँमे रोडपर अहाँक प्रतीक्षा करब।'

ओ हमरा एकान्तमे छोड़ि कमरासँ बहार भ' जाइत छथि आ हम बाध्य भ' लिख' लेल बैसि जाइत छी। जेना-तेना एकटा छोट कथा लिखि बिनु फेयर केने नीचाँ उतरैत छी त' पाठक जीकें ताम्बूल-चर्वण करैत प्रतीक्षारत पबैत छी। ओ हाथक कागत लए प्रसन्न होइत, कहैत छथि–'आउ हम अहाँकें बनारसी पान खोआबी।' ओ हमरा नेने-नेने प्रेस पहुँचि जाइत छथि जतय पहिनहिसँ श्रद्धेय बाबू साहेब चौधरी जी विराजमान रहथि। ओ हमरा स्नेहिल दृष्टिसँ देखैत पाठकजीकें कहैत छथिन–'हमरा विश्वास छल, ई काज अहीं हिनकासँ करबा सकैत छी। ई क्रम प्रत्येक मास बनल रहबाक चाही।

पाठक जीक जोर पर किछु मासमे तीन-चारि टा कथा लिखा गेल। ओ छपय त' पाठक जी सभकें सुनाबथिन आ प्रशंसा करबाबथि। मुदा हमर सहज रुचि कविता, आलोचना आ समीक्षामे छल। मोसकिलसँ दश-बारह टा कथा लिखलाक बाद ई विधा प्रायः हमरासँ छूटि गेल।

हम शुरु-शुरुमे शताधिक गीत हिन्दीमे लिखने रही। मैथिलीयोमे गीतेक माध्यमसँ प्रवेश कैने रही। 'सीमान्त'क लेल रचना संग्रहक बेरमे पाठक जीक आग्रह छलनि जे ओहिमे नवकविताक अतिरिक्त हुनक पसिन्नक 25/30 गोट गीत सम्मिलित क' देल जाय। मुदा हम गीत-लेखनकें प्रारम्भिक अभ्यास मानि, ओहिसँ विदा ल' चुकल छलहुँ। संगहि लगैत छल जे हमर कविताक तत्कालीन तेवरकें ओ गीत सभ अपन भावुकता प्रधान रोमांटिकता सँ तेजहत क' देतैक। वीरेन्द्र मल्लिक, सकलदीप सिंह तथा अवधनारायण सिंह हमरे जकाँ कविताक आक्रामकताक पक्षधर छलाह। परिणामतः पाठक जीक आग्रहक रक्षा नहि भ' सकल तथापि ओ 'सीमान्त'क प्रकाशनसँ सर्वाधिक प्रसन्न रहथि। ओहिमे संकलित कविता 'हमर विकलांग देशमे' हुनका मात्र कलकत्ता महानगरे नहि, सौंसे भारत चित्रित बुझाइत छलनि, किन्तु ओ संकलनक सर्वश्रेष्ठ कविता 'तर्पण अट्ठारह वर्षक बाद' कें मानैत छलाह, कारण ओ कविता हुनक मातृविहीना पत्नी उषा जीकें भाव-विह्वल बना दैत छलनि आ ओ ओहि कविताकें बेर-बेर पढ़थि-सुनथि आ अश्रुपात करैत रहथि। हुनकहि आग्रह पर पाठक जी एक दिन बजा कए वासा ल' गेलाह। हमर काव्यपाठ आ श्रीमती पाठकक अश्रुपात बड़ीकाल धरि चलैत रहल। अपन कवि कर्मक एहिसँ बड़का पुरस्कार की भेटि सकैत छल?

आब जखन कि उषा जी एवं पाठक जी दुनू विदा भ' गेल छथि, हमरा बुझाइत अछि—हमर संघर्ष-उत्कर्षक साक्षी आ हमर कवितामे अपन आत्मा जोहनिहार पाठक दुनू विदा भ' गेलाह।

पीताम्बर पाठककें बूझब मैथिली भाषाक लेल, मिथिलांचलक लेल, मिथिला राज्यक लेल 1950/51 सँ कलकत्तासँ चलैत आन्दोलन, ओकर इतिहास आ ओकर रणनीतिकें बूझब थिक। मैथिल युवक संघ, दक्षिण कलकत्ता मैथिल संघ, ऑल इण्डिया मैथिल संघ, मिथिला छात्र परिषद, मिथिला लोक संघ, प्रो. हरिमोहन झा तथा मणिपद्मक सत्प्रयासें एकीकृत रूपमे प्रकट भेल अखिल भारतीय मिथिला संघ, कोकिल मंच समेत अनेक अन्य संस्था समन्वयक लेल पाठक जीक प्रयासकें नहि बिसरल जा सकैछ। ओ सभकें एक मंच पर आनि मैथिली आन्दोलनक संघर्ष क्षमताकें प्रभावी बनाब' चाहैत छलाह।

पाठक जी छात्रे जीवनसँ वाम-पंथी विचारधाराक छलाह, कम्यूनिष्ट पार्टीक सक्रिय कार्यकर्त्ता छलाह, मार्क्सवाद-लेलिनवादक गंभीर अध्येता छलाह आ छलाह पार्टीक सिद्धान्तक प्रबल प्रवक्ता।

कतेक बेर एहन होअए जे रविकें जखन-जखन हम हुनका बासा पर पहुँचियनि,

बंगाली युवावर्ग/कार्यकर्त्तासँ घेराएल/गंभीर चर्चारत देखियनि। थोड़ेक कालक बाद सभकें शिष्टतापूर्वक विदा कए ओ हमरा दिस उन्मुख भ' जाथि।

पाठक जीकें मैथिली आन्दोलनसँ जोड़' मे पण्डित देवनारायण झा तथा श्री बाबू साहेब चौधरीक प्रेरणा, प्रोत्साहन, परामर्श रहलनि। ई दुनू महारथी हमर पिताक अनन्य मित्र छलाह तें हमहूँ हुनका लेल पुत्र-तुल्य, बाल्यावस्थहिसँ स्नेहभाजन। एम्हर पाठक जी एवं राजनन्दन जी हमर पिताक स्नेह-पात्र। दू-चारि वर्षक अन्तरालकें जँ महत्व नहि देल जाय त' हम तीनू समवयसू, समान विचारधाराक युवक, मैथिलीक लेल एकात्म भ' काज कर' वला।

फरवरी 1967मे श्रद्धेय रामकृष्ण झा 'किसुन' मैथिली नवकविता पर एक टा सेमिनार सुपौलमे आयोजित कैलनि, जाहिमे राजकमल चौधरी भाग नेने रहथि। सभक निर्णयक अनुसार 'आखर' कलकत्तासँ प्रकाशितव्य छल किन्तु हमरा लेल साधन आ सहयोग जुटाएब बड़का समस्या।

पाठक जी, राजनन्दन जीकें छोड़ि मात्र वीरेन्द्र मल्लिक एहन मित्र छलाह जे एहि दिशामे मदतिक लेल तैयार भेलाह। राजनन्दन जीक बासा पर भेल बैसारमे मात्र इएह चारि गोट व्यक्ति रही। पाछाँ मदतिक लेल तैयार भेलाह पं. मदन चौधरी (टॉटिया स्कूल), सुन्दर कान्त झा, दशरथ झा एवं कामेश्वर झा। पाठक जीक विचार भेलनि जे सदस्य संख्या बढ़यबाक लेल हम सभ अपन-अपन पत्नीकें सेहो सम्मिलित करी। प्रत्येक सदस्यक लेल पहिने 15 टाका प्रतिमास निर्धारित कैल, बादमे ओकरा बढ़ा कए 50 टाका क' देल गेल। मुदा केओ पत्रिका किननिहार नहि। पाठकजी/राजनन्दनजी/वीरेन्द्रजी महानगरक गली-गली छानथि, बाजार, पार्क-टीशन-उपनगरी जाथि आ मैथिली पाठक तथा पत्रिकाक किननिहारकें जोहथि मुदा घुरथि त' थाकल ठेहिआएल निराश लागथि। सफलताक नाम पर मात्र दू-चारि टाकाक बिक्री। तथापि पाठक जी सदैव उत्साहवर्धन करथि। कहथि-मैथिलीमे लेखक आ पाठक होइत नहि छथि, बनाओल जाइत छथि आ से आखरो द्वारा हेतैक। लगले ओ हमर ग्रामीण तथा बालमित्र श्री मार्कण्डेय मिश्र जी दिस दृष्टि-निक्षेप करैत छथि जिनक अंतरंगता 'आखर' परिवारक प्रत्येक सदस्यक संग रहनि। पाठक जी, राजनन्दन जी एवं मार्कण्डेय जी तय करैत छथि—प्रत्येक मासक लेल दू सय टाकाक विज्ञापन जुटयबाक प्रयत्न कैल जायत। हमर तनाव थोड़ेक कालक लेल कम होइत अछि। पाठक जी गाल त'रमे पान दाबि ठहक्का लगबैत छथि। हमहुँ हँस' लागैत छी।

पाठक जीक संग बिताओल 40-42 वर्षसँ कलकत्तामे रहि अथवा

विशाखापटनमसँ—अनन्त संस्मरण अछि। हुनक शान्त-सौम्य आकर्षक व्यक्तित्व, पान-जर्दा मुँहमे दाबने विहुँसैत आकृति, केहनो तनाव आ संकटपूर्ण स्थितिमे हुनक सन्नद्धता, आत्मीयता, स्निग्ध विचार एवं व्यवहार, अपन सिद्धान्तक प्रति निष्ठा राखैत दोसरक सिद्धान्तक प्रति आदर-भाव, मिथिला-मैथिलीक प्रति समर्पण-भाव सभ दिन हमरा पर सम्मोहन चलबैत रहल। ने ओ कहियो हिन्दीक प्रति हमर लगावक विरोध कैलनि, आ ने हमर मित्र-मण्डली सँ दूरी बना कए रखलनि। उनटे ओ हमर हिन्दीओ रचना केर प्रशंसक रहथि। ओ धैर्यपूर्वक हमरामे मैथिलीक प्रति आकर्षण जगबैत रहलाह, अपन योजनामे हमरा सम्मिलित करैत रहलाह। हमरा मैथिली दिस प्रवृत्त कर'मे हुनक बड़ पैघ भूमिका छनि। ओ आ राजनन्दन जी जँ ओतेक स्नेह नहि दितथि आ आग्रहपूर्वक नहि लिखाबितथि त' भ' सकैत अछि हमर लेखनक दिशा किछु आओर होइतए।

कलकत्तामे सभ संघ/संस्थाक अपन-अपन राग-विराग, अपलाप-प्रलाप, दावा-घोषणा छलैक। एक मंचसँ एकमत भए कोनो काज करब प्रायः असंभव किन्तु पाठक जी एवं राजनन्दन जीक उद्योगें अनेक बेर एहि असंभवकें संभव बनाओल गेल।

पाठक जीमे अद्भुत संगठनात्मक क्षमता छलनि। सभकें संग ल' कए चलब तथा संग चलनिहारक सम्मानक रक्षा, ओकर सदाशयतामे विश्वास, अपन विरोधिओक तर्कमे तथ्य जोहबाक प्रवृत्ति हुनका सभक सम्मानक पात्र बनौने रहैत छलनि। ओ विपरीतो परिस्थितिमे विचलित अथवा उग्र नहि भ' अपन पक्षकें, अपन सिद्धान्तकें, अपन मान्यताकें आओर तर्कपूर्ण ढंगसँ, अओर तथ्यात्मक तथा प्रभावोत्पादक रूपमे राखैत रहथि। इएह कारण रहैक जे हुनक प्रतिपक्षी/विरोधिओ हुनकासँ सलाह-मशबिरा कर' अबैत रहनि, खाहे ओ स्वस्थ-सक्रिय रहथि आ कि अस्वस्थ-शय्याग्रस्त।

ई अद्भुत शक्ति हुनकामे विचार-प्रधान साहित्य समाजशास्त्र, मार्क्सवाद-लेलिनवादक गहन अध्ययन एवं बंगालक साम्यवादी परिवेशसँ आयल रहनि।

ओ घंटा-क-घंटा अंग्रेजी, बंगला, हिन्दी तथा मैथिलीमे बाजि सकैत रहथि। ई गुण हुनकामे पण्डित देव नारायण झा तथा सदैव अपनाकें मैथिलीक अदना कार्यकर्त्ता बुझनिहार श्री बाबूसाहेब चौधरी भरने रहथिन। अध्ययन, विचार-मंथन तथा जन-सम्पर्कसँ ओ निरन्तर परिपक्व/समृद्ध भेल गेलनि।

2001क नवरात्राक अवधिमे फोन पर राजनन्दन जीसँ ज्ञात भेल जे मुँहक कैंसरसँ पीड़ित पाठक जी पर आब 'केमोथेरेपियो' काज नहि क' रहल छनि आ ओ कोनो घड़ी विदा भ' सकैत छथि।

हम पाठक जीक आवास पर फोन करैत छी। हुनक सुपुत्र अजय फोन उठबैत छथि। ओ तत्कालीन स्थितिक जानकारी दए रहल छलाह कि हुनका हाथसँ रिसीवर ल' कए पाठक जी कहैत छथि—'कीर्तिनारायण जी! बड़ मोन पड़ैत रहलहुँ अछि अहाँ। फोन करबौने रही त' ज्ञात भेल जे अहाँ बाहर यात्रा पर गेल छी।' हम कहैत छियनि—'आबि रहल छी।' हुनक उत्तर—'आएब त' भेंट हैत तकर कोन ठेकान'। हमर प्रत्युत्तर—'हमरा लेल अहाँकें प्रतीक्षा कर' पड़त। प्रस्थान क' रहल छी। शुभमस्तु।'

हम राजनन्दन जी एवं रामलोचन जीसँ सम्पर्क करैत छी आ दुनू गोटेकें 28.10.2001क भिनसरमे पाठक जीक आवास (रवीन्द्र पल्ली, साल्टलेक, कलकत्ता) पर अयबाक अनुरोध करैत छियनि।

हम आ सकलदीप सिंह पाठक जीक ओतय निर्धारित समय पर पहुँचैत छी। बैसकक दरबज्जाक सोझमे पाठक जीकें गलफड़मे गमछा लपेटने खाट पर बैसल देखैत छी। पार्श्वक सोफा पर राजनन्दन जी एवं रामलोचन जी। ओ ठाढ़ भ' बड़ी काल धरि भाव-विभोर भए आलिंगनबद्ध कैने रहैत छथि। फेर खाट पर बैसि जाइत छथि। कुशल-समाचार पूछ'-कह' लगैत छथि। ल'गक अलमारीसँ किछु फाइल बहार करैत छथि आ किछु कागत दिस अजय जीकें संकेत करैत छथि। राजनन्दन जी एवं रामलोचन जी दिस देखैत कहैत छथि—'मैथिलीक लेल अपन सभ कएल-धएलक विवरण, आगामी योजना तथा अपूर्ण काजक सूची एहि फाइल/कॉपी सभमे लिखिक' राखि देने छी।' एक आलेख उठा कए ओकर किछु अंश पढ़' लगैत छथि। किन्तु बेर-बेर पीकदानीमे किछु (खून) उगलैत छथि। ठाढ़ भ' जाइत छथि। फोनक चोंगा उठबैत छथि। बाजैत-बाजैत गमछासँ मुँह पोछ' लगैत छथि। आ फोन राखि दैत छथि। अजय हुन मदति करैत छथिन्ह। ओ पुनः खाट पर बैसि जाइत छथि। एतबेमे हमरा सभक समक्ष नाना व्यंजन, मधुर, खीर, कचौड़ीक सचार लागि जाइत अछि। पाठक जीक हर्षोत्फुल्ल आकृति पर पसरैत आत्मीयतापूर्ण आग्रहक भाव हमरा सभकें बिना कोनो प्रतिरोध कैने हुनक तृप्तिक लेल सभ किछु ग्रहण क' लेबाक लेल विवश क' दैत अछि। परसन थम्हैत नहि अछि। न'व-न'व पदार्थ आबैत रहैत अछि। पाठक जीक आग्रह एवं मनुहार बढ़ले जाइत अछि। हमरा सभक नहि-नहि पर पाठक जीक थोड़ेक आओर थोड़ेक आओर तोपाइत रहैत अछि।

भोजनोपरान्त हमरा लोकनि विदा होम' चाहैत छी। बालकोचित चंचलतासँ भरल पाठक जीक चपल आँखि पूछैत अछि–'फेर कहिया?' हमरा लोकनिकें ई चापल्य गंभीर बना दैत अछि। मृत्युक स्वागतमे उत्सववला उत्साहसँ भरल पाठक जी हमरा सभकें अरिआत' बाहर निकलि जाइत छथि। मृत्यु एकटा उत्सव थिक से पाठक जीसँ बुझलहुँ।

हमरा लोकनि विदा लैत छियनि। भरि रस्ता हम सभ हुनक रोग, चिकित्सा, आर्थिक संकट एवं अन्य समस्याक मादे बतिआइत रहैत छी आ पण्डित जगदानन्द झाजीक कलकत्ता आवास पर पहुँचि जाइत छी जे बाइपास सर्जरीक बाद ओतए विश्राम क' रहल छलाह।

हम पाठक जीकें बरौनीमे विद्यापति स्मृतिपर्व समारोहक आयोजन 1 एवं 2 दिसम्बर 2001क मादे कहने छलियनि। किछु दिनक बाद, बरौनी घुरला पर, हुनक पत्र भेटैत अछि–

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,

बरौनीमे विद्यापति पर्व समारोह भ' रहल अछि–ई अपार हर्षक विषय। ओ क्षेत्र उपेक्षित छैक। महाकवि विद्यापतिक स्मरणक बहाने अहाँ लोकनि हुनक गंगाकें हुनक 'कत सुखसार पाओल तुअ तीरे'...क स्मरण दिआ रहल छियनि। सिमरिया (गंगा) महाकविक मन-प्राणमे बसल रहनि।

मैथिलीक भविष्य सुरक्षित राखबाक लेल एहि तरहक आयोजनक माध्यमसँ ओकरा संविधानक अष्टम् अनुसूचीमे स्थान दिअएबाक चेष्टा करबे आवश्यक।

अशेष शुभकामना

अहाँक–पीताम्बर पाठक

पाठक जीक मानस-पटल पर मिथिलाक इतिहास, गौरव-गाथा, सामाजिक-सांस्कृतिक उत्थान पतन, ओकर उपेक्षा-अवहेलनाक राजनीतिक कारण, ओकर विकासक अवरोधक तत्व, मैथिलीक लेल अपेक्षित संघर्ष/आन्दोलनक रूपरेखा, ततेक स्पष्ट रूपसँ अंकित छलनि जे जखन ओ कोनो मंचसँ बाज' लेल ठाढ़ होथि अथवा कोनो कार्ययोजना पर अपन विचार राखथि, श्रोता आ कार्यकर्त्ता पर अद्भुत प्रभाव पड़ैक। ओ संकल्प-विकल्पमे पड़ल आमजनमे दृढ़ निश्चय आ इच्छाशक्ति भरि देथि। ओ प्रवासी मैथिलक मानसिकताकें बुझैत छलाह। चाहैत छलाह अपन देस-कोस, अपन भाषा, अपन साहित्य-संस्कृतिक लेल किछु करबाक हुनक भावना, सामर्थ्य, साधन तथा समय केर सही दिशामे उपयोग हो। एहि दिशामे भोलालाल दास, डॉ. लक्ष्मण झा, डॉ. जयकान्त मिश्र, देवनारायण झा, बाबू

साहेब चौधरी तथा ताराकान्त झाजीक द्वारा कैल गेल प्रयासक समर्थक रहथि। ओ स्वयं एहि दिशामे जीवन भरि संघर्षरत रहलाह। जीवनक अंतिम किछु वर्षमे अस्वस्थताक कारण अपन सक्रियताक परिसीमन देखि ओ दुखी रहैत छलाह किन्तु रोगशय्यो पर ओ मैथिलीये आन्दोलन तथा मिथिलाक विकासक मादे सोचैत-लिखैत रहैत छलाह।

22 फरवरी 2002क रातिमे श्री लक्ष्मण झा 'सागर' फोन कैलनि जे पाठक जी किछु मिनट पूर्व विदा भ' गेलाह। भिनसरमे राजनन्दन जी विस्तारसँ बतौलनि–जे दाह-संस्कार तथा श्राद्धकर्म कलकत्तेमे हैतनि। भेल जे अपन विचारक तापसँ सभकें ऊष्मा-ऊर्जा प्रदान कर' बला पाठक जीकें आगि की पजारि सकतनि... मुहूर्त्त ज्वलितं श्रेय...

पाठक जी आजीवन निःस्वार्थ भावें हमरा स्नेह-सम्मान दैत रहलाह, कहियो कोनो प्रतिदान नहि चाहलनि। किन्तु, स्वयं विदा भ' हमरा निःस्व बना देलनि, अपना प्रति हमर अनन्य श्रद्धाकें श्रद्धांजलिमे परिणत होयबाक दण्ड द' गेलाह। एहन अभिशप्त प्रणति केर हुनकामे कियैक अभिलाषा जागलनि?

रचनाकाल : 30 मार्च 2002

अतुलनीय प्रभासजी

छात्र जीवनमे प्रभासजीसँ हमरा परिचय नहि छल। हम जहिया पटना कॉलेजसँ ग्रेजुएशन क' रहल छलहुँ ओ संभवतः पटना सांइस कॉलेजमे इंटरक छात्र छलाह।

1961क अन्तमे हम कलकत्ता आबि गेल रही। 1962-63 सँ तत्कालीन हिन्दी पत्र-पत्रिकामे, विशेष कए, इलाहाबादसँ प्रकाशित होइबला 'कहानी'मे ओ बेर-बेर भेट' लगलाह। 1963मे 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान'क कथा विशेषांकमे हुनक कथा छपलनि त' ओ 'नोटिस'मे लेल जाय लगलाह आ हिन्दीक नव कथाकारमे हुनक गनती होअए लगलनि। हुनकासँ पूर्वहिँ राजमोहन जी प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकामे छपि, हिन्दी कथा-जगतक लेल परिचित भ' चुकल छलाह।

ओहि समय हिन्दीक प्रतिष्ठित कथाकारमे बहुत रास व्यक्ति कलकत्तामे रहैत छलाह जेना राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, राजकमल, मुद्राराक्षस, छेदी लाल गुप्त, हर्षनाथ, सुदर्शन चोपड़ा, शरद देवड़ा आदि। नवतुरिया पीढ़ीक चर्चित कथाकार छलाह अवध नारायण सिंह, इसराइल, सिद्धेश आदि। कॉफी हाउसमे नवका पीढ़ीक कथाकार पर चर्चा चलल त' ओहिमे राजमोहन एवं प्रभासक नाम अयलनि त' दुनूक कथाक प्रशंसामे हम किछु बेशिये बाजि गेल रही। मित्र लोकनि परिहास केलनि जे–'दोनों बिहार के हैं, इसलिए तुम्हें तो अच्छे लगेंगे ही।'

प्रभास जीसँ हमर प्रारंभिक अपरिचय समयक संग घनिष्ठ मित्रतामे परिवर्तित होइत गेल। दुनूमे पत्राचार होअए लागल। तहिया ओ नागपुरमे ट्रेनिंगमे छलाह। ओहि अवधिमे साकेतानन्द जी सेहो नागपुरेमे रहथि। हुनके माध्यमसँ प्रसिद्ध चित्रकार भाउ समर्थसँ सम्पर्क स्थापित भ'-गेल छल। 'आखर'क प्रकाशनक अवधिमे ई तीनू मित्र प्रचुर सहयोग देलनि।

पटनासँ 'मिथिला मिहिर'क पुनः प्रकाशनसँ मैथिली जगतकें नवजीवन भेटल रहैक। पुरान, स्थापित आ युवालेखक सभकें एकटा साहित्यिक मंच भेटि गेल रहनि। मैथिलीकें मुइल भाषा मान'वला वर्गक एकसँ एक श्रेष्ठ साहित्यिक रचना, विविधतापूर्ण लेख आ प्रतिभाशाली नव साहित्यकारक कथा-कविता छापि, बद्धमूल धारणाकें भ्रमपूर्ण सिद्ध कए 'मिहिर' सभकें विस्मित क' रहल छल।

मुदा ओतय तँ एकटा आओर मंच तैयार होअए बला छलैक।

राजकमल जी कलकत्ता छोड़ि पटना पहुँचि गेल रहथि। ओ अपन साहित्यिक योजनाक संग नाना प्रकारक रोग लए ओतय पहुँचल रहथि। बेनीपुरी, दिनकर, नागार्जुन ओतय पहुँचले रहथि। बेनीपुरी, दिनकर, नागार्जुन आ रेणुकें पटनामे ओ अपन प्रभामण्डलसँ एकटा आओर साहित्यिक माहौल तैयार क' लेलनि आ बिहारक हिन्दी-मैथिली साहित्य अखिल भारतीय स्तर पर चर्चामे रह' लागल। ओ जतेक दिन जाहि रूपमे पटनामे रहलाह पटनाक अर्थ होइत छलैक राजकमल।

हुनक विदा होइतहि पटनाक साहित्यिक माहौलमे एकटा शून्यक स्थिति आबि गेल छल मुदा से बेशी दिन नहि रहलैक।

प्रभासजी अपन लेखनसँ मैथिली-हिन्दी जगतकें चमत्कृत कैनहि रहैत छलाह, अपन मिलनसारिता, आन्तरिक उदारता आ चुम्बकीय व्यक्तित्वक कारण सभक आकर्षणक केन्द्र भ' गेलाह। हुनक ऑफिस मिथिला मिहिर, आकाशवाणी, स्टेशन, बाजार, प्रेस सभसँ अपन निकटताक कारण सभक लेल पहुँच'क सुविधाजनक परिधिमे रहैक से फराक।

हम पहिने पटना जाइ त' कदमकुआँक कोनो होटलमे ठहरैत रही। ओतयसँ फणीश्वरनाथ रेणु, मधुकर गंगाधर, प्रभाशंकर मिश्र संप्रति चीफ जस्टिस (पश्चिम बंगाल), रामनरेश पाठक, शंकर दयाल सिंह आदिक आवास निकट पड़ैत छल, साहित्य सम्मेलन भवन सेहो कातहिमे किन्तु आब प्रभास जीक ऑफिसक सामने वाला होटलमे रह' लागल रही।

'गोपी' चाह-जलपानक दोकानसँ बेशी साहित्यकारक अड्डाक रूपमे जानल जाए लागल छल। 'मिहिर'क कार्यालय पहुँचैत देरी कि सभकें खबरि भ' जानि आ सभ 'गोपी' ल'ग जमा, जे अनुपस्थित हुनका मिहिरक गेटसँ आगाँ बढ़ैत देखल जा सकैत छल।

हम पटनासँ कलकत्ता अथवा चितावालसा घुरलाक बाद कतेक दिन धरि ओहि ठामक अनुभव आ दृश्यमे हेरायल रहैत रही। एक बेर प्रभास जीकें लिखलियनि जे अहाँ उत्तरोत्तर 'इनटॉक्सिकेटिंग' (उन्मादित कर' वला) भेल जा रहल छी। ओ उत्तरमे लिखलनि–'कतेक दिन भ' गेल। पटना कहिया आबि रहल छी?'

हम जकरा–'प्रभासक इन्टोक्सिकेशन' कहैत छलियैक ओ हुनक प्रभामण्डल छलनि। ओहिमे छोट-पैघ, जुनिअर-सीनियर, अफसर-चपरासी, भंगेड़ी-शराबी,

कथाकार-कवि सभ एक समान उद्भासित बुझाइत छलाह। प्रभास जी सभक अपन लोक, सभक प्रिय, सभक लेल आतुर।

प्रभास जीकें पदोन्नति दए जखन जमशेदपुर ट्रान्सफर क' देल गेलनि त' सूचना पाबि प्रसन्नता भेल मुदा पटनामे हमरा लेल आकर्षण हेरा देलक। सभ किछु ओहिना। मित्र वर्गमे उत्साहो पहिले जकाँ। दूटा पोथियो ओतहिसँ छपल। भैया आगरासँ पटना आबि गेल रहथि। तथापि हमरा प्रभास-विहीन पटना निष्प्राण लागय। कार्यवश जाय त' पड़य किन्तु लगले विदा भ' जयबाक नेआरमे रहैत रही।

ओ अपन सशक्त लेखन, साहित्यिक सक्रियता, मैथिलीक लेल कैल गेल समस्त प्रयासमे अपन सहभागिता आदिक कारण व्यक्तिसँ संस्था भ' गेल रहथि।

जखन प्रभास, गुंजन आ पटनाक किछु युवा लेखकक सहयोगसँ 'युवालेखन' बनल, मैथिलीमे हमर नियमित लेखन प्रायः अवरुद्धे भ' गेल छल। दू-अढ़ाइ वर्ष ब्रेन ट्यूमरक इलाज करबैत रहलाक कारण, पछाति हिन्दी दिस बेशी प्रवृत्त भ' जयबाक कारण। प्रभास-गुंजनकें अपन युवापीढ़ीक कोनो मित्रक एहि तरहें निपत्ता भ' जायब कोना सह्य होइतनि। गुंजन जीक द्वारा हमरा लिखबाओल गेल जे अहाँक साहित्यिक मृत्यु पर 'युवालेखन' अपन अगिला बैसारमे शोक-प्रस्ताव पारित करत आ 'स्मृति-अंक' बहार करत, एहि पत्रकें तकर औपचारिक सूचना बूझल जाय।

हमरा बूझ'मे देरी नहि लागल जे ई खोंचाह पत्र प्रभास जीक द्वारा खोंचारलाक बाद लिखल गेल अछि।

उत्तरमे हम एकटा कविता लिखि कए पठा देलियनि। शीर्षक छलैक—'शुद्ध कवितामे जीअब', जकरा पछाति 'हम स्तवन नहि लिखब'मे संकलित कैल गेल छलैक।

प्रभास जी, गुंजन जी एवं हमरा जान' वला पाठक ओहि साहित्यिक चुहलबाजीसँ अवगत होथि, तें एतय सम्पूर्ण कविता उद्धृत करब आवश्यक बुझाइत अछि—

हम मुइल नहि छलहुँ
अहाँ भ्रमवश पजरैत चितापर
पंचकठिया द' आयल छलहुँ।
हम सूखल नारिकेर जकाँ छाल छोड़ि देने छी
जीविते नहि मारि देल जाय
तें मौनक खाल ओढ़ि नेने छी

अपन भाषा विहीन अनुभवक गरिमामे
हम भ' गेल छी मुग्ध
अहाँ जुनि होउ क्षुब्ध,
आत्माभिव्यक्तिक लेल
मात्र शब्दे नहि छैक एक मात्र साधन।
जीवित रहबाक लेल आब नहि हैत
हमरासँ शीर्षासन,
बन्हि गेलाक बाद।
विचारो सड़ैत अछि
अहीं बताउ आइ कतेक लोक 'वेद' पढ़ैत अछि
ई त' निश्चित जे हम वेद नहि लिखब
आ बिना लिखनहुँ, हम कवितेमे जीअब
प्रमाण-पत्र मुइलक हेतु चाही
जीवित स्वतः प्रमाण पत्र होइत अछि
अहाँ शोक सभा करू
वा स्मृति-अंक बहार करू
हमरा अपन स्रोतस्विनीपर एखनहुँ गुमान अछि
अहाँ हमर प्रिय छी। अंतरंग सखा आत्मरूप
अहाँक हृदय क्षोभ आ आँखिक नोर
ई सिद्ध करैत अछि, जे हमरे लेल छटपटा रहल छी
तें अहींक संग-संग आइ हमहुँ, 'नौह-केश' कटा रहल छी
शाब्दिक जीवनसँ हमरा भेटि गेल मुक्ति
आब शुद्ध कवितामे जीबाकेर क' रहल छी युक्ति।

एहि कविता पर 'युवा-लेखन'क गोष्ठीमे व्यक्त कैल गेल विचारसँ हम अपरिचित छी, मुदा उत्तरमे गुंजनजी जे लिखने रहथि ओ मार्मिक छल। ओहि महत्वपूर्ण पत्रकें एतय उद्धृत करब प्रासंगिक छल मुदा ओ एतय उपलब्ध नहि अछि।

प्रभास जी जतय रहथि मैथिलीक लेल किछु-ने-किछु करिते रहैत छलाह। सभ मित्रकें स्मरण कए बजबैत छलाह। सभठाम नवतुरिया लेखककें लिखैत रह'क लेल प्रेरित करैत छलाह, थोड़बो सजग आ नीक लिख'वलाकें अग्रिम पंक्तिमे बैसा कए विशेष महत्व दैत छलाह।

एतबेसँ हुनका संतोष नहि होइत छलनि त' लेखनमे नैरंतर्य बनल रहैक, ताहि लेल अनामा ग्रुप, युवा लेखन आ 'सगर राति दीप जरय'क गोष्ठीमे लेखक वर्गकें अपन न'व रचनाक पाठ कर'क लेल विवश करैत छलाह। आलोचकक पैनल बैसा कए प्रत्येक रचना पर चर्चा करबैत छलाह आ पठित रचनाक प्रकाशनक व्यवस्थामे लागल रहैत छलाह।

ओ अपन क्रिया-कलापकें गोष्ठी-संगोष्ठी-सम्मेलने धरि सीमित नहि राखलनि अपितु 'समाधान', 'संकेत', 'फराक', 'अनामा', 'कथा-दिशा' आ 'प्रवासी'क माध्यमसँ अभूतपूर्व, अद्वितीय आ अप्रत्याशित काज कैलनि।

ओ एक-सँ-एक महत्वाकांक्षी आ पैघ योजना बनबैत रहथि आ ओकर क्रियान्वयनमे सम्पूर्ण शक्ति लगा दैत रहथि।

प्रवासीक प्रकाशनकें कलकत्ता आनि, ओकरा नियमित त्रैमासिक बनयबाक प्रयत्नमे लागले रहथि कि 'कथादिशा'क 'महाविशेषांक' बहार करबाक निर्णय ल' लेलनि। ई पैघ बजट वला अत्यन्त महत्वाकांक्षी आ श्रमसाध्य योजना छलनि। ओ ओकरा पूर्ण कर'मे लागल रहथि कि हमरा पुनः दक्षिण भारत (नैल्लिमार्ला जूटमिल्स) आब' पड़ल। रोज-रोजक व्यक्तिगत सम्पर्क आब यांत्रिक (फोन) सम्पर्कमे बदलि गेल, पत्राचार होअए लागल। हुनक अंतिम दू पत्र एतय उद्धृत करब आवश्यक बुझाइत अछि—

भारतीय जीवन बीमा निगम
कलकत्ता 30.12.1997

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,

फोन पर अहाँक श्रीमतीकें बधाइ देलियनि आइ, अहाँक कार्यालयक नम्बर उपलब्ध नहि भेल। एक बेर पुनः बधाइ साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्तिक उपलक्ष्यमे।

कथादिशा एवं प्रवासीक अंक (कथमहाविशेषांक आ हरिमोहन झा पर केन्द्रित अंक) संलग्न अछि। अपन प्रतिक्रिया पठाबी।

कथा दिशाक अप्रैल-जूनक अंक कविता महाविशेषांक रहत। एकावनटा कवि आमंत्रित छथि। चारि पेज अपनेक लेल सुरक्षित अछि कविता आ वक्तव्य लेल। कतेक पृष्ठ कविताक आ कतबा वक्तव्यक लेल, से अपने पर निर्भर अछि। एक कविकें चारि पृष्ठसँ अधिक देब संभव नहि भ' सकत। 160 पृष्ठक अंक हैत आ मूल्य हेतैक एकावन टाका (प्रति कवि एक टाका नहि!)।

पटना गेल रही—18 दिसम्बरसँ 28 धरि पटना, बेतिया, गाम, मधुबनी आदि

रहलहुँ। ललित बाबू पर मोनोग्राफ, एही मास देबाक छल, आब अग्रिम मासमे देबैक।

समकालीन मैथिली कथाक (साहित्य अकादेमीक) हेतु एकाबनटा कथा कथाकारक, 300 पृष्ठक पाण्डुलिपि टाइप भ' तैयार अछि। शीघ्र अकादेमीकें पठैबैक। एकर सम्पादनक भार (तीस पृष्ठ भूमिका संग) हमरा छल।

हमरा लोकनि ठीक-ठाक छी—प्रभास

पत्र-प्राप्तिक बाद हुनका संग ततेक बेर यंत्रयोग भेल जे हमरा लेल उत्तर पठायब आवश्यक नहि रहल।

हुनक अंतिम पत्र छल (पोस्टकार्ड)

कलकत्ता
09.02.1998

प्रिय कीर्त्तिनारायण जी,

'प्रवासी'क मार्च अंकक हेतु अहाँक कविताक घोषणा क' देने छी। अहाँक कविता 20-25 फरवरी धरि भेटि जाय त' सुविधा।

अकादेमी पुरस्कार हेतु एक बेर फेर विलम्बसँ लिखित बधाई।

नीक जकाँ हैब—प्रभास

आदेशानुसार हम हुनका कविता पठा देलियनि—'प्रवासी'क लेल। महाविशेषांकक लेल पठयबाक छल कि प्राप्तकर्त्ता विदा भ' गेलाह।

प्रभास जीसँ पहिल गप्प कहिया भेल छल-तकर तिथि-मास-वर्ष आ स्थान त' स्मरण नहि अछि किन्तु अंतिम गप्प 22 फरवरी 98क भोरमे, छओ-सवा-छओ बजेक मध्यमे भेल छल। ओ प्रायः रातिमे फोन करैत छलाह मुदा हमरा लेल सुविधाजनक भोरुके होइत छल। तखन ओ प्रायः सूतल रहैत छलाह अथवा निद्रालसमे पड़ल। पुत्र अथवा पुत्री द्वारा हैण्डसेट हुनका हाथमे गेलाक बाद जे वार्तालाप भेल, स्मृतिसँ ओकर अंश लिखि रहल छी—

'कीर्त्तिनारायण जी'

'नमस्कार! की सूतल रही'

'नहि, अहाँक घंटी सुनि जागि गेल रही'

'अहाँ त' कहनहि रही जे दिल्लीसँ घुरैत काल पटना, दरभंगा, सुपौल होइत मार्चक अन्तधरि कलकत्ता पहुँचब। आब तारीख निश्चित भ' गेल अछि। 28 मार्चकें ओतय पहुँचब।'

'हमरा सभक लेल 29 मार्च (रवि) सुविधाजनक रहत।

तखन 29क लेल कार्यक्रम बना सकैत छी। 28क लेल हिन्दीक साहित्यिक मित्र सभकें लिखि दैत छियनि। ओना हम सभकें पत्रोत्तर पठौने छियनि मुदा नवीनजी, पीताम्बर पाठक जी, राजनन्दन जी, रामलोचन जी, किशोरी कान्त जी आदिकें सूचित क' देबाक दायित्व अहाँ पर।'

'से भ' जयतैक। एहिठामक प्रवासी मैथिल आ संस्थासभ सम्मिलित रूपसँ आयोजन क' रहल छथि। हम चेष्टामे छी जे ओ भव्य हो।'

'हमरा लेल मुख्य बात समारोहक भव्यता नहि, समस्त मित्रवर्गसँ एक संग भेंट भ' जायब हैत।'

'हम आइ पटना जा रहल छी। ओतयसँ घुरितहि फोन करब। मुदा रचना आइये अहाँ पोस्ट क' दिअ'। कविता महाविशेषांक आ 'प्रवासी'क लेल फराक-फराक।'

'वेश। पठा देब। नमस्कार।'

'नमस्कार'

अंतिम शब्द हुनकहि छलनि आ फोनक लाइनो पहिने वैह काटलनि।

ओ अंतिम शब्द अंतिम विदाइक रूपमे कहल गेल छल तकर बोध तेसर दिन भेल।

अभिज्ञात जी (जे पहिने 'जनसत्ता'मे रहथि आ आब कलकत्ताक सांध्य दैनिक 'महानगर'क सम्पादन क' रहल छथि) 24.02.1998 (मंगल)क भिनसरमे फोन पर सूचना दैत छथि जे 'अभी-अभी 'जनसत्ता' से ज्ञात हुआ है कि आपके मित्र प्रभास कुमार चौधरी का रविवार (22.02.1998) की शाम में देहान्त हो गया। उन्हें पटना ले जाया गया है। वहाँ किसी को फोन कर विशेष जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ शोकसभाएँ आयोजित हो रही है।'

अपनाकें सम्हारैत अवरुद्ध कण्ठें ओ एतेक शब्द फोन पर कहि गेला-मुदा हमरा पर वज्रपात कर'क लेल 'प्रभास जी का देहान्त हो गया'—एतबे पर्याप्त छल। किछु कालक बाद भैयासँ सम्पर्क भेल त' जानलहुँ जे काल्हिये हुनक दाह-संस्कार भ' गेलनि। श्राद्ध पिण्डारूछमे हेतनि।

प्रभास जी अपन आंतरिकता, आत्मीय लगाव, सहयोग-भावना आ कृतज्ञता-बोधक शब्दिक अभिव्यक्ति नहि करैत छलाह। हँसैत मुखाकृति, विनम्र आ सहज व्यवहार हुनक आन्तरिक निर्मलता आ उदारताकें प्रकट करैत रहनि। ककरो द्वारा प्रकट कैल गेल आभार प्रदर्शनो हुनका स्वीकार नहि रहनि। ई कुलीनता आ उदारता संस्कारसँ प्राप्त भेल रहनि जे हुनका उत्तरोत्तर महान् आ

विचारशील बनबैत गेलनि आ हुनक कथन एवं क्रियामे सन्तुलन बनौने राखलकनि।

ओ जहिया कहियो कोनो साहित्यिक आयोजन करैत रहथि, हमरा बजाबथि किन्तु भौगोलिक दूरी आ व्यस्तताक कारण हमरा लेल जायब संभव नहि होअए।

मुजफ्फरपुरमे आयोजित 'सगर राति दीप जरय'क प्रथम आयोजनमे नहि जा सकलियनि। अगिला बैसारक लेल जखन 'ड्योढ़' तय भेल त' लिखलनि—'अहाँ कवि छी मुदा सगर राति दीप जरयक लेल न'व कथा लिखिक' आन' आ सुनाब' पड़त'। हमरा बुझाइत छल (गोष्ठीमे भाग लेलाक बाद) जे हमरा सन अत्यल्प कथा लिखनिहारोकें कथा-विधा दिस प्रवृत्त करब 'सगर राति दीप जरय'क अघोषित उद्देश्य छैक।

1989क हार्ट-एटैकसँ उबरलाक बाद प्रभास जीक जीवनचर्या पूर्ववत भ' गेल छलनि। हफ्ते-दश दिनमे यात्रो पर बहराय लागल रहथि, ठाम ठाम जाय आयोजन सभमे भाग लिअ' लागल रहथि, मित्र सभकें पत्र लिख' लागल रहथि। किन्तु हुनका मृत्युक मुँहसँ छीनि कए आन' वाली सावित्री (हुनक पत्नी ज्योत्स्ना जी) अस्वस्थ रह' लागल छलीह। रोग उत्तरोत्तर बढ़िते जा रहल छलनि। हुनक चिकित्साक लेल नानाविध प्रयास कैलाक बादो सुधारक कोनो लक्षण नहि पाबि प्रभास जी उद्विग्न, अशान्त आ चिन्ताग्रस्त रह' लागल छलाह।

हुनक स्थानान्तरण इलाहाबाद भ' गेलनि। सभ उपाय कैलाक बादो ओ अपन जीवन संगिनीकें बचा नहि सकलाह। शरीरसँ भारी आ भावुक ओ पहिनहिसँ रहथि, आब टूटि सेहो गेलाह, ऊपरसँ सन्तान सभकें सम्हारबाक, योग्य बनयबाक चिन्ता।

हम अवकाश-ग्रहण कर' सँ कतेक वर्ष पूर्वहिसँ गाम अथवा पटना वा कलकत्तामे रहि लेखनमे लाग' चाहैत छलहुँ। विविध कारणवश से संभव नहि भ' रहल छल किन्तु तेरासी वर्षीय पिता जखन बेसी अस्वस्थ रह' लगलाह, त' नौकरी छोड़ि गाम चल जयबाक निश्चय कैलहुँ। ओही मध्य इलाहाबादसँ प्रभासजी फोन कैलनि। कहलनि अहाँक एखन अवकाश ग्रहण करब उचित नहि बुझाइत अछि, गाम जा पिताक इलाज करबिअनु जँ ओ स्वस्थ भ' जाथि त' अहाँ अपन स्थानान्तरण कलकत्ता करबा काजमे लागल रहू अथवा कोनो दोसर जूटमिल ज्वाइन क' लिअ', अहाँ सन प्रोफेसनलक लेल नौकरीक समस्या नहि रहैत छैक। जा धरि धियापुताक दायित्वसँ मुक्त नहि भ' जाइ, अहाँक लेल कार्यरत रहब आवश्यक अछि। हमरा हुनक सुझाव व्यावहारिक लागल मुदा चितावालसासँ अवकाश ग्रहण कए गाम पहुँचबाक आतुरता छल।

हमर गाम पहुँचलाक बाद पिता प्रायः स्वस्थ रह' लगलाह। एक-डेढ़ मास ओतय रहि बुझाएल जे एतय रहि लेखन संभव नहि हैत। आन-आन कारणक अतिरिक्त सभसँ बड़का कारण छल बिजलीक अभाव। साँझसँ भिनसर धरि बारह-तेरह घंटा लाइन कटल रहैक, दिनहुँमे दू-चारिये घंटा रहैक। सेहो नियमित नहि।

हम कलकत्ता रह'क निर्णय लेलहुँ, नौकरीक ऑफर चितावालसा छोड़' सँ पहिने भेटि गेल छल। तकर सूचना प्रभासजीकें द' देने रहियनि।

एक दिन टीटागढ़ जूटमिल्सक आवास पर प्रभास जीक फोन इलाहाबादसँ आयल कीर्त्तिनारायण जी, हमर स्थानान्तरण होइ वला अछि। आप्सन अछि-दिल्ली वा कलकत्ता।

हम कहलियनि–'अहाँ कलकत्ता करबाउ। चाकरीक अंतिम चरणमे हमरा दुनूकें किछु वर्ष तक संग रहबाक अवसर भेटत।'

ओ कलकत्ता आबि गेलाह। पहुँचितहि गेस्ट हाउससँ फोन कैलनि, हमर हर्षातिरेकक ठेकान नहि। किछुए दिनक अभ्यन्तर सन्तान सभकें सेहो कलकत्ता ल' आनलनि। अलीपुर बला मकानमे रह' लगलाह। संयोग एहन जे हुनक 'जोनल ऑफिस' आ हमर हेड ऑफिस किछुए मीटरक दूरी पर अवस्थित। हमरा दुनूकें भेंट करक अवसर बराबरि भेट' लागल।

हमर पुनरागमन आ प्रभास जीक आगमनकें कलकत्ताक मैथिल बन्धुसभ बड़ उत्साहसँ लेलनि। दुनूक एक संग स्वागत-सम्मान कैलनि।

नियमित गोष्ठी हुअ' लागल, प्रकाशन आ पत्रिकाक योजना बन' लागल। 'प्रवासी' कलकत्तेसँ निकालल जाय तकर निर्णय भेल आ ओ ओतहिसँ बहराय लागल।

हम पहिने टीटागढ़मे रहैत रही किन्तु 147 कॉटन स्ट्रीट वला कोठरी खाली रखने रही। ओतहि साहित्यिक सभसँ भेंट आ गोष्ठी होअए-यद्यपि ओ कमरा बड़ छोट पड़ैक। कालान्तरमे हमहुँ, शिवपुर वला बड़का मकानमे आबि गेलहुँ।

पटनाक युवालेखनक तत्वावधानमे 'सगर राति दीप जरय'क रजत जयन्ती वर्ष 1997क प्रथम आयोजनक रूपमे कथा संगोष्ठी, राजकमल जयन्ती, 1996क साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक लेल राजमोहन झाजीक सम्मान सभ हुनके आवास पर भेल। ओतहि निश्चय कैल जे दोसर गोष्ठी हमर आवास पर हो। सेहो सफल भेल किन्तु हुनकहि प्रेरणा आ सहयोगसँ।

1995क अन्तमे हम प्रायः 23/24 वर्षक बाद कलकत्ता घुरल रही किन्तु हम

जाहि कलकत्ताकें छोड़ि कए गेल रही, घुरला पर ओ नहि भेटल। ताधरि ओहिठामक साहित्यिक परिवेश बहुत बदलि गेल रहैक। हमर मित्र वर्गमे किछु दिल्ली चल गेलाह, किछु दोसर ठाम, त' किछु अवकाश ग्रहण कए अपन गाम। किछु अवस्थाजन्य समस्याक कारण आवागमन कम क' देने रहथि, किछु 'लेफ्ट फ्रंट'क दीर्घकालीन शासनमे प्रक्रिया सम्पन्नता प्राप्त कए मसुआ तोंदिया गेल रहथि एवं अपन वैचारिक तीक्ष्णता प्रख़रताकें भोथ, अथवा कुन्द क' नेने रहथि। हमरा लोकनिक चाहखाना कम्प्यूटर सेंटर भ' गेल छल आ काफी हाउस बन्न क' देल गेल छलैक। किछु मित्र लिख'क बदला पोथी बेचि कए धन यशक अर्जनमे लागि गेल रहथि।

तथापि हमरा लेल निराश होयबाक कोनो बात नहि छल। हमर मित्रवर्गमे किछु ओहिना सृजनशील आ संघर्षरत रहथि। जनसत्ता, सबरंग, वागर्थ ओहि ठामसँ बहराय लागल छल। सकलदीप, अभिज्ञात, पीताम्बर पाठक, राजनन्दन लाल दास, नवीन चौधरी, रामलोचन ठाकुर–सभ सम्पर्क बनाकें राखथि। सभसँ बड़का बात जे प्रभास जी कलेकत्ता आबि गेल रहथि। कलकत्ता एकबेर चर्चामे रह' लागल छल।

ओ अयलाह आ कलकत्ताक मैथिल परिवेश पुनरुज्जीवित भ' गेल, हमरो सर्जनात्मक सक्रियता बढ़ि गेल। शिवपुरमे आबि गेलाक बाद त' बुझाए नहि जे हम दुनू दू स्थान पर रहैत छी। फोन पर दैनिक वार्तालाप आ घर एवं ऑफिस जा कए किछु समय संग-संग बितायब प्रायः दिनचर्या भ' गेल छल।

हुनक ऑफिस आ फ्लैट दुनूमे लिफ्ट लागल रहनि मुदा हमर ब्रिटिश कालीन डिजाइन आ ऊँचाइ वला मकान एक्को तल्ला चढ़इमे चारितल्ला बला कष्ट होइत रहैक तथापि ओ बराबरि आबथि। चढ़ैत-चढ़ैत हाँफि जाइथ। हुनक ओ अवस्था, भारी शरीर, मानसिक स्थिति आ हार्ट-सभ बात पर ध्यान दैत एक दिन कहलियनि जे भविष्यमे एहन कष्ट नहि उठाबथि, जखन चाहथि हमरे बजा लेथि किन्तु ओ मान' बला नहि। बिना कोनो सूचना देने, बिना कोनो निर्धारित कार्यक्रमक आबि जाथि। कहियो कहथि-ऑफिससँ बहरयबाकाल भेल जे अहाँ सभसँ भेंट कयने विद्यासागर सेतुबला रस्तासँ जाइ, कहियो कहथि–यात्रा परसँ घुरल रही त' भेल जे भेंट क' आबी, कहियो हमरा नर्सिंग होम ल' जयबाक लेल त' कहियो घुरि अयलाक बाद देखक लेल, कहियो धियापुतासँ भेंट कर' नाम पर त' कहियो, छुट्टी पर आयल छोट बालककें अमेरिका विदा कर'क लेल। बीच-बीचमे आयोजित साहित्यिक गोष्ठीमे भाग लेब'। बिना नागा आबिते रहथि, ई सभ तखन जखन

कि सप्ताहमे दू-एक दिन हम हुनक ऑफिस जा कए हुनकासँ भेंट क' अबैत रहियनि। एकर अतिरिक्त कोनो योजना पर विचार करए अथवा बैसारमे भाग लिअ' अथवा भोजन-जलपानक नाम पर हुनक आवास जाइये पड़ैत छल। परिचयक 30/32 वर्षमे हमरा दुनूकें भेंटक जे कम अवसर भेटल छल, हमरालोकनि तकर क्षतिपूर्ति एहि दैनिक-अर्ध दैनिक साक्षात्कारसँ क' रहल छलहुँ।

प्रभास जी जाहि आत्मीयता आ प्रगाढतासँ मैथिली आ मिथिलासँ जोड़ल रहथि, ओहिमे कोनो व्यक्ति अथवा क्षेत्र एहन नहि रहय जे हुनक स्मृति-पटल पर नहि रहैत हो, जे हुनका प्रति आदर एवं सम्मानक भाव नहि राखैत हो, हुनक विपुल कथा-साहित्य आ उपन्यास नहि पढ़ने हो, हुनक मैथिली-सेवासँ परिचित नहि हो, हुनका द्वारा उपकृत नहि भेल हो। अपन विशाल मित्र मण्डलीमे ओ हमरो स्थान देने रहथि—ई हमर सौभाग्य छल।

रचनाकाल : मार्च 1998

अहाँ कोम्हर नुका गेल छी प्रभासजी

एहि पार हम
ओहि पार अहाँ
बीच मे विद्यासागर सेतु
ई स्फूर्तिदायक व्यवधान
कतेक नीक लगैत छल
हमरा दुनूकें प्रभासजी
किछु किलोमीटर दूर रहियो क'
हम एक-दोसर कें हुलकी मारि सकैत छलहुँ
नेशनल लाइब्रेरीक सान्हि
आ चिड़ियाघरक झोंझि
हमरा सभक आवाज कें
नहि रोकि सकैत छल
पुलक नीचा सँ कतबो बहैक पानि
शिवपुर आ अलीपुरक स्नेह-बाधक
नहि तोड़ि सकैत छल
पयरे बौआइत
जखन-तखन अहाँ गाब' लगैत रही
राजा पोखरि मे कतेक मछरी।
आ हम कहैत रही
ई राजाक पोखरि नहि
हुगली थिकैक प्रभासजी
एतय कोनो माछ पर हाथ नहि लगबियौक
पहिने नागार्जुनक 'तालाब की मछलियाँ'

आ राजकमलक 'मछली मरी हुई'
के बेकछाउ
तखन ककरो पर नजरि गड़ाउ
अहाँ हँस' लागैत रही
आब' लागैत रही
ऊर्ध्वमूल पुलक अष्टावक्री घुमाव मे अपस्याँत होयबाक लेल
हम ओहिसँ थाकल
ठेहुनक दर्दक मारल
तामसें चलब छोड़ि बैसि जाइ
आ अहाँ ओम्हर सँ
कोनो नव कथानक नेने
पहुँचि जाइ
भ' जाय शुरू
कविता आ कथाक आपसी संघर्ष
आब ओहि घुमाव मे
हम एकसर पड़ि गेल छी प्रभासजी
बेशी काल विपरीते दिशामे बौआइत छी
नहि होइत अछि आब ठेहुन मे दर्द
अथवा अहाँ पर तामस
अन्धकारक ई यात्रा बड़ कष्टकर लगैत अछि
अहाँ कोम्हर नुका गेल छी प्रभासजी

रचनाकाल : मार्च 2004

स्मृतिशेष कविमित्र कालीपद कोनार

नवम दशकक प्रारंभ वा ओकर किछु पूर्व मैथिलीक वरिष्ठ रचनाकार जीवकान्त अपन कोनो पत्रमे बंगला कवि कालीपद कोनारक कवित्व प्रतिभा आ हुनक मैथिली प्रेमक सम्बन्धमे लिखने रहथि। संगहि सूचित कयने रहथि जे हुनक अग्रज डॉ.एम. कोनार खजौली, मधुबनीमे डाक्टर छलाह। हुनक पिता बेसीकाल ओतय रहैत छलाह। हुनक देहान्तो ओतहि भेल छलनि। कालीपद जीक बाल्यावस्थाक किछु वर्ष मिथिलांचलेमे बीतल छलनि। अतः हुनक मैथिली प्रेममे अन्तरंगता आ सहजता छनि। ओ अहाँसँ सम्पर्क करय चाहैत छथि, अपन अनुवाद कार्यमे सहयोग पयबा लेल।

मुदा हम कालीपद कोनारक नामसँ पहिनहिसँ परिचित छलहुँ। कॉलेज स्ट्रीट, कलकत्ता बला कॉफी हाउसमे कोनो बंगला कवि मित्र कोनो प्रसंगमे हुनक नामक चर्चा कयने रहथि। संभवतः बंगला बाल साहित्य आ दोसर भाषासँ बंगलामे अनुवादक चर्चा भ' रहल छल।

एक कविक रूपमे हुनक छवि रोमांटिक कविक छलनि आ ओहि समय हमसभ साहित्यमे सामान्य जन आ 'एन्टीपोयट्री'क अलावा किछु देखय नहि चाहै छलहुँ। रोमांटिक कविकें लग नहि आबय दैत रही। एतबे नहि, हमसभ हुनका सभकें कवियो नहि मानैत रही। जखन कि हमरा सभमे सँ अधिकांश कवि रोमांटिक गीत-कवितेसँ काव्य-यात्रा शुरू कयने छलाह।

किछु दिनक बाद कालीपद कोनार जीक पत्र भेटल। ओ हमर कविता संग्रह बी.पी.पी. सँ पठा देबाक अनुरोध कयने रहथि। हम हुनका हिन्दी आ मैथिलीक कविता पुस्तकक दू प्रति निबंधित डाकसँ पठा देलहुँ। किछुए दिनक बाद हुनक एक सय टाकाक मनीआर्डर भेटल। हम मनीआर्डर घुरबैत हुनका लिखलियनि जे अहाँ बंगलाभाषी होइतो हिन्दी-मैथिलीक लेल काज क' रहल छी आ स्वयं कवि छी, अतः अहाँसँ पुस्तकक मूल्य लेब हमरा स्वीकार्य नहि। अहाँ प्रतिदानमे किछु देब' चाहैत छी तँ अपन बंगला पुस्तक पठा दिय'।

फेर पत्र-व्यवहारक क्रम आरंभ भेल। 23.04.1993कें ओ लिखलनि जे हम सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आ केदार नाथ सिंहक हिन्दी काव्य संकलनक बंगलामे अनुवाद कयने छी आ चाहैत छी जे अहाँक हिन्दी कविताक अनुवाद करी, नागार्जुनक सेहो।

ओ चाहैत छलाह जे 'शिखर पर साँझ' आ 'विराट वटवृक्ष के प्रतिवाद में'—दुनू पुस्तकक अपन पसिनक कविताक संग हमर किछु असंकलित कविताकें मिलाक' एक प्रतिनिधि संकलन नव नामसँ तैयार करथि आ तकर अनुवाद करथि। हम हुनका लिखलियनि जे एखन आओर संकलन आबय दिऔक तखन प्रतिनिधि संकलनक बात सोचब, तत्काल तँ कोनो एक्के संकलनक अनुवाद ठीक रहत।

ओहि समय 'विराट वटवृक्ष के प्रतिवाद में'क उड़िया अनुवाद श्री अमर कुमार पटनायक आ तेलुगु अनुवाद डॉ. सत्यनारायण राव क' रहल छलाह। कालीपद जी वैह किताब चुनलनि।

अनुवाद पूर्ण भेल आ छपल-विराट वटवृक्षेर विरुद्धे—क नामसँ। ओ ओकर किछु प्रति अपन लोकसँ विशाखापटनम् (हमरा कार्यकालक अवधिमे चितावालसा जूट मिल्स) पठा देलनि। ओहि बर्खक कलकत्ताक पुस्तक मेलामे कालीपद जी आ श्री मानस भट्टाचार्य (पाण्डुलिपि प्रकाशनक मालिक) हमरा चर्चाक विषय बना देलनि। अनेक काव्य एवं विचार गोष्ठीमे हमरासँ काव्य-पाठ करबाओल गेल।

ओहि समय कालीपद जीक किछु कविता पुस्तक सेहो छपलनि। बोध आ शिल्पक स्तर पर ओहिमे आयल बदलाओकें रेखांकित करैत अनेक पत्र हम हुनका लिखलियनि। हम बंगला पढ़ि आ बाजि तँ सकैत छलहुँ, लिखि नहि पबैत छलहुँ। यैह कारण छल जे हम हुनका पत्रे नहि, पुस्तकक समीक्षो अंग्रेजीमे लिखैत छलहुँ, बंगला पंक्तिक उद्धरण 'रोमन लिपि'मे।

जखन ओ मैथिलीक प्रमुख कविक कविता सभक बंगलामे अनुवाद क' रहल छलाह, तखन ओ अनेक पत्र लिखने छलाह। शब्दक उत्स धरि पहुँचिक' ओकर मूल प्रकृतिकें पकड़ब आ तकर बंगला पर्याय ताकब, खाहे कतबो समय-साध्य आ कठिन हो, ओ ताहि लेल तेयार रहैत छलाह। मैथिली भाषी होइतो ठेठ शब्दक उत्स आ अर्थ हमरो बुझल नहि छल। एहना स्थितिमे हम अपन अज्ञानतासँ हुनका अवगत करा दैत छलियनि। जनतब प्राप्त करबाक लेल हुनका लग अनेक स्रोत छलनि।

हमरा पुस्तकक अनुवादक समय हुनका सोझाँ एहेन शब्दक भरमार छलनि। मुदा जखन अनुवाद पूर्ण भेल तँ किछु स्थलकें छोड़ि हमरा आ हमर बंगला-हिन्दी

साहित्यिक मित्रलोकनिकें मूल कविताक आनन्द प्राप्त भेल। हुनक भाषा-ज्ञानक सभ प्रशंसा कयलनि।

हमर चितावालसा प्रवास वा सेवाकालमे हुनक अनेक पुस्तक प्रकाशित भेलनि। अपन सभ पुस्तक हमरा पठबैत रहथि आ विस्तृत प्रतिक्रियाक प्रतीक्षा करैत रहथि। सम्पर्क प्रगाढ़ मैत्रीमे परिणत भ' गेल छल आ मैत्री पारिवारिक लगाओमे। एक-दोसराक ओतय आयब-जायब आ एक-दोसरक व्यक्तिगत तथा पारिवारिक समस्याकें सोझरयबामे सहयोग करब—एहि लगाओक परिणाम छल। एही बीच हुनक निरन्तर अस्वस्थता आ हुनक विदा होयब, सभ किछु मात्र आठ-दस वर्षक अवधिमे। ई सम्पूर्ण अवधि जेना हमर स्वप्नावस्थामे बीति गेल। जखन हमर निन्न खुजल तँ ओ विदा भ' चुकल छलाह।

जखन ओ स्वस्थ आ कार्यरत छलाह, खड़गपुर (पश्चिम बंगाल) बजबैत रहैत छलाह। विशाखापटनमूसँ कलकत्ताक ट्रेन यात्रामे खड़गपुर रुकिक' हुनका आ हुनक परिवारसँ भेंट करब सहज छल। मुदा व्यस्तता एहन रहैत छल जे एना संभव नहि भ' पबैत छल। कलकत्तासँ घुरिक' अबैत छलहुँ तँ हुनक उलहन दैत पत्र हमर प्रतीक्षा करैत छल। अपन विवशताक मादे हुनकासँ प्रत्येक खेप क्षमा मांगैत रही। एकबेर हम हुनका बिनु सूचना देने खड़गपुर उतरि गेलहुँ। भोरक चारि बजैत छल। हम रेलवेक रिटायरिंग रूममे ठहरि गेलहुँ आ स्नानादि क' सामान ओत्तहि छोड़ि, हुनक आवास 344, तालजुली पहुँचि गेलहुँ। पहिल बेर गेल छलहुँ। हुनका, हुनक पत्नी आ बेटाकें चीन्हैत नहि छलहुँ। रिक्शाबला, जे संभवतः हुनके पड़ोसिया छल, हमरा रोकि गेटक भीतर गेल। जखन घुरल तँ घरसँ एक जोड़ लोक ओकर पाछाँ-पाछाँ आयल। हम बूझि गेलहुँ जे यैह कालीपद जी आ हुनक पत्नी साधना जी छथि। हम नमस्कार करैत जहिना अपन नाम बताओल, दुनू भाव-विभोर भ' उठलाह। बजलाह—'लगेज कोथाय? आशा जी आसेन नी?' हम कहलियनि जे हमरा ऑफिसक एक मीटिंगमे भाग ल' क' आइए कलकत्तासँ घुरि जयबाक अछि, तें लगेज रिटायरिंग रूममे राखि आबि गेलहुँ अछि। अगिला बेर सपरिवार आयब आ दू-एक दिन रुकब।

समय बितलाक संग-संग हमरा सभक पारिवारिक मित्रता प्रगाढ़ होइत गेल। मुदा एहि बीच कालीपद जी गंभीर रूपसँ रुग्ण भ' गेलाह। हुनका उच्च रक्तचाप तँ छलनिहें, पक्षाघात भ' गेलनि। हुनक अधिकांश समय रोगसँ जुझैत आ इलाजमे बितय लगलनि। हम विशाखापटनमूसँ अवकाश ग्रहण क' कलकत्ता (टीटागढ़ जूट मिल्स) आबि गेलहुँ।

हम जीवकान्त आ केदार काननकें लिखलियनि जे अहाँ सभ कलकत्ता आबि जाउ। एतयसँ हमसभ एक संग खड़गपुर चलब। एम्हर सबरंग (जनसत्ता)क सम्पादक श्री अरविन्द चतुर्वेद आ जनसत्ताक संवाददाता श्री अभिज्ञात सेहो संग चलबाक इच्छा व्यक्त कयलनि। हम कालीपद जीकें सूचना पठा देलहुँ जे अमुक तिथिकें हम सभ अहाँसँ भेंट करय आयब। मुदा संयोग एहन जे जीवकान्त आ केदार कानन नहि आबि सकलाह आ अरविन्द चतुर्वेद आ अभिज्ञातकें कोनो जरूरी कवरेज लेल अखबार कतहु बाहर पठा देलक। हम एकसरे खड़गपुर पहुँचलहुँ। ओतय साधना जी (श्रीमती कोनार) सभ अभ्यागतक स्वागतक तैयारी कयने छलीह।

कालीपद जी हमरा एकसरे देखि थोड़ेक विस्मित भेलाह मुदा मित्रलोकनिक नहि आबि पयबाक विवशताकें अत्यन्त सहजतासँ लेलनि।

हमसभ अनेक घंटा गपशपमे व्यस्त छलहुँ। लगिते नहि छल जे ओ अस्वस्थ छथि। बंगला, मैथिली आ हिन्दीक साहित्यिक गतिविधि आ साहित्यकार पर गपशप करैत लगैत छल जे महानगरसँ दूर कोनो छोट सन शहरमे रहिक' कोना ओ एतेक सम्पर्क बनौने रखैत छथि, कोना एतेक जानकारी हुनका पहुँच जाइत छनि, सेहो गरमागरम।

स्वास्थ्यमे सुधार भ' रहल छलनि मुदा धीरे-धीरे। तैयो ओ संतुष्ट लगलाह। कहलनि जे लिखबा-पढ़बामे बहुत दिक्कति नहि होइत अछि मुदा थोड़बा-थोड़बा काल पर हाथकें विश्राम देब' पड़ैत अछि। चलि-फिरि लैत छी मुदा खसबाक भय बनल रहैत अछि। बाहर निकलला पर स्नेहाशीष (पुत्र) अथवा साधना (पत्नी) कें संग राखय पड़ैत अछि।

ओ अनुवाद कार्य पर खूबे गप कयलनि। मैथिलीक प्रायः सभ नव-पुरान साहित्यकार कें ओ जनैत छलाह आ हुनका सभक रचनाक ओ गंभीर अध्ययन कयने छलाह। अनुवाद लेल चयनित प्रायः प्रत्येक कविता पर ओ चर्चा कयलनि।

गपक क्रम बदलल। अपन पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा-दीक्षा, व्यक्तिगत जीवन, आजीविका, अपन ओ पुत्रक विवाहादिक प्रसंग खुलिक' बतौलनि।

हम पुछलियनि जे अहाँ अपन समकालीन बंगला साहित्यिक मित्रसँ अलग-थलग कोना भ' गेलहुँ। ओ कहलनि—एहन बात नहि अछि। हम रहरहाँ कलकत्ता जाइत रहल छी, मित्रलोकनिसँ भेंट करैत छी, हुनक गोष्ठी-आयोजनमे भाग लैत रहल छी, पत्र-पत्रिकाक माध्यमे अद्यतन प्रवृत्तिक जनतब रखैत छी मुदा अहाँ अलग-थलग कहि जाहि दिशामे संकेत कयल अछि, ताहिसँ असहमत नहि छी। उग्र

आधुनिकतावादीमे सम्मिलित नहि छी, ओहि साहित्यकें कम्मे पढ़ैत छी। हम 'प्यूरिस्ट' नहि छी, किन्तु आधुनिकताक नाम पर साहित्यक सौन्दर्य पक्ष आ लोकरंजक स्वरूपसँ अलग होम' नहि चाहैत छी। हमर यैह परम्पराप्रियता वा शाश्वत मूल्यक प्रति आग्रह हमरा आजुक नव पीढ़ीसँ फराक रखैत अछि।

हम हुनक कवितामे परिलक्षित बंगाली आभिजात्य आ रूमानियतक गप उठौलहुँ तँ ओ कहलनि जे प्रारंभमे प्रत्येक कवि रोमांटिक होइत अछि किन्तु ई रोमांटिकता जखन कविकें समाज विमुख आ आत्मकेन्द्रित बना दैत अछि तँ कवित्व प्रतिभा भोत्थर भ' जाइत अछि। हमर कवितामे ओहन रोमांटिकता नहि भेटत। मुदा आजुक संघर्षमय जीवनोमे तँ मनुक्ख कें कोनो आशा, कोमल स्पर्श, प्रेमास्पद सुन्दर व्यवहार तँ चाहबे करी। हम हँसैत जोड़लहुँ—जाहिसँ गृहस्थाश्रम रोमांसपूर्ण बनल रहय। थोड़ेक सकुचाइत ओ कहलनि जे यैह तँ बंगाली समाजक विशेषता थिक। एतय साहित्य आ शृंगारक वस्तु एक संग कीनल जाइत अछि, दुनूकें एक संग सजाक' राखल जाइत अछि आ दुनूक उपयोगो एक्के स्टाइलसँ कयल जाइत अछि।

हम फेर परिहास कयल—तखन तँ अहूँक किताब बेडरूम आइटम मानल जाइत होयत? हमर सभक ठहक्का साधना जीक ध्यान आकृष्ट कयलक। ओ कहलनि—अहाँ दक्षिणमे रहितो बंगाली संस्कार आ मानसिकताक विषयमे एतेक कोना जनैत छी? हम कहलियनि—'बउदी, हम कलकत्तामे खांटी बंगाली मोहल्लामे दस बरस रहल छी—ओहो ततेक रचि-बसिक' जे मिथिलाक तिलकोड़-अड़िकोंच, बड़ी-सकरौरीक जगह चर्चरी-पातुरी, मूड़ो-घंटो, ऐंचोड़, भेटकी-इलिच आ मिस्टी दोइ-संदेश पर उतरि गेलहुँ, वैष्णव घरक पत्नीकें शाक्त बना देलहुँ, बजार-हाटमे 'रेट' पर तर्का-तर्की कइये क' कोरमी-पालक कीनैत छलहुँ।

हमर बंगालीकरण पर, सेहो सब्जीक माध्यमे हमर धाराप्रवाह बंगलामे बाजब, साधनाजी एवं हुनक पुत्रवधूकें एतेक गुदगुदौलकनि जे बीच-बीचमे ओ सभ कीचेन छोड़ि हमरा सभक मध्य आबि ठाढ़ भ' जाइत छली। संयोगसँ स्नेहाशीष कतहु बाहर गेल छलाह।

हम जखन डायनिंग टेबुल पर पहुँचलहुँ तँ बूझि गेलहुँ जे पूर्व सूचनाक आधार पर कयल गेल तैयारी, व्यंजनक विविधता आ मात्रा सभ हमरे पर उनट' बला अछि। हम एखनधरि मिथिलाक आतिथ्यक बखान सभठाम करैत रही किन्तु ई बंगभूमि तँ ओकर नानी बहरयलीह। व्यंजन-माछक प्रकार आ दही-मिठाइक एतेक विविधता छल, जे थोड़बे-थोड़बे खयला पर हम बहुत खा गेल छलहुँ। ऊपरसँ

'बउदी' आ 'बउ'क एक टी आर आ एक टू आर केर आत्मीयता हमर दशा देखबा योग्य बना देने छल।

आत्मीयतापूर्ण आतिथ्यसँ विभोर भ' जखन हम विदा होअय लगलहुँ तँ कालीपद जी कहलनि जे बहुत रास चर्चा तँ अपूर्ण रहि गेल, फेर कहिया आबि रहल छी? हम कहलियनि जे अहाँक स्वास्थ्यमे बहुत सुधार देखि रहल छी। जँ यैह गति रहल तँ किछुए मासक भीतर अहाँ पूर्ण स्वस्थ भ' जायब। अगिला भेंट हमरा दोबर प्रसन्नता देत। भ' सकैत अछि जे निकट भविष्यमे किछु मित्रक संग फेर जुमि जाइ।

विदा भेलहुँ तँ अपन छाता लेब बिसरि गेलहुँ। ओ मोनो नहि छल। रिक्शा जखन स्टेशन पर पहुँच' बला छल तँ देखलहुँ एकटा स्कूटर पछुअबैत आगाँमे आबिक' रुकल। ओहि पर सवार लड़की उतरैत अछि, छाता हाथमे ल' क' सोझाँमे ठाढ़ भ' जाइत अछि। हम जहिना चिन्हलहुँ कि ओ बाजलि–'अंकल, अहाँ अपन छाता बिसरि आयल छलहुँ।'

ओ लड़की कालीपद जीक पुत्रवधू छलि। हम कहलहुँ–'बेटी, एतेक परेशानी अहाँ कियैक उठौलहुँ। छाता तँ फेर अयला पर ल' सकैत रही।' ओ कहलनि–'अंकल, स्नेहाशीष तँ बेसीकाल बाहर रहैत छथि। बाहरक सभटा काज तँ हमहीं करैत छी।' हम कहलियनि–'हम तँ बुझैत छलहुँ जे कालीपद जीकें मात्र एक बेटा छनि, मुदा दोसर बेटा अहाँ थिकहुँ, ई बात हमर मोट बुद्धिमे एखनधरि नहि आयल छल।' हम हुनका माथ पर हाथ फेरलहुँ आ कालीपद जीक भाग्यकें सराहना करैत विदा भ' गेलहुँ।

कालीपद कोनार जीसँ प्रत्यक्ष सम्पर्कमे रहबाक अवसरि हमरा नहिए जकाँ भेटल मुदा हुनकासँ सम्पर्कित अनेक लोक हमर मित्र आ सम्पर्की छलाह। हमर किछु अधीनस्थ पदाधिकारी खड़गपुरक निवासी रहथि मुदा कालीपदसँ परिचित नहि रहथि, मात्र हुनक नाम सुनने रहथि। हमर मुँहसँ बेर-बेर खड़गपुरक चर्चासँ ओहिठामसँ हमर लगाओक अन्दाज हुनका लागल हेतनि। कोनो भावुक क्षणमे हम कहि देने होयब–ओतय हमर कविमित्र कालीपद कोनार रहैत छथि। रेलवेक वरिष्ठ अधिकारी छथि।

फेर की छल? ओ जखन छुट्टी पर निकलथि वा छुट्टीक मंजूरी लेल आबथि तँ पुछथि–'अपन मित्र लेल कोनो सनेश वा पत्र देब सर, आ घुरिक' आबथि तँ कहथि–अहाँक मित्र तँ पैघ लोक छथि सर, बड्ड लोकप्रिय छथि, सभ क्यो हुनका जनैत अछि। सभ क्यो हुनक प्रशंसा करैत छथि।' हम सुनि मुस्किया दैत रही।

कालीपद जी श्रेष्ठ मनुक्ख आ लेखक रहथि, एहिमे कोनो सन्देह नहि मुदा खड़गपुर बला लेल ओ पैघ एहि अर्थमे रहथि जे ओ ओहिठामक रेलवे ऑफिसमे एकाउंट ऑफिसर छलाह। प्रत्येक छोट-पैघ अफसर आ कर्मचारीकें ओतयसँ काज रहैत छल। जकर ककरो काज कतहु अटकैत छल, लोक हुनका लग पहुँचि जाइत छल। कालीपद जीक अनुभवी आँखि आदमी आ कागत दुनू पढ़ैत छल, परिणाम होइत छल कार्य-निष्पादनक प्रक्रियाक शुरू भ' जायब।

नीरस हिसाब-किताब आ शुष्क अंकसँ धन-वर्षा करा लेबाक कला हुनका नहि अबैत छलनि मुदा अंकक ऊपरसँ शब्दक सदानीरा बहा लेब, ओ खूब जनैत रहथि। भावुक, संवेदनशील आ इमानदार होइतो ओ चौचंक रहब सीखने रहथि। जतेक चौचंक ओ अपन लेखनक प्रति रहथि, ओहिसँ कम अपन कर्त्तव्य-पालनक प्रति नहि रहथि। सरकारी नोकरीमे कर्त्तव्यनिष्ठा आ इमानदारी, आजुक परिदृश्यमे बेवकूफीक निशानी भ' गेल अछि। एहि अर्थमे जँ कालीपद जी बेवकूफ नहि होइतथि तँ एतेक नीक कवि, लेखक, अनुवादक आ चिंतक नहि होइतथि। साहित्य-सेवा ओ आनुष्ठानिक एकनिष्ठतासँ कयलनि आ एकर खामियाजा सेहो ओ भोगलनि–शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक सभ स्तर पर। पेट काटि क' कयल गेल बचत, जिनगी भरिक कमाइसँ ओ छोट सन घर तालजुली (छोटो टांगरा)मे बना तँ लेलनि मुदा मानसिक रूपसँ ओ सदति अपन गाम गोहाल सॉंडा (जिला हुगली)मे रहैत छलाह।

हमर अपन व्यस्तता पढ़बा-लिखबाक कखनो समय नहि दैत छल। स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण क' हम एहि काजमे लागय चाहैत छलहुँ। हम कालीपद जीकें लिखलियनि तँ ओ बहुत प्रसन्न भेलाह। लिखलनि–अवकाश ग्रहण कयलाक बाद अपना दुनू संग रही–एहन योजना बनाउ। गाम अपना दुनूकें प्रिय अछि। किछु मास हमसभ गोहाल सॉंडा (हुगली)मे बितायब, किछु शोकहरा (बरौनी)मे, हेडक्वार्टर कलकत्ताक अहाँक डेरा रहत। एहि तरहें हमरा सभ अपन-अपन क्षेत्रमे बहुत काज क' सकब।' मुदा ई सब नहि होयबाक छल। सैह भेल। कालीपद जी अस्वस्थ भ' गेलाह आ अन्ततः विदा सेहो।

रचनाकाल : 2005

हमर विदेश यात्रा (सिंगापुर)

बरौनीसँ सिंगापुर लेल यात्राक शुरुआत

03.02.2005

आइ सिंगापुर जयबाक लेल हम आ आशा मिथिला एक्सप्रेस (3022)सँ कलकत्ता लेल विदा भ' रहल छी।

सौ. मनीषा आ मिसरजी (चि. शैलेश)कें हमसभ अनेक मास प्रतीक्षा कराओल। हुनक आग्रह आ उत्साहकें देखैत हमसभ 3 दिसंबर 2004कें जयबाक लेल वीसा आ एयर टिकट तैयार करबा लेने छलहुँ, किन्तु 21 नवम्बरकें 'साइटिका' (चिकित्सकक अनुसार 'ओस्टो आर्थराइटिस'क सीविअर अटैक बामा डाँड़सँ ठेहुन धरि)क अटैक हेबाक कारण डेढ़ मास धरि शय्याग्रस्त रहय पड़ल। बादक एक मास सीमित चलब आ हल्लुक व्यायाम 'फिजियोथैरेपी'मे बीतल।

थोड़ेक स्वस्थ भेलहुँ तँ जेठ पुत्रवधू अर्चना, संजय एवं अजय तथा छोट पुत्रवधू स्मिता सिंगापुर भ' अयबाक लेल जोर देब' लागलि। शैलेश आ मनीषा बहुत उत्साह देखौलनि, जाड़सँ बचबाक एवं विश्रामक लेल उपयुक्त अवसरि बताक' अयबाक लेल 'हँ' करबा लेलनि। आशा हमर खराब स्वास्थ्यक कारणे सदैव परिचर्येक बात सोचैत छलि। यात्राक कारण स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असरि हेबाक संभावनाक कारणे डरलि छलि। हम तँ स्वयं डेराइत रही किन्तु भविष्यमे जँ स्वास्थ्य एतबो संग नहि देत तँ यात्रा कोना संभव होयत? सैह सोचि जयबाक हेतु तय क' लेने रही।

बीसा पाँच बर्ख लेल अछि, सेहो अनेक यात्रा लेल। अजय कलकत्ता होइत बरौनी अयलाह तँ टिकटो संग नेने अयलाह। डाँड़मे दर्द आ चलबामे असंतुलनक बादो हम मानसिक रूपसँ मनीषा द्वारा निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार यात्रा लेल उत्साहित भ' गेलहुँ।

बारह-पन्द्रह घंटाक ट्रेनक यात्रा, हावड़ासँ रेलवे यात्री-निवास धरि भीड़-भाड़ पार करैत पहुँचब, ओतय पहुँचिक' डॉ. श्रीनिवास शर्मा (सम्पादक : छपते-छपते) आ अभिज्ञात (सन्मार्ग)क आग्रह रक्षार्थ पुस्तक मेला (26 जनवरीसँ 07 फरवरी 05 धरिक लेल आयोजित)मे पहुँचिक' 04.02.2005कें दूपहर मेला देखब आ तसलीमा नसरीन द्वारा विमोचित होब' बला पुस्तककें लेब, तकरा बाद थोड़बा समय लेल अभिज्ञातक संग एक साहित्यिक गोष्ठीमे भाग लेब आ घुरिते छओ बजे साँझमे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अन्तरराष्ट्रीय हवाइ अड्डा लेल विदा भ' जायब, विदेश यात्राक औपचारिकता पूरा क' नमहर गैलरी पार करैत लिफ्ट वा एक्सेलेटरसँ 'सिक्यूरिटी' धरि पहुँचिक' हैंडबैग जांच करायब आ लगधग दू घंटा प्रतीक्षा कए प्लेनमे प्रवेश करब–ई सभ सोचिक' लगैत छल की एतेक हमरासँ पार लागत आ हमरा कारणे आशाकें कतेक परेशानी हेतनि। मुदा सब सहजतासँ होइत गेल आ अन्ततः हम हवाइ जहाजक अपन सीट पर पहुँचिये गेलहुँ। इंगलैंड/अमेरिका हम एयर इंडियाक विमानसँ गेल छलहुँ। आतिथ्य आ सत्कारो ओहिमे नीके कयल जाइत छल, किन्तु सिंगापुर एयरलाइन्समे यात्री सेवाक गुणवत्ता अपेक्षाकृत नीक लागल।

भारतीय एवं विदेशी यात्रीक अलग-अलग वेशभूषा, बॉडी लैंग्वेज, मुस्की-चालि-ढालि पर नजरि गड़ौने हम ओहिमे झलकैत शालीनता-फूहड़ता पर सोचिये रहल छलहुँ कि हमरा कातक सीट पर बैसलि आशाकें देखलहुँ कि अपना कातमे बैसलि लड़कीसँ आत्मीयतापूर्वक गप क' रहलि अछि। हमर दृष्टि ओम्हर घुमल तँ लागल जे ओहि लड़कीक सपनायल आँखिमे अनन्त जिज्ञासा भरल छैक। हमर ई पूछला पर जे अहाँ 'टूर' पर जा रहल छी कि ओतय क्यो रहैत छथि, ओ उत्फुल्ल स्वरमे बाजलि 'हमर पति ओतय नोकरी करैत छथि। लगले विवाह भेल अछि आ हम पहिल बेर ओतय जा रहल छी।'

जा तँ हमहूँ सभ रहल छी अपन बेटी आ जमायसँ भेंट करबाक लेल, जकर विवाह चारि वर्ष पहिने भेल छल आ विवाहक सप्ताह भरि बादे सिंगापुर पोर्टमे कार्यरत अपन पतिक संग मनीषा एतय आबि गेल छलि।

हमरा अपन बेटीक लाज, कौतूहल, बिछड़बाक पीड़ा आ अश्रुपूरित आँखिक स्मरण भ' रहल छल। बेटी-जमाय दुनू एतय उच्च पद पर कार्यरत छथि। लगले ओ सभ अपन अपार्टमेंट कीनलनि अछि आ हमरा सभकें सिंगापुर देखबाक लेल बजौलनि अछि।

की हम आ ई लड़की सिंगापुर देखय जा रहल छी? की हमरा आँखिमे पर्यटनक उत्साह आ पर्यटकक उत्सुकता अछि वा अपना-अपनाकें देखबाक, आँखिमे बसयबाक ललक? हमसभ संभवतः एक्के चिन्ताधारामे बहैत रहैत छी

आ ओहि लड़कीक अंकल-आंटी भ' जाइत छी आ ओ हमर सभक बेटी। ओ कहैत अछि जे अंकल, हमर सभक भेंट तँ पहिल बेर भ' रहल अछि मुदा मोन राखब जे सिंगापुरमे अहाँक एकटा बेटी आओरो रहैत अछि।

भावनाक ई लहरि शांत आ गहींर नदी-एमे उठि सकैत अछि, कृत्रिम उफान बला जलाशयमे स्वच्छ छवि तँ नहि देखि सकैत अछि।

हमसभ ओकरा प्रति कृतज्ञ रही जे ओ अपन स्नेह लुटयबा लेल हृदयक पात्र देलक आ भरिसक ई सोचि रहल छलि जे कोनो अपरिचित स्थानक यात्रामे माता-पिताक संग कोना भेटि गेल?

चाँगी

05.02.2005

हमर सभक विमान सिंगापुर समयक अनुसार सवा चारि बजे चाँगी (सिंगापुरक एकमात्र हवाइअड्डा) पहुँचल। विमानसँ बहराइते ओहि लड़कीक मोबाइल बाजल। ओ लजाइत बाजलि–'ओ हमरा लेब' आबि गेल छथि। अपने सभ चिंता नहि करब।'

हमसभ संगे-संग एक्सेलेटर पर चढैत आ ओहिसँ उतरैत छी आ 'इमीग्रेशन' धरि जाइत छी मुदा ओतय Disembarkation Form आ पासपोर्ट देखयबाक लेल हमरा अलग-अलग अधिकारी लग पठाओल जाइत अछि। काउन्टर दिस बढ़बासँ पहिने ओ लड़की विदा लैत कहैत अछि, बिसरब नहि।

हमसभ 'इमीग्रेशन'सँ बहराक' लगेज बेल्ट दिस बढ़ैत छी आ सामानकें दू टा ट्रॉली पर राखि निकास द्वार दिस बढ़ैत छी कि बेटी मनीषा देखाइत अछि। ओकरा चेहरा पर पसरल उल्लास भरल हँसी यात्राक सभटा थकान मेटा दैत अछि आ गाड़ी पर सवार भ' यीशुन स्ट्रीट–81 लेल विदा भ' जाइत छी।

मनीषा हमरा सभकें लैत अपन ब्लॉक पहुँचैत अछि। शैलेश हमरा सभक स्वागतमे ठाढ़ भेटैत छथि। हमरा सभकें लिफ्टसँ अपन अपार्टमेंट आनिक' सिंगापुर पोर्टक अपन दफ्तर लेल विदा भ' जाइत छथि। मनीषाकें दू दिनक छुट्टी छैक।

घरक भीतर प्रवेश करिते लागल जे ई कोनो सुरुचि-सम्पन्न आ संस्कारवान गृहस्थक आवास थिक। पैघ-पैघ तीन टा कोठली, नमहर बैठक घर आ डाइनिंग प्लेस, आधुनिक उपकरणसँ सुसज्जित किचेन, मॉडर्न स्टाइलक दू टा बाथरूम, स्टोर रूम घरक भीतर, देबालमे लागल पैघ-पैघ सेल्फ। सभटा सामान भीतर। सभटा कोठली-हॉलमे जगहे-जगह।

टी.वी. देखय लेल आ कम्प्यूटर पर काज करबाक लेल अलग व्यवस्था। सभकिछु देखि मनीषा आ शैलेशक सौभाग्य, उद्यम आ सुरुचि पर गर्वबोध भेल। ईश्वरसँ हिनकासभक सुखद दाम्पत्य-जीवनक प्रार्थना कयल।

पछिला तीन-चारि दिनक यात्रा आ परेशानीक कारण उत्पन्न थकानकें मेटयबाक लेल थोड़ेक काल लेल सूतलहुँ तँ दिन भरि सुतले रहि गेलहुँ। रातिमे शैलेश जखन काज परसँ घुरलाह तँ हम ताजगीक अनुभव क' रहल छलहुँ।

06.02.2005

मनीषा आ शैलेश जेहन योजना बनौने रहथि, हम सभ आहि अनुसारें पहुँचल रही। हमर सभक दस दिनक प्रवासमे दू-दू शनि आ रवि पड़ैत अछि। एकरा संग-संग दू दिनक लेल चाइनीज न्यू इयरक अवकाश। कुल छओ दिनक अवकाश।

ओ लोकनि हमरा सभकें घुमयबाक लेल यात्रा सम्बन्धी कार्यक्रम (ITIN-ERARY) बनौने रहथि–हमरा स्वाथ्यकें ध्यानमे राखि, हमरा थकान नहि हो आ कम सँ कम चलय पड़य, तें प्रतिदिनक लेल तीन-चारि घंटाक प्रोग्राम बनौलनि।

आइ भोर साढ़े दस बजे हमसभ घरसँ बहरयलहुँ। यीसुन स्ट्रीटसँ पन्द्रह मिनटक दूरी पर खातिब (KHATIB) स्टेशन अछि–भूमिगत (MASS RAPID TRANSIT)क रेल चलैत अछि–लोकल ट्रेन जकाँ वा कलकत्ताक मेट्रो रेल जकाँ। प्रत्येक पांच-आठ मिनटक अन्तराल पर।

शैलेश-मनीषा पहिनेसँ दू टा e-z-link card (ई.जी. लिंक काडे) कीनि रखने रहथि।

हमसभ घरसँ पयरे खातिब (NS 14) पहुँचलहुँ। ओतयसँ स्केलेटरसँ प्लेटफार्म पर। हमसभ अपन-अपन ई.जी. लिंक कार्ड 'कार्ड सेंसर' पर स्पर्श करौलहुँ तँ गेटक प्लेट दुनू कात पाछाँ चलि गेलैक आ हमसभ ओहि प्लेट फार्म पर पहुँचि गेलहुँ जतय ट्रेन ठाढ़ होयत।

रेल-सेवा–सिंगापुरक MRT (Super Efficient Mass Rapid Transit) ट्रेन सेवा लगधग पूरा द्वीप पर उपलब्ध अछि। ई तेज, वातानुकूलित आ सस्त अछि। एकर मुख्य तीन लाइन अछि–नार्थ-साउथ लाइन, नार्थ-इस्ट लाइन आ ईस्ट-वेस्ट लाइन, जे भोरक साढ़े पाँच बजेसँ रातिक साढ़े बारह बजे धरि चालू रहैत अछि।

बस-सेवा–SBS आ TIBSक बस प्रत्येक पर्यटन स्थल धरि ल' जाइत अछि। भाड़ा यात्राक दूरी पर निर्भर करैत अछि। ई वातानुकूलित बस थोड़ेक महग अछि। ई बस सभ वास्तविक भाड़ा (जतेक भाड़ा अछि–डालर/सेंटक हिसाबें) ओसूलैत

अछि। अतः किछु खुदरा सेंट राखब आवश्यक होइत अछि। अन्यथा, Stored Value e-z-link Card राखब आवश्यक होइत अछि, जे रेल (MRT) आ बस दुनूमे काज अबैत अछि।

S $ 10क Tonsist Day Ticket सेहो भेटैत अछि, जकरा ल' क' अहाँ दिन भरिमे जतय चाही, ओतय बारह बेर चढ़ि-उतरि सकैत छी–चाहे कतबो दूरी हो। ई ट्रांसलिंक टिकट ओही सेल ऑफिसमे भेटैत अछि।

एकरा अतिरिक्त एकटा ट्रॉलीबस सेहो चलैत अछि–S $ 14.00 (Adult) आ S $ 9.90 (child) जकरा ल' क' अहाँ अनगिनत यात्रा दिन भरिमे क' सकैत छी।

एतय मीटरयुक्त टैक्सी सेहो चलैत अछि।

4-5 मिनटक भीतर ट्रेन आबि गेल। स्वचालित दरबज्जा खुजल आ हमसभ भीतर आबि अपन-अपन सीट पर बैसि गेलहुँ।

खातिबसँ गाड़ी खुजल तँ यीशुन (YISHUN), SEMBAWANG, ADMIRALTY, WOODLENDS, MARSILING, KRANJI, YEWTEE, CHOACHU, KANG, BUKIT GOMBAK, BESKIT BALOK होइत JURONG EAST पहुँचलहुँ। ओतयसँ हम EAST WEST LINEक ट्रेन पकड़ि चायनीज गार्डेन, लेक साइड होइत BOONLAY स्टेशन पर उतरि–जूरांग बर्ड पार्क (JURANG BIRD PARK) पहुँचलहुँ।

जें कि एगारह बजे Bird Shows होइत अछि आ मिसरजी पहिनेसँ हमरा सभ लेल ऑफिससँ 'पास' ल' अनने रहथि–हमसभ सीधे POOLS AMPHITHEATRE जाय स्टेडियममे बैसि गेलहुँ।

म्यूजिक आ जोर-जोरक आवाजसँ खेल शुरू भेल। खेल देखाब' बला बहुत गहींर बनल मैदानमे हाथमे रिंग लेने दर्शकक पक्षी, पक्षीक तीक्ष्ण प्रतिभा, बुद्धि आ ओकरा द्वारा एहि प्रदर्शनीमे कयल जाइबला करतबक विषयमे बतबय लागल। अनेक प्रशिक्षित चिड़ै दूरसँ उड़िक' खेल-मास्टरक आंगुर, बाँहि, कन्हा पर बैसिक', फेर उड़िक' आ घुरि-घुरिक' ओकरा हाथसँ दाना चुगि मुग्ध कयलक। एक संग चिड़ै सभक हुजूम अबैत छल, करतब देखबैत छल आ अपन-अपन खोंतामे चलि जाइत छल।

काकातु सभक करतब विस्मित कर' बला छल। एहिना पेलिकन, फ्लेमिंगो, हॉर्नबिल तथा अन्य चिड़ै अपन जादू देखौलक।

ओतयसँ निकलि हमसभ पेलिकन कोर (CORE)मे ओकरा हेलैत, पेंग्विन,

वाटरफाल, एमियरी(Amiary), South east Asian Birds Aviory, Lory Loft (3000 sq.m.)मे पसरल नौ महला ऊँचाइ वलामे उड़ैत लौरीकें देखलहुँ Birds of Prey showमे eggles, hawks आ फालकनकें aerial loopsमे देखलहुँ।

फेर हमसभ Birds eye tourक लेल निकललहुँ। पैंतालीस मिनटक ई यात्रा हमसभ गाइडसँ युक्त Electrical buggyमे कयल। संपूर्ण पक्षी-विहार रेलमे बैसले-बैसल।

शैलेश-मनीषा हमरासभकें किछु दूर पयरे चलिक' वन-विहार करबाक लेल उत्साहित कयलनि। ढलान पर उतरैत मनीषा हमरा किछु लता देखौलनि। एकटा लताक पात पानक पात जकाँ छल। तोड़िक' खुऔलनि तँ पाने जकाँ स्वाद छल। ओ कहलनि जे माँ (हुनक सासु आ हमर समधिन तिलोत्तमाजी) कहने छलि जे ई पान खोअयबाक लेल अहाँ अपन बाबूजीकें सिंगापुर बजबियनु।

घूमैत-घामैत दिनक दू बाजि गेल। हमसभ घुरबाक लेल ट्रेन पकड़लहुँ आ खातिब स्टेशन पर उतरि घर घुरि अयलहुँ।

लंच कयलहुँ। दू घंटा विश्राम कए सांझमे मंदिर देख' विदा भेलहुँ।

मरियम्मन (MARIAMMAN)क मंदिर मनीषाक घरसँ पांच मिनटक दूरी पर अछि।

एहि हिन्दू मंदिरमे मुख्य देवताक रूपमे मरियम्मन (पार्वती) विराजमान छथि। शंकर समेत अन्य देवी-देवताक प्रतिमा सेहो अछि। मुख्य द्वारक सोझाँ सप्ताश्व वाहन पर सूर्य शोभित छथि। नीचाँ नवग्रह, शिव, लक्ष्मी, सरस्वती, काली आ सीता-लक्ष्मण, हनुमान समेत राम सेहो। एकर विशालकाय मंडप, चबूतरा, हवनकुंड, उद्यान, दर्शक लोकनि लेल बनल विश्राम-स्थल, एहि मंदिरकें आरो आकर्षक बना दैत अछि।

मंदिरसँ घुरैत काल मनीषाक घरक कातेमे अवस्थित गुरुद्वारा सेहो गेलहुँ। एकर भीतरी कपाट (मुख्य मंदिरक द्वार) तँ राति भ' जयबाक कारणे बन्न भ' गेल छल, किन्तु मंदिरक विशालता एहिठामक सम्पन्न सिक्ख सभक अपन धर्म, संस्कृति आ संस्कारक प्रति गहींर लगाओक परिचय द' रहल छल।

07.02.2005

आइ शैलेश आ मनीषा हमरा सभकें चाइना-टाउन आ मरियम्मन मेन टेम्पुल देखयबाक लेल आ लॉ पा सा क फूट-कॉर्टमे लंच करयबाक लेल ल' गेलाह।

हमसभ MRT सँ 'खातिब'सँ विदा भ' रेफल्स प्लेस पहुँचलहुँ।

स्टेशनसँ बहराइते हमरासभकें चाइनीज न्यू इयर (Rooster New Year) जतय प्रत्येक वर्ष बारह चयनित पशु-पक्षीक नाम पर ओकरासँ जुड़ल विश्वास-अंधविश्वास, आस्था-परम्पराक आधार पर कयल गेल सजावटसँ पूर्ण बजार देखबा लेल भेटल। हमसभ सभसँ पहिने मरियम्मन टेम्पुल देखबा लेल गेलहुँ। ओहो मंदिर दिनक एक बाजि गेलाक कारणे बन्न भ' गेल छल। फेर छओ बजे साँझमे खुलैत, तें ओतेक काल प्रतीक्षा करब संभव नहि छल।

घुरबा काल मनीषा कहलनि–बाबूजी, डाभ पीयब? हम कहलियैक–डाभ कतय अछि? ओ संकेत कयलनि आ पैघ छाताक नीचाँ ठाढ़ ओहि भीड़-भाड़मे अनेक लोककें छिलका निकालि आ सक्कत परतोकें छीलिक' शंखाकार नारियलक ऊपरी भागकें थोड़ेक काटि ओहिमे स्ट्रॉसँ पानि पिबैत देखल। एक सिंगापुरी डालरक एक डाभ। पीलाक बाद ओकर भीतरी भागकें चम्मचसँ खाइत लोक। हमरा ओकर मिठास खूब नीक लागल। मनीषा कहलनि–भैया (अजय) जखन अबैत छथि तँ डाभक पानि जरूर पिबैत छथि।

प्रत्येक वर्ष लूनर न्यू इयर वा रुस्टर न्यू इयरक नामसँ वा चायनीज न्यू इयर (ई तीनू नाम लिखल-कहल जाइछ)क भीड़भाड़, नव-नव कपड़ामे चाइनीज बूढ़, जवान आ महिला सभक्यो वस्तुजात कीनबामे व्यस्त। रियूनियनक लंच वा डिनरक लेल खाद्य पेय वस्तुकें कीनबाक धड़फड़ी।

लोक बम्बूक डांट काटि अनैत अछि। जँ पछिला बर्ख नीक रहल हो तँ सीधा डांट, जँ नव बर्खमे अपन भाग्य बदलय चाहैत छी तँ घुमौवा संतोला/अनानास एतय शुभ मानल जाइत अछि कियैक तँ देखबामे ई स्वाभाविक लगैत अछि।

नाना प्रकारक तोरण, फूल, सजावटक मंदिरनुमा तैयार आसन-सिंहासन।

रियूनियन फोस्ट पर ई सभ अपनासँ छोटकें लाल पैकट (ANGROW)मे पाइ दैत अछि–इवन नम्बरक पाइ–माने दू चारि छह...।

हमसभ चाइना टाउनसँ बहराइत छी आ थोड़बे दूर चलिकें विशालकाय LAV PA SAT(ला पा सा-फ्रेंच नाम) फूड कोर्ट पहुँचैत छी।

विभिन्न देशक खाद्य पदार्थक अलग-अलग स्टॉल (दोकान) अनेक बिगहामे पसरल विशाल छाताक नीचाँ अछि। इटालियन, इंगलिश, फ्रांसीसी, थाइ, चाइनीज, वियतनामी, इण्डोनेशियन, भारतीय, मलेशियन आदि नाना प्रकारक डिश। हमसभ देखिकें चमत्कृत भेलहुँ। किन्तु की भोजन कयल जाय–एकर निर्णय कठिन लागल। हम सुझाव देल जे अपना सभ चारि गोटा छी। चारि देशक डिशकें मिलाक' Food mixed cuisine बनाओल जा सकैत अछि। शैलेश-मनीषा ई सभ

डिश अनलनि–

1. Mee Goreng–मसालायुक्त नूडल-पानक संग-Malaysian
2. Chiken Horfun–सूपबला नूडल चिकेनक संग–Bland taste–Chinese
3. Chiken rice with black pepper chiken–भात, उबालल चिकन, ओहि पर मड़ीचक सॉस–Chinese
4. Steamed Fish in Soya Sauce–Chinese
5. Otah–Fish meat with spice roasted in palm leaves–Malaysian/Indonesian
6. Popiah–Fish meat, Cucumber, Spinach, Coriander Wrapped in thin bread–Indonesian

डटिक' खयलहुँ। विदेशी व्यंजनक स्वाद तँ लेल जा सकैछ मुदा प्रतिदिन खायल नहि जा सकैछ। अपन स्वादक भोज नहि।

चायनीज न्यू इयर डे ईब/रियूनियन डे

07.02.2005

आइ शैलेश आ मनीषा अपन-अपन काज पर (ऑफिस) गेल छथि। मनीषाक हिदायत छनि जे जें कि ओ सभ नहि रहताह तें घरक नीचाँ नहि उतरी, कियैक तँ ट्रैफिक सिग्नलकें देखबामे थोड़बो असावधानीसँ, एहि अतिव्यस्त मोहल्लामे खतरा उत्पन्न भ' सकैछ।

भोरमे नौ बजे तैयार भ' जलखै कयलहुँ। शैलेश सवा छओ बजे भोरे निकलि गेलाह आ हुनक अयबाक समय रातुक आठ बजे थिक। मनीषा छओ बजे निकलतीह आ डेढ़ बजे आबि जयतीह। ओकरा आइ आधा दिनक छुट्टी छैक नहि तँ साँझक सात बजे अबितथि।

आइ भोजन आशा बनौलनि। बेटी-जमायकें भोजन बनाक' खोअयबाक ई नीक अवसरि थिक। रातुक भोजन हमसभ संगहि खायब। दिनुका भोजनक समय, दू बजे धरि, मनीषा घुरि आओत।

हम भोजन क' विश्राम कयल आ साँझकें थोड़ेक कालक लेल नीचाँ उतरिक' कम्पाउण्डक पार्कमे पहुँचलहुँ। थोड़ेक दूर धरि फुटपाथ पर टहललहुँ।

आइ चाइनीय न्यू इयर ईवक कारण बजार/दोकान/ऑफिस दूपहर आ साँझमे बन्न अछि। सड़क पर निरन्तर दौड़ैत गाड़ीक अतिरिक्त कोनो भीड़ नहि छलैक।

09.02.2005

आइ हमरासभ भोजनोपरान्त सिंगापुरकें सिंगापुर नदी पर जल-विहार करैत देखबा लेल बहरयलहुं। रेफल्स प्लेस स्टेशन उतरिक' नीचाँ अयलहुं तँ सिंगापुर नदी आ ओकरा कातमे होटलक शृंखला, पर्यटक/यात्रीक बैसबाक-खयबाक-पीबाक लेल बनल आकर्षक स्टॉल आ शेड, मोटरबोट, रिवरव्यू होटल, रिवर-साइट प्वाइंट आदि देखि चमत्कृत छलहुं। सिंगापुर-रिवर-एक्सपेरियेंसक टिकट लेल गेल। (प्रत्येक S $ 12 सँ S $ 15)। बोटक पट्टी पर आबि बोटक प्रतीक्षा करय लगलहुं। ओकर अबिते हमसभ अपन-अपन सीट पर बैसलहुं। एहि नदीक ऊपर एगारह गोट पुल बनल अछि। ओकरा नीचाँसँ गुजरैत एहि सम्पन्न देश आ एहिठामक व्यावसायिक प्रतिष्ठान, बैंक-बिल्डिंग, नव रंग-रौगनक संग, पुरान गुदाम आ दोकान (Shop houses), सरकारी भवन, जकरा औपनिवेशिक विरासतिक रूपमे सहेजिक' राखल गेल अछि, नव आधुनिक गगनचुंबी महल, बन्दरगाह, द्वीप सभक बारेमे TOURGUIDE अंग्रेजीमे बतबैत हमर सभक यात्राकें सार्थक बना रहल छल। एहि तरहें हम बेंजामिन एस्प्लानेड, एंडरसन, cavenaph, एलगिन, कॉलेमन, रीड, आर्ड (ORD), क्लेमेन-चू (Clemen eeau), अलकाफ (Alkaff) आ पुलाबू सेगान (Pulau Saigon) पुलक नीचाँसँ गुजरैत रिवरव्यूमे नहाइत बोटक (Boat Quay) जेट्टी पर आबि गेलहुं आ MRTक रेफल्स स्टेशन दिस बढ़ि गेलहुं।

नाइट-सफारी

10.02.2005

आइ हमरा सभ नाइट सफारी देखबाक लेल घरसँ टैक्सीसँ साँझ 7.30 बजे विदा भेलहुं। 8 बजे सफारी पहुँचलहुं। सफारी वाइल्ड लाइफ पार्क।

40 हेक्टरमे पसरल 135 प्रजातिक 900सँ अधिक निशाचर जानवरक ई सघन जंगल संभवतः विश्वक पहिल Wildlife Park थिक, जतय रातिमे घुमबाक सुविधा छैक। एतय तीन प्रकारक रस्ता छैक जकरा पर पयरे, ट्रामराइड आ लिमो बग्गी (LIMO BUGGY)सँ गेल जा सकैछ आ 3.2 किलोमीटरक दूरी तय कयल जा सकैछ।

हमसभ 45 मिनटक ट्राम राइड कयल। रिनो (Rhino), हाथी, जिराफ, टेपिरस (Tapirs), बाघ आ सिंहक संग-संग विभिन्न प्रकारक छोट-पैघ पक्षीकें देखल। छायादार अर्द्धप्रकाशक हल्लुक इजोरियामे एहि पशु-पक्षीकें देखब अद्भुत लागल। विज्ञानक तकनीकक कमालसँ जंगलमे मानू पूर्णिमाक इजोत पसरल छल।

सफारीसँ बहराक' हमसभ टैक्सी पकड़ि घर पहुँचलहुं।

वन्यजीवक उन्मुक्त विचरण, ओहो एतेक लगसँ, सघन जंगलक बीच, बिना कोनो भय केर देखब एहि यात्राक विरल अनुभूतिक लेल स्मरणीय रहत।

द्वीपमे द्वीप सेंटोसा द्वीप

11.02.2005

1970 धरि ब्रिटिश मिलिटरी बेस रहयबला 'सन्तोसा द्वीप' पहिलुक (पुलाउ) द्वीप बेलाकांग माटी (PULAU BELAKENG MATI) आइ एक विशालकाय स्थलक रूपमे मनोरंजन आ आनन्द मनयबाक स्थल बनि गेल अछि। एतय पैघ-पैघ होटल, यूथ होस्टल आ कैंप साइड अछि, जतय आबि जीवनक यथार्थसँ छुट्टी ल' क' किछु समय Fantasy Land of exploring Vollanoes, ferro cement geology and enchanted groves मे बिताओल जा सकैछ।

सेंटोसाक अर्थ थिक शांति आ नीरवता।

हमसभ बहुत उत्सुकता आ उत्साहित भ' सिंगापुर, जे स्वयं एक द्वीप थिक, केर एहि चर्चित द्वीप सन्तोसाकें देखबाक लेल आयल छलहुं। आबिक' लागल जे मात्र पचास बर्ख पहिने स्वतंत्र भेल आ चालीस बर्ख पहिने मलेशियासँ निकालि देल गेल, एहि सुविधा साधनहीन द्वीप (सिंगापुर) अपनाकें कोना व्यापार, पर्यटन, बन्दरगाह द्वारा एतेक सम्पन्न बना लेलक आ अपन छोट-पैघ द्वीपकें सौंसे दुनिया लेल पर्यटन स्थल बनाक' आर्थिक विकासकें एहि स्तर धरि संभव बना लेलक जे ब्रिटेनसँ बेसी एहिठामक प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष आय (Per Capita income) अछि।

हमसभ MRTसँ Tanjong Pagar Station पहुँचलहुं। ओतय टैक्सी पकड़ि Mount Faber पहुँचि केबल कार (Cable Car)सँ सन्तोसा द्वीपक पर्यवेक्षण करय निकललहुं।

सिंगापुरक Sky Scrappers, Branei Terminal of PSA (जतय चि. शैलेश काज करैत छथि) केर किछु पैघ जहाज, नीचाँक बीहड़ जंगल, लग पासक गाछ, लता आ फूलक हवाइ झलक, सभकिछु मुग्ध कयलक।

हमसभ 'केबल कार'सँ उतरिक' 'मोनोरेल'सँ सन्तोसाक परिभ्रमण पर निकललहुं। समुद्रक कात आ फूल-हरियरीसँ भरल पार्ककें देखबाक आनन्द मोनो रेलसँ अद्भुत छल।

मोनो रेलसँ उतरि हमसभ जल-तल, पानिक नीचाँक संसार Under Water World देखबा लेल बहरयलहुं। धरतीक सतह पर लागल स्वचालित प्लेट पर ठाढ़

भ' गेलहुँ आ आगाँ बढ़ैत (प्लेट आगाँ बढ़ि रहल छल) माछ आ गहींर समुद्रमे रहयबला प्राणीकें देखाब' बला आक्वेरियममे जलक भीतरक दुनिया देखय लगलहुँ।

यात्रा-पथ एहन छल जे लागि रहल छल, माछ जेना हमरा सभक ऊपरसँ हेलि रहल हो। Cuttle fish, Leafy Seadragon, शार्क, Piranha, डूगांग, समुद्री गाय, सभटा माथक ऊपर आ अगल-बगलसँ शीशाक विशाल 'ओसनोरेरियम'मे घूमि रहल छल।

ओतयसँ सेन्टोसा द्वीप द्वारा मुफ्तमे चलाओल जाइबला बसमे बैसिक' Musical Fountain show देखबा लेल मैजिकल सेंटोसा पहुँचलहुँ।

लेजर द्वारा विभिन्न आकृति बनाक' आ ओकर करतब जलक फब्बारा पर देखाब' बला म्यूजिकल फाउन्टेन–जतय हमरा अंग्रेजीमे गाइड द्वारा बताओल गेल–disco-lit fountain which gyrates, toghether with a rather unorchestrated Laser light show to everything from Joan Jett and black hearts to the 1812 overture. It is Joined by a 37m, 12 Storey-tall merlin.

एहि विस्मयकारी दृश्यकें देखलाक बाद शटल बस पकड़िकें हमसभ हार्बस्फोंट इन्टरचेंज पर पहुँचलहुँ आ ओतयसँ 855 बस पकड़िकें 'यीशून'।

फेरर पार्क

12.02.2005

आइ हमसभ फेरर पार्क स्टेशन पर उतरिक' सेरंगून रोड (Serangoon Road) पर अयलहुँ। सोझाँमे मुस्तफा शॉपिंग कम्प्लेक्स छल। बहुत पैघ भू-भाग पर अनेक तल्लाक ई शॉपिंग कम्प्लेक्स 'लिटिल इंडिया'क पैघ आकर्षण थिक।

लिटिल इंडिया (वा Seragoon) तीन समानान्तर सड़क Saragoon Road, Jalan Besar आ Raceconsrge Roadसँ घेरायल अछि। रोचोर केनल (Rochor canal)क उत्तरमे अवस्थित ई सूक्ष्म अर्थमे सिंगापुरक उपमहादेशक थिक। एतय सभ भारतीय (विशेषतः मद्रासी) वस्तु (लुंगी, साड़ी)सँ ल' क' मसाला धरि उपलब्ध अछि। भारतीय व्यंजन अपन अपरिमित विविधतामे उपलबध अछि।

सिंगापुरक आवासीय आबादी आइ लगभग 40 लाख अछि, जाहिमे 30 लाख एहिठामक निवासी एवं 10 लाख विदेशी अछि। कुल आबादीमे 77 प्रतिशत चीनी, 14 प्रतिशत मलय, 7 प्रतिशत भारतीय आ 2 प्रतिशत दोसर लोक, यूरेशिन (Eurasian) समेत अछि। ई विश्वक सघनतम आबादी बला देशमे एक अछि जतय छियालीस सयसँ बेसी लोक प्रति किलोमीटरमे निवास करैत छथि। पैघ

टावरनुमा बिल्डिंगमे (12/15 तल्ला वला मकानक हजारो अपार्टमेंटमे) 61 प्रतिशत लोक, मात्र 17 प्रतिशत भू-भाग परहक बिल्डिंगमे रहैत अछि।

ई स्विटजरलैंड जकाँ बसल अछि। ई क्षेत्र अन्य देशक विपरीत पूर्णतः कृत्रिम सृष्टि (artificial creation) थिक। एतय ने कोनो पुरान राजघराना (Kingdom) छल आने कोनो स्थानीय सभ्यता वा परम्परा छल, जतय औपनिवेशिक शक्तिक आधार पड़ल। एकर जन्मे आधुनिकतामे भेल। एकर संस्कृतिक कान्ह पर चीन, भारत वा ब्रिटेनक सांस्कृतिक समृद्धि सवार छल। धीरे-धीरे एहिठामक नेनालोकनि दोसर भाषा सिखलक आ धीरे-धीरे एहि सिंगापुरक उदय बहुसामाजिक, बहुसांस्कृतिक आ बहुभाषी गणराज्यक रूपमे भेल। जे सभ देश एहि गणराज्यकें बनौलक, ओकरा अपन पहिचान आ पार्थक्य बनौने रखबाक अधिकार अछि। सभ बराबर अछि, किन्तु सभक वैयक्तिक पहिचान राष्ट्रहितक अनुशासनसँ बान्हल अछि। एतय रहय बला सभक्यो सिंगापुरियन थिक आ सभ महत्वपूर्ण थिक एक दोसरक दृष्टिमे।

एतय हमसभ 'मुस्तफा'मे मार्केटिंग कयलहुं आ कोमलाजमे दक्षिण भारतीय इडली, डोसा, बाड़ा खयलहुँ आ शीतल पेय लिम्का।

ओतयसँ टैक्सीसँ घर अयलहुँ। साँझमे श्रीमरियम्मन टेम्पुल गेलहुँ। ओतय चि. शैलेश आ मनीषाक नामे श्रीविष्णु सहस्रनामक पाठ कराओल गेल।

दक्षिण भारतक मंदिर जकाँ एतय पूजा-पाठक लेल टिकट/टोकनक व्यवस्था अछि। दर्शन मुफ्तमे कयल जा सकैत अछि।

पूजा-पाठ सनातनी दक्षिण भारतीय पद्धतिसँ कयल जाइत अछि। पूजा, आरती, स्तुतिक समय ढोल-नगाड़ा बजाओल जाइत अछि। समारोहमे उल्लास भरल रहैत अछि। पूजाक पश्चात चरणामृत प्रसाद ल' क' शैलेश-मनीषाक मंगलमय भविष्यक कामना कयल आ भगवती पर हिनका सभक रक्षा-समृद्धि-प्रगतिक जिम्मा छोड़ि पयरे घर आबि गेलहुँ।

13.02.2005

आइ मनीषा प्रोग्राम बनौलक जे woodland जाक' थोड़ेक वस्तुजात कीनी। ओतय हमसभ पहुँचलहुँ आ ओहि विशाल शॉपिंग मालक अनेक तल धरि एक्सलेटरसँ गेलहुँ। रुकि-रुकि जतय-ततय वस्तु सभ कीनलहुँ। लोकक क्रय-क्षमता, रुचि आ रहन-सहनक विविधताकें ल'गसँ देखलहुँ।

सभठाम अपार भीड़ मुदा सर्वत्र आबय-जायबला लेल बाट एकदम खाली। दोसराक एतेक ध्यान राखिक' चलब-फिरब जे ककरो असुविधा नहि होइ।

दोकानसँ चुनल वस्तु अहाँ एकट्ठा करैत जाउ आ काउंटर पर आबि तुरत बिल बनवा सकी, ताहि लेल स्वचालित व्यवस्था। सभकिछु बिना सेल्समेलनक, बिनु कोनो देखभालक, बिनु कोनो पूछा-आछीक। क्रय-विक्रयक एहन स्वचालित व्यवस्थामे कोनो रोक-टोक नहि। अदृश्य दूरबीनी/कम्प्यूटरी आँखि सभकिछु देखैत अछि आ जँ कोनो गड़बड़ी भेल कि अलार्म बाजि जाइत अछि।

VALENTINE'S DAY

26.02.2005

आइ वेलेन्टाइन डे थिक—प्रेमक अभिव्यक्तिक वार्षिक उत्सवक दिन।

सेंट वेलेन्टाइन प्रेमकें प्रोत्साहित कयने रहथि, जकर भोग हुनका भोग' पड़लनि, किन्तु यैह हुनका अमर बना देलकनि आ युवालोकनिक हृदयक धड़कन।

एहि दिन युवा-युवती एक दोसरा पर प्रेमक प्रदर्शन करैत अछि। हृदयक आकृति बला उपहार प्रदान करैत अछि, पार्टी दैत अछि आ एकान्त तकैत रोमांटिक स्थलक खोज/यात्रा करैत अछि।

भारतमे बजरंग दल/विश्वहिन्दू परिषद/शिव सेना बला एकरा भारतीय संस्कारक विरुद्ध मानि एकरा मनयबाक विरोध करैत अछि। किन्तु सिंगापुर, अन्य एशियन देश तथा यूरोप-अमेरिकामे एकरा पैघ उत्सवक रूपमे मनाओल जाइत अछि। युवा-युवतिये नहि, पति-पत्नी आ बूढ़-बुजुर्ग दम्पत्ती सेहो एक दोसराकें प्रेम भरल शब्दक संग उपहार दैत छथि।

शॉपिंग मॉलमे मनीषा हमरा एकठाम ठाढ़ कए ग्रीटिंग कार्डक दोकानमे गेल छलि। भरिसक शैलेशक लेल कार्ड कीनने हेतीह। शैलेश सेहो कीनने हेताह। भोरे-भोर मनीषा अपन ऑफिस गेली। शैलेशक नाइट शिफ्ट छनि। ओ छओ बजे साँझमे पोर्टक अपन ऑफिस जयताह आ काल्हि भोर नओ बजे घुरताह।

मनीषा सात बजे साँझ घर अयली तँ चाह पियाक' यीशुनक किछु ब्लॉकक परिक्रमा करबैत रहली। बहुत घुमौलनि तखन घर अयलहुँ।

सभक्यो संग-संग डिनर कयलहुँ।

देखिते-देखिते सिंगापुर प्रवासक दस दिन बीति गेल। काल्हि दुनू गोटे 'चांगी' हवाइअड्डा पर हमरासभकें छोड़ि अऔताह। आजुक बिछुड़ल नहि जानि कहिया भेटब—ई सोचैत नम आँखिसँ हिनका लोकनिसँ विदा लेब।

सिंगापुरमे अपन यात्राक अंतिम दिन

15.02.2005

भोरमे पाँच बजे उठलहुँ। मनीषा काल्हि राति बाजल छलि जे भोरमे रिजरव्यायर (Reservoir) लग घूमय चलब। मुदा पयरे चलबाक कारणे होब' वला थाकनिक बात सोचि विचार छोड़य पड़ल। साँझमे एयरपोर्ट जयबाक अछि, ताहिसँ पूर्व भ' सकैत अछि जे शॉपिंग मॉल जाइ पड़य।

ई दस दिन घूमय-फिरय आ सिंगापुरकें देखबा-बुझबामे बीति गेल। लिखबाक नाम पर डायरी/यात्राक नोट लिखलहुँ। गहींरमे डूबिक' लिखबाक-सोचबाक ने एकान्त भेटल, ने मनःस्थिति बनल।

यात्राक प्रभाव आ दृश्य भ' सकैत अछि जे बरौनी पहुँचला पर हमरासँ किछु कविता लिखाओत। एखन तँ किछु नहि लिखि पयबाक कचोट अछि।

हमसभ भारत घुरबाक क्रममे 'चांगी' हवाइअड्डा पहुँचलहुँ आ विमानमे सवार हेबाक औपचारिकता पूर्ण कए बोर्डिंगक प्रतीक्षामे आबिक' बैसि गेल छी। 'डिपार्चर'मे एखन घंटा भरिक विलम्ब अछि। हमरा विचारमग्न देखि आशा पुछैत छथि कॉफी पीब? हमर स्वीकृति-संकेत पाबी कॉफी आनिक' दैत छथि आ हमरा कातमे बैसि स्वयं पीब' लगैत छथि।

हमरा मन मस्तिष्क पर सिंगापुर पसरल अछि।

एशिया महादेशक दक्षिण-पूर्वी छोर पर समुद्रक विस्तारमे अनगिनत छोट-पैघ द्वीप आ ओहि द्वीप-समूहमे एकटा छोट सन टापूनुमा शहर। शहर की, एकटा प्रजातांत्रिक देश, सिंगापुर। पड़ोसी देश मलेशिया आ इण्डोनेशिया। गगनचुम्बी इमारतक एहि शहर सिंगापुरक एकमात्र एयरपोर्ट 'चांगी' एकटा शीशमहल सन लगैत अछि। एतय प्रतिदिन नब्बे देशक जहाज अबैत-रुकैत आ एतयसँ विदा होइत अछि। 2003मे एहि हवाइअड्डाकें विश्वक सभसँ सुन्दर हवाइअड्डाक दर्जा देल गेल। विश्वक अनेक महादेशक मालवाहक जहाज एतहि उतरैत अछि। एतहिसँ माल लोड-अनलोड करैत अछि आ आवश्यकतानुसार अपन-अपन जहाजक मरम्मति सेहो करबैत अछि।

एतय विश्वभरिसँ सामान बिक' अबैत अछि। प्रत्येक नव सामान पहिने सिंगापुरेमे देखाइत अछि। इलेक्ट्रॉनिक गुड्स आ टेलीकॉम क्षेत्रक एहि अग्रणी देशक भारतोमे कारोबार पसरल अछि। एकर 'सेटेलाइट'कें किराया पर ल' क' कतेको देश अपन काज चलाबैत अछि। आर्कीड रोड आ सेंट्रल बिजनेस डिस्ट्रिक्ट,

लिटिल इंडिया, चाइना बजार, सिमलिम स्क्वायर एहिठामक मुख्य व्यावसायिक केन्द्र थिक। एहि देशकें सम्पन्न बनयबामे एहिठामक कर्मठ नागरिक (खाहे ओ कोनो देशक हो), करदाता, बंदरगाह, हवाइअड्डा, पर्यटन उद्योग आ व्यावसायिक प्रतिष्ठानक बहुत पैघ योगदान अछि।

'पीयू लिओ चुंग'क नामे ख्यात ई क्षेत्र तेसर शताब्दी धरि चीनक एक आइलैंड छल। चौदहम शतीमे ई 'सी टाउन'क नामे जानल जाय लागल।

682 स्कवायर किलोमीटरमे बसल ई देश विश्वक सभसँ छोट बीस देशमे एक अछि। एहि सघन आबादी बला देशमे एक स्क्वायर किलोमीटरमे 6430 लोक रहैत अछि। 95 प्रतिशत लोक फ्लैट्समे रहैत अछि। एहिठामक तीन नमहर इमारत 280 मीटर धरि पसरल अछि। तीन हजार किलोमीटरक सड़कक जाल पर 22 हजार टैक्सी चलैत अछि। 2000 ई.क जनगणनाक अनुसार एहिठामक आबादी 42 लाख (4.2 मिलियन) अछि। एतय अंग्रेजीक संग मलय आ चीनी भाषा बाजल जाइत अछि। तमिल भाषा-भाषीक संख्या बहुत पैघ अछि।

एतय कानून-व्यवस्था एतेक सुन्नर अछि जे सड़क पर पुलिस नहि देखाइत अछि। नियम तोड़य बला पर सड़कक कातमे लागल कैमरा नजरि रखैत अछि। भारतसँ आयल पर्यटककें एहिठामक गाइड सर्वप्रथम एहिठामक कानून आ ओकरा तोड़ला पर भेट' बला दंडक विषयमे बतबैत अछि।

सेंटोसाक स्काइ टावर 110 मीटर ऊँच अछि जतयसँ सिंगापुर दृश्यमान होइत अछि, मलेशिया आ इंडोनेशियाक झलक सेहो भेटैत अछि। विश्वक पहिल नाइट सफारी एतय 1994मे बनल छल, जाहिठामक विशेष आकर्षण अछि जानवरक 'लाइव शो'।

रचनाकाल : 2006

• • •



जन्म	:	17 जुलाइ 1937, शोकहरा, बरौनी
शिक्षा	:	एम.ए., एल.एल.बी.
कार्यक्षेत्र	:	व्यावसायिक एडवोकेटशिप एवं प्रबंधन
प्रकाशन	:	मैथिली काव्य संकलन सीमान्त : 1967; महानगर : 1968; हम स्तवन नहि लिखब : 1979; ध्वस्त होइत शांतिस्तूप : 1991(नचिकेता द्वारा बंगलामे अनूदित); आदमीकें जोहैत : 2004; जेठक तप्तशिला : 2018 (अजित कुमार आजाद द्वारा अनूदित)
संस्मरण	:	अपन एकान्तमे : 1995
आलोचना	:	अर्थान्तर : 2004
संपादन	:	आधुनिक मैथिली साहित्य : 1963 आखर (मैथिली मासिक) : 1967 राजकमल : जीवन आ साहित्य : 1968
अनुवाद	:	नाओ पर : 1997 म.म. गोपीनाथ कविराज : 2011 (मोनोग्राफ)
हिन्दी कविता संग्रह	:	अकेला मैं : 1965 शिखर पर साँझ : 1970 विराट वट्वृक्ष के प्रतिवाद में : 1991 (बंगला, उड़िया, तेलुगु में अनूदित) जेठ की तप्तशिला : 2008 ध्वस्त होते शांतिस्तूप : 2011
सम्मान/पुरस्कार	:	मैन ऑफ एचीवमेंट्स : 1994; मैन ऑफ द इयर : 1996; दिनकर जनपदीय सम्मान : 1996; साहित्य अकादेमी सम्मान : 1997; सहस्राब्दी सम्मान : 2000; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थानक सौहार्द सम्मान : 2015; प्रबोध साहित्य सम्मान : 2018
सम्पर्क	:	सौभद्र निवास, शोकहरा, पोस्ट : बरौनी–851112 (बेगूसराय) मो. 9431417693/9709396299

प्रकाशक

किसुन संकल्प लोक

किसुन कुटीर, सुपौल-852131 (बिहार)

मोबाइल : 09471062706

ई-मेल : kedarkanan3@gmail.com